* ओ३म् *

ऋषिदयानन्द

का

पत्रव्यवहार ।

प्रथम भाग

महाशय मुन्शीराम जिज्ञासु

लिखित

भूमिका सहित

दयानन्दाब्द २८

१९६६ वि०

{ १००० प्रति } { मूल्य १।) }

सद्धर्मप्रचारक यन्त्रालय गुरुकुल काङ्गड़ी में पं० अनन्तराम सर्म्मा
के प्रबन्ध से मुद्रित तथा प्रकाशित ।

ओ३म्

ऋषि दयानन्द
का
पत्रव्यवहार ।

प्रथम भाग ।

(अथ भूमिका)

ऋषि श्रेणी के महानुभावों के जीवन किसी देश वा मनुष्य समूह विशेष की सम्पत्ति नहीं । उन के सम्बन्ध में जो कुछ भी ज्ञात हो सके उसे सर्व साधारण के लाभ के लिए प्रकाशित करना सच्चे मानवी इतिहास की उन्नति का साधन समझना चाहिये ।

यह पत्र व्यवहार मैंने पहिले पहिल सद्धर्म्मप्रचारक नामी साप्ताहिक पत्र में छपवाना आरम्भ किया था और यह मेरे स्वप्न में भी न था कि इन को पुस्तकाकाररूप में पबलिक के सामने आने का सौभाग्य मिलेगा। किन्तु घटनाएं ही कुछ ऐसी होती गईं जिन का परिणाम इन पत्रों का कुछ काल के लिए सुरक्षित हो जाना हुआ।

मैंने इन पत्रों को सद्धर्म्मप्रचारक द्वारा पबलिक करते हुवे, २४ आषाढ़ सम्वत् १९६६ के अङ्क में, अपनी इस प्रवृत्ति का कारण यूं वर्णन किया था :—

ऋषिदयानन्द का पत्रव्यवहार।

चिरकाल से ऋषि दयानन्द के अपूर्ण जीवन वृत्तान्त को पूर्ण करने का प्रयत्न हो रहा है किन्तु अब तक पण्डित लेखराम के ग्रन्थ के पश्चात् किसी आर्य्य महाशय ने भी इस बड़े काम का बोझ उठाने का साहस नहीं किया।

परोपकारिणी सभा ने अपने दिसेम्बर १९०६ के अधिवेशन में इस कार्य्य के गौरव को समझ कर ऋषि दयानन्द के जीवनचरित्र की पूर्ति के लिये आर्य्यसमाज तथा परोप-

कारिणी सभा के इतिहास लिखवाने भी आवश्यक समझे। इस के लिए रेज़ोल्यूशन भी पास हुवा, किन्तु साल भर में काम कुछ भी न हुआ। इस लिए दूसरे वर्ष अर्थात् १९०७ के दिसेम्बर वाले अधिवेशन में यह काम मेरे सुपुर्द हुआ। मैंने एक वर्ष तक बराबर समाजों तथा सामाजिक संस्थाओं के समाचार मंगवाने तथा इन के वृत्तान्त तय्यार करने का प्रयत्न किया। दिसेम्बर १९०८ तक बहुत सा मसाला जमा हो गया था। उस अधिवेशन के पश्चात् मैंने ऋषि दयानन्द के पत्रव्यवहार की पड़ताल की तो बहुत से पत्र फटे हुवे तथा चूहों के काटे हुवे पाएगए। कई पत्रों को कीड़े लग गए थे। जो कुछ भी पत्रादि मुझे मिले मैं उन्हें अपने साथ लाया और उन की जांच पड़ताल आरम्भ की। गत वर्ष इस काम पर ९९।।।)।। व्यय हुवे जो बिल देकर ले चुका हूं। इस वर्ष फिर ६०) के लगभग व्यय हो चुका है, और मैंने सारा मसाला इस योग्य बना लिया था कि पूरा अवकाश मिलने पर आर्य्यसमाज का इतिहास तथा उस की शिक्षा पर अपने विचार पुस्तक रूप में पेश कर सकता। किन्तु कुछ ऐसे कारण हो गए हैं (जिन का प्रकाश समय आने पर होगा) कि अब परोपकारिणी सभा की ओर से मेरा कोई पुस्तक तय्यार करके छपवाना कठिन है। इस लिए

सारा तय्यार किया हुवा मसाला परोपकारिणी सभा के आगामी अधिवेशन में उक्त सभा के अधिकारियों के सुपुर्द कर दूंगा।

किन्तु ऋषि दयानन्द के पत्रव्यवहार को यदि अब खटाई में डाला गया तो फिर उस के सर्वथा गल जाने की ही सम्भावना है। अतएव इन सर्व पत्रों को एक साथ छाप देता हूं जिस से आर्य्यसमाज का इतिहास लिखने वालों को सुगमता से एक ही स्थान में ऋषि के जीवन का ठीक हाल मिल जाय। बड़े आदमियों के जीवन किसी पुरुष वा जाति विशेष की जायदाद नहीं इस लिए उन के सम्बन्ध में जो कुछ भी पता लगे उस से सर्वसाधारण को लाभ पहुंचाना चाहिए। इस उद्देश्य को मन में रख कर मैं ऋषि दयानन्द के पत्र व्यवहार को क्रमशः प्रचारक के इसी अङ्क में छापना आरम्भ करता हूं।

अभी पांच अङ्कों में ही पत्रव्यवहार के १६० पृष्ठ निकले थे कि ग्राहकों ने सर्व विषयों के लेखों को देखने की चेष्टा फिर प्रकट की, जिस पर १० भाद्रपद सम्वत् १९६६ के अङ्क में पृष्ठ ६ पर निम्नलिखित लेख द्वारा उन का प्रचारक में छपना (३२ पृष्ठ और देकर) बन्द करने का नोटिस दिया गया :—

"ऋषिदयानन्द का पत्रव्यवहार जिस विचार से मैंने प्रचारक में निकालना आरम्भ किया था उस के समझने वाले भी प्रचारक परिवार के बहुत से सभासद हैं; किन्तु फिर भी बहुतों ने शिकायत की है कि वे प्रचारक के कालमों में सर्व विषयों को देखना ही पसन्द करते हैं। इस लिये मैंने उक्त पत्रव्यवहार केवल आगामी अंक के साथ मुद्रित करा भविष्यत के लिये इन कालमों में छापना बन्द कर दिया है। अब पत्र जुदे छप रहे हैं और जब ५०० पृष्ठ की पुस्तक तयार हो जावेगी उस समय पत्रव्यवहार का प्रथम भाग मुद्रित कर दिया जायगा। ऋषि दयानन्द के भेजे हुवे पत्र कई महाशयों के पास होंगे। मैं उन से अपील करता हूं कि वे असल पत्र रजिस्टरी करा के मेरे पास भेज दें। मैं उन की ठीक नकल करके पत्र ज्यों का त्यों रजिस्टरी द्वारा लौटा दिया करूंगा, और साथ ही जो व्यय भेजने वालों का होगा उस के टिकट भेज दिया करूंगा।

जो पत्रव्यवहार मैं मुद्रित कर रहा हूं यदि इस समय भी मैं उस की ओर ध्यान न देता तो ये सर्व पत्र भी कीड़ों तथा चूहों की भेट हो जाते। मेरा उद्देश्य किसी प्रकार के

पत्र को भी पबलिक करने से रोकने का नहीं है। मेरी सम्मति यह है कि ऋषि दयानन्द का जीवन वृत्तान्त तय्यार करते हुवे भी जिन महाशयों ने कुछ पत्र रोक रक्खे उन्होंने अधर्म्म का काम किया। ऋषि दयानन्द के पत्रव्यवहार से यदि उन की कोई निर्बलता भी प्रकाशित हो, वा किसी पत्र से हमारे जमे हुवे संस्कारों तथा विश्वासों पर यदि किसी प्रकार की चोट भी लगे तब भी किसी आर्य्यसमाजी का अधिकार नहीं कि वह इस पत्रव्यवहार में से एक शब्द भी न्यूनाधिक करे। मैं इस लिए आर्य्यसमाज के बड़े से बड़े विरोधियों से भी प्रार्थना करता हूं कि वे निश्शङ्क होकर अपने हस्तगत पत्र मुझे भेजदें। यदि उन को अविश्वास हो कि मैं उन के पत्र न लौटाऊंगा तो वे अपने हाथ से अपने अधिकार में आए पत्रों की नकलें कर के अपने हस्ताक्षर करदें और असल मेरे किसी विश्वासपात्र आदमी को दिखा दें, मैं फिर भी उन की भेजी नकलों को छाप दूंगा। इस पत्रव्यवहार के मुद्रित करने से मेरा तात्पर्य यह है कि ऋषि दयानन्द का जीवन वृत्तान्त लिखने तथा आर्य्यसमाज का इतिहास तय्यार करने वालों की सम्मतियों की पड़ताल करने तथा उन की भूलों को ठीक करने की कसौटी सर्व साधारण के हाथ में मौजूद रहे"।

मैं अपने पाठकों से विशेष निवेदन करता हूं कि यदि उन के ज्ञान में कोई ऐसे भद्र पुरुष हों जिन के पास ऋषि दयानन्द के भेजे पत्र हों, वा ऋषि के नाम उन के भेजे हुवे पत्रों की लिपि उन के पास हो तो मेरे पास भेजने के लिए उन्हें प्रेरणा करें।

इन पत्रों में पाठकगण ऋषि दयानन्द के अपने भेजे हुए पत्र वा लेख कम देखेंगे, जिस के लिए उन के साथ मुझे भी बड़ा शोक है। यह आशा रखना कुछ असंगत न था कि वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धकर्त्ताओं तथा निरीक्षकों के नाम भेजे हुवे पत्र तो, कम से कम, वैदिक यन्त्रालय में मिलेंगे। और जब यह देखा जाता है कि ऋषि दयानन्द पत्रोत्तर देने के लिए बहुधा स्वयम् केवल मसौदा बना कर ही देते थे और पत्र दूसरों से लिखवा कर भेजते थे, और साथ ही जब यह भी ध्यान में लाया जाता है कि ऋषि दयानन्द साधारण कामों में भी सावधान रहने वाले थे, तो बड़े गूढ़ तथा आवश्यक पत्रों के मसौदे न पाकर बहुत ही आश्चर्य्य होता है। वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धकर्त्ताओं तथा अन्य वैतनिक कर्म्मचारियों के नाम भेजे पत्रों के वैदिक यन्त्रालय में न मौजूद होने का कारण तो स्पष्ट है। इन

लोगों में कम थे जो निस्वार्थ हो कर काम करते रहे हों। उन के अपने आचरण ऐसे न थे कि वह अपने स्वामी की दी हुई शिक्षाओं को पबलिक के सामने रखने का हौसला कर सक्ते। कुछ ऐसे भी होंगे जिन्हें अपने बचाव के लिए ऋषि के दिए हुवे प्रशंसापत्रों की आवश्यकता थी। और शेष भाग ऐसा होगा जो ऐसे पूज्य विद्वान् के हस्ताक्षर से आए पत्रों को केवल आत्मप्रसाद रूप से ही अपने पास रखना चाहते हों। किन्तु जो पत्र जर्मनी आदि देशों में भेजे गए और जो भारतवर्ष में निवास करने वाले श्रद्धालु विदेशियों के नाम लिखे गए होंगे, उन के मसौदे अवश्य परोकारिणी सभा के अधिकारियों के पास मिलने चाहियें थे।

किन्तु इस के न मिलने के कारण का अनुमान करना भी कठिन नहीं है। मुझे विश्वासनीय साधनों से पता लगा है कि ऋषि दयानन्द की बहुतसी हस्त लिखित पुस्तकें तथा पत्रादि पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या अपने घर उठा कर ले गये थे। मुझे यह भी पता लगा था कि उक्त पण्ड्या जी आर्य्य पुरुषों को धमकियां दिया करते हैं कि यदि वह अपने क़ाबू आई हुई चिट्ठियों को छाप देंगे तो आर्य्यसमाज को बहुत हानि पहुंचेगी। इसी धमकी को लक्ष्य में रख

कर मैंने १० भाद्रपद सं० १९६६ वि० का लेख दिया था, जिस का कुछ भी परिणाम न निकलने का मुझे शोक है।

मैं यहां फिर अपने पहिले लेख को दुहराते हुवे श्री पण्ड्या मोहनलाल विष्णुलाल तथा अन्य ऐसे सज्जनों से, जिन के पास ऋषि दयानन्द का कोई पत्र हो, निवेदन करता हूं कि जिस शर्त पर भी सम्भव हो सके वे उन पत्रों की नक़ल मुझे दान करें। मैं बिना इस विचार के कि उन के छापने से आर्य्यसमाज को हानि पहुंचेगी वा लाभ, उन्हें इस ग्रन्थमाला के द्वितीय भाग निकलते समय (यदि उस की मांग हुई) छाप दूंगा।

इस पत्रमाला में कुछ पत्र कई एक सज्जनों को अनावश्यक प्रतीत होंगे और कइयों की भाषा उन को ऐसी अखरेगी कि उन्हें पढ़ते समय वे मुझ पर बहुत ही क्रुद्ध होंगे। ऐसे सज्जनों को समझलेना चाहिए कि प्रत्येक पुरुष के आचार बहुत सी छोटी बड़ी घटनाओं के समूह से ही बनते हैं, जिन में से एक प्रकार की घटना को भी पाठकों से छिपाने पर वे उस पुरुष के जीवन पर ठीक सम्मति स्थिर नहीं कर सक्ते। यदि मैं भी इस समय "पत्रमाला" के संग्रहीता के स्थान में जीवन वृत्तान्त का सम्पादक होता तो मैं भी कांट छांट से

न चूकता, किन्तु मेरा अधिकार इस समय यह न था और जब ठीक तथ्य (Facts) ही पाठकों के सामने रखने का कर्त्तव्य हो तो भाषा को बदलना भी एक प्रकार के अन-धिकार जमाने के तुल्य ही है ।

मुद्रित पत्रों पर एक दृष्टि ।

स्वामी आत्मानन्द के पत्रों से पता लगता है कि शिमला समाज के स्थापन करने वाले पण्डित परमानन्द वाजपेई तथा डाक्टर ठाकुरदास थे जो दोनों हमसे बिछुड़ चुके हैं । लाला खुशीराम जी भी बड़े पुराने आर्य्य हैं जो सं० १८८३ ई० में कालिका आर्य्यसमाज के मन्त्री थे । पृष्ठ ९ पर इटावा वाले पण्डित भीमसेन के सम्बन्ध में नि-म्नलिखित विचारणीय है:—"भीमसेन के होने से आप के पास कोई नहीं रहेगा" । इस से ज्ञात होता है कि पण्डित भीमसेन की असलियत को श्री स्वामी दयानन्द जी के दे-हान्त समय से कुछ काल पहिले ही उन के कुछ सच्चे सेवकों ने समझ लिया था । कैसे शोक की बात है कि कुछ आर्य्य पुरुषों के बारबार की चेतावनी देने पर भी श्री स्वामी आ-त्मानन्द जी से उन के इतिहास सम्बन्धी अगाध ज्ञान को लेखनी बद्ध करने का किसी सज्जन ने भी प्रयत्न न किया

जिस से आर्य्यसमाज के इतिहास का बड़ा अमूल्य भाग हमारे लिए अप्राप्त हो गया।

ईश्वरानन्द के पत्र बड़े ही मनोरञ्जक हैं। ज्ञात होता है कि यह महाशय साधारण भाषा लिखना भी आर्य्यसामाजिक पुरुषों के सत्सङ्ग से ही सीखे थे। इन के अन्तिम जीवनचरित्र को इन के यहां दिए पत्रों के साथ मिलाया जावे तो स्पष्ट सिद्ध होता है कि जो पुरुष वारवार पापों के लिए खुले दिल से प्रसिद्ध क्षमा मांगता है वह अपना सुधार करने के स्थान में कई वार अपने आप को निर्लज्ज बना कर किसी सुधार के योग्य भी नहीं रहता।

स्वामी सहजानन्द के पत्रों से ज्ञात होता है कि उन को संस्कृत की योग्यता बढ़ाने की बड़ी लगन थी। अंग्रेज़ी सन्ध्या के अशुद्ध अर्थों के लिए शोक प्रकट करने तथा समाजों को पुनर्जीवित करने के जो विचार स्वामी सहजानन्द ने प्रकट किए हैं उन को पढ़ कर शोक होता है कि ऐसे योग्य पुरुष को आर्य्यसमाज क्यों न सम्भाल सका। इन के पत्रों में मास्टर दयाराम, बाबू (वर्त्तमान रायबहादुर) मंगूमल, बाबू विष्णुसहाय तथा मास्टर मुर्लीधरादि के धर्म्मभाव तथा पुरुषार्थ का बहुत कुछ वर्णन आता है। इन के

पत्रों से यह भी ज्ञात होता है कि स्वर्गवासी महाराजा फ़रीद-कोट वैदिक धर्म्म के श्रद्धालु थे।

पण्डित भीमसेन के पत्रों से तो वही "टकाधर्म्म" की बू आती है, किन्तु उन के साथ

पण्डित सुन्दरलाल जी (रायबहादुर) का पत्र व्यवहार मिला कर यह भी पता लगता है कि भीमसेन और ज्वालादत्त ने ही वेदाङ्ग प्रकाश के सर्व अङ्क बनाए थे, और इस लिए उन ग्रन्थों की अशुद्धियों के लिए ऋषि दयानन्द को ज़िम्मेवार ठहराना जहां अनुचित है वहां उन ग्रन्थों का वह मान्य भी नहीं करना चाहिए जो उन्हें ऋषि दयानन्द के नाम के सम्बन्ध से इस समय प्राप्त है। रायबहादुर पण्डित सुन्दरलाल के पत्र सं० ७ से विदित होता है कि सं० १८८२ ई० से पहिले ही लाहौर आर्य्यसमाज के सामयिक अधिकारी वैदिक यन्त्रालय को लाहौर लेजाने के पीछे पड़े हुए थे।

(देखिए पृष्ठ ६९)

भारतमित्र के सम्पादक के नाम जो पत्र पृ० ६८ से ७३ तक छपा है वह न केवल थियासोफ़िस्टों की लीला के विषय में ही ऋषि दयानन्द की सम्मति का परिचय देता है

प्रत्युत वेद विषय पर भी उन की सम्मति को यथावत् प्रकाशित करता है। निम्नलिखित पंक्तियां बहुत ही शिक्षा प्रद हैः-"और जो उन्हों ने यह लिखा है कि स्वामी जी इश्वर वा इश्वर की प्रेरणा युक्त हों तो उन का भाष्य निर्भ्रम हो सके; मैं ईश्वर नहीं किन्तु ईश्वर का उपासक हूं। परन्तु वेद मनुष्य के हितार्थ परमात्मा ने प्रकाशित किये हैं इस अभिप्राय से कि यहां तक मनुष्यों की विद्या और बुद्धि पहुंच सकेगी और इतने तक कार्य्य मनुष्य कर सकेंगे इस लिए यावत् मेरी बुद्धि और विद्या है तावत् निष्पक्षपात हो कर वेदों का अर्थ प्रकाशित करता हूं..............और सत्यार्थ होने से ही वेदों का निर्भ्रांतत्व यथावत् सिद्ध है।"

ठाकुर रघुनाथसिंह के क्षत्रीत्व की उत्तेजक कहानी पृष्ठ ८९ पर पढ़ने के योग्य है । यदि उस धर्म्मभाव का आर्य्य पुरुष पुनः स्मरण करेंगे तो इस सन्दिग्ध समय में भी धर्म्म का बेड़ा पार ही होगा !

ठाकुर नन्दकिशोरसिंह जी आज कल जयपुर की राजसभा के मन्त्री हैं। इन के पत्रों से विदित होता है कि आप वैदिक धर्म्म के बड़े श्रद्धालु भक्त थे। कैसे शोक की

बात है कि ऐसे भद्र पुरुषों की योग्यता से धर्म्म की वृद्धि में सहायता लेने की शक्ति आर्य्य पुरुषों में लुप्त होती जाती है। इस के कारणों पर विचार कर के उन्हें निर्मूल करना चाहिए।

गोरक्षा विषय में जो वृहत् कार्य्य ऋषि दयानन्द करना चाहते थे उस का वर्णन फुटकर पत्रों में कई स्थानों पर आया है। इन पत्रों से विदित होता है कि लाखों क्या करोड़ों हस्ताक्षर, गोवध रोकने के लिए, करा के वृटिश गवर्नमेन्ट की सेवा में भेजने का वे विचार रखते थे, और इस कार्य्य में राजों महाराजों को भी सम्मिलित करना चाहते थे।

पं० दामोदर शास्त्री-(नाथ द्वारा वाले) का पत्र बड़ा मनोरञ्जक है।

भाई जवाहिरसिंह जी के पत्र बहुत ही शिक्षा-प्रद हैं। भाई जी पहिले लाहौर आर्य्यसमाज के मन्त्री थे। जब मैं सं० १९४२ वि० में आर्य्यसमाज का सभासद् बना उस समय भी आप उसी पद पर सुशोभित थे, और भाई दित्तसिंह जी के साथ मिल कर वैदिक धर्म्म प्रचार का कार्य्य बड़े उत्साह से करते थे। इन को ऋषि दयानन्द

के शाहपुरा राज्य के लिए योग्य आदमी मांगने पर लाहौर आर्य्यसमाज ने भेजा था। इन पत्रों से लाहौर समाज के आरम्भिक विचारों का भी बहुत कुछ पता लगता है। भाई जवाहिरसिंह में एक गुण अन्य लाहौरी आर्य्यसमाजियों से बढ़ कर था। जहां कुछ एक अन्य लाहौरी आर्य्य-सामाजिक लीडरों ने मरतेदम तक आर्य्यभाषा का लिखना न सीखा वा उस का अभ्यास न किया वहां भाई जी ने जिस मत को ग्रहण किया था उस के प्रवर्त्तक की इच्छानुसार उस मत की साधारण भाषा का अभ्यास पुरुषार्थ से आरम्भ कर दिया था। पृष्ठ १२८ पर का लेख आजकल के उन नवशिक्षित बूढ़ों और पुर्जोश जवानों के लिए विचारणीय है जो अंग्रेज़ी तथा उर्दू की लाठी से ही आर्य्य-सामाजिक सर्व साधारण के गल्ले को हांकना चाहते हैं।

भाई जवाहिरसिंह के पत्रों के उत्तर में जो लेख ऋषि दयानन्द की ओर से आते रहे थे उन के प्राप्त करने का मैंने प्रयत्न किया था, और उन की प्रतिएं लेने की आज्ञा उक्त भाई जी से मांगी थीं। किन्तु भाई जी ने उत्तर में लिखा कि यद्यपि उन्होंने वे पत्र पण्डित लेखराम को दिखलाए थे तथापि अब वे पत्र किसी ऐसे स्थान में रक्खे जा चुके हैं कि उन का पता नहीं लगता। यदि वे पत्र मिल जाते तो

ऋषि दयानन्द की बहुत सी सम्मतियों का विस्पष्ट ज्ञान हो सक्ता।

भाई जवाहिरसिंह जी के पत्रों से कई सन्दिग्ध मामलों पर प्रकाश पड़ेगा और उन लेखों से भिन्न भिन्न प्रकृति के लोग भिन्न भिन्न परिणाम निकालेंगे; इस लिए मैं उन सब पर यहां कोई विचार नहीं करना चाहता। केवल एक विषय पर मुझे कुछ वक्तव्य है। यह बात प्रसिद्ध है कि आर्य्य समाज के विषय में लाहौर समाज के स्थापित होने के दिन से ही "पुलिटिकल बाडी" होने का दोष लगना शुरू हो गया था। साथ ही यह स्पष्ट था कि उक्त आर्य्यसमाज के अतिरिक्त अन्य किसी आर्य्यसमाज पर यह दोष नहीं लगाया जाता था। मुझे भली प्रकार स्मरण है कि जब सम्वत् १९४७ में एक डिपुटी कमिश्नर के इस कहने पर कि आर्य्य समाज एक "पुलिटीकल बाडी" है, मैंने उन के इस कथन का दृढ़ता से निषेध किया था तो उन्होंने उत्तर में यही कहा था कि जालंधर आर्य्यसमाज वा अन्य किसी आर्य्यसमाज को "पुलिटिकल बाडी" कोई नहीं कहता किन्तु लाहौर आर्य्यसमाज को प्रायः अङ्गरेज़ राजनैतिक सभा समझते हैं। अब तक यह समझा जाता रहा है कि शायद इस के कारण

आर्य्यसमाज लाहौर के आरम्भिक सर्व अधिकारी तथा कार्य्य-कर्त्ता होंगे। किन्तु भाई जी के पत्र से ज्ञात होता है कि शायद लाहौर आर्य्यसमाज की इस बदनामी के मूल कारण आप ही हों। आप के दूसरे ही पत्र में (पृ० १२० पर) पाठक नीचे दिए वाक्य पाएंगे :—

"हां कुछ पुलीटिकल (Political) विद्या का स्वभाव से प्रेम है यांते समाज के सज्जन पुरुष यही कहते हैं कि तुम इस काम को अच्छा निबाहोगे"।

उपरोक्त लेख से यह भी सिद्ध होता है कि लाहौर आर्य्यसमाज के पहिले काम करने वालों में से केवल भाई जी ही राजनैतिक विद्या में निपुण समझे जाते थे। अब देखना यह है कि लाहौर आर्य्यसमाज की राजनैतिक प्रसिद्धी का कारण क्या था। भारतवर्ष में निवास करने वाले अंग्रेज़ों (Anglo-Indians) का यह स्वभाव है कि उन का एक भाई भी जिस बात को जिस प्रकार लिख दे उसी लकीर पर सब चल पड़ते हैं; अपने स्वदेशी भाइयों के संदिग्ध लेख पर भी विदेशी युक्ति तथा प्रमाण को सुनने के लिये तय्यार नहीं होते। मेरा अनुमान यह है कि आर्य्यसमाज के विषय में इस प्रकार के विचार मिस्टर जानकैम्पबेल

ओमन साहेब (Mr. John Campbell Oman) ने फैलाये थे जो गवर्नमेंन्ट कालेज लाहौर में पदार्थ विज्ञान के अध्यापक (Science Professor) थे । पण्डित गुरुदत्त जी इन्हीं के शिष्य थे और जब शिष्य गुरु को बहुत पीछे छोड़ कर पदार्थ विद्या की अपेक्षा वेदों का अधिक मान करने लग गए तो गुरु को कुछ क्षोभ भी हुआ । इन्हों ने एक पुस्तक सन् १८८९ ई० के आरम्भ में लिखी थी जिस का नाम रक्खा था—

Indian Life, Religious and Social.

सब से पहिले आर्य्यसमाज को पुलिटिकल बाडी सिद्ध करने का इस पुस्तक द्वारा प्रयत्न हुआ था । उस पुस्तक में नए हाल, जो प्रोफेसर साहेब को इङ्गलेण्ड बैठे ही मालूम हुए, बढ़ा कर उस का नाम अब

CULTS, CUSTOMS AND SUPERSTITIONS OF INDIA

रक्खा गया है । इस नई पुस्तक का मुद्रण सं० १९०८ ई० में शायद इसी लिए किया गया कि उस समय की पुलिटिकल हलचल के रौ में बह हुए पुरुषों में इस पुस्तक का प्रचार होने की अधिक सम्भावना थी । इस पुस्तक का

निम्न लेख ठीक तौर पर बतला देगा कि आर्य्यसमाज के विषय में राजनैतिक दल होने का मिथ्या प्रलाप किस प्रकार आरम्भ हुआ। पृष्ठ १४१ पर मिस्टर ओमन साहेब लिखते हैं:—

"He (Dayananda) is also credited with the outspoken expression of an opinion about the present-day degeneration of Englishmen in India. I have been, the Swami is reported to have said to an English clergyman who came to visit him, I have been an early riser from my childhood. In the begining I saw that Englishmen would get up early in the morning, and taking their children with them would go out for a walk. The excess of wealth has made them indolent since. They are seen stretched on their beds in their bunglows i ll the sun is up, and I cannot but perceive that, like the old Aryas, the days of your fall are also coming. Without too much straining after the discovery of the more hidden causes of current happenings, we may perhaps be justified in recognizing in this significant condemnation and equally significant prediction, uttered by or attributed to Dayananda, an encouragement of the later politi-

cal activities of the seet which he founded; particularly as the reformer was intent upon the *regeneration of Aryavarta*, and the words patriotism and nationality constantly upon his lips. As early in the history of the Arya Samaj of Lahore as 1882, I find that the programme of the Anniversary celebration contains the following item: "A lecture in Vernacular by Bhai J.........S......... Secretary Arya Samaj Lahore, on "Nationality." and the subject has, I know, been always much in the thoughts of the samajists."

तात्पर्य्य यह कि एक अंग्रेज़ पादरी साहेब जब स्वामी दयानन्द को मिलने गये तो उन से उक्त स्वामी जी ने कहा कि पहिले मैं अंग्रेज़ों को अपने बच्चों सहित प्रातःकाल ही बाहिर वायु-सेवन के लिए जाते देखता था। किन्तु अब सूर्य्य उदय होने के पीछे तक लेटे रहते हैं। इस से अनुमान होता है कि पुराने आर्य्यों की तरह तुम्हारे गिरने के दिन भी समीप आ रहे हैं। एक संन्यासी के मुंह से ऐसा उपदेश अपने अन्दर कुछ विचित्र घटना नहीं रख सकता, किन्तु ओमन साहेब को इस के अन्दर ही आर्य्य-सामाजिक मत की पुलिटिकल उद्योगता का वीज दिखाई देता है और उस की स्पष्ट साक्षी वह इस प्रकार वर्णन

करते हैं—"आर्य्यसमाज लाहौर के इतिहास में बहुत ही आरम्भ अर्थात् स० १८८९ ई० में उस के वार्षिकोत्सव के समयविभाग में निम्नलिखित विषय भी है; एक व्याख्यान भाइ G......S......(मतलब जवाहिरसिंह से प्रतीत होता है) मन्त्री आर्य्यसमाज लाहौर की ओर से Nationality (कौमियत-स्वदेशीयता) पर—और मैं जानता हूं कि यह विषय आर्य्यसमाजियों के ध्यान में अधिक रहता है" यदि प्रोफ़ेसर ओमन साहेब के टेढ़े कटाक्षों की पड़ताल किसी अन्य समय के लिए छोड़लें तो भी स्पष्ट दीखता है कि उन के कटाक्षों के प्रबल कारणों में से भाई जवाहिरसिंह जी के एक व्याख्यान का विज्ञापन ही है। अब जब कि भाई जी को आर्य्यसमाज से जुदा हुवे २१ वर्षों से भी अधिक समय व्यतीत हो गया और आर्य्यसमाज के सभासदों ने बहुमत से अपने मन्तव्यों तथा कर्त्तव्यों का परिचय भी दे दिया तो उसी लकीर को पीटते जाना अन्य मतावलम्बियों का न्याय नहीं है। पण्डित कालूराम (सेठों के रामगढ़ वाले) के दो पत्र विशेष प्रकार से मनोरञ्जक सिद्ध होंगे। एक तो दीमक ने इन पत्रों को गूढ़ बना दिया है और उस पर पण्डित कालूराम की भाषा विचित्र—मेरी सम्मति में जिन पाठकों का समय खाली हो उन्हें समय काटने का

इस से बढ़ कर मनोरञ्जक साधन न मिलेगा कि पण्डित कालूराम के दोनों पत्रों की पहेलियां के बूझने में उसे लगावें।

पण्डित कालूराम ऋषि दयानन्द के बड़े श्रद्धालु भक्त थे। आपने रामगढ़ में एक स्थान बनवाया था जहां नित्य सत्यार्थप्रकाश की कथा बाङ्गड़ देश के सर्व साधारण में होती थी। इन के सैकड़ों शिष्य थे जिन की विशेषता यह हुआ करती थी कि जो आज्ञा उन्हें सत्यार्थप्रकाश में दिखला दी जाय उसे वे शिरोधार्य्य समझते थे। कालूराम जी के स्थान में दो मेले प्रतिवर्ष होते थे जिन में भोजन का सत्कार सहस्रों पुरुषों का हुआ करता था। उन की मृत्यु के पश्चात् न जाने उन के स्थान की वह महिमा रही वा नहीं, किन्तु उन के जीवन में आर्य्यसमाज का बड़ा उत्तम कार्य्य होता रहा।

अजमेर वालों के पत्र—विशेष विचार से देखने के योग्य हैं। कमलनयन शर्मा तथा मुन्नालाल के पत्रों से विदित होता है कि अजमेर आर्य्यसमाज में परस्पर का विरोध ऋषि दयानन्द के जीवन में ही आरम्भ होगया था। इस पत्रव्यवहार पर यदि आज की तिथि डालदी जावे तब भी कोई अचम्भे की बात न होगी। इस समय सर्व

प्रान्तों के आर्य्यसमाजों में इसी दुर्घटना के दर्शन होते हैं। यदि अर्य्यसमाज को, उस के अग्रणी, जीवित रख कर वैदिक धर्म के प्रचार का साधन बनाना चाहते हैं तो उन्हें इस रोग की जड़ का पता लगाना चाहिए। स्वामी केशवानन्द न जाने कौन थे जिन का वर्णन कमलनयन शर्मा के पत्र में आता है। इन्हीं के पत्र सं० ४ में पृष्ठ १७१ पर निम्नलिखित विचारणीय है:–"........सर्दार भक्तसिंह इञ्जिनियर हुए हैं। उन्हीं के दफ्तर में मैं भी काम करता हूं। वे कहते थे कि गुजरात में मूलराज M. A. हम से मिले थे और अर्य्यसमाजों को पक्षपाती कहते थे, इस कारण हमने और उन्हों ने मिल कर एक संस्कृत पाठशाला जुदे हो कर नियत की है"। रायबहादुर मूलराजजी इस समय पर बड़ा उपकार करेंगे यदि यह बतलावें कि आरम्भ से ही आर्य्यसमाज के अन्दर किस प्रकार के पक्षपात ने घर कर लिया था। जोधपुर से जो यह समाचार प्रसिद्ध होना लिखा है कि स्वामी जी का देहान्त होगया- यह तो एक बार नहीं कई बार कई स्थानों से सुनने में आता था परन्तु पृष्ठ १९२ पर जो मारवाड़ राज के विकट होने का लेख है उस से स्पष्ट सिद्ध होता है कि ऋषि दयानन्द निर्भय हो कर धर्म का प्रचार करने वाले उपदेशक थे और इस-

लिए ऋषि पद के अधिकारी। पण्डित शुकदेवप्रसाद के पत्र के साथ जो पण्डित शिवकुमार शास्त्री का पत्र अजमेर के पण्डित शालिग्राम के नाम का पृष्ठ २११ तथा २१२ पर छपा है, उस से ज्ञात होता है कि श्री पण्डित शिवकुमार जी बराबर श्री स्वामी दयानन्दजी का अत्यन्त मान्य करते तथा उन के उद्देश्यों के साथ अन्तरीय भाव से सहमत थे।

बलदेव के पत्र—सं० ३ व ४—से विदित होता है कि उन दिनों श्री स्वामीजी महाराज के इङ्गलेन्ड की ओर प्रस्थान करने की अफ़वाह फैल रही थी। यदि ऋषि दयानन्द एक वार लन्डनादि नगरों में भ्रमण कर आते तो न जाने धर्म्मान्दोलन के काम को कैसा प्रबल पलटा मिलता? किन्तु यह होना ही न था। बेफ़िकरे बलदेव से रोटी पर सैर करने के शौक़ीन अब भी बहुतेरे घूमते फिरते हैं। पृष्ठ २२० पर वर्णित स्वामी गङ्गेशजी का पता फिर नहीं मिला। पृष्ठ २२१ पर बिल्हौर वाले "मंगीलाल" जी की बुझौती को जो बूझ दे उसे मैं भी कुछ पारितोषिक देने को तय्यार हूं।

गोरक्षा—की ओर प्रथम ध्यान आकर्षित करने वाले स्वामी दयानन्द ही थे। पृष्ठ २२७ पर दिए, गोपी-

नाथ के, पत्र से विदित होता है कि रामगढ़ वाले पंडित कालूराम ने इस शुभ कार्य्य के लिए बड़ा परिश्रम किया था। एक सेठ ने मुझे ठीक लिखा था कि आज कल की सर्व गोशालाएं तथा पिञ्जरापोल श्री स्वामीजी की ही मङ्गल इच्छा के परिणाम हैं।

भिनगा के भया राजेन्द्रबहादुरसिंह—का पत्र पाठकों को बहुत ही विस्मित कर देगा। इस पत्र से विदित होता है कि पुराने सत्यार्थप्रकाश में किए मांस विधान की पुष्टि पञ्चमहायज्ञविधि के किसी आरम्भिक संस्करण से भी कुछ लोग समझते थे यद्यपि पुराने सत्यार्थप्रकाश से कुछ पहिले छपी पञ्चमहायज्ञविधि में मांस-भक्षण का निषेध है। मेरी सम्मति में इस पत्र से विस्मित होने के स्थान में सन्देह की निवृत्ति हो सक्ती है। जिन पुरुषों ने ऐसे पत्रों को दबाए रक्खा है उन्होंने अधिकतः संदिग्धावस्था उत्पन्न कर दी है। यह पत्र सम्वत् १९३९ के चैत्र में लिखा गया, और कार्तिक सम्वत् १९४० वि० में स्वामी जी का देहान्त हुआ। उन की मृत्यु के १॥ वर्ष पहिले तक ज्ञात होता है कि उन का ध्यान मांस विधान की भूल की ओर किसी ने आकर्षित नहीं किया। यही कारण मालूम होता है कि मृतकश्राद्ध के विरुद्ध विज्ञापन देते हुए

भी स्वामी जी ने मांस विषयक अशुद्ध लेख का वर्णन नहीं किया।

उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह जी के यहां दोनों समय अग्निहोत्र होने का वर्णन जो पृष्ठ २३९ पर हीरालाल अथर्वणीने किया है उस से पता लगता है कि महाराजों की रुचि वैदिक कर्म्मकाण्ड की ओर बढ़ चली थी।

महाशय लक्ष्मण गोपाल देशमुख, असिस्टेन्ट कलक्टर खानदेश, के पत्र यद्यपि केवल घड़ी की खरीदारी के सम्बन्ध में होने से कई पाठकों को तुच्छ प्रतीत होंगे, किन्तु मेरी दृष्टि में वे बहुमूल्य हैं। इन से पता लगता है कि आर्य्यभाषा तथा संस्कृत के प्रचार को जिस प्रकार ऋषि दयानन्द ने पुष्टि दी थी, यदि उस का अनुकरण उन के शिष्य करते तो आज यह हीन दशा न दिखाई देती कि आर्य्यसमाज के कतिपय भूषणों को भी यह लिखते लज्जा नहीं आती कि यदि उन से उत्तर प्राप्ति की इच्छा हो तो उन के नाम पत्र इँगलिश वा उर्दू भाषा में ही भेजा जावे।

मुंबई आर्य्यसमाज के मन्त्री के पत्र में पृष्ठ २४६ की समाप्ति पर कैसे हृदयबेधक शब्द हैं जो आज भी उसी प्रकार सर्व आर्य्यसमाजों में गूंज रहे हैं—"कार्य्य करनेवाले

बहुत कम हैं कि अपना तन मन धन लगा के करें, वाक्य-विलास करने वाले बहुत हैं" यह शिकायत उस समय तक दूर न होगी जब तक कि सदाचार को ही धर्मशीलता की जड़ न समझ लिया जावे।

मन्त्री सेवकलाल कृष्णलाल जी का पत्र सं० ६ जैनमत की पुस्तकों के विषय में बड़ा मनोरंजक है; इस मत की पुस्तकों के दर्शन भी स्वामी जी महाराज को इन्हीं सज्जनों द्वारा हुए थे। पृष्ठ २७९ से ज्ञात होता है कि जून १८८३ ई० में स्वामी आत्माराम आर्य्यसमाजी बन कर मुम्बई पहुँचे हुए थे और उस समय तक संस्कृत कुछ भी नहीं जानते थे; किन्तु उस भाषा का अभ्यास दृढ़ता से कर रहे थे। उस समय श्री स्वामी जी के चरणों में पूरी श्रद्धा रखते थे, किन्तु आज अन्यों से बिगड़ने के कारण अपने पूर्व गुरु को गालीप्रदान कर रहे हैं। काल की विचित्र गति है!

लालजी बैजनाथ व्यास के पत्रों से (जो पृष्ठ २८० से २८५ तक दिए गए हैं) विदित होता है कि स्वामी जी के इस पंचभौतिक देहत्याग करने से कुछ मास पहिले ही मुम्बई आर्य्यसमाज की अवस्था ढीली पड़ गई थी। अन्य कई आर्य्यसमाजों की निर्बलता का हाल भी इन्हीं दिनों

के लिखे हुए पत्रों से विदित होता है । न केवल यही बल्कि अजमेर, लखनऊ, फ़र्रुखाबादादि के पत्रों से यह भी विदित होता है कि ऐसी अनुचित अवस्था बहुधा कुछ सभासदों के स्वार्थवश होने तथा परस्पर के विद्वेष से उत्पन्न हो चली थी । यह सच है कि ऋषि के परलोकगमन के कुछ वर्षों पीछे एक विचित्र प्रेम तथा पवित्रता की लहर उठी थी किन्तु परस्पर के द्वेष तथा सदाचार की अविद्यमानता ने उस लहर को भी बिलकुल बैठा दिया है । यदि वैदिकधर्म्म का पुनरुद्धार अभीष्ट है तो आर्य्यसमाज के अग्रणियों को आचार संशोधन का कोई विशेष उपाय सोचना चाहिए ।

कवि सुखराम त्र्यम्बकराम का पत्र केवल एक नमूने का दिया है जिस से विदित होता है कि लोगों में उस समय धार्मिक विषयों के आन्दोलन की जिज्ञासा केवल श्री स्वामी दयानन्द जी के उपदेशों से ही उत्पन्न हुई थी। पृष्ठ २९२ पर जिस ग्रन्थ [दयानन्द सरस्वतिनुं भाषण] का "अहमदाबाद गुजरात वर्नाक्युलर सुसाइटी" के पुस्तकालय में विद्यमान होना वर्णित है और जिस का मूल्य ।।।) लिखा है, क्या वह पूना वाले व्याख्यान ही थे वा उन से भिन्न कोई पुस्तक थी ? इस का पता लगाना चाहिए ।

लाला मथुरादास का पत्र [पृष्ठ ३०५ पर] बतलाता है कि उन्होंने जो ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका का संक्षिप्त अनुवाद उर्दू में प्रकाशित किया था उस में श्री स्वामी जी की सम्मति नहीं ली थी। उन्हों ने कुल छपी हुई प्रतियां वैदिक यन्त्रालय में दे दी थीं। अच्छा ही होता यदि उन्हें न वेचा जाता जिस से बहुत सी भूलों से सर्व साधारण का बचाव होता।

धर्म्मवीर पण्डित लेखराम का एक ही पत्र, देवनागरी अक्षरों में लिखा हुआ, मिला है यह पत्र विचित्र है। लाला कन्हैयालाल अलखधारी तथा मुन्शी इन्द्रमणि की पुस्तकों से इन्हों ने अन्य मतों के खण्डन की शिक्षा ली थी इस लिए मुन्शी इन्द्रमणि के साथ श्री स्वामी जी का विगाड़ उन्हें सह्य न था। श्री स्वामी जी के जीवन-चरित्र में मुन्शी इन्द्रमणि के मामले पर जो कुछ लिखा है उस का इस पत्र के साथ मुक़ाबिला करने से विदित होता है कि पण्डित लेखराम जी सत्यग्राही बड़े दृढ़ थे। एक बात और विदित होती है। वैदिक धर्म्म में प्रेम उत्पन्न होते ही पण्डित लेखराम ने देवनागरी अक्षरों का अभ्यास आरम्भ कर दिया था और अपनी भाषा की अशुद्धियों के कारण अपने कर्त्तव्य-पालन में किञ्चित भी नहीं घबराते थे।

स्वामी आत्माराम का पत्र पृष्ठ ३१२ तथा ३१३ पर उन की विचित्र जीवनी पर बड़ा प्रकाश डालता है।

शङ्का समाधान का अवसर विरोधियों को तो बहुत मिलता रहा किन्तु बड़ा ही शोक है कि जिस समय आर्य्य-समाजियों के दिलों में धर्म्म विषयों के आन्दोलन की जिज्ञासा उत्पन्न हुई उस समय ऋषि के परलोक गमन की तय्यारियां हो रही थीं। पृष्ठ ३१४, ३१८ पर क्षेमकरणदास का पत्र मुक्ति विषय के प्रश्न युक्त कैसा हृदयबेधक है। उधर जोधपुर विष देने की तय्यारी दुष्ट कर रहे हैं और इधर प्यासे हृदय धर्म्म का मर्म जानने की जिज्ञासा कर रहे हैं। किन्तु शोक यह है कि अभिमान और द्वेष के अन्धकार से अन्धे किए गए आर्य्यसमाजी अब तक भी अपने धर्म के मूल-श्रोत-वेद-पर विचार करने को उद्यत नहीं होते।

देहरादून के पण्डित ज्योतिःस्वरूप का एक लेख-पृष्ठ ३१६ पर वय्याकरणों के पढ़ने योग्य है।

ऋषि की स्वाभाविक शान्ति तथा सत्य प्रियता का नमूना देखना हो तो पृष्ठ ३३३ से ३३७ तक साधु अमृतराम नवीन-वेदान्ती तथा पण्डित गोपालराव हरि का पत्रव्यवहार अवश्य पढ़िए।

लखनऊ आर्य्यसमाज के आरम्भिक झगड़े के विषय में पृष्ठ ३३८ से ३६६ तक के पत्र, जो उभय पक्ष ने श्री स्वामीजी के नाम लिखे, इस लिए दिए गए हैं कि पाठक यदि वर्त्तमान समय की अव्यवस्था को दूर करने के लिए कुछ शिक्षा लेना चाहें तो ले सकें।

इन पत्रों में पृष्ठ ३५६ पर की निम्नलिखित पंक्तियां कुछ विचार साध्य हैं। महाशय रामाधार बाजपेई ने एक स्थान पर अपने आर्य्यसमाज के अधिवेशन से उठ जाने का कारण यह बतलाया था कि उन का सन्ध्या का समय हो गया था। उत्तर में हरनामप्रसाद जी मन्त्री लिखते हैं:—
"और सन्ध्या वन्दन के विषय में तो समाज विषय भी अनेक प्रकार के धर्म्म सम्बन्धी देशोन्नतिकारक और परोपकारक होने के कारण न्यून नहीं वरन अधिक हैं और इस का प्रत्यक्ष प्रमाण स्वामीजी ही महाराज को देखिए।"

आर्य्यसमाज में इस प्रकार की अविद्या अब तक फैली हुई है जिस से बड़ी हानि हो रही है। स्वामी जी महाराज संन्यासी थे। संन्यासी का दिनरात ही स्वाध्याय में व्यतीत होता है। संन्यास का अधिकार ही तब होता है जब स्वभावतः ही दिनरात ओ३म् का ध्यान रह सके। संन्यासी सर्व बाह्य बन्धनों से मुक्त होता है

इस लिए उस के वास्ते कोई विशेष समय या नियम सन्ध्योपासन का नियत नहीं। किन्तु प्रत्येक गृहस्थ के लिए तो दोनों कालों की सन्ध्या ही सर्वोत्तम स्वाध्याय है। इसे ब्रह्मयज्ञ कहा है और पांचों महायज्ञों में इस का प्रथम पद है। इस समय भी आर्य्यसमाज में ऐसे उत्तर सुनने में आते हैं जिन से अपने कानों को दुःख पहुंचता है—"हम सन्ध्या से भी उत्तम काम कर रहे हैं।" क्या आज जो नास्तिकपन की सी लहर आर्य्यसमाज के किसी किसी विभाग में उठ रही है वह इसी अनियम का परिणाम तो नहीं? विचारशीलों को अवश्य सोचना चाहिए।

महाशय भोलानाथ जी मन्त्री आर्य्यसमाज बरेली के पत्र (पृष्ठ ३६७ से ३७१ तक) के साथ यदि ऋषि दयानन्द का चौबे कन्हैयालाल के नाम का पत्र (पृष्ठ ३८४, ३८५) मिला कर पढ़ा जाय तो पता लगेगा कि वर्णाश्रम धर्म्म के जिस उच्च शिखर पर ऋषि हमें ले जाना चाहता था अब तक भी हम उस से बहुत नीचे खड़े हैं।

प्रश्न स्पष्ट शब्दों में यह है—"क्या आर्य्यसमाज ने उस आदर्श तक पहुंचने के लिए, जिस को लक्ष में रख कर ऋषि

दयानन्द ने उस की बुनियाद डाली थी, कोई पग आगे उठाया है ?" ऋषि दयानन्द का लक्ष क्या था उन के निज कथित जीवन वृत्तान्त के अन्तिम शब्दों से भलीभांति प्रकट होता है-"ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि प्रत्येक स्थान में आर्य्यसमाज स्थापित हो कर मूर्ति पूजादि दुष्ट आचार बन्द हो जावें, वेद शास्त्रों का सच्चा अर्थ समझ में आवे और उन्हीं के अनुकूल लोगों का आचरण होकर देश की उन्नति हो जावे।" यह स्पष्ट है कि वैदिक ज्ञान का समझाना और उसी के अनुकूल आचरण कराने का प्रयत्न करना आर्य्यसमाजों के स्थापित किये जाने का उद्देश्य था; अर्थात् कर्म्म को ज्ञान के अनुकूल सांचे में ढालना प्रत्येक आर्य्य का धर्म्म है। क्या इस धर्म्म के पालन करने में प्रयत्न हो रहा है ? जितना प्रयत्न ज्ञान और क्रिया को अविरोधी करने में होगा उतनी ही आर्य्यसमाज की सफलता समझी जायगी।

वैदिक मर्य्यादा के अनुसार मनुष्य का अन्तिम उद्देश्य दुखों से छूट कर परमानन्द का प्राप्त करना है। उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वर्णाश्रम धर्म्म साधन हैं। कर्म्मकाण्ड का सार वर्णाश्रम धर्म्म का पालन है। इस लिए यदि आर्य्यसमाज ने वर्णाश्रम धर्म्म के पालन में कोई पग आगे बढ़ाया

है तो समझना चाहिये कि अपने लक्ष की ओर चल रहा है; अन्यथा उस की दशा शोचनीय समझी जायगी।

पहिले आश्रमव्यवस्था के सुधार की ओर दृष्टि देना चाहिए। बिना संस्कार के सुधार होना कठिन है, और सारे संस्कार आश्रम व्यवस्था के अन्तरगत हैं, इस लिए यदि हमारी आश्रम व्यवस्था सुधर न रही हो तो आर्य्यसमाज को अभी बाल्यावस्था में स्थित समझा जायगा।

पहिला आश्रम ब्रह्मचर्य है। क्या आर्य्यसमाज ने अपने गत ३३ वर्षों के जीवन में इस आश्रम के सुधार के लिए कुछ प्रयत्न किया है? इस प्रश्न का उत्तर स्पष्ट है। जिस वस्तु का अभाव हो उस का सुधार कैसे हो सकता है। गृहस्थ और संन्यास का आभासमात्र तो ऋषिदयानन्द के उपदेशों से पहिले भी विद्यमान था; इस लिए उन का सुधार हो सक्ता था। किन्तु ब्रह्मचर्य्याश्रम का तो नाटक भी उड़ चुका था, इस लिए उस के सुधार के कुछ अर्थ ही न थे। हां ब्रह्मचर्य्याश्रम को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता थी। इस समय ब्रह्मचर्य्याश्रम के पुनर्जीवित करने के लिए आर्य्यसमाजों की ओर से बड़ा प्रबल प्रयत्न हो रहा है। गुरुकुलों का स्थापित होना इस प्रयत्न का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

किन्तु फिर भी यदि गुरुकुलों के प्रबन्धकर्त्ताओं से पूछा जायगा तो वे बतलावेंगे कि केवल पाठशाला तथा आश्रम खोल देने से ब्रह्मचर्य्याश्रम का भविष्य नहीं सुधर सकता।

पैत्रिक संस्कारों का सन्तानों पर बड़ा असर पड़ता है। माता के तो सर्व स्वभावों का सन्तान में पुनर्जन्म होता है। आचार्य कुल की रक्षा का पूरा फल तभी प्राप्त हो सकता है जब कि गुरुकुलों में प्रवेश करने वाले बालक तथा बालिकाओं के माता पिता अपने आचरणों के सुधार की ओर दृष्टि डालें और अयोग्यता की अवस्था में सन्तानोत्पत्ति की क्रिया को ही पाप समझें। मेरा यह मतलब नहीं है कि वर्त्तमान गुरुकुलों में आचार्य, अध्यापक तथा अधिष्ठाता आदर्श पुरुष हैं। मैं जानता हूं कि उन में बहुत सी त्रुटियें हैं जिन के दूर हुवे बिना पूर्ण फल की प्राप्ति नहीं हो सकती। किन्तु यदि छात्रों के अन्तःकरणों में पैत्रिक संस्कार उत्तम जमे हुवे हों और उन के शरीर भी स्वस्थ ब्रह्मचारी माता पिता के अङ्गों के अङ्ग हों तो उन के तेज से उन के संरक्षकों के अन्तःकरण भी आप से आप शुद्ध होते जायंगे। परिणाम यह निकला कि जब तक ब्रह्मचर्याश्रम में प्रवेश करने वालों के पैत्रिक संस्कार शुद्ध न हों तथा उन के संरक्षकों के शरीर मन तथा आत्मा पवित्र न हों तब तक ब्रह्मचर्याश्रम

का सुधार कठिन है; अर्थात् गृहस्थाश्रम की शुद्धि पर ही ब्रह्मचर्याश्रम की स्थिरता का निर्भर है। जहां ब्रह्मचारियों की उत्पत्ति का श्रोत गृहस्थ है वहां आचार्य अध्यापकादि भी गृहस्थाश्रम में पूर्ण शिक्षा लाभ कर के ही ब्रह्मचारियों को संसार मार्ग के कंटकों से बचाने में कृतकार्य हो सक्ते हैं।

तब गृहस्थ पर ही ब्रह्मचर्याश्रम का निर्भर है इस में क्या सन्देह है, और इस में भी कुछ वक्तव्य नहीं कि गृहस्थ ब्रह्मचर्य से ज्येष्ठ आश्रम है। किन्तु मनु भगवान् इस को सर्व आश्रमों में ज्येष्ठ (बड़ा) बतलाते हैं। यह माना कि समय के क्रम से गृहस्थ का दर्जा वानप्रस्थ तथा संन्यास के नीचे दिखाई देता है किन्तु सारे आश्रमों का श्रोत होने से इसे ज्येष्ठ आश्रम बतलाया गया है। इस लिए इस की अवस्था के विचार से प्रथम अन्य आश्रमों की अवस्था पर थोड़ी दृष्टि डालनी चाहिये। वानप्रस्थाश्रम का इस समय सर्वथा अभाव है। गृहस्थ में आनन्द की इच्छा से लोग प्रवेश करते हैं। गृहस्थ स्त्री पुरुषों की भोग क्रियाओं के बाह्य चित्र को देख कर मोहित हो सौन्दर्य की तलाश में आंख मूंद कर वर्त्तमान प्रणाली का गृहस्थ भोगना आरम्भ करते हैं। ठोकर लगते ही आंख खुलती है; तब पता लगता है कि गुलाब के फूल के सौन्दर्य के साथ कांटे भी हैं जिन

से बचे बिना सर्व साधारण के लिए गृहस्थाश्रम नर्क धाम बन रहा है। जिन्हों ने अविद्यारूपी निद्रा को त्याग दिया और अपने धर्म को समझ कर मृग तृष्णारूपी सौन्दर्य का पीछा छोड़ दिया उन के लिए तो वही गृहस्थ स्वर्ग लोक बन गया और उस के कर्त्तव्यों को पालन करने में ही उन्हें शान्ति मिल गई। उन के लिये सम्भव है कि वे गृहस्थाश्रम की अवधि को पूरा कर के वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करें और अपने गृहस्थ के निरीक्षणों पर पुनः विचार कर के आगे चलने की तय्यारी करें। किन्तु जो पुरुष केवल सांसारिक सौन्दर्य-रूपी मृग तृष्णा के पीछे ही आतुर हो कर भाग रहे थे वे वानप्रस्थाश्रम में "लोहे के चने चबाने" कब आसक्ते हैं, वे सीधे सन्यासाश्रम की ओर दौड़ते हैं। इस लिए वानप्रस्था-श्रम को पुनर्जीवित करने के लिए भी पहिले गृहस्थाश्रम के सुधार की आवश्यकता है।

क्या संन्यासाश्रम की अवस्था ठीक है ? आर्यसमाज के सभासद् कृतघ्न नहीं हैं और इस लिये वे आर्य्यसमाजिक उन संन्यासियों की प्रशंसा करते हैं जो वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य्य करते रहे हैं वा अब कर रहे हैं। किन्तु क्या हमारे संन्यासी महात्मा स्वयम् इस बात को अनुभव

नहीं करते कि यदि वे आश्रमाताश्रम उन्नति करते हुये सच्चे ब्राह्मण बनने के पश्चात् संन्यास धारण करते तो संसार की भी भलाई होती। संन्यासी कर्म्मकाण्ड के सर्व बन्धनों से छूट जाता है। क्या उस प्रकार जैसे सिक्खों के गुरु "बन्धन तोड़" कर "निर्वान" हो गये थे? नहीं प्रत्युत उस प्रकार जैसे कि ब्रह्मवादियों ने वर्णन किया है। सूत्र, शिखा, सन्ध्या, अग्निहोत्र कोई बन्धन भी संन्यासी के लिये नहीं रहता। किन्तु क्यों? इस का उत्तर उपनिषदों में लिखा है:—

[१] सशिखं वपनं कृत्वा बहिः सूत्रं त्यजेद्बुधः।
यदक्षरं परंब्रह्म तत् सूत्र मिति धारयेत्॥

[२] बहिः सूत्र त्यजेद्विद्वान् योग मुत्तममास्थितः।
ब्रह्मभावमयं सूत्रं धारयेद्यः स चेतनः॥

[३] शिखा ज्ञानमयी यस्य उपवीतश्च तन्मयम्।
ब्राह्मण्यं सकल तस्य इति ब्रह्म विदोविदुः॥

[४] निरोद्धुक्ता ध्यान संध्या वाक्य काय क्लेश वर्जिता
संन्धिनी सर्व भूतानां सा संध्या ह्येक दण्डिनाम्॥

संन्यासी को शिखा सहित यज्ञोपवीत का सूत्र त्याग करने का क्यों आदेश है? इस लिये कि जिस मनुष्य को परमात्मा की सामीप्यता सर्व कालों में प्राप्त तथा ज्ञात

है, जिस के रोम रोम में ओ३म् रम रहा है, उस के लिये चितावनी के किसी चिन्ह की भी आवश्यक्ता नहीं। जिस का शरीर तो क्या, मन और आत्मा भी पवित्र हो गया हो और जिस के ब्रह्म रन्ध्र में ज्ञान का चक्र चल रहा हो उसे सूत के तागे तथा बालों के चिन्ह से सहायता लेने की क्या ज़रूरत है और जो क्षण क्षण में ब्रह्म के ध्यान में ही निमग्न रहने वाला, प्राणी मात्र को समदृष्टि से देखता हो, उसे काल विशेष में ध्यान लगाने की आवश्यक्ता क्यों ? और योगयुक्त संन्यासी को अग्निहोत्र का बन्धन तो बांध ही नहीं सक्ता क्योंकिः—

लघुत्वमारोग्यमलोलुपत्वं वर्णप्रसादं स्वर सौष्ठवं च ।
गन्धः शुभो मूत्र पुरीषमल्पं योग प्रवृत्तिं प्रथमां वदन्ति ॥

दुर्गन्ध को दूर करने के लिए वह यत्न करे जो दुर्गन्ध फैलाता हो। जिस के समीप दुर्गन्ध नहीं आ सक्ती उसे दुर्गन्ध के दूर करने के प्रयत्न की भी आवश्यक्ता नहीं।

क्या आज कल के संन्यासी स्वयम् न मान लेंगे कि ऊपर की कसौटी पर चढ़ने के योग्य वे नहीं हैं। जो सांसारिक पुरुषों से भी बढ़ कर धनोपार्जन में लगे हुए हों, और इस लिए जिन को राग द्वेष में विवश होकर फँसना

पड़े जो अज्ञान की निद्रा के वशीभूत होकर विषय भोग को ही आनन्द का साधन समझ रहे हों, जिन के मन और आत्मा तो दूर रहे, शरीर भी शुद्ध न हों क्या उन को शिखा, सूत्र अग्निहोत्र, सन्ध्यादि बन्धनों का त्याग करना योग्य है ? ऊपर के प्रश्न पर दृष्टि डालते ही ऐसे पुरुष, जिन के विषय में गुसांई तुलसीदास लिख गये हैं किः—

परहित हानि लाभ जिन्हकेरे । उजरे हर्ष विषाद बसेरे ॥
हरिहर जस राकेस राहु से । पर अकाज भट सहस बाहु से ॥

आर्य्यसमाज के संन्यासियों को मेरे विरुद्ध भड़काने का प्रयत्न करेंगे; किन्तु मैं इन महानुभावों को तनिक भी दोष नहीं देता। जब पांच सहस्र वर्षों से गिरते गिरते गृहस्थाश्रम रूपी सागर की दशा वह हो गई है जो किसी से छिपी हुई नहीं तो तीनों प्रकार की एषणाओं से सर्वथा न मुक्त होते हुए भी आज कल के संन्यास–वेषधारी जो कुछ सेवा धर्म्म की कर रहे हैं वह भी थोड़ी नहीं है । तब क्या सन्देह है कि जब तक गृहस्थाश्रम का सुधार न होगा तब तक संन्यासाश्रम भी जो सर्व आश्रमों को मर्यादा में रखने का साधन है, अपना कर्त्तव्य पालन करने में समर्थ न होगा ।

अन्तिम परिणाम यह निकला कि सर्वआश्रमों के सुधार का निर्भर गृहस्थाश्रम पर ही है और उस के सुधार के लिए आवश्यक है कि वर्णव्यवस्था की प्रणालि ठीक हो। पश्चिमीय देशों में जो आपापन्थ तथा नास्तिकपन की लहर उठ रही है और मनुष्य समाज को निगल जाने के लिए तय्यार है उसे निर्बल करने का सिवाय वर्णव्यवस्था की ठीक स्थिति के और कोई साधन नहीं है। तब क्या यह परिणाम निकालना कठिन है कि वर्ण व्यवस्था को उस की गिरी हुई अवस्था से जब तक न उठाया जायगा तब तक आर्य्यसमाज अपने उद्देश्य की ओर एक पग भी नहीं उठा सक्ता।

धर्म्म विषयों पर प्रमाणिक व्यवस्था की जैसी उस समय आवश्यकता थी अब भी वैसी ही है। शोक कि इन पत्रों के जो उत्तर ऋषि दयानन्द की ओर से दिए गए वह नहीं मिल सक्ते नहीं तो बहुत से सन्देहों की निवृत्ति आप से आप हो जाती।

खुन्नालाल विद्यार्थी का पत्र (पृष्ठ ३९९ तथा ४०० पर) केवल यह दिखाने के लिए दिया गया है कि

"तुकबन्दी का शौक" किसी विशेष जाति, पंक्ति वा आयु आदि की "मीरास" नहीं है।

खड्गज्ञान का नमूना एक पृष्ठ ५०१ वाले पत्र से भी मिलता है।

महाशय प्रभुदयालु का पत्र, पृष्ठ ४०२, ४०३, सिद्ध करता है कि इन महानुभावों का दर्शनों के आर्य्यभाषा युक्त भाष्य का परिश्रम ऋषि दयानन्द के सत्सङ्ग का ही परिणाम था।

पण्डित ज्वालादत्त के पत्रों से न केवल यह विदित होता है कि ऋषि दयानन्द के नाम से जो पुस्तकें प्रसिद्ध हैं उन में बहुत कुछ हाथ अन्य पाण्डितों का था, जिस के कारण उन ग्रन्थों में अनेक अशुद्धियां रह गई हैं; बल्कि यह भी पता लगता है कि इन लोगों के परस्पर के रागद्वेष तथा अन्तरीय कुटिल भावों के कारण भी उस महान आत्मा के उद्देश्य को बहुत कुछ हानि पहुंचती रही है। पण्डित ज्वालादत्त ने योग्यता कहां से सम्पादन की उसका पता ४१८ पृष्ठ से लगता है:—"अब मामा जी ने लिखा है कि तुम्हारा महाभाष्य हम भेजदेंगे। ग़लती जो आपने निकाली

मैं स्वीकार करता हूं, यह मेरा दोष है..........." मुंशी समर्थदान से इन की बनती ही न थी और दिनरात जले भुने हुए रहते थे। इस असन्तुष्टता के कारण इन्होंने और क्या अनर्थ करना चाहा था उस का वर्णन तब करूंगा जब मुझे शेष पत्र व्यवहार छापने का अवसर मिलेगा। इन लोगों की लीला का कुछ परिचय रायबहादुर पण्डित सुन्दरलाल के पत्र से मिलता है जो पृष्ठ ४२३ से ४२६ तक छपा है।

दानापुर के रामनारायणलाल का पत्र पढ़ने योग्य है, जिस से पता लगता है कि सं० १८८२ ई० में आर्य्य-सामाजिक पुरुषों में परस्पर का प्रेम बड़ा ही उत्साह जनक था। पृष्ठ ४३० पर कैसे मनोहर शब्द हैं! इस पत्र से यह भी ज्ञात होता है कि ग्रन्थकर्तृत्व की टांग आर्य्यसमाज के मेम्बर उसी समय तोड़ने लग गए थे। पृ० ४२९ पर जो ग्रन्थ संशोधन के लिए सभा का प्रस्ताव पेश किया गया है उस की आज भी वैसी ही आवश्यकता है जैसी उस समय थी।

द्वारिकानाथ का पत्र पृष्ठ ४३२ से ४३९ तक इस लिए दिया गया है कि ऋषिदयानन्द के धर्म्मप्रचार के गौरव को लोग समझ सकें। जहां राजों, महाराजों, सेठ साहू-कारों, धुरन्धर संस्कृत के पण्डितों तथा विदेशी विद्वानों में

दयानन्द के सिंहनाद ने हलचल मचा दी थी, वहां साधारण पुरुषों को भी विद्योन्नति के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तय्यार कर दिया था।

समाप्ति के समीप जो माई भगवती तथा लाला जीवन-दास के पत्र दिए हैं वे पहिले सद्धर्म्म-प्रचारक पत्र में छप चुके हैं। सब से अन्तिम पत्र मुन्शी समर्थदान जी के हैं जिन्हें केवल दिग्दर्शन मात्र समझना चाहिए। मेरे पास अब तक इतने पत्र बचे पड़े हैं कि यदि उन्हें छपाया जावे तो ५०० पृष्ठों की एक और पुस्तक तय्यार हो जावे। वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धकर्त्ताओं के लम्बे पत्र व्यवहार के अतिरिक्त बहुत से अन्य उपयोगी पत्र बच रहे हैं। इन सब के अतिरिक्त उन अंग्रेज़ी पत्रों के अनुवाद भी छपने चाहिएं जो वैदिकमेगेज़ीन में निकल चुके हैं। किन्तु इन सब पत्रों के मुद्रित करने का विचार उस समय तक रोकना पड़ता है जब तक यह पता न लगे कि जो पुस्तक मैं आज समाप्त कर के सर्व साधारण के हाथों में देने लगा हूं उस का कुछ आदर होगा वा नहीं।

इस प्रकार की पुस्तकों का छपना दो तरह ही हो सक्ता है। या तो काफ़ी ग्राहक बन जावें जिन के अग्रिम

भेजे धन से छपाई का काम हो सके, वा कुछ उदार पुरुष छपाई के लिए धन देदें। पहिले ढङ्ग में क्लेश बहुत रहता है जिस के कारण मैं उस को वर्त्ताव में नहीं लासक्ता। दूसरे ढङ्ग पर काम हो सक्ता है। यदि एक वा कई भद्र पुरुष मिल कर ५००) जमा कर दें तो पत्र व्यवहार का दूसरा भाग भी छप जायगा।

ग्रन्थ की समाप्ति पर मुझे अपने प्रिय भाई पण्डित ब्रह्मानन्द को धन्यवाद देना है जिन्हों ने ग्रन्थ के संशोधनादि में मुझे सहायता दे कर वाधित किया।

शान्ति भवन।
जालन्धर शहर।
प्रविष्टा १७ फाल्गुन सं० १९६६ वि० } मुन्शीराम जिज्ञासु

श्रीमत् परमहंस परिव्राज का चार्य्य श्री १०८ स्वामी दयानन्दसरस्वती जी महाराज की सेवा में श्रीस्वामी आत्मानन्द स्वरस्वतीजी के पत्रः—

(१)

२३ जुन फिलोर

श्री स्वामीजी नमस्ते

विदित हो कि दो (२) मास हुए मे शमलः पर्वत पर गया था वहां बहुत ज्वर और खांसी होगया एक मास तक अन्न नही खाया बहुत दुःखी होकर नीचे को चला आया अंबला से लाहोर को जाता था फलोर के असटेशन पर बहुत दुःखी होगया तब असटेशन वालों ने हसपताल मे पहुंचाया यहां ज्वर वा खांसी जाती रही है रोग सब जाता रहा है अब आपकी कृपा अछा हुं शरीर मे अशक्ति है आप अपना विस्तारपुर्व समाचार लिखना लफाफे मे पत्र भेजना

द: आत्मानन्द

(२)

ओ३म–

माननीयषु

सविनय निवेदन मिदम

विदित हो कि में अप्रेल मे शमलः पर्वत पर गया था वहां आर्य्यसमाज मे एक मास तक रहा परन्तु शरीर दुःखी होने के कारण निचै आकर फिलौर मे एक मास तक रहा अब अच्छा होगया हुं और शमलः आर्य्यसमाज*........ ने दश १०) रुपया मेरे*....ने को भेजे*........मे शमलः*....को जाता हुं आज कल कालिका *...................र रहा हुं यहां पर लाला र*........... गोपीनाथ के प्रबन्ध से आर्य्यसमाज*........है और अब यहां से में कसोळी आ*...माज*....जाकर उपदेश करुंगा फिर शमलःजाबुंगा ६ अगस्त को शमलः की समाज का प्रथम वर्ष का उत्साह है और एक मास तक इस पर्वत में रहुंगा फिर नीचै आकर देखा चाहिये किस ओर जावुंगा और अप्रेल मासे मे इसी देश मे उपदेश कर रहा हुं आपकी कृपासे कंई स्थानो में आर्य्य धर्म्म मे कंई मनुष्य प्रवर्त हुए हैं यह संक्षेप से पत्न लिखा है पुनः जब

---

* जहां जहां विन्दियां अर्थात् लीडर हैं वहां वहां असल पत्र फटा हुआ है अर्थात् उन भागों को दीमक चाट गई हैं।

(२)

कृपा-पत्र आपका आवेगा तब विस्तारपुर्वक अपना वृतान्त लिखूंगा अब कृपा करके शीघ्र ही कृपा पत्र विस्तारपुर्वक अर्थात कोन २ आपके पास हैं और जोधपुर कब तक बिराजमान रहोगे।

अब कृपा करके शीघ्र ही इस पत्र का उतर निचे लिखे पतः पर भेजना

स्वामी आत्मानन्द सरस्वती
आर्य्यसमाज मुकाम शमलः पहाड़

लाला ठाकरदास डाक्टर तथा पंडित परमानन्द बाजपई के प्रबन्ध से स्थापित हुआ है आप की कृपा चाहिये आर्य्यसमाज प्रति नगर ग्राम स्थापित होजावेगी यथा शक्ती उपदेश करता रहूंगा

१० जोलाई सं ८३ ई **हः आत्मानन्द सः**

---

(३)

ओ३म्

श्रीयुत सर्वोत्तम माननीय स्वामी जी

नमस्ते

महाशाय–

विदित हो कि इस पत्र से पहिले १० जोलाई को मेने अपना वृतान्त लिख कर भेजा है सो आप के चरणों मे पहुंचा होगा परन्तु आज

विशेष आनन्द की बात हुई इस वास्ते पुनः निवेदन करता हुं आनन्द की बात यह है कि पण्डित सुन्दर लाल जी राय बहादर शमले ....*र में........*ले हैं और आर्य्यसमाज से........*था ....र्म्म के प्रचार करने के विषय बहु*...............हुई परन्तु वह आज ही यहां से चले गये........*इस वास्ते बहुत सत्-संग न हुआ इनकी मैं क्या प्रशंसा करूं वह एक सज्जन पुरुष है और आर्य्यसमाजो के हितकारी हैं और आपके सच्चे भक्त हैं और मेरे को बड़े प्रेम से और निर्भिमान होकर सत्कार से मेले हैं मैं आशा रखता हुं कि ऐसे पुरुषों से आर्य्यधर्म्म की उन्नति होगी और आपकी कृपा से अब मेरा शरीर अच्छा अब रविवार तक यहां उपदेश करके फिर जावुंगा एक मास तक शमलः आर्य्यसमाज में उपदेश करूंगा पश्चात नीचै उतर आवुं प्रथम करनाल जाकर फिर कही जावुंगा अब आप अपना....*कृप का........*विस्तारपुर्वक मंगल....*समाचार........*कि कोन २ आपके पास हैं और योधपुर

---

* जहां जहां विन्दियां अर्थात् लीडर हैं वहां वहां असल पत्र फटा हुआ है उन भागों को दीमकें चाट गई हैं ।

मे कब तक आजेंगे और भीमसेन के होने से आपके पास कोई नही रहेगा अब शीघ्र ही कृपा करके कृपा पत्र लिखना

१२ जोलाई स० १८८३

ह: आत्मानन्द स:

कालका जिला शमल:

और यहां से लाला खोशीराम मंत्री आर्य्यसमाज की नमस्ते पहुंचे इसी के यतन से यहां आर्य्यसमाज स्थापित हुई है

श्रीमत् परमहंस परिव्राज का चार्य्य श्री १०८ स्वामी दयानन्दसरस्वती जी महाराज की सेवा में श्रीस्वामी ईश्वरानन्द सरस्वती जी के पत्रः—

(१)

ओ३म्

सिद्धश्री परमपूजनीय परमहंस परिव्राजकाचार्य्य असमद् गुरु-चरण कमलेषु निवेदन मिदम्

निवेदन आप से यह कीया जाता है सो मालूम होय अब में सहर पानीपत मे व्याकरणाऽष्टाध्यायी पढता हूं ओर सहर हंसार में उक्त पण्डित के पास पढने का आप

से कही थी सो पंडित वहां पर नही है सो हे भगवन् जरूर जोधपुर के वास का समाचार सहर पानीपत मे बाज़ार बजाजा दुकान कन्हैयालाला चिरंजीलाल की पर जरूर हस्ते रामानंद जी से भिजवा देना जी

श्रीयुत मद्रासानन्द ब्रह्मचारी जी को वहूधा नमस्ते

आ० व० ११ ईश्वरानन्द *

---

(२)

॥ ओ३म् ॥

सिद्ध श्रीसर्वोपमा योग्य परमपूजनीय परमहंस परिव्राजकाचार्य्य सद्धर्मात्मा परमदयालु सत्योपदेश सर्वजन हृदेषुप्रकाशक श्रीमान् ब्रह्मवित सर्वउपमायुक्त श्री १०८ श्री स्वामीजी श्रीमद्यानन्द सरस्वतीजी चरण कमलेषु प्रार्थनां निवेदयामि

हे स्वामीन् एक कार्ड आप के चरणकमल में निवेदन कर चुका हूं परन्तु उस का मेरै को प्रत्युत्तर नही मिला हे गुरो आप जेष्ट वदी १० शुक्रवार को सहर जोधपुर में विप्रवेश किया तथापि एक समाचार पत्र मुज को नहीं मिला हे भगवन

* इस कार्ड पर डाक घर का मोहर १ जूलाई का है।

परमपूजनीयमदीश्वर जरूर रामानन्दजी के हस्त पत्र भिजवा देना चाहिये और मैं अब आप की आज्ञानुस्वार अवश्यमेव वर्तूंगा कदापि आप की आज्ञा से बाह्य कभी नहीं चलूंगाजी और प्रयाग में जो मेरे सैं व्यवहार व्यतिक्रम होगया था सो तो वार्ता अब सो २ कोश पर गई अब तो आप की कृपापूर्वक मैं कछू कहू वा चाहता हूं आगे प्राब्धानुकूल वार्ता है और हे भगवन् आप के पास तैं जो मनैं लेणा था सो लेलिया अब मैं आप के चरणकमल का आसरा रखता हू जी और मेर को सहर पानीपत में लोक पूछते हैं कि तुह्मारा क्या धर्म्म है मैनै उत्तर दीया हमारा तो वैदिक धर्म्म है

फेर लोग पूछने लगे तुह्मने धर्म को जान लिया अथवा नहीं मनैं उत्तर दिया कि हां मनै धर्म को जाना है फेर विद्या काहे को पढ़ते हो उत्तर व्यवहार पारमार्थिक के सिद्ध्यर्थ। प्रश्न तुह्म क्या करोगे परमार्थ को सिद्ध करि के उत्तर त्रिविध दुःखूं से छूट कर अनतानन्द की सिद्ध्यर्थ। प्रश्न भला तुह्मारा मत किस ने चलाया है उत्तर० मत्त २ असा उच्चारण नही करना मत संज्ञा तो मतवारे की औ मतवालों की है जो मद्य आदिकों से मत सिधि होता है (आपः विदुः। ब्रह्म। जना।) धर्म कहो तुह्मारा क्या धर्म है। उतर. असत्य के पक्ष का सर्वथा त्याग करना औ सत्य का पक्ष कभी नही छोडना और ईश्वर की

आज्ञा का यथावत पालन करना है यह धर्म कहलाता है सो भगवन् कुतरकी लोग वहूत है परंतु मेर को लोग वहूत चाहत्ते हैं।

अष्टाध्यायी वेदाङ्गप्रकाश सहीत अध्ययन कर्ता हूं हंसार में जो पंडित शाला पढाते थे सो अव सहर अंवाले मैं पढाते हैं १ पत्र जरूर भिजवायोजी रामानंदजी के हस्तै

श्रीयुत रामानन्दजी ब्रह्मचारीजी को मेरी वहूधा नमस्ते पहूचै चिठी जरूर भेजीयोजी रामानंदजी आप से प्रार्थना करता हूं कि समाचार की पत्री जरूर भेजीयो जी।

ठिकाना चिठी भेजने का।

जिला करनाल तसील थाना पानीपत वाजार वाजाजा मैं दुकान चिरंजीवलाल कन्हैयालाल की पर।

(ईश्वरानन्द)

(पानीपत मैं) सँवत् १९४० आषाढ शु—४

---

(३)

॥ ओ३म् ॥

सिद्धश्री परमपूजनीय परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य श्री १०८ श्री स्वामी जी श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चरण कमलेषु

पापक्षयार्थ निमित्त केन प्रार्थनां निवे....*....(प्रार्थना आप *............कर्ता हूं कि पत्र दोय भेज चुका हूं परन्तु अव तक समाचार पत्न मेरे को नही प्राप्ति भया सो हे भगवन् समाचार पत्न जोधुपुर का अवश्यकता से ही देना उचित ह हे दयानिधे क्या एक पत्र द्वारा भी मेरे को कृतार्थ न करोगे आपको अवश्य ही कर्तव्यता है कृतार्थता की

चिठी भेजैने का ठिकाना जिला करनाल तसील थाना पानिपत मैं बाजार वजाजा मैं दुकान चिरंजीवलाल कन्हैलाल की पर ईश्वरानंद को मिलै

१ जोधपुर का निवास का समाचार

२ और रामानद जी कहां....पाय कै मि

३ ओर कोंन से रोज........*........और ऋग्वेद का कोनसा *............होता है ।

अष्टाध्यायी का वहूत अच्छा वेदाङ्गप्रकाश सहीत पाठ हो रहा है ओर संधिविषय तो समाप्त हो गया अव शीघ्र ही उपदेशाधिकारी हो जाउगा महाभाष्य विवरण और कैयठ सहित मगवाय लियी है रुपये १८

श्रीयुत ब्रह्मचारीजी रामानन्दजी को वहूधा नमस्ते अषाढ़शुदी १०

---

* जहां जहां बिन्दियां अर्थात् लीडर हैं वहां वहां असल पत्र फटा हुआ है अर्थात् उन भागों को दीमकें चाट गई हैं।

(४)

॥ ओ३म् ॥

सिद्ध श्री परमपूजनीय परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ श्री स्वामी जी श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चरणकमलेषु निवेदनमिदम्

निवेदन आप से यह विदित होय पण्डित मेर को वहूत श्रेष्ठ मिला है जी व्याकर विद्या में पूरण गति है दयालु और धार्मिक भी मालूम होता ह भीक्षा मांग खाता हूं लोग पानीपत के मुज को चाहैते हैं ओर मेर को आप दया दृष्टि से कछू आज्ञा कर दीजिगा जपनेमतपदानादिकू कि आज्ञा दीजियेगा

रामानंदजी व्रह्मचारी जी को बहूधा नमस्ते संवत् १९४० आ शुदी १३ (ईश्वरानन्द) *

---

(५)

ओ३म्

सिद्धिश्री परमपूज्यनीय परमहंसपरिब्राज्यकाचार्य बर्य्य श्री १०८ श्री स्वामी जी श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चर्ण कमलेषु निवेदनमिदम्

निबेदन आपसे यह है के जो प्रथम पत्र आप के पास भेजा

* इस कार्ड पर डाक घर का मोहर १८ जूलाई का है ।

था उसमें पुस्क्तों के नाम भ्रम से कछू अधिक वा न्यवन लिखे गये थे सो उक्त पुस्तक श्रीमानों को भी प्रकट हो जावें ऋग्वेदादी भाष्यभूमिका पुस्तक २ वेदांत ध्वांत निवारण ४ पञ्चमहायज्ञ बिधी ४ आर्य्यदेशरत्नमाला ४ सत्यार्थप्रकाश के अंक भी अपनी दयादृष्टी पूर्वक भिजवा देना चाहियें जी उक्त पुस्तकों के दाम वैदिक यन्त्रालय प्रयाग में श्रीयुत बाबू ज्वालाप्रशाद भेजा कैरेंगे तथा ऋग्यजू: के भी अंक भिजवा देने चाहियें जी उक्त रीति से दोनों वेदों के भी दाम उक्त बाबूजी भेजा कैरेंगे ॥ ठिकाना शहर पानीपत ज़िले करनाल शहर पानीपत में दूकान लाला चिरंजीलाल कन्हैयालाल बज़ाज़ की पर (पानीपत) ईश्वरानन्द सरस्वती सम्वत १९४०आ०शु० शुक्रवार ॥

गोकरुणानिधि की २ वर्णोच्चार शिक्षा १ संस्कृतवाक्य प्रबोध १ अव्ययार्थ १ सन्धिविषय १ गणपाठ १ धातुपाठ १ और जो नामिक से आदि लेके शेष दामों में पुस्तक आवती हों तो श्रीमानों को उचित है कि अपने क्रिपापात्र कि तर्फ भेज देवैं और उक्त दामों से किराया भि पुस्तों कों का विडा जाय

ईश्वरानन्द सरस्वती का श्रीयुत रामानन्द ब्रह्मचारीजी वहुधा नमस्ते

पानीपत जिला करनाल

वावू ज्वालाप्रसाद का श्रीमानों के चरणकमलेषु वहुधा नमस्ते पहुंचे ?

---

(६)

॥ ओ३म् ॥

सिद्ध श्रीपरमपूज्यनीय परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ स्वामीजी श्रीमद्दनन्द सरस्वतीजी चरणकमलेषु वहूधा नमस्ते समाचार सहर पानीपत के निवासकारियों का प्रश्न० सहर पानीपत के लोग ऐसा प्रश्न कर्ते हैं कि तुम्हारा धर्म क्या है और किस की सम्मति पूर्वक आचरण धर्म के कर्ते हो (उत्तर) (हमारा धर्म वैदिक है) और जो पूर्व सृष्टि में ब्रह्मा आदि महर्षि हूये थे जो कि वेद द्वारा ईश्वराज्ञा के पालक और सकल जगद्धितैशी थे सो अव तक सर्व मनुष्यों को बिदित ह कि चतुर्भिः वेद के ज्ञाता ब्रह्मा जी हूये हैं अतएव ब्रह्मादि पूर्णाप्तों की सम्मतिपूर्वक आर्य्य लोगों का धर्म्माचरण (आज) प्रयन्त सनातन चला आया है (अन्यथा नहीं) पुनः उक्त लोगों का प्रश्न० वैदिक धर्म क्या है (उत्तर) ईश्वरोपासना वेदाध्ययन सत्यभाषणादि कर्मों से शरीर कि आयु को व्यतीत करना होता है और आचार्य्य पितृ आदिकों को स्वपुरुषार्थ से संतुष्ट करना होता है इत्यर्थः ।

(उक्त पोपों के पुनः प्रश्न) उक्त मनुष्य यह प्रतिपादन कर्ते हैं प्रथम मूर्तिपूजन का अधिकार वेद प्रतिपाद्य है तुम कैसे मूर्तिपूजा का निषेध कर्ते हो देखो शङ्कराचार्य्य जो थे मूर्तिपूजा

को कही भी खण्डन नहीं किया किन्तु सर्वथा मण्डन करणे में चरितार्थ हूये हैं क्या शङ्कराचार्य्य वेद के ज्ञाता नही थे जिन्होंने मूर्तिपूजन को कहिं भी खण्डन नहीं किया तुम्हारे स्वामी जी वेद के कोनसे मन्त्र से मूर्तिपूजा खण्डन कर्ते हैं सो कहो (उत्तर) नतस्यप्रतिमाअस्ति इत्यनेन मंत्रेण मूर्तिपूजानिषेधेत्यर्थः ।

(पूर्वोक्त पोपों का पुनः प्रश्न) जो लौकिक धर्म ह सो वेदान्तरङ्ग है या वहिरङ्ग है जो वेद वहिरङ्ग लौकिक व्यापार को स्वीकार करोगे तो महद्दूषणापत्ति जावेगी क्यूंकि जितने शरीरं का व्यापार का परिणाम है सो सर्व वेद प्रतिपाद्य है यातैं वेदान्त रङ्ग है लौकिक नहीं यदि लौकिक हो तो वेद वहिरङ्ग है तद्यपि वेद विरुद्ध ह इस रीति से सर्वथा त्याज्यनीय है और वेद में लोक लोकान्तर की प्राप्ति निमितक जो कर्म उपासना किये जाते हैं सो प्रवृत्ति के हेतु जो कर्मोपासना तिन का वेद में सर्वथा त्याज्यही विदित है वेद का सिद्धान्त प्रवृत्ति में कहीं भी नही है किन्तु निवृत्ति मार्ग द्वारे जीव ब्रह्म की अभेदान्वय मैंहि तात्पर्य्य है तुम्ह किस प्रकार वेदों का आशय प्रवृत्ति मार्ग में लगाते हो और वेदान्त सूत्र जोकि व्यास भगवान् प्रणित हैं तिन सूत्रन का भि निवृत्ति मार्ग हि में तात्पर्य्य है और व्यास भगवान् के जो मुख्य शिष्य जैमिनि थे तिन्होंने पूर्व मिमांसा नाम करिकशास्त्र बनाया तिस शास्त्र विषै जैमिनिमुनिजी ने कर्म्म को प्रधान मान्या है परन्तु

प्रवृत्ति मार्ग को खण्डन करिके निवृत्ति हि मार्ग को मुख्य प्रतिपादन किया है याते ऋषि मुनि प्रणित दश उपनिषत् तिन का भि केवल निवृत्ति ही में तात्पर्य्य है प्रवृत्ति मार्ग में किसी उपनिषत् का तात्पर्य्य नही है ।

ऐसे २ प्रश्न वहूत्से पोप लोग करत हैं मै तो सर्व का प्रहार कर देता हूं जी—

और अष्टाध्यायी अध्ययन वेदाङ्गप्रकाश सहित करता हूं ।

व्याकरण को खूब जिह्वाग्र या पत्रस्थ अवश्य ही करूंगा जी

श्रीयुत् परमसतकाराधिकारी विद्वज्जन् श्रीमद्रामानन्द ब्रह्मचारी जी योग्य भिक्षु ईश्वरानन्द का वहुशः नमस्ते विदित हो आग पत्र आप का आया समाचार मेर को आप का ज्ञात हुवा आप का पत्र पठन कारिके मैं वहुत प्रश्न हूवा जी दयादृष्टि पूर्वक पत्र देते रह्या करो मेरे पास पत्र भेजने ठिकाना ज़िला करनाल तहसील थाना पानीपत में वाजार वजाजा में दुकान चिरञ्जीवलाल कन्हैयालाल की पर पहुंचे ।

भवच्चरणकमलेषु पत्रमिदम्—

ईश्वरानन्देन लिपिकृतम्

(संवत् १९४० श्रा० व० ८ वार शुक्र)

(७)

॥ ओ३म् ॥

सिद्धिश्री परमपूज्य परमहंस पा ज वर्य्य श्री मच्छुद्धस्वरूप चिदाघ न सकल जगद्धितोपकारक मूर्तिषु स्वा श्रम धर्म्म मर्य्यादा पालन तत्परेषु श्री १०८ श्री स्वामी जी श्री-मद्दयानन्द सरस्वती जी चरण कमलेषु ईश्वरानन्द का मनसावाचा कर्मणा हस्ताभ्यां वहुशः नमस्ते

समाचार आप से विदित हो कि आप करूणा पूर्वक पत्र स्विकार किया करो हे परम कारूणिक ववासीर की दवाई जरूर मेरे प्रति पत्र द्वारै प्रकट कियी जाय तो श्रीमानों का बडा भारी ही उपकार है

समाचार दूसरा एक वावू सहर मुरादावाद के पास का सहर पानीपत में नौकर है सो वः पुस्तक मगवाया चाहता है रूपये किस प्रकार भेजे जांय सो जरूर लिखो जो मणीआडर करवा के भेज देवैं या और प्रकार से आप के चरण कमल में जिस रीति से रूपये पहूच जाञ सो लिखो

श्रीयुत मद्रामानन्द व्रह्मचारी जी योग्य ईश्वरानन्द की वहूशः नमस्ते क्या रामानन्दं जी आपने पत्र लिखने की मेरे प्रति प्रतिज्ञा करी थी सो कहां गयी सहर के लोगों ने मिल के डाकतर से व-वासीर के मसे कटाय दीये और दश रूपये पञ्चों ने हकीम को

दीये लौन मिरच खट्टाई मिट्ठा दुग्धादि वगैरे सब खाने पीने की वस्तू वन्ध कर दी सो हे भगवन् अब तक कछू आराम नहीं हूवा है।

रूपय भिः खरचना मेरे अनुकूल है जो रूपयों से औषधी वन सकै तौ सो भिः लिखो और दूसरा कोई और साधन हो सोभि आपणि करूणा पूर्वक लिखना जी रामानन्द जी यह लिखने की प्रार्थना आप से करी जाती है श्री स्वामी जी से श्रवण करिके जरूर लिख भेजना जिला करनाल तसील थाना सहर पानीपत वा-जार वजाजा चिरंजीवलाल कन्हैयालाल की दुकान पर

पठन पाठान अच्छा होता है जरा दुःख के सम्वन्ध से कम पढता हू जी

संवत् १९४० श्रा० शु० ०९ **ईश्वरानन्द**

---

(८)

ओ३म्

सिद्धश्रीमत् कृपासिन्धुष्वार्त्तिध्वान्तर बिष्वलंभूरिशोमत्प्रणामाः स्युर्गुरूपाद युगोष्वितः श्रीमान् परमपूज्यनीय श्री मत्परमहंसपरि-[व्राजकाचार्य्य वर्य्य श्री स्वामी जी श्री १०८ जगद्गुरू श्रीमद्दयानन्द

सरस्वती जी चरण कमलेषु मनसावाचा हस्ताभ्यामुक्त चरण कमलेषु वहुशः नमस्ते

हे भगवन् समाचार आप से विदित हो १) रूपये के टिकट इस पत्र के साथ भेजे जाते हैं श्रीमानों को पत्र सहित मिलैंगे सो हे स्वामीन् आप शीघ्र ही १) रूपये कि पुस्तक जिला करनाल तहसील थाना सहर पानीपत में बाजार बजाजा में दुकान लाला चिरंजीवलाल कन्हैयालाल कि पर भेजैं

उक्त पुस्तकों के नाम

१ सन्ध्या कि पुस्तक
२ वेद विरूद्ध मत खण्डन कि पुस्तक
३ आर्य्यदेशरत्नमाला कि पुस्तक
४ वेदान्त ध्वान्त निवारण कि पुस्तक

हे कृपानिधे हमरा पठन पाठन का अनुष्ठान शीघ्र हि पूरा होय जाय हे परम कारूणिक हम लोगों का व्याकरणादि अनुष्ठान निरविघ्नता से समाप्त हो जाय तो वहूत श्रेष्ट है हे दयानिधे मेरा चित्त निस दिवस शरीराऽऽयु पर्यन्त श्रीमानों के चरण कमले में हिं बनारह इत्याभिवादन मिदम्

उक्त पुस्तकों का डाक मसूल सहर पानीपत में दिया जायगा

बाबू ज्वालाप्रसाद को अध्ययन करवायि जांवेंगी रहनें वाले सहर धनौरा के जिला मुरादाबाद। श्रीयुत रामानन्द ब्रह्मचारी जी से ईश्वरानन्द का वहुशः नमस्ते

संवत् १९४० श्रा० शु० ७ (**ईश्वरानन्द सरस्वती**)

---

(९)

ओ३म्

सिद्धिश्री परमपूज्यनीय परमहंसपरिव्राजकाचार्य वर्य्य श्री स्वामी जी १०८ श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चरण कमलेषु निवेदनमिदम् निवेदन आप से यह कि एक साधु आप के समीप दर्शनार्थ के निमित्त आवता है सो उक्त महात्मा के मन में यह विदित्त होता कि पुनः संस्कार करवाके श्रीमानों के चरण कमल में सदैव बना रहूं या अभिप्राय तें यह पत्र चरित्तार्थ हो ओर वहूत सा वेद्दाऽध्ययन पर आस्तिकपना रखता है

उक्त महात्माओं का ना विशुद्धानंद सरस्वती •

श्रीयुत रामानन्द ब्रह्मचारी जी योग्य ईश्वरानन्द सरस्वती का वहुशः नमस्ते

संवत् १९४० श्रा० शु १४ **ईश्वरानन्द सरस्वती**

---

(१०)

॥ ओ३म् ॥

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य वर्य्य स्वाश्रम धर्म मर्यादा परिपालतत्परेषु श्री १०८ श्री स्वामी जी श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चरण कमलेषु प्रार्थना तथा निवेदन मिदम् ।१। हे गुरो आप को विदित हो कि मेरा रोग श्रीमानों की पूरण कृपा सुदृष्टि से गुप्त हो गया है ।२। आजकाल विद्याभ्यास सुविचार श्री मच्चरण कमलों मे परम प्रीति का होना सो कुछ श्रेष्ट प्रारब्ध फल की सहाय पहुंची है ।३। सहर पानीपत के पोपों का समाचार ।४। पोप लोग इन्द्र वरुणाग्नि सूर्य्यादिकों का परस्पर वाद विवाद वेद की सम्मति से मूर्तिमानों का कर्ते हैं ।५। कि इन्द्र स्वर्ग मे रहता है और अग्नि ब्रह्मलोक अर्थात् ब्रह्मा के पास रहता है और सूर्य्य लोक तो सर्व मनुष्यों को प्रत्यक्ष हि विदित है ।६। सम देव देहधारी हैं ॥ इन्द्र वरुणाग्नि सूर्य वृहस्पति विष्णु वायु शिव ब्रह्मा लक्ष्मी सावित्री सरस्वती गणेशादि देवों की मूर्ति वेदादि सत्य शास्त्रों मे अनादि चली आती हैं ।७। उक्त पोप लोग कहते हैं कि तुह्मारे स्वामी जी मूर्तिपूजा को क्यूं निषेध कर्ते हैं सो कहो ॥ इन सब वार्ताओं के विषय में मैं नें ओर श्रीयुत. वावू ज्वालाप्रसाद जी ने पोपों का मत खण्डन किया ।८। मृच्छिला धातु दार्वादि मूर्तावीश्वर बुद्धयः क्लिश्यन्ति तपसा मूढाः परांशान्तिन यान्तिवै

॥ दोहा ॥ जो नर पूजहिं काष्ट पषाना ॥ सो उन से हैं अति अज्ञाना।९। पोपों ने वहुत सा गडवड मचाया परंतु श्रीयुत चौधरी चिरंजीवलाल तथा श्रीयुत वावू ज्वालाप्रसाद जीने कायिएक पोपों को शिक्षा सहित वाक्यूं से चुपचाप करि दिये हैं और यह भी विदित कर दिया है कि कोई पुरुष श्रीयुत परमपूज्य श्री जगद्गुरू श्री स्वामी जी की वार्ता कहैगा या काई ईश्वरानन्द सरस्वती को स्वपीडा से क्लेशित करैगा तो सरकार कंपनी की कच:री में हम लोग तुह्म को दंडाधिकारी कारवा देवेंगे यातैं तुह्म सव लोकों को उचित ह कि वेद के अनुकूल हो के वार्तालाप करो सो हे परमपूजनीय परम सत्य गुरू आपके चरण कमलो की दया ईहां भी छाय गई है

मेरे पर भवच्चर कमलो की धूरि स्वप्न में वर्षि है सो मैंने खूव स्नान किया ईतनें मैं मेरे नेत्र खुल गये भाद्र पद वारस के रोज स्वप्न हुआ और त्रयोदशी के रोज पत्र आप के चर कमलों में भेजा गया भादवा वदी १३

ईश्वरानन्द सरस्वती सहर पानीपत जिला करनाल तसील थाना सर पानीपत उक्त पत्ते से जव कहीं यात्रा की त ।री होय तव एक पत्र मुज को भी श्रीमानों की यात्र विषय का मिलै

श्रीयुत रामानन्द व्रह्मचारी जी से ईश्वरानन्द का वहुधा नमस्ते

संवत् १९४० भा० व० १३

ईश्वरानन्द सरस्वती

(११)

॥ ओ३म् ॥

सिद्धि श्री सत्कृपासिन्धु प्यार्त्तिध्वान्तरविष्यलम्भूरि शोमत् प्रणामा:स्युर्गुरुपादयुगे ष्वित: ॥ श्रीमत्परमंहसपरिव्राजकाचार्य्य वर्य्य श्री स्वामी जी १०८ श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चरणकमलेषु वहुशः नमस्ते ॥

समाचार स्वचरण कमलेषु विदिहो पुस्तक महामाष्य का मैनें १८) रुपयों से ल्यी थी सो मेरे पास तैं जाति रही ॥ जिला सिरसा ग्राम फतियावाद का विद्यार्थी मनोर्मा का पढने वाला था सो चोर के ले गया और सन्धि विषय तथा नामिक को छोड कर वेदाङ्ग प्रकाश भि महाभाष्यके साथही ले गया ओर कभी २ यह कहा कर्ता कि मै सहर वीकानेर जाउंगा सो हे स्वामीन् आप से वीकानेर तो कछु दूर नही स्यायत पुस्तक मिलही जाय तो मगधीश श्रीयुत ज्ञानानंदजी से कह कर पुस्तक की खवर सार जरूर मंगवायो जी

शरीर से काल था ॥ मुख पर माता के रण थे ॥ दक्षिण पैर से कछू लंगड़ाता चलता था ॥ नेत्र वहुत वड़े २ थे ॥ नाम संज्ञा पोप की विंझा कह कर वतलाता था संवत् १९४० भाद्र-पद शुदी तीज को पुस्तक लेगया पोप लीला समाप्त मिति

श्रीमानों को विदित हो कि संधि विषय और नामिक तथा

वृद्धिरादैच् से ले के मुखनासिकावचनोऽनुनासिक ॥ १ । १ । ८।
के सूत्र तक भाष्य किया और उक्त दोय पुस्तक समाप्त हुये २)
अब इन्होंसे अगाड़ी सर्व शक्तिमान् जगदीश्वर तथा हे परमपूज्य
परमकृपालु परमैश्वर्य्यवान् । वेदविद्याद्वारैसनातनधर्मस्थापिता-
धिष्ठान आप की अत्युत्म करुणा से मेरा सब काम सिद्ध होता है
परन्तु इस काल में ऐसा प्रत्यवाय पड़ा है कछू लिखने के योग
नही पठन पाठन विषय पुस्तक विना सर्व बन्ध है आप आज्ञा देवो
तो दीक्षतकृत सिद्धान्त कौमुदी पुनः प्रारंभ कर दूं वा नही
जैसी श्रीमानों की आज्ञा होवे वसाही पत्र द्वारय शीघ्रहि
विदित कर दीजियेगा जब तक परमपूज्य मानों की आज्ञा
पूर्वक पत्र मुज को नही मिलेगा तब तक व्याकरण विषय पर पठ
पाठन को कभि प्रवृत्त नही हुंगा बडा भारी प्रत्यवाय आय पडा
कछू लिखने के योग्य नही परमपूज्यनीय श्री मानों को उक्त
वार्ता पत्र द्वारै सब विदित हों

क्या कहु कछू कही न जाय अमृत तजि विषपीयोहि आय ॥
देख्यो पोप एक बहुरङ्गी लयी चोर मम पुस्तक चङ्गी ॥
ऐसो दुष्ट अधम कुल नाहिं हरी भाष्य पानीपत माहिं ॥
सुनहु नाथ मम दीन दयालु वेदाङ्ग अन्य क्या पढूं क्रिपालु ॥
उपज्यो यह मोकों संदेहा प्रभु ताको कीजै अब छेहा ॥

(२३)

श्रीयुत रामानन्द ब्रह्मचारी जी से ईश्वरानन्द का बहुशः नमस्ते ऋग्वेद का कौनसा अष्टक तयार होरहा है सो लिखना जी

भा० शु० १३ संवत् १९४०　　　　　　ईश्वरानन्द

---

(१२)

॥ ओ३म् ॥

श्रीमान परमपूज्यनीय परमहंस परिव्राजकाचार्य वर्य स्वामी जी श्री १०८ श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चरण कमलेषु बहुशः नमस्ते

मेरा समाचार श्रीमानों को प्रकट हो विद्याभ्यास जैसा आषाढ़ वदी द्वितीया से लेके भाद्रपद वदी १९ तक चला जाता था वसा ही अव प्रारंभ हो गया है और स्वामी आत्मानन्द सरस्वतीजी सहर सिमले सें सहर पानीपत को आने वाले हैं और मेरा व्यवहार पठन पाठन तथा पुस्तक खान पान आदि क्रिया वहुत रीति पूर्व मुज को सिद्ध है और बवासीर का रोग जाता रहा नीम की निमोली खाने से

आ० व० ९　　　　　　ईश्वरानन्द*

---

* इस कार्ड पर डाकघर का मोहर २३ सितम्बर का है ।

(१३)

ओ३म्

सिद्धिश्री परमपूजनीय परमउत्कृष्ट पूरणदयालु सकलमनुष्य-रक्षक सर्व जगद्धितैषी चतुर्णां वेदानामप्यवलोकनेषु सकल जगद्गुरू परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य वर्य्य श्री मद्गुरु श्री स्वामीजी श्री १०८ श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी परमपूज्य चरणकमलेषु बहूशः नमस्ते

समाचार श्रीमानों को विदित हो कि इस वर्त्तमान समय पर सहर पानीपत के लोगों से आर्यसमाज की स्थापित होनेपर अत्युत्मता पाइ जाति है। अब इहां पर समाज भिः शीघ्र तयार होने वाला है। हे परमपूज्यनीय परमैश्वर्यवान् जगद्गुरू आपकी करुणापूर्वक इहा के लोगों का भी शीघ्र ही सुधार होने वाला है। परन्तु इस जगः पर पोपलीला बहुत दिवससे आर्य्यों के आर्य्य स्वभाव को आच्छादित कर रही थी। सो अब इन लोगों का हाउ और को को निकले चले जाते हैं और एक हाउ दूसरी कोको ये दोनूं पोपलीला वाचक हैं इहा श्रीयुत लाला कसुंभरीदास जी समाज के स्थापित करने पर कटिबद्ध हैं १ दूसरे लाला सालगराम जी समाज की उन्नति करने वाले हैं २ तीसरे लाला ताराचन्द ३ चौथे लाला मुलीधर ४ पंचमे गणेशीलाल ५ षष्ठ में लाला ज्वालाप्रसाद बाबू ६ सातवे श्रीयुत पण्डि श्रीनिवास जो कि समाज के पण्डित सबके अध्यापक रखे गये हैं

श्रीमानों को विदित हो कि एक नवा समाज सहर पानी-पत में भी हो गया है । रुपये ९) ऋग्वेदभाष्यभूमिका आप अवश्य ही भिजवाय दीजियेगा १ आर्यदेश्यरत्नमाला दोय प्रति ≡) और सन्ध्या की २ प्रति ।।।) और सत्यार्थप्रकाश तथा ऋग्यजुर्वेदादिकों के अङ्क भि समाज में आय करैं वैदिक यन्त्रालय प्रयाग प्रवन्धकर्ता के हस्तै आया करैं आप आज्ञा दे दिजियेगा कि मुंशी समर्थदान ईस समाज मे पुस्तको के अंक भेजा करें और ईहां के लोग मणीआडर द्वारै रुपया भेजा करैंगे मेरा शिष्टाचार मुंशी समर्थदान से जेष्ट मास मैं प्रयाग जाने से नमस्ते भी वंध होगई

श्रीयुत रामानन्द ब्रह्मचारी को वहुश नमस्ते

श्रीमानों के हस्ते पुस्तक तथा आपका पत्र सहर पानीपत के समाज में सदैव आवता जाता रहगा तो हम लोगों को वहूत ही लाभ पहूचेगा ।।

जिला करनाल तसील थाना पानीपत

दुकान श्रीयुत लाला मुसद्दीलाल तथा कसुंभरी दास के पास

संवत् १९४० आश्वनी वदी ११

ईश्वरानन्द सरस्वती सहर पानीपत

और सहर सिमेले से स्वामी आत्मानन्द सरस्वती जी आनेवाले हैं

---

(१४)

ओ३म्

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य वर्य्य श्रीमच्छुद्धस्व रूप विद्या विनोद केषु स्वाश्रम धर्म मर्य्यादा परिपालन तत्परेषु श्री स्वामी जी श्री १०८ श्रीमद्दयानन्द सरस्वती जी चरण कमलेषु वहुशः नमस्ते श्रीमानों के पास जो पत्र हमारी तर्फ से भेजा गया है और उक्त पत्र द्वारै ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका मंगवाने की जो आपसे प्रार्थना करी गई है सो जव तक हम लोग रुपये नहीं भेजें तव तक हमारी तर्फ सहर पानीपत को पुस्तक रवानै नहीं करना जी रुपये आश्वनी वदि अमावस्या को भेजे जांयेंगे और आत्मानन्दजी सिमले से इधर तीस कोश कालिका में विद्यमान हैं

(आश्वनि व० १४ रविवार)

ईश्वरानन्द

सहर पानीपत

श्रीमत् परमहंस परिव्राज का चार्य्य श्री १० स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की ओर से

श्री० स्वामी ईश्वरानन्द के नाम पत्र *

(१)

(ओ३म्)

स्वामी ईश्वरानन्द जी आनंदित रहो

१—सब यंत्रालय के पदार्थ और नौकरों पर दृष्टि रखना कि नियमाऽनुसार सब काम होते हैं वा नहीं ॥

२—जब कभी जिस किसी का व्यतिक्रम देखे तो जो शिक्षा करने से सुधर सक्ता हो तो वहीं सुधार देना न माने तो हम को लिखना ॥

३—प्रति अठवारे वहां का वर्त्तमान, पत्र द्वारा हम को भेजा करना और यथाशक्ति जो कोई पुस्तक छपे उसको दूसरे के साथ मिल कर वा स्वयं शोधा करना ॥

४—और जब कभी तुझ को व्यतिक्रम विदित हो तब वा जब

---

* इस पत्र पर श्री० स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के हस्ताक्षर नहीं हैं ज्ञात होता है कि यह उस पत्र की प्रतिलिपि है जो स्वामी ईश्वरानन्द को भेजी गई थी।

हम लिखें तब अपने सामने डाक खुलवाना और पुस्तकालय तथा धन कोश और अन्य पदार्थों की सम्हाल से यथावत् रक्षा करना॥

५—यावत्प्रबन्धकर्त्ता का व्यतिक्रम कोई विदित न हो तब तक उस के साथ मिल कर उसको सहायता देना और प्रीति प्रेम से यंत्रालय की उन्नति करते रहना ९) रुपये मासिक प्रतिमास यंत्रालय से मिला करेंगे उनसे खान पानादि उचित व्यवहार करना और जब कभी अधिक व्यय की इच्छा हो तब हमको लिखना॥

६—सदा व्याकरण पढ़ने में परिश्रम किया करना और नियत समय पर यंत्रालय का भी काम किया करना॥

७—शरीर का संरक्षण प्रातः व्यायाम भ्रमण सदा शास्त्रों का चिन्तमन करना और जब तक तेरे स्थान में दूसरा निज पुरुष न आवे तब तक कहीं न जाना धर्मसे घरके समान काम किया करना॥ वैदिक यंत्रालय से वेदाङ्गप्रकाश के पुस्तक लेकर पढ़ा करना

श्रीमत् परमहंस परिव्राजं का चार्य्य श्री १०८ स्वामी दयानन्दसरस्वतीजी महाराज की सेवा में

श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी के पत्रः—

(१)

ओ३म्

नमः प्रकृष्ट ज्ञानब्रह्म स्वरूपिणे

स्वस्ति श्री जगत्पुज्य गुरु गुरो जगद्गुरो परिव्राट् श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमत्स्वामी दयानन्दसरस्वती चरणकमलेषु नरेन्द्रमुकुटमणिद्विितिरंजितेषु शिष्यसहजानन्दस्य प्रणतिराजयः

सम्मुलशंत्वत्र शम्पूर्वकमार्यजनैः सहसम्मेलनंजातं श्रीमत्कृपयैव किमुश्रीमज्जगदुद्धारकर्त्तुस्ते चीत्रमिति सर्व स्वर्प्रकाशितस्य जगते न्यायाधीशस्याज्ञतमेमपि श्रीमतांकृपात्तयैव धन्योऽहम् किंजानाम्यहमज्ञोऽस्मि

सम्वत् १९३९ फाल्गुन शुक्ल षष्ठयां बुधे सायं काले लिखितमिदम्पत्रमिंतिदिक् ।

मार्च ता० १४ अजमेर

---

(२)

ओ३म्

नमस्ते जगदात्मने

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य दयानन्द सरस्वती स्वामिना महा विदुषां जगद्गुरूणाञ्चरणारविन्दभृशंवन्दे महत्पूज्य जगत्सुख-प्रद मत्रशंश्रीमत्कृपयैवयथास्वर्प्रकाशितास्सर्वेसमुत्सन्त्यहमापितयैवसैव मयि सदासतु । महाराज आप के अनुग्रह से इन दिनों में महाराज विक्रम सिंह फरीदकोटाधीश के व्याख्यान श्रवण कराता हूं उक्त वर राजवंसाधीश ने मुझको फीरोजपुर से बुलवाया है आपका समाचार प्रीतिपूर्व पूच्छ हम से अतिशय सन्तुष्ट लाभ हुये और कहनेलगे कि मैं श्री स्वामीजी महाराज के संदर्शन के अभिलाषी हू और बड़े श्रद्धालु हैं तथा शूर वीरतादिक गुण संयुक्त है आगे जयसा इहां का समाचार होगा वयसा आप को लिखेंगे अन्तर्य्यामिष्वधिकं किम्

आप का दास—

सहजानन्द सरस्वती

श्री स्वामी जी महाराज एक पत्र का भी तो दास के उत्तर प्रदान कीजिए

सन् १८८३ सम्वत् १९४० जेष्ठ शुक्ल १३

---

(३)

॥ ओ३म् ॥

श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य दयानन्द सरस्वती स्वामिनां महाविदुषां चरणसरोजरजोऽहम्वन्दे

कृतशास्त्र विचक्षण वेदवरं वहुतेज प्रकाशक भाष्यहृदम्
क्षितिसूर्य्यवराजति धामशतं भववञ्चितज्ञानगबुद्धिप्रदम् १
भुविभुसुरवन्दितदिव्यमते भजतस्तवकिन्नहि मुक्तिपदम्
दयानन्दसरस्वति पादयुगं प्रणमामिनिरन्तर भावमयम् २
शुभदायक भद्रसरोजरजःपरिपूरणवांच्छित कामवनम्
प्रणमामिनिरन्तरभावमयं दयानन्दसरस्वति पादयुगम् ३
कविभिरिडितं नृपतेः सुखदं मुकुटार्च्चितवैद्युतभाप्रभवम्
मणिचित्रितभासितसत्सुखदं प्रणमामिनिरन्तरभावमयम् ४
कुशलं यदितोटकवृत्तमिदं शरणेतवगच्छतुपत्रमलम्
परिव्राजगुरोजगतः परिधेसहजेरितमत्रलवापुरतः ५

वाण भांति श्लोक को श्रीमत्पठनविहेत
मत्गुनमानविवेक युत वदगतदीननकेत ॥

लोधियाना संज्ञकपुरतः पत्रं नदत्तं यतोहिदिनैकं निवासः कृतोऽमृतसरोत्सवं द्रष्टुं तत्रतोऽगमम् अमृतसरमिदानीं लवपुरतःपत्रंप्रेषितम् निघण्टुपुस्तकं मुद्रितञ्चेद्यदिप्रेषयतुमाचिरम्

मई ता० ६ सन् १८८३ सम्वत् १९४०

(४)

ओं

सिद्धश्री ७ सर्वोपमेययोग्य पूज्यपाद जगद्गुरु श्रीमत्परमहंस परिव्रजकाचार्य स्वामी दयानन्द सरस्वती चरणार्विंदोष्वितं सहजानन्द सरस्वतीकृत प्रणतीतयं समुलसन्तु आप के चरण कृपा से आनन्दित हैं आप तो आनंदित स्वरूप है छावनी में तो पांच व्याख्यान दे चुके हैं और कल्ह से शहर फीरोज़पुर में व्याख्यान देता हूँ यदि आप के पास निरूक्त निघण्टु छपकर आगया हो तौ मेरे पास भेज दीजिये नहीं छपा होय तौ आप कृपा कर शीघ्र ही छपाकर मेरे पास भेज दीजिये इस के विना मेरे को वडा हर्ज है और सत्यार्थ-प्रकाश छपा या नहीं सो लिखना इहां मुझ को बहुत मनुष्य पूछते हैं और चौधरीसाहब की प्रार्थना है कि आप की स्थिति साहपुर में कब तक है और यहाँ से किस जगह जायँगे । तुलारामेण लिखितम् । यदि आप इनको अपने पास लिखने को रखें तो यह ब्राह्मण रह जायगा आप इस के वास्ते जीवन लिख दीजिये सन् १८८३ मई ता० ३०

आप का शिष्य **सहजानन्द सरस्वती**

विष्णुसहाय की नमस्ते ।

चौधरी मंत्री आर्य्यासमाज । फीरोज़पुर

---

(५)

ओ३म्

श्रीमन्महोदय जगतपूज्यपाद श्रीयुतपरमहंसपरिव्राजकाचार्य्य जगद्गुरू दयानन्दसरस्वति स्वामिनां महाविदुषां चरणशरोजरजांसि शिरसादधामः श्रीमत्कृपयात्रभव्यामस्ति श्रीमन्तम्भव्यस्वरूपिणंव्या-ग्रामस्सदायतोऽस्माकं श्रेयएव फरीदकोटतोनोमुल्कतानोस्थिती मिदा-नीमेदर्थं प्रेषितंपत्रं श्रीमतां संनिकटे श्रीमान्विजानातु फरीदकोटाधी-शोऽजमेराख्यम्पुरंप्राप्तवान्स्वपुत्रंपाठयितुमुक्तं गवर्णमेण्टेणस्वकीयम्पु-त्रमानीयोक्तपुराख्येरक्षतुयतोहितेनसह पुराविचारोयात: सांप्रत्युक्तं भवानतिष्ठतु चतुर्मासंमयोक्तं कस्मिश्चित्काले आगमनं भवेत्तदास्या-स्यामि इदानींनो सर्वान्तर्य्यामिनेष्वधिकं किम्

आप का दास **सहजानन्द सरस्वती** मुलतान से

सम्वत् १९४० जोलाई ता० ९

---

(६)

ओ३म्

सत्यधर्म्म प्रदम्वेद नित्यवेद प्रकाशकम् तत्सभाष्येण सदज्ञान नाशयन्तम्परि प्रजन् श्रीमन्महोदय जगग्दुरु परमहंस परिवाजका

चार्य दिग्विजयार्कीय स्वामी दयानन्द सरस्वतीनां चरणसरोज मकरन्दं शिरसा दधामः महाराज आपकी कृपा से जौलाई ता.२७ को मुलतान से आर्यसमाज सक्खर पहुचे इहां का समाचार बहुत अच्छा है तथा मुलतान का भी परन्तु विदेशीय सब इहां का समाजस्थ हैं और इहां का स्थान अतिशय सुशोभित नदी विमानादिक से हो रहा है मै व्याख्यान दे रहा हूँ आपके कृपासे यदि इहां के रईश समाजस्थ होजावें तो आश्चर्य नहीं क्योंकि पां चार ५–४ यहां के भद्र पुरुष नित्यप्रति प्रश्नोत्तर द्वारा संदेह निवृत्त कर रहे हैं महाराज और जो कुछ समाचार वह पीछे लिखेंगे

सम्वत १९४० सन १८८३ जोलाई–ता. २९

आपका दास सहजानन्द सरस्वती

श्रीमत्प्रेषितपत्रपठनेनैव महानान्दोजातः

---

(७)

ओ३म्

श्री मदन वद्यविद्यासन्धारभूयिष्टविद्वन्मानसराजहंसे वैदिकवाक्योपदेशेन पवित्रीकृतधरित्रीतलेषु श्री मत्परमहं परिव्राजका चार्यदयानन्द सरस्वती दिग्विजयार्कीय स्वामीषु मदी

भक्तितमा सदा भवतु यत ईश्वराख्यं लब्धम् विभोशिकारपुरस्थं विद्धि निवासं मदीयं शिकारपुर मे भी समाज अस्थित होगआ आपकी कृपा से इहा का प्रधान चाण्डूमल भाटिआ जज साहेव का वकिल मसन्द प्रीतमदास मन्त्री विदित हो कि आपकी सन्ध्या वनाई हुई उसकी **उलथा अंगरेजी मे अष्टार्थ संयुक्त** छपवाइ लाहोर वालेन उसमे **अर्थ किआ है कि पूर्व दिशा मे वैठ कर सन्ध्या करना एसे २ अर्थों** पर वहुत मनुष्य संका करते हैं उस में वहुत जगह अनर्थ किया है आप एक प्रति मगवा कर देखिए सव विदित होजाएगा आपका कर कञ्जाङ्कित पत्र एक मेरे पास आया सं. १९४० अस्त. १२

देशासिंध आपका दास

सहजानन्द सरस्वती—सिकारपुर

---

(८)

ओ३म्

आश्चर्य मद्वितीयं हि पूर्ण विद्या निधिम्विभो। जगदुद्धार कर्तार मखण्ड ज्ञान दायकम् । १ । धर्म्म सेतु नियन्तारं ज्ञानगम्यं सतां

वसो । दिव्यसूर्त्ते समाधिस्थ निर्धूतमनोमलम् । २ । नित्यमुक्त स्वभावस्थं सच्चिदानन्द लक्षणम् । सर्वबोधोदयं चित्रं नौम्यभिक्षणं जगज्जितम् । ३ । शिकार पुरतोऽगमंमूलत्राणे च संस्थितिः । जाताकिलाद्यकिज्जाने गमिष्यामीति तद्विद । ४ । अत्रत्योहि समाचारो वर्त्तते शुभवत्तरः । सहजेरित मिदं चेद्गच्छत्वा सुजगत्पदम् ॥५॥

महाराज सखर का भी समाचार अच्छा है अब आप की कृपा से यदि झंगसे लोगों ने बुलावाया तो मैं झंग जाऊंगा वहां परभी समाज स्थापित लोगों ने करने को चाहता है अयसा श्रवण करन में आया तव मुलतान सभासद से एक पत्र लिखवा कर भेजा है परन्तु जबाव नहीं आया है और शिकारपुर में जो समाज होगया सो तो आपके चरणाविन्द में पत्र द्वारा अर्पण हुआ है

सर्वान्तर्यामिनि किम्वदामीत्यलम्

आपका दास—सहजानन्द सरस्वती

सं० १९४० सितम्बर ता. ११ मंगल

---

(९)

ओ३म्

सत्यधर्म्म नियन्तारं यथान्यायं नचान्यथा
जनेभ्योहि दयालुत्वं प्रकाशयन्वै स्वभाजम् १

सर्व्वोधोदयं नौमिगी:पतिं शरणं सताम् ॥
ततानाविजयं यश्च विरूद्धवेदधर्म्मत:
देवार्ह देव पूज्यंतं सर्वज्ञं ब्रह्मसाक्षिणम् ॥
नित्यशक्त्या गुणैर्वापि भ्राजमान मखण्डितम् ३
जगद्गुरो जगज्ज्ञानं जगत्सुख प्रदायकम् ॥
जगदाधार जगत्सार महद्दूषण छेदक ४

महाराज इन दीनो में गुजरात में हूं यहा का समाज भी वहुत हीं टुट गई थी परन्तु श्रीयुत वाबू दयाराम मास्टर मुल्तान से आकर वहुत तरकीव की है गुजरात समाज की, और झेलम समाज भी टूट गई है और ओजिरावाद की समाज भी टूट गई क्योंकि विना उपदेशक समाज क्योंकर अस्थिर रहै यहा पर कोई समाज ऐसी नहीं जो एक उपदेशक समाज से रखकर समाज से उसको उपदेशार्थ खर्च दे। जो हरेक समाज में उपदेश करता रहै तो कभी समाज में हानी नहो दिन प्रति दिन उन्नत्ति होती जाए कभी समाज ऐशी दशा की प्राप्ति हो कभी नहीं यह सब प्रवन्ध लाहोर समाज को करना चाहिए क्योंकि सव समाज उसी के आश्रय है इस वास्ते आप वहां के प्रधानको लिखिए कि जो समाज टूटती जाए उसको समाज से खर्च दे उपदेशक भेज वहा पर उपदेश करावे कि समाज में दिन २ उन्नत्ति हो वावू दयाराम जी के जैसा तन मन धन से प्रीति समाज की उन्नत्ति में है वैसा

दो चार पुरुष पुरुषार्थी हो तो ये समाजें क्या अनेक समाज नवीन न होती जाए पंजाब भर में जैसा कि बाबू मग्गूमल शखर में और बाबू विष्णु सहाय फीरोजपुर में फीरोजपुरस्थ सभासदों के पुरुषार्थ से महाराज फरीदकोट के उपदेश हुआ जब ऐसे २ श्रद्धालु हो तो अवश्य सर्वत्र लाभ हो और अमृतसर मे मुरलीधर अत्यन्त श्रद्धा इन सबको देखने मे आई देशोपकार तथा समाजिक विषय में श्रीयुत महाराजा फरीदकोट ने नमस्ते आपको की है और मुझे ९० रुपै दिआ सो फीरोजपुर में जमा है समाज में

सम्वत १९४० सन १८८३ अक्टूबर ता० ९

आपका दास

सहजानन्द सरस्वती

---

(१०)

॥ ओ३म् ॥

आप्तं चिन्तश्रवस्त मोनिरस्तंसत्यं परंधीमाहि वेदादिष्वपल-न्धिकारणतमं सूर्य्यैवविभ्राजकम् विद्यासुसकलासुपूर्णप्रभुतांशान्तं यतीनांयातिम् निर्जीत्यखलुसत्यशास्त्रविद्रुहः काशीस्थजान्दिग्जान् ! नत्यास्वस्सक्तास्त एवतस्मिन्नारूढसत्पन्थिनः कारूण्यैकनिधिं समस्त

जगता मेकं विशुद्धं वरम् निर्धूतंसकलंभ्रमांहिमहताम ज्ञानजं कल्मषंदत्ता तेभ्योऽविद्यया विरहिता विद्याचतत्संछिदा २ आर्य्यावर्त्त पतिहियेन कुशलं लब्धंविलुप्तंधनं तन्नित्यंसमदर्शिनंचसततं सेव्यं जनैः सर्वदा संत्यज्य मदमोह मान सहितमागच्छत तत्पदं पाण्डित्यं किमुब्रह्मशास्त्र रहितं कस्तेन संस्पर्द्धते । ३ ब्रह्मस्थसद्गुरोनुनंमूलत्राणाज्जगत्पते गुजरावालकेवासः जातोममसुनिश्चितः ४ शमलकृपाचार्विनु वर्त्तते श्रीमतः किल सहजेरितमिदम्पत्रंगच्छत्वासुजगत्पदम् । ५ । झंगतः पत्रं न प्रेपितं तत्रस्थैः अतएवतत्रगमनं न कृतम् श्रीमतः दर्शनंकदाभविष्यति ममचित्तस्य वृत्तिर्महत्पदरजप्रवृत्ता सं० १९४०

आप का दास

सहजानन्द सरस्वती

गुजरावाल अकतूबर ता० २

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री १०८ स्वामी दयानन्दसरस्वती जी महाराज की सेवा में श्री पण्डित भीमसेनजी के पत्रः--

(१)

सम्बत् १९३८ आश्विन शु० ६ गुरु

श्रीमन्महाराज बहुशोऽभिवादये

जो २ पुस्तक आपने मंगाये हैं वे भेजे जाते हैं रसीद में संख्या

भी लिखदी है। और आपकी प्रथम पारसल कि जिस की अब विलटी भेजी है मिल गई उसकी रसीद भी भेज चुका तथा ऋ० यजु० के पत्ते और अव्ययार्थ आये उनकी भी रसीद आपके निकट भेज दी पहुंची होगी। और यजुर्वेद के पत्रे १६२—से १८७ तक भेजता हूं। और स्त्रैणताद्धित के थोड़े से पत्रे भेजता हूं कि आप देख लेवें। इस विषय में मैं लिख भी चुका हूं कि इन पुस्तकों के इस प्रकार शोधने में वेदभाष्य की भाषा बनने में हानि होती है। अब आप विचारलें कि शोधना चाहिये वा नहीं। जो वेदभाष्य का सा शोधना इन व्याकरण के पुस्तकों का भी हो तो मैं भाषा बना सकता हूं कि जितनी आप चाहते हैं और देख के प्रसन्न रहें। मुझ को बड़ा शोक यह है कि आप मेरे काम को देखते नहीं। दिनेशराम आदि लोगों ने जैसा काशिका में लिखा है वैसा ही इन पुस्तकों में लिख दिया बहुधा तो काशिका का संस्कृत ही रख दिया है। उस में बहुतेरा महाभाष्य से विरुद्ध भी है। किसी वार्त्तिक वा कारिका का अर्थ नहीं लिखा बहुतेरे सूत्र जो मुख्य लिखने चाहिये नहीं लिखे बहुत से वार्तिक कारिका भी छूट गई हैं कि जो अवश्य लिखनी चाहिये यह हाल मेरे बनाये संधिविषय नामिक और कारकीय में भी कहीं आपने देखा बराबर लिखने योग्य बातें लिखता गया। अब छप गये पर

भी परीक्षा हो सकती है कि सामासिक और कारकीय में कितना अन्तर है। आप मेरे काम को देख के एक वार अकस्मात् जयपुर में प्रसन्न हुए तब इनाम दिया और कहने लगे कि ले भाई भीमसेन चाहे रहो वा जाओ यह देते ही हैं फिर अजमेर में चलते समय इस प्रतिज्ञा पर कुछ दृष्टि न की अस्तु मुझ को इन बहुत बातों से प्रयोजन नहीं। अब आप जैसी आज्ञा देवें मैं करने को उद्यत हूं। आज्ञा पालन भी मैंने बहुत दिनों से की और अब भी जैसा आप कहेंगे वैसा ही करूंगा। जो भाषा ठीक २ चाहें तो वेद-भाष्य का सा शोधना इस का भी कर सकूंगा। वेदभाष्य में इतना शोधना होता है कि भूमिका कहीं छूट गई किसी मंत्र का अन्वय छूट गया बना दिया। किसी पद का अर्थ पदार्थ में रह गया रख दिया। बहुतेरे पद पदपाठ में नहीं होते मंत्र देख के रख देता हूं। बहुतेरे स्वर अशुद्ध होते हैं बना देना। बाकी कम्पोस में जो अशुद्धि हो। अब आप उत्तर शीघ्र देवें। और मैं यहां दिन का और ८ घंटे का ही नियम नहीं समझता रात्रि को भी बराबर काम करता हूं। और बिगड़ना बनना भी इस काम का यही जानता हूं कि मेरा ही है। इति शमस्तूभयत्र।

भवदनुग्रहाकांक्षी

भीमसेन शर्म्मा

---

* यजुर्वेद की संहिता के ३ पुस्तक जो रावसाहब बहादुरसिंहजी के समीप भेजने को लिखा सो मूल लखनऊ के छापे का वा महीधर का टीका वाला कलकत्ते के छापे का भेजा जावे सो लिख दीजिये। और राव सा० जी के लिये जो पुस्तक लिखे सो इसी बंडल में भेजते हैं उन को आप देदीजिये। आगे जो २ छपेंगे भेजा करूंगा।

प्रबंधकर्त्ता **दयाराम शर्म्मा**

† पंडित सुनदरलाल वा बालमुकन्द वा दयाराम की नमस्ते

ता २८-८-८१

---

(२)

वैदिक यन्त्रालय प्रयाग

संख्या २७९ ता० २७ फ० सन् १८८२

नमस्ते !

भगवन् प्रतिष्ठित आचार्य्य अभिवादये

पत्र आपका आया हाल विदित हुआ। रामाधार वाजपेयी

---

* पण्डित भीमसेन जी के पूर्व पत्र पर ही वैदिकयन्त्रालय के प्रबन्धकर्त्ता दयाराम शर्म्मा की ओर से पण्डित भीमसेन जी के अक्षरों में इस पैरे का लेख है।

† यह पैरा दूसरे प्रकार के अक्षरों में है।

लखनऊ ने जो हिसाव जमा खर्च और वाकी का भेजा है उस हिसाव के रजिष्टर यहां नहीं हैं मेरठ में हैं वे रजिष्टर आवें तो मेल किया जावे। छपने के विषय में भैरों कम्पोजीटर जव से चला गया तव से कम्पोजीटरों का प्रबन्ध ठीक २ नहीं चला इसी से कम छपा अव ता० १ मार्च से पं० देवी प्रसाद ने स्वीकार किया है कि हम प्रतिदिन देख कर प्रेस का प्रवन्ध करेंगे। सो अव अगले महिने से जिस महिने से जितना छपेगा सकारण आप को लिखा जावेगा। और इस महिने के भी हिसाव के साथ लिखेंगे। अब आप भी कापी शीघ्र भेजा करें ऋ० की कापी के लिये आप को कईबार लिखा अब तक नहीं आई जब कापी न होगी तो भी छपने में हानि हो सकेगी। पुस्तक मंगाने के विषय में आप का एक ही पत्र आया था। उस को देख कर शीघ्र ही पुस्तक भेजादिये आपके पास पहुंचे भी होंगे। परन्तु प्रथम पत्र में वीस २ लिखे थे अब दश २ लिखे हैं गोकरुणानिधि अब नहीं रहा। और शिक्षापत्री नहीं भेजी थी सो अब १ भेजते हैं। वेद-भाष्य का मासिक अंक यजु० ३४। ३५। और यजुर्वेद के पत्रे भाषा बना के ३३८–से–३६३ तक भेजता हूं वाकी पीछे भेजूंगा।

भवदीयाज्ञानुसेवी

भीमसेन शर्म्मा

* पेहले पत्र मे शिक्षापत्री नही लिखी थी दूसरी चिठ्ठी मे है सो जाननो—और सेवकलाल जी को कागज का हिसाव भेजदीना है जो विनो ने मागा था आर मुन्शी इन्द्रमणी से मे ने तगदा किना तो विनो ने जवाव दीया कि हम ने पार साल के अघन तक का हिसाव आगरे मे स्वामी जी से कर लिना है सो आपने क्या वसूल वाकी कीना है और मै विन से कब से हिसाव रखू सो लिखना और लाला मदनसिंह बी० ऐ० शाहाबाद जिला अम्बाले के कहते है कि स्वामी जी को लाहौर मे आय थे तव मैने २।) विन को दीया था सो आप कृपा करके लिखना मेरे यहा ना अंक मे छपा ना वही मे जमा है ता० ११ अप्रेल सन ८० से लेके आज रु की है वही जमा खर्च की आगे कि मेरठ मे है—

---

* पण्डित भीमसेन जी के पूर्व पत्र पर ही इस पैरे का लेख अन्य प्रकार के अक्षरों में है। लेख के अन्त में लेखक का नाम नहीं है परन्तु अनुमान से ज्ञात होता है कि यह लेख वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धकर्त्ता का होगा।

(३)

(ओ३म्)

श्रीस्वामी जी महाराज पत्र आप का आया हाल विदित हुआ आप की शिक्षा तो मेरे लिये अमृत है। भाषा के पत्रे बना के एक मास में एकबार मासिक अङ्क के साथ भेजा ही करता हूं शिथिलता यही है कि गत महिने में भाषा कुछ कम भेजी सो श्री महाराज आप के लिये कईबार लिखा कि सब व्याकरण के पुस्तकों को देखकर आख्यात की नवीन रचना करनी पड़ी है। यह भी विचारा था कि शोधकर दूसरे से शुद्ध नकल करवा लूं तो मुझ को कुछ काल विशेष मिले और दो चार पत्रे शोधकर लिखवाये भी उस में मेरा परिश्रम तो कम न हुआ विशेष व्यय होने लगा तब अपने आप ही लिखने लगा दिनेशराम का लिखा नहीं शोधा उस के २ पत्रे परीक्षार्थ भेजता हूं और ऋग्वेद के पत्रे जो आप के यहां से छपने को आते हैं उन में विशेष अशुद्धि निकलती हैं और यजुर्वेद में इतनी नहीं इस का कारण आप जान सकते हैं। ऋग्वेद के भी २ पत्रे भेजता हूं देखिये इन में भी कुछ समय लगता ही होगा। मैं इस बात को निश्चय कहता हूं कि यदि यंत्रालय के कार्य के काल का जो नियम है उसी समय जो मैं काम किया करूं तो कभी काम न चले और बहुत सी गड़बड़ हो अब मैं २६४ से ४१५ तक यजुर्वेद की भाषा के

पत्रे भेजता हूं आगे यजुः और ऋ० के पत्रे छपने के लिये जो तय्यार हों आप भेजिये । और इन मेरे भेजे पत्रों की परीक्षा करके लौटा दीजिये । गोकरुणानिधि छप रहा है अगले महिने में आप के पास पहुंचेगा और सब प्रसन्नता है । आगे जो आज्ञा हो सो लिखिये । आख्यात के १२ फारम छप चुके हैं श्वादिगण में थोड़ा ही वाकी है ।

भवदनुग्रहापेक्षी
भीमसेन शर्म्मा

श्रीमन्महाराज स्वामिन्नभिवादये

भगवन्—आप का एक कार्ड आया समाचार लिखा सो ठीक है मैं अपना काम सचेत किया करता हूं। आप को भी मैंने एक कार्ड भेजा है उस में स्पष्ट अभिप्राय लिख दिया है अनुमान है कि अवश्य पहुंचा होगा । ऋ० के पत्रे छपने को और भाषा बनाने को पत्रों के लिये लिखा था सो अभीतक नहीं आये जो कदाचित् भाषा बनाने को पत्रे न भेजें तो व्याकरण छपने के लिये यथावकाश शीघ्रतया करूं परन्तु ऋ० के पत्रे छपने के लिये शीघ्र अवश्य भेजने चाहिये । जितने पत्रे आपने यजु० अ० १४ भेजे

थे वे सब········वना लिये भेजता हूं ४१६—से ४४७ तक ।
विशेप आज्ञा हो सो लिखिये (ह० भी० दा०)

* दयाराम—मासिक हिसाव और पुस्तको के विक्री का और मा० वेदभाष्य का अंक और गोकरुणानिधि जो नई छपी है वह: और मुम्वई समाज मे से किसी ने करनेल आलकटसाहव कि खत कितावत छपवाने के लिये ये कागज भेजा है अङ्गरेजी का कि इस को तुम अपने यंत्राय मे छपवाकर सव जघे भेजो और =) आन फी० पुस्तक वेचो सो यह कागज आप के पास मुलाजे के वास्ते भेजता हू के इसलिये आप का पत्र मेरे पा कोई नही आया है ना इस्मे आप के हस्ताक्षर है मै विना आप की आज्ञा कैसे छपवा सकता हूं जो आप की आज्ञा छपने की होय तो आप इस कागज अङ्गरेजी पर हस्ताक्षर अपना करके यंत्रालय को लौटार दीजिये छापने को जव मै छपवा सकता हूं जो आप की इच्छा ना होय छपवाने की तो आप इस कागज को मुम्वई समाज को देजिजियेगा और आपने वल्लभदास की चिट्ठी देखलीनी होय तो आप कृपा करके लौटार दीजिये

ता० ४ । मई—सन १८८२ ई०

---

* पं० भीमसेन जी के उक्त पत्र पर ही अन्य अक्षरों में इस पैरे का लेख है पैरे के आरंभ में ही दयाराम का नाम है इस से ज्ञात होता है कि यह लेख वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धकर्त्ता दयाराम का है ।

(४)

भगवन् श्री स्वामिन् महाराज आप के निकट से अभी ऋ० के पत्रे छपने को नहीं आये कापी भेजने में ऐसी देर हुआ करेगी तो छपने में हानि होगी अब आप कृपा करके ऋ० की कापी छपने के लिये अति शीघ्र भेजें। और यहां अक्षर बन के यथार्थ काम कभी नहीं चल सकता क्योंकि यहां कम से कम चार पांच महिने में तो अक्षर तयार होंगे और खर्च में कुछ बहुत भेद भी नहीं पड़ेगा इस लिये सवासौ वा डेढ़सौ रुपयों का दो फ़ांड पूरे का अक्षर अवश्य लेना चाहिये और शीशा की भी अपेक्षा है जो अक्षर जिस समय कम पड़ता है वह मिस्त्री उसी समय ढाल देता है। इसके लिये शीशा भी अवश्य भेजना चाहिये। अब काम बहुत यथार्थ चलता है कर्त्ता और कर्म का वैगुण्य विशेष नहीं है केवल साधन के वैगुण्य से कमती है जब साधन भी यथार्थ होवें तो एक फारम प्रतिदिन निकल सके। इति। इस पत्र का उत्तर अति शीघ्र दीजिये क्योंकि आप के ही काम हानि होती है। तनखा अधिक दीजाती और काम कम होता है।

ता० १० मई

ह० भीमसेन शर्म्मा

श्री स्वामिन महाराज आपके २ कृपापत्र आये उत्तर नहीं देसका पीछे से सब बात का उत्तर लिखूंगा आपने शीशे के भेजने का जो प्रबन्ध कि सो तौ ठीक है पर यहां का ढला हुआ अक्षर ऐसा अच्छा न होगा जैसा मुम्बई का इस्से प्रार्थना यह है कि यदि होसके तौ नीचे लिखा हुआ टैप भिजवादें तौ बहुत उत्तम होगा और जो संयुक्त अक्षर हुआ करेंगे वा जिनकी कमी पडा करेगी वह यहा बन जाया करेंगे—पं० ज्वालादत्त को कल पत्र लिख भेजा है वह यहां रह कर १ मास पं० भीमसेन के साथ काम करे फिर यह प्रबन्ध रहा करै कि १ पंडित आपके साथ और १ यंत्रालय में और वर्ष दिन पीछै बदली हो जाया करे इस मे हमारा काम भी निकल जाया करेगा और वह भी १ वर्ष तक अपने ग्रहस्थ मे रह लिया करेंगे ॥ शेष दूसरे पत्र में लिखूंगा और आप कृपा कर्के स्याही भेजवा दीजिये छपने के लिये बिलकुल नहीं है सो आप सेवकलाल कृष्णदास से कह दीजिये वे भेज देंगे ॥

चरण सेवक

सुन्दरलाल

---

* पण्डित भीमसेन जी के पूर्व पत्र पर ही इस पैरे का लेख है जिसके अन्त में चरण सेवक सुन्दरलाल लिखा हुआ है। ज्ञात होता है कि यह वही रायबहादुर सुन्दरलाल हैं जिनके निरीक्षणाधीन वैदिक-यन्त्रालय अनेक दिनों तक रह चुका है।

* जीविका शब्द का अर्थ मुख्य करके किसी प्रकार का उपकार होना है। प्रतिकृत्ति। प्रतिच्छाया। प्रतिबिम्ब। प्रतिरूपक। प्रतिछन्दक। प्रतिमा। इत्यादि शब्द पर्य्यायवाची हैं। और अन्य देशीय भाषाओं में (तस्वीर) (फोटोग्राफ) भी कहते हैं प्रयोजन यह है कि जिन स्त्री पुत्र आदि सम्बन्धी वा मित्रादिकों के साथ अत्यन्त प्रेम होता है उन के वियोग में उन के प्रतिबिम्ब देखते और गुण कर्म तथा उपकार आदि का स्मरण करते हुए अपने चित्त में सन्तोष करते हैं और इस प्रकरण में यह बात विचारना चाहिये कि संसार में जितने दृश्य पदार्थ हैं उन सब के प्रतिबिम्ब होते हैं बहुतेरे घोड़े हाथी आदि जीवों की अतिदर्शनीय मृन्मय आकृति बना २ कर बेंचते हैं वे जीविकार्थ पण्य होते हैं। और बहुतेरे द्वीप द्वीपान्तर देश देशान्तरों तथा स्थान विशेष कि जो अतिदर्शनीय हैं उन के प्रतिबिम्ब मकान आदि में यंत्रित करा रखते हैं। उन के यथार्थ स्वरूप देखने में धनादि पदार्थों का अति गौरव होता है इस लिये उन के प्रतिबिम्बों को देख समझ के प्रसन्नता हो जाती है। और उन प्रतिबिम्बों में यथार्थ स्वरूपों का सा व्यवहार भी करते हैं। और इस प्रतिबिम्ब विद्या से संसार के बहुत काम सिद्ध होते हैं परन्तु परमार्थ के साथ इस विषय का कुछ सम्बन्ध नहीं। इस सूत्र से बहुतेरे वैयाकरणों का यह अभिप्राय है कि जीविका के लिये जो पदार्थ हो और वह बेंचा

न जावे तो उस अर्थ में कन् प्रत्यय का लुप् हो जावे । और (लुम्मनुष्ये) इस सूत्र से मनुष्य शब्द का भी सम्बन्ध यहां नहीं करते । सो ब्रह्मा आदि देवताओं की प्रतिमा जो कि मन्दिरों में बना २ कर रखते हैं । उन से जीविका (धन का आगमन) तो है परन्तु वे प्रतिमा बेंचने के लिये नहीं हैं इस लिये उन्ही का ग्रहण होना चाहिये । और इस सूत्र में महाभाष्यकार ने भी लिखा है कि जो धनार्थी लोग शिव आदि की प्रतिमा बनाकर बेंचते हैं वहां लु् नहीं पावेगा । क्योंकि सूत्रकार ने अपण्य शब्द पढ़ा है कि जो बेंचने के लिये न हो । अस्तु वहां लुप् न हो (शिवक.) ऐसा ही प्रयोग रहे परन्तु जो वर्त्तमान काल में पूजा के लिये ही हैं वहां तो लुप् हो ही जावेगा । इस महाभाष्य से भी उन्ही देवतों की प्रतिमा सिद्ध करते हैं । इस विषय में हम लोगों का भी यह अभिप्राय नहीं है कि ब्रह्मा आदि देवता नहीं हुए और उन की प्रतिमा रखने और देखने में अधर्म्म होता है । किन्तु उन प्रतिमाओं की यथार्थ स्वरूप के समान सत्कार पूजा धूप दीप आदि से करते हैं और पूजा तथा दर्शनादि से परमार्थ सिद्धि और मुक्ति समझते हैं सो ठीक नहीं क्योंकि श्रुति और स्मृति दोनों से यह विपरीत है कि जो विद्या और आत्मज्ञान के विना मुक्ति हो सके हां उन प्रतिमाओं को देख के उन लोगों के गुण कर्मों का स्मरण करके आप भी वैसे ही गुण कर्मों को

धारण करें । कि जिस से उत्तम कहावें । देवता शब्द भी जहां चेतन व्यक्तियों के साथ सम्बद्ध होता है वहां मनुष्यों की ही संज्ञा होती है और वैदिक शब्द सब यौगिक ही हैं देवता शब्द भी वैदिक है । इस सूत्र में मनुष्य शब्द की अनुवृत्ति जयादित्य आदि लोगों ने नहीं की । वे लोग देवता शब्द को मनुष्य से व्यतिरिक्त समझते हैं परन्तु सामान्य ग्रहण होने से जो २ प्रतिमा जीविका के लिये हो और बेंची न जावें तो उस २ सबके अभिधेय में प्रत्यय का लुप् होना चाहिये । हस्तिकान् दर्शयति । कोई मनुष्य प्रतिबिम्बों को दिखाता फिरता अपनी जीविका करता है । बहुतेरे लोग प्रतिबिम्बों को दिखा कर ही जीविका करते हैं । वहां भी लुप् होना चाहिये । यह दोष जयादित्य आदि लोगों के अभिप्राय में मनुष्य शब्द की अनुवृत्ति न करने से आता है। और पूजा का अर्थ भी आदर सत्कार ही होता है सो चेतन के होने चाहियें । फिर महाभाष्यकार ने जो लिखा है कि जो इस समय पूजा के लिये है वहां लुप् होगा इस का भी यही अभिप्राय है कि जो मनुष्य की यथार्थ प्रकृति पूजा के लिये हैं उन से प्रत्यय करने में तो लुप् हो जावेगा । क्योंकि अच्छे पुरुषों की जो प्रतिकृति हैं उनके वेचने में सज्जन लोग बुराई समझते हैं । उन प्रिय जनों की प्रतिमाओं को रखते और उनको देख कर संतुष्ट होते हैं। राम कृष्ण आदि भी इस संसार में एक अपूर्व पुरुष हुये हैं उन की भी यथार्थ स्वरूप की बोधक प्रतिमा कोई पुरुष राखे और

उन के गुण कर्मों का स्मरण करके अपने आचरण सुधारे तो कुछ बुराई नहीं परन्तु उन प्रतिमाओं से परमार्थ सिद्धि समझना ही अच्छा नहीं है। पाणिनि आदि ऋषि लोगों का अभिप्राय भी वेदों से विरुद्ध कभीं नहीं हो सकता इस प्रकरण को पक्षपात छोंड़ वेदानुकूल सब लोग विचारें ॥ *

† जो कोई नोट वा विज्ञापन शास्त्रार्थ खंडन मंडन और धर्माधर्म विषयों का ज्ञापक हो वह हम को दिखलाये विना कभी न छापना चाहिये यह मेरे पास भेजा सो बहुत अच्छा किया जो दिखलाये विना छाप देते तो हमको इस के समाधान में बहुत श्रम करना पड़ता भीमसेन जो व्याकरणादि सास्त्रों को पढा है उतना ही उस का पांडित्य है अन्यत्र यह बालक है इस को इस बात की खबर भी नहीं है कि इस लेख से क्या २ कहां विरोध होकर क्या २ विपरीत परिणाम होंगे। इस लिये यह नोट जैसा शोध के भेजा है वैसा ही छपवाना किमधिक लेखेन बुद्धिमद्वर्य्येषु

---

* यह उस लेख का प्रूफ़ है जो पण्डित भीमसेन जी छपवाना चाहते थे जिसके कई स्थलों को काटकर तथा कई स्थलों में नई पंक्तियां जोड़ कर श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने शुद्ध किया है। यह शुद्ध हुआ लेख आगे पृष्ठ ९४ पर छपा है। और यही शुद्ध हुआ लेख किञ्चित परिवर्तनों सहित वेदाङ्गप्रकाश के स्त्रैणताद्धित नाम भाग के प्रतिकृत्यधिकार के पृष्ठ १४४ में छपा है। शोक है कि श्री० स्वामी जी महाराज के शुद्ध किए हुए में भी परिवर्त्तन किया गया ! न मालूम किस ने यह परिवर्त्तन किया

† उक्त प्रूफ़ के पृष्ट पर यह पैरा लिखा हुआ है जो श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का है जो भविष्यत के लिए प्रबन्धकर्त्ता वैदिक यंत्रालय को सावधान करता है।

जीविका शब्द का अर्थ मुख्य करके जीवनोपाय करना है इस प्रकरण में सिवाय प्रतिकृति और मनुष्य के दूसरे की अनुवृत्ति नहीं आती। यहां प्रयोजन यह है कि जिन स्त्री पुत्र आदि सम्बन्धी वा मित्रादिकों के साथ अत्यन्त प्रेम होता है उन के वियोग में उनकी प्रतिकृति देखते और गुण कर्म तथा उपकार आदि का स्मरण करते हुए अपने चित्त में सन्तोष करते हैं। परन्तु इस प्रकरण में यह बात विचारना चाहिये कि संसार में जितने दृश्य पदार्थ हैं उन सब की प्रतिकृति होती है वा नहीं। बहुतेरे घोड़े हाथी आदि जीवों की अतिदर्शनीय मृन्मयादि की प्रतिकृतियां बना २ कर बेंचते हैं वे जीविकार्थ पण्य होते हैं। और बहुतेरे द्वीप द्वीपान्तर देश देशान्तरों में पति स्त्री पुत्रादि की प्रतिकृतियां रखते हैं परन्तु परमार्थ के साथ इस विषय का कुछ सम्बन्ध नहीं। इस सूत्र से बहुतेरे वैयाकरणों का यह अभिप्राय है कि जीविका के लिये जो पदार्थ हो और वह बेंचा न जावे तो उस अर्थ में कन् प्रत्यय का लुप् हो जावे। और (लुम्मनुष्ये) इस सूत्र से मनुष्य शब्द का भी सम्बन्ध न करके ब्रह्मा आदि देवताओं की मूर्त्तियां जो कि मन्दिरों में बना २ कर रखते हैं। उन से जीविका (धनका आगमन) तो है परन्तु वे प्रतिमा बेंचने के लिये नहीं हैं इसलिये उन्हीं का ग्रहण होना चाहिये। और इस सूत्र में महाभाष्यकार ने भी लिखा है कि जो धनार्थी लोग शिव आदि की प्रतिमा

बना कर बेंचते हैं वहां लुप् नहीं पावेगा। क्योंकि सूत्रकार ने अपण्य शब्द पढ़ा है कि जो बेंचने के लिये न हो। सो ठीक नहीं क्योंकि यहां प्रतिकृति और मनुष्य शब्द ही की अनुवृत्ति है अन्य की नहीं। देवता शब्द भी जहां चेतन व्यक्तियों के साथ सम्बद्ध होता है वहां मनुष्यों ही की संज्ञा होती है और वैदिक शब्द सब यौगिक ही हैं देवता शब्द भी वैदिक है। जो इस सूत्र में मनुष्य शब्द की अनुवृत्ति जयादित्य आदि लोगों ने नहीं की यह उनको भ्रम है क्योंकि वे लोग देवता शब्द को मनुष्य से व्यतिरिक्तार्थ वाची समझते हैं परन्तु सामान्य ग्रहण होने से जो २ प्रतिकृति जीविका के लिये हो और बेंची न जावें तो उस २ सब के अभिधेय में प्रत्यय का लुप् होना चाहिये। और जहां कोई मनुष्य प्रतिकृतियों को दिखा वा बेंच के अपनी जीविका करता है वहां लुप् न होना चाहिये। और पूजा का अर्थ भी आदर सत्कार ही होता है सो चेतन के होने चाहियें। फिर महाभाष्यकार ने जो लिखा है कि जो इस समय पूजा के लिये है वहां लुप् होगा इस का भी यही अभिप्राय है कि जो मनुष्य की प्रतिकृति पूजा सत्कार के लिये है उस से प्रत्यय करने में तो लुप् हो जावेगा। क्योंकि अच्छे पुरुषों की जो प्रतिकृति है उसके बेंचने में सज्जन लोग बुराई समझते हैं। **विश्वेदेवा स आगत शृणुत मऽइमं हवम्।** यह यजुर्वेद का प्रमाण है। **विद्वांऽसोहि**

देवाः। यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। मातृदेवो भव पितृदेवो भव आचार्य देवो भव। अतिथि देवो भव। यह तैत्तिरीय आरण्यक का वाक्य है। इत्यादि सब प्रमाण वचनों से विद्वद्व्यक्ति आदि का ग्रहण देव शब्द से होता है इस लिये पाणिनि आदि ऋषि लोगों का अभिप्राय भी वेदों से विरुद्ध कभी न होना चाहिये इस प्रकरण को पक्षपात छोड़ वेदानुकूलता से सब लोग विचारें ॥ *

---

(९)

ओ३म्

श्रीयुत महाराज गणशोऽभिवादये। ता० ३ नवम्बर

आपका पत्र आया समाचार विदित हुए। यहां सब लोग प्रसन्न हैं आप भी होंगे।

ऋग्वेद के पत्रे जो आपने भेजे थे उनकी भाषा संस्कृत के अनुकूल करदी उन ८१३—से ८१० पत्रों को भेजता हूं और यजुर्वेद के १२ अ० में भी दो चार पत्रों की भाषा बनी है सो इस महिने की १९ ता० तक जहां तक होगा शीघ्र भेजूंगा और यह तो बात ठीक है कि मेरे पास से भाषा बन कर जब तक पत्रे

---

* पण्डित भीमसेनजी के भेजे हुए प्रूफ़ का श्री स्वामीजी महाराज द्वारा शोधा हुआ यह लेख है।

न पहुंचेंगे तब तक वहां भी भाषा नहीं बन सकती। मैं जितना कर सकता हूं उसमें उसमें कालात्यय कभी न करूंगा। मेरे परिश्रम को आप छपे हुए पत्रे और कापी का मेल करने जान सकते हैं। इस बात का अहंकार नहीं करता किन्तु यह भी चाहता हूं कि आप जैसे ज्वालादत्त की भूल मुझ से निकलवा कर यहां भेजा करते थे वैसे अब मेरी भी भूल किसी से निकलवा कर भेजा करें जिससे आगे को सचेत होऊं। और कार्य्य भी विशेष अच्छा होवे और अभी छपने के लिये यहां कापी विशेष है जब मंगाने की आवश्यकता होगी तब मैं आप ही विदित कर दूंगा। और यंत्रालय के सब प्रबंध निर्विघ्न चले जाते हैं। *

† आगे इस महीने की १ तारीख से यह प्रबंध हुआ है प्रतिमास २९ फरमे और २ टैटिल पेज छपा करें इसमें कमी होगी तो नौकरो पर जुरमाना होगा और अब कुल खर्च यन्त्रालय को अमले का ११०) महीना है और बनारस में १२७॥) का खर्च था और १० तथा १२ फरमे से अधिक किसी मास मैं नहीं निकले सो जो कुछ इसका नफा नुकसान है आप निश्चय करते रहै॥

चर्ण सेवक सुन्दरलाल

---

* इस पत्र का अक्षर तो पण्डित भीमसेन जी का है परंतु पत्र के अंत में हस्ताक्षर उनका नहीं है।

† पण्डित भीमसेन जी के पत्र के नीचे एक ही काग़ज़ पर यह पत्र राय बहादुर पण्डित सुन्दरलाल जी का है।

(६)

ओ३म्

सम्वत् ३८ पौ० कृ० ११ ता० १८ दिशम्बर

वैदिक यंत्रालय

प्रयाग

श्रीमहाराज अभिवादये

पत्र आपका आया मेरे विषय में आपने लिखा सो ठीक है फिर ऐसा तो नहीं हुआ कि कुछ भी भाषा बना कर न भेजी हो पीछे जो ७ ता० दि० को पत्रे यजु० अ० १२ के और वेदभाष्य स्त्रैणताद्धित और हिसाब भेजा है उस की पहुंच आपने नहीं लिखी कदाचित् पीछे पहुंचा होगा। और यजु० १२ अध्याय भी बड़ा है। स्त्रैणताद्धित की कापी यहां सब रक्खी है कदाचित् आप देखा चाहें तो भेज दिये जावें। और अभी स्त्रैणताद्धित छप चुके कोई १९ दिन हुए हैं आप १॥ महिना किस विचार से लिखते हैं उस का शुद्धिपत्र बनाया उस में भी कुछ काल ही लगता है। अब आख्यातिक के २ फारम छप चुके हैं। शोधना इसी का नाम है कि जैसी कापी हो उस में प्रति पृष्ठ ड्योढ़ा तक काटा बनाया जावे। और जब ३० सूत्र लिखे हैं वहां (१) २८ सूत्र

लिखे गये तो यह विलकुल लौट जाना नवीन बनाना है । मुझ को इस बात की बहुत चिन्ता रहती है कि आप के नाम से जो पुस्तक बनते हैं । उन में कुछ अशुद्धि न रहजावें और सब से अपूर्व होवें । मेरे काम को देखने वाले पं० सुन्दरलाल जी । पं० देवी प्रसाद । और पं० दयाराम जी हैं परन्तु ये लोग शुद्ध अशुद्ध व्याकरण वा वेदभाष्य को नहीं देख सकते इन बातों को आप अवश्य देखा करें स्त्रैणताद्धित को ही देखें कि इसका पूर्व रूप कैसा है और अब कैसा छपवाया गया जब तक व्याकरण के पुस्तकों के छपने में गड़ बड़ रहेगा तब तक वेदभाष्य की भाषा कम बनेगी । अब इस महिने के अन्त में भी जो कुछ भाषा तयार हो सकेगी भेजूंगा आगे आप जैसा कहें उपस्थित हूं ।

आप के लेखानुर कृदन्त आख्यातिक की अन्त्य में ही छपवाया जावेगा परन्तु इस विषय में पण्डित देवीप्रसाद आदि का विचार यह है कि जो विषय छपवाया जावे वह पूरा २ छपे कुछ छूटे नहीं । सो कृदन्त विषय में भी कृदन्त के सब सूत्र यथा क्रम से छपने चाहिये इस में जैसी आपकी आज्ञा हो सो किया जावे। और आख्यातिक को कुछ रोक कर बीच में अव्ययार्थ छपवा दिया है । बहुत शीघ्र इस महिने में आप के पास पहुंच जावेगा । परन्तु इस का नम्बर ताद्धित के आगे नवम पुस्तक रहेगा वा आख्या-

तिक नवम रहेगा सो आप कृपा कर के आज्ञा शीघ्र देवें इति-

आपका सेवक

भीमसेन शर्म्मा

श्रीगुरुचर्णेषु न तयः

*आप के २ पत्र और १ कार्ड आया और श्रीयुत आर्य्य-कुल दिवाकर महाराणा जी ने जो सतकार किया उस के सुन्ने से अत्यन्त आनन्द हुआ अब के मांस के अंक में उन की प्रसंनता का विज्ञापन दिया जायगा और जो पुस्तकें आपने मगाई है आज इन्दौर को भेजी जायगी माघ के मेले मै जो कोई विद्यामान पुरुष मिलैगा तौ उस को नोकर कर लैंगे

आपने जो भीमसेन के मध्ये लिखा था सो उसको पढ़ कर वह बुहत उदास हुऐ थे पर मैंने उन को समझा कर राजी किया असल वात यह है कि वुह वैठा नही रहता है न सुस्ती करता है पर जो पुस्तक व्याकरण की आती है उन को उस को फिर कर लिखना पढता है यह काम हर ऐक मनुष्य का नहीं जिस ने आप से विद्या पढी होय और आपका अभिप्राय जाने वुह ही इन पुस्तकों को शोध सकता है और आप को यह भी लिखना मुना-सिब नहीं कि ९) महीना शोधने का मिलता है जब ज्वालादत्त

---

* पण्डित भीमसेन जी के पत्र के नीचे एक ही काग़ज़ पर यह पत्र राय बहादुर प० सुन्दरलालजी का है

चला गया उस समय मै सिर पटक कर गया और कोई योग्य पुरुष पुरुष शोधन को १०) वा १५) महीने को भी न मिला और जितना काम भीमसेन करता है उतना काम करनेवाला अब २०) तथा २५) महीने से कम को नही मिलेगा इस्से मैं उस को बडी प्रीत से रखता हूं आप के पास जब कुछ भाषा आदि वस्तु न पहुचे आप निश्चय लिख भेजा कीजिये कि अमुक वस्तु नही आई सो जलदी भेजो और जहां तक होगा बुहत शीघ्र आप की आज्ञा का पालन किया जायगा परन्तु यह न लिखना चाहिये कि अमुक मनुष्य कमचोर है वा हरामखोरी करता है क्योंकि एसे अप शब्द के सुन्ने से उस की प्रीति आप से हट जाती है और वैमनस होकर वुह चला जाता है फिर हमको वैसा मनुष्य मिलता नही इस मै यन्त्रालय के प्रबंध मे हरज होता है नही आप सर्वस्य मालक ही है जिस का अपराध देखै निश्चय लिखें कोई क्यों न हों पर आप एसा पत्र अलग मेरे नाम भेज दिया करें जब मै उस का उत्तर लिखू और मेरा उत्तर यथोचित न समझा जाय तब आप जी चाहै जिस को वैसा लिखै। महाराजा हुलकर ने १ वर्ष से वेदभाष्य बंद कर दिया और जो रुपैया चाहिये सो भी नही भेजा यदि उन के कारवारी से मुलाकात होय तो जिकर कर दैना

आपका चरण सेवक

सुन्दरलाल

---

(७)

वैदिक यन्त्रालय प्रयाग

संख्या ४८ । ता० १ फरवरी सन् १८८२

श्रीस्वामी जी महाराज जी योग्य पं० सुन्दरलाल वा दयाराम तथा भीमसेन का अभिवादन विदित हो

पत्र आप का आया हाल जाना । अब कुल पुस्तक २० पौंड के कागज पर छपते हैं । पहिले २४ पौंड पर वेदभाष्य और २० पौंड पर अन्य पुस्तक छपते थे सो ज्ञात हो । और आप की आज्ञानुसार वर्ष २ का पुस्तकों का हिसाब तयार करके भेजा जावेगा । परन्तु प्रयाग में यन्त्रालय १ अप्रेल सन् १८८१ को आया है सो अब ३० अप्रेल सन् १८८२ को वर्ष पूरा होगा । सो १ मई तक में हिसाब तयार करके भेजूंगा । लाला वल्लभदास जी का हिसाब पिछले रजिष्टरों में मिला नहीं है इस से नहीं लिखा अब फारसी के रजिष्टर जो लाला शादीराम के लिखे हैं उन को पं० सुन्दरलाल जी आप खुद देखकर अब के पत्र में आप को लिखेंगे । और हमने छब्बीस २६ फरमें का ठेका जो दिया था सो न चल सका इस में पं० देवीप्रसाद और विश्वेश्वरसिंह जी ने भी बहुत प्रयत्न किया तथापि न चल सका सो अब २० फारम

से अधिक एक महिने में नहीं छप सकते । तथा अन्वयार्थ के पुस्तक में कोठे बनाने से और भी देरी हुई । और अब आख्यातिक का भूमिका सहित छः फारमा छप गये हैं आगे को छपता जाता है । और इस पुस्तके विलकुल लौटने और नवीन बनाने में सब महाभाष्य सिद्धान्त और काशिका पुस्तकों का होता है इस से छपने के लिये नवीन कापी बनाने में देर होती है और आप के यहां से ठीक २ शुद्ध कापी आवे तो इतनी ढील न हो ।

कागज का प्रबन्ध मुम्बई से हो जाना बहुत ही अच्छा है । इस का प्रबन्ध आ निश्चित कर लीजियेगा और अपने सामने एक वेल कागज का जिस में २४ रीम होते हैं वह भेजवा दीजियेगा। चाहे जैसे पौंड का जैसा आप मुनासिब जानें । और मेरे पास कागज वाले का पता लिख भेजिये कि मैं आगे को उसी से कागज मंगाया करूं । और छपने की श्याही का भी प्रबन्ध वहीं से कर दीजिये वहा से कागज के साथ श्याही भी आजाया करे । आपने जो २ पुस्तक जब २ जहां २ मंगाये बराबर भेजे । वे पुस्तक कौनसे हैं कि आपने मंगाये और यहां से न गये । जो आप की भेजी चिट्ठी ही मेरे पास न आई हो तो मैं लाचार हूं जैसे कि आपने महाराजे उदयपुर का इश्तिहार भेजा और मेरे पास आज तक नहीं आया है कहीं डाक में मारा गया मैं लाचार हूं । अब उस विज्ञापन को कृपा करके शीघ्र भेज दीजियेगा । मेला अच्छा

हुआ भीड़भाड़ ३०००००० तीस लाख करीब बहुत हुई। फिर बीमारी हैजे की अमावास्या को जो फैल गई इस से सब मेला उठा दिया गया। मासिक हिसाब २४ जनवरी को आप के पास भेजा है सो पहुंचा होगा। देर या हुई कि आर्य्यभाई बहुत लोग वैदिक यंत्रालय में ठहरे थे उन के आदर सत्कार से तयार न कर सका। सो माफ करना और सब लोग यहां से प्रसन्न गये। हम लोगों को महाराजे उदयपुर की पदवी ठीक २ मालूम नहीं थी और आप का भेजा विज्ञापन आया नहीं फिर सज्जन कीर्त्ति सुधाकर जो अखबार उदयपुर से आता है उस के आदि में जो महाराजा की पदवी लिखी है वही हमने छपवादी सो आप के देखने को भेजते हैं सो देख लीजिये। आगे आप जैसी आज्ञा करें उन के विषय में फिर छपवा दिया जावे। जब तक आप के वेदाङ्गप्रकाश और दूसरी बार सत्यार्थप्रकाश न छप जायगा तब तक इस यंत्रालय में दूसरा पुस्तक नहीं छपेगा। और जो आवश्यक होगा उस में आप की आज्ञा ली जावेगी। और मेले में कोई पं० वा मुंशी नहीं मिला *।

आगे हम को टैप अधिक ढलवाने के वास्ते सीसा और सुरमा चाहिये विलायती देसी जो मिलता है उससे काम नही चलता यदि मुंबई से उस के मंगाने का प्रबंध हो जाय तौ

* यहां तक यह पत्र पण्डित भीमसेन जी के अक्षरों में लिखा हुआ है इस के आगे राय बहादुर पण्डित सुन्दरलाल जी के अक्षरों में अङ्कित है।

वहतर है ॥ आगे मुनसी और पंडित की हम को भी वड़ी तलास है पर ढव का कोई मनुष्य नही मिलता है ॥ लाहौर से लाला जवाहिर-सिंघ मंत्री आर्य्यसमाज के आये उन से भी कहा उन्होंने कहा कि प्रयाग मै तौ नही पर लाहौर मै वुहत मिल जायंगे और उन्होंने यह भी कहा कि जो यह यंत्रालय लाहौर मै उठ जाय तौ वहां के समाज के मेमवर वडी उन्नती करें मैने कह दिया कि मुझ को कुछ उजर नही है श्री स्वामीजी महाराज की आज्ञा मंगालो सो निश्चय है कि इस मध्ये मै आर्य्यसमाज के लोग आप को लिखैं ॥ हिसाव आप को सव चीज का वुहत दुरुस्ती के साथ भेजा जायगा पर हाल में कोई मनुष्य एसा नही है कि जो अछे प्रकार से काम करे जव तक वावू यहां थे तव तक तौ वुह खुद देखते भालते थे जव से वुह चले गये है तव स सिरफ दयाराम ही है सो लिखने पढ़ने का काम जेसा चाहिये वेसा नही होता है मै भी इस वात को खूव जानता हूं पर जव तक को मुनसी अच्छा नही मिलेगा तव तक यह ही दिक्कत रहेगी—और पं० भीमसेन भी कहते है कि हमारे पास काम वुहत वढ गया है सो यदि आप की आज्ञा होय तौ ज्वालादत को फिर वुला लै १९) महीना लेगा पर उस को आप की आज्ञा विना वुला नहीं सकते है ॥

९

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज़ की सेवा में श्रीयुत महाशय मनोहरदास क्षत्रिय अवैतनिक कार्य्यसम्पादक भारतमित्र कलकत्ता का पत्रः—

भारतमित्र कार्य्यालय ।

नं ६० क्रौस ष्ट्रीट कलकत्ता, १८८

ओं श्री १०९ मान् स्वामि दयानन्द सरस्वति

स्वामि समीपेशु नमोनमः

महाशय !

निवेदन यह है कि आप के भेजे हुए दो पत्र पहुंचे-गोरक्षा एक बड़ा उत्तम और आवश्यक काम है आशा है कि सर्व शक्ति-मान आप के इस शुभ परिश्रम को सफल करेंगे जिस्से गवादिक पशु इस दुःसह दुःख से बचें और जगत का अतीव उपकार होगा हमारे यहां एक ज्ञान वर्द्धिनी नामक सभा है उस्में आपके भेजे हुए कागज विचारार्थ पढ़े गये सो सब सभासदों की यही तज-वीज हुई कि एक दिन केवल इसी शुभ काम के निमित्त सभा की जावे और उस्में शहर के माननीय देश हितैषी महात्मा निमन्त्रित किये जावें—क्योंकि इस्में बहुत लोगों के दस्तखत उनके द्वारा हो जावेंगे

सो स्वामिन् यह सभा होने ही वाली थी कि हम लोगों को एक झंझट सी आपड़ी जिस्से यह शुभ और अत्युत्तम काम कुछ दिन के लिये रुक गया—वृत्तांत यह है कि १६ मार्च के अखवार में हमने एक प्रस्ताव हुगली पुल के ठेकेदार की बावत छापा है जिस्पर ठेकेदार साहब नालिश करने पर तैयार हैं—इस्में एक शव्द रामफटाका धारी लिखा है यह लोग इस शव्द से अपनी मत निन्दा समझ वैठे हैं आप भी अवश्य कृपा करके इस प्रस्ताव को देखें और यह भी लिखें कि "रामफटाका" तिलक विशेष का नाम है वा नहीं-नहीं तो यह कैसा शव्द है और जो अनुमति लिखने योग्य हो सो अवश्य लिखें और यह भी लिखें कि कलकत्ते आने की भी इच्छा रखते हैं वा क्या— इस स्थान में सदुपदेश की वहुत जरूरत है जब हम लोग आपके श्रीमुख से उपदेश सुनेंगे तो अपना भाग्योदय समझेंगे और कृतार्थ होंगे—

झंझट दूर होने पर उक्त काम में अच्छी तरह से मनोयोग स उद्योग किया जावेगा

रामफटाका शव्द का निर्णय कृपा पूर्वक शीघ्र लिख भेजें और गोरक्षा का एक २ पत्र निम्नलिखित महाशयों के पास भी सीधे बम्बई से भेजदें

१ महाराजा ज्योतेंद्र मोहन ठाकुर कलकत्ता०

२ राजा राजेन्द्रमलिक वहादुर० „

३ राजा कमलकृष्ण बहादुर०   कलकत्ता
४ इंडियन एसोसीएशन०   ,,
५ बृटिश इंडियन एसोशीएशन०   ,,
६ साधारण ब्राह्म समाज०   ,,
७ महर्षि दिवेन्द्रनाथ ठाकुर०   ,,
८ सेक्रेटरी फेमली लिटरेरी कलब०   ,,

इत्यलं

आपका दास

मनोहरदास क्षत्री

अवैतनिक कार्य्य सम्पादक, भा० मित्र

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री १०८
स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज की ओर से
श्रीयुत महाशय सम्पादक भारतमित्र कलकत्ता
के नाम पत्र:—

ओ३म्

भारतमित्र संपादक महाशय निकटे निवेदनम् ॥

महाशय आप के संवत् १९४० आषाढ शुदी ८ गुरुवार

के छपे हुए पत्र में किसी ने वेद पर आक्षेप पत्र छपवाया है उस लेखक का अभिप्राय यही विदित होता है कि वेद ईश्वर की वाणी और अभ्रान्त नहीं है परन्तु इस प्रश्न के करने वाले ने प्रश्न मात्र ही किया है अपनी प्रतिज्ञा को सत्य करने के लिये कोई विशेष हेतु नहीं लिखा अर्थात् उत्तर उस बात का होता है जो किसी वेद वचन पर भ्रान्तपन दिखलाता तो उसका उत्तर उसी समय दिया जाता। जैसे कोई कहे कि यह १०००) एक हज़ार रुपयों की थैली सच्ची नहीं दूसरे ने उस से पूछा क्या मैं तुम्हारे कहने मात्र ही से थैली को झूठी मान सकता हूं जब तक तुम झूठा रुपया इस में से एक भी निकाल के सिद्ध नहीं कर देते, तब तक थैली को झूठी नहीं मानूंगा। वैसा ही मिष्टर ए ओ ह्यूम साहेब और जिस ने आप के पत्र में छपाया है इन दोनों महाशयों का लेख है, यहां उन को योग्य था और है कि किसी एक वा अनेक मंत्रों को अपने अभिप्राय के अर्थ सहित वेद अध्याय मंत्र संख्या पूर्वक लिख कर पश्चात् कहते कि वेद ईश्वर की वाणी और अभ्रान्त नहीं हैं, तो प्रत्युत्तर के योग्य प्रश्न होता अब भी यदि उत्तर जानने की इच्छा हो तो इसी प्रकार करें नहीं तो कुछ भी नहीं है किन्तु इस में इतनी बात तो समाधान देने के किसी प्रकार योग्य है कि वेदों में मतभेद क्यों हैं अब देखिये यह भी इनकी गोलमाल बात है ! क्योंकि वेदों में किस ठिकाने

और किन मंत्रों में किस प्रकार के मत भेद हैं हां, विद्या भेद से कथन का भेद होना तो उचित ही है जो व्याकरण, निरुक्त, छंद, ज्योतिष, वैद्यक, राजविद्या, गान, शिल्प, और पृथिवी से ले के परमेश्वर पर्यन्त की अनेक विद्याओं की मूल विद्या वेदों में हैं इन के संकेत शब्दार्थ और संबंध भिन्न २ हैं जैसे व्याकरण विद्या से ज्योतिष विद्यादि के संकेत परिभाषा और पदार्थ विज्ञान पृथक् २ होते हैं वैसे इन सब विद्याओं के वाचक अर्थात् प्रकाशक मंत्र भी पृथक् २ अर्थ के प्रतिपादक हैं यदि इन्हीं को मत भेद कहते हैं तो प्रश्नकर्ता का कथन असंगत है और जो दूसरे प्रकार के मत भेद मानते हैं तो उनका कथन सर्वथा अशुद्ध है इसलिये प्रश्न कर्ताओं को उचित है कि पूर्वोक्त प्रकार से चारों वेदों में से जो कोई एक मंत्र भी भ्रांत प्रतीत होवे वह आप के पत्र में मिष्टर ए ओ ह्यूम साहेब छपवावें उन का उत्तर भी आप ही के पत्र में उचित समय पर छपवा दिया जायगा और उन को वेद के निर्भ्रान्त होने के जानने की पक्की जिज्ञासा हो तो मेरी बनाई ऋग्वेदादि-भाष्य भूमिका को देख लेवें यदि उन के पास न हो तो वैदिक यंत्रालय प्रयाग से मंगा कर देखें और जो उन को आर्य भाषा का पूरा ज्ञान न हो तो किसी सत्यवक्ता दुभाषिये पुरुष से सुनें इस पर जो उन को शंका रह जाय तो मुझ से समक्ष मिल के जितनी शंका हों उन सब का यथावत् समाधान लेवें क्योंकि पत्रों

से शंका समाधान होने में विलंब होता और अधिक अवकाश की भी अपेक्षा है और मुझ को वेदभाष्य बनाने के काम से अवकाश न मिलने के कारण विशेष प्रश्नोत्तर करने का समय नहीं है और जो उन्हों ने यह लिखा है कि स्वामी जी ईश्वर वा ईश्वर की प्रेरणा युक्त हों तो उन का भाष्य निर्भ्रम हो सके, मैं ईश्वर नहीं किन्तु ईश्वर का उपासक हूं परन्तु वेद मनुष्यों के हितार्थ परमात्मा ने प्रकाशित किये हैं इस अभिप्राय से कि यहां तक मनुष्यों की विद्या और बुद्धि पहुंच सकेगी और इतने तक कार्य मनुष्य कर सकेंगे इसलिये यावत् मेरी बुद्धि और विद्या है तावत् निष्पक्षपात होकर वेदों का अर्थ प्रकाशित करता हूं और वह अर्थ सब सज्जनों के दृष्टिगोचर हुआ है, होता है और होगा भी। यदि कहीं भ्रांति हो तो उक्त साहेब प्रकाशित करें। बड़े शोक की बात है कि आज पर्यन्त एक भी दोष वेदभाष्य में से कोई भी नहीं निकाल सका है फिर भी इन का भ्रम दूर नहीं हुआ ऐसी निर्मूल शंका कोई भी किया करे इस से कुछ भी हानि नहीं हो सकती और सत्यार्थ होने ही से वेदों का निर्भ्रांतत्व यथावत् सिद्ध है यदि इस मेरे बनाये भाष्य में मिष्टर ए ओ ह्यूम साहेब को भ्रम हो तो इस में से भ्रांति मत्त्व किसी मंत्र के भाष्य द्वारा आप के पत्र में छपा देवें मैं उत्तर भी आप ही के पत्र द्वारा देऊंगा और जो थियोसोफ़िष्ट के अध्यक्ष ऐसी बातें करें इस में क्या आश्चर्य है

क्योंकि वे अनीश्वरवादी बौध मतावलंबी होकर भूत, प्रेत, और चुटकलों के मानने वाले हैं। बडे शोक की बात है कि सर्वथा विद्या सिद्ध परमात्मा को न मान कर भूत, प्रेत, मृतकों में फस कर और भोले मनुष्यों को फसा अपने को सुधारने वाले मानना यह कितनी बडी अनुचित बात है इन को तो नास्तिक मत जो कि ईश्वर को न मानना है वही प्रिय लगता है परन्तु इस में इतनी ही न्यूनता है कि भूत प्रेतों ने इन को घेर लिया सच है जो सत्य ईश्वर को छोडेंगे वे मिथ्या भ्रम जाल भूत प्रेतों और बन्ध्या पुत्र वत्कुतु हूंबीलालसिंह आदि में क्यों न फसेंगे। बहुत से समाचारों में छपवाते हैं कि इतने सौ इतने हज़ार मनुष्यों को मिष्टर एच ए करनेल ओलकाट साहब ने रोग रहित किया यदि यह बात सच हो तो मुझ को क्यों नहीं दिखलाते और मनवाते, और मेरे सामने कि जिस को मैं कहूं उस एक को भी नीरोग कर दें तो मैं थियोसोफ़ीष्टों के अध्यक्ष को धन्यवाद देउं इस में मुझ को निश्चय है कि जैसे एक थियोसोफ़ीष्ट दंभ के मारे लाहौर में अपनी अंगुली कटवा के अंग भंग हो गया कहीं ऐसी गति मेरे साम्हने इनकी न हो जावे और करामात कुछ भी काम न आवेगी मैं प्रसिद्धी से कहता हूं कि यदि उन में कुछ भी अलौकिक शक्ति वा योग विद्या हो तो मुझ को दिखलावें, मैंने जहां तक इनकी लीला सिद्धि और योग विषयक देखी है वह मानने के योग नहीं

थी अब क्या नई विद्या कहीं से सीख आये मुझ को तो यह विषय निकम्मा आडंबर रूप दीखता है। अलमिति विस्तरेण बुद्धिमद्वर्येषु ॥ *

---

(२)

ओ३म्

श्रीयुत भारतमित्र संपादक समीपेषु ॥

महाशय आप के संवत् १९४० मिति श्रावण शुदी ६ गुरुवार के दिन के छपे हुए पत्र में जो विविध समाचार के दूसरे कोष्ठ मे यह छपा है कि मुसलमानों के मज़ब का मूल अथर्व वेद है, सो बात असंगत है क्योंकि उस के नामनिशान का एक अक्षर अथर्व वेद में नहीं है जो शब्द कर्तृम अल्लोपनिषद् नामक जो कि मुसलमानों की पादशाही के समय किसी थोड़ा सा संस्कृत और अरबी फ़ारसी के पढने वाले ने छोटा सा ग्रन्थ बनाया है वह वेद, व्याकरण, निरुक्त के नियमानुसार शब्द अर्थ और संबंध के अनुकूल

---

* इस पत्र के अन्त में महर्षि दयानन्द का हस्ताक्षर नहीं है और न अगले पत्र के अन्त में उनका हस्ताक्षर है परन्तु इन दोनों पत्रों के साथ एक और सादा काग़ज़ नत्थी है जिस पर लिखा हुआ है "भारतमित्र कलकत्ते वाले के नाम जो पत्रादि स्वामी जी की ओर से लिखे गये उनकी प्रती"

नहीं है और अल्ला रसूल अकबर आदि शब्द चारों वेदों में नहीं है किन्तु जो अथर्ववेद का गोपथ ब्राह्मण है उस में भी यह उपनिषद् तो क्या किन्तु पूर्वोक्त शब्द मात्र भी नहीं है पुनः जो कोई इस बात का दावा करता है वह अथर्व वेद की संहिता जो कि। बीस कांडों से पूरण है अथवा उस के गोपथ ब्राह्मण में एक शब्द भी दिखला देवे वह कभी नहीं दिखला सकेगा यदि ऐसा होता तो उस पुरुष का कहना भी सत्य होता अन्यथा कथन सच क्यों कर हो सक्ता है कहां राजा भोज और कहां गांगा तेली वेदों के आगे यह ग्रंथ ऐसा है कि जैसे अमूल्य रत्न के सामने भूड़ा यही एक बात नई नहीं है किन्तु स्वार्थी लोगों ने वेदों के नाम पर ऐसे २ निकम्मे बहुत से ग्रन्थ बनाये हैं जिन का मिथ्यात्व वेद के देखने से यथावत् विदित होता है॥ यदि वालादत्त शर्मा हेडमाष्टर रियासत टिहरी गढवाल की इच्छा* ………… जाने वा शास्त्रार्थ करने की इच्छा हो तो इस बात के लिये यहां सब दिशाओं के दरवाजे खुले हैं। अलमति विस्तरेण बुद्धि मद्वर्य्येषु। †

---

* जहां जहां विन्दियां अर्थात् लीडर हैं वह भाग असल पत्र में से कट कर नष्ट हो गया है।

† इस पत्र के अन्त में महर्षि दयानन्द का हस्ताक्षर नहीं है और न इस से पूर्व पत्र पर उन का हस्ताक्षर है परन्तु इन दोनों पत्रों के साथ एक और सादा कागज़ नत्थी है जिस पर लिखा हुआ है "भारत मित्र कलकत्ते वाले के नाम जो पत्रादि स्वामी जी की ओर से लिखे गये उनकी प्रती"

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य्य
श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की सेवा में
श्रीयुत महाशय श्रीकृष्ण जी खत्री
सम्पादक ज्ञानवर्द्धिनी सभा कलकत्ता का पत्र

काटन स्ट्रीट न० ९४
कलकत्ता।

पुज्यपाद श्रीमत् स्वामी दयानंद सरस्वती
श्री चरण कमलेषु।

महानुभव !

मेरी—अभिलाषा है कि एक पुस्तक ऐसी बने जिसमे निम्न-लिखित विषयों का संग्रह रहे—यथा:—

१। सनातन आर्य्य धर्म्म के प्रयोजन।
२। आर्य्य धर्म्म के अनुसार ईश्वर स्तुति।
३। आर्य्य के नित्य कर्म्म और धर्म्माचरण के नियम।
४। स्वामी जी की संक्षिप्त जीवनी।
५। एक सामान्य पंचाङ्ग जिसमे अंरेजी बार तारिख, हिन्दी-बार तारिख तिथि ओर नक्षत्र आदिक का विवरण रहे।
६। आर्य्य समाज सम्वन्धी—विशेष घटनावली।

७। आर्य्य समाजों की तालिका जिसमें नीचे लिखे विषय हैं-

(क) समाज का नाम　　(ख) कब स्थापित हुआ

(ग) मन्त्री का नाम　　(घ) सभासदों की संख्या

(ङ) वार्षिक उतसव का दिन।

८। विद्यालय, पुस्तकालय और चिकित्सालयों कि तालिका जोकि आर्य्य जन द्वारा स्थापित हुये हैं वा उनसे जिनका कार्य्य निर्वाह होता है

९। (संवाद) पत्रों की तालिका जो आर्य्य जन द्वारा प्रकाशित होते हैं। उनका नाम ठिकाना मूल्य।

१०। पुस्तकों की तालिका (आर्य्य धर्म्म वा समाज सम्बन्धी) उनका नाम मूल्य और ठिकाना।

११। एक मान चित्र जिसमे वे नगर वा ग्राम विशेष कर लिखे जावें जहां आर्य्य सभाएं स्थापित हैं।

१२। अन्यान्य आवश्यकीय विषय जैसे वैज्ञानिक राजनैतिक और भाषा वा शिक्षा विषयीनी सभाओं के नाम। स्टेम्प मनि-आर्डर टलीग्राफ रजिस्ट्री आदिक के नियम।

मैं इस पुस्तक का नाम "आर्य्य पंचाङ्ग" रखना चाहता हूं। और आशा है कि प्रति वर्ष एक ऐसा पंचाङ्ग आपकी आज्ञानुसार निकला करे। मेरी इच्छा है कि मैं एक ऐसी पुस्तक इस वर्ष की प्रकाश करूं; परंतु आपकी सहायता के विना इसका सुफल होना असम्भव है

मैं इस विषय मे अनभिज्ञ हुं । यदि आप कृपा कर के मेरे इस मन्तव्य को समस्त आर्य्य जन और समाजों से प्रचार करदें जिससे कि मै उन समाजों के विवरण संग्रह करने मे समर्थ हो सकुं तो मेरा मनोर्थ सिद्ध होजावे । इससे समस्त आर्य्य जनों का उपकार हो सकेगा मुजे पूर्ण आशा है । यदि आपकी अभिरुचि होवे तो उत्तर दान से इस अधीन को बाधित कीजिएगा

मेरे मन्तव्य के दोष गुण विचारने का भार आपही के हाथ रहा । मै इस विषय में आपकी सम्मति प्रार्थना करता हुं । अन्त में मै यह भी आपसे निवेदन करना उचित समझता हुं कि इस मन्तव्य से सम्पादक भारतमित्र की विशेष सहानुभूती है । इति—

प्रार्थी विनयावनत

जुलाई २८ । १८८३ **श्रीकृष्ण क्षत्री**

सम्पादक "ज्ञानवर्द्धिनी सभा"

कृपापत्र इस पते से लिखियेगा ।

श्रीकृष्ण क्षत्री

९४ नं० काटन स्ट्रीट कलकत्ता ।

To Srikrishan Khattry
94 Cotton Street
Calcutta

श्रीमत् परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य
श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की ओर से
श्रीयुत महाशय मनोहरदास जी खत्री,
भारतमित्र कलकत्ता, के नाम पत्रः –

(१)

ओ३म्

श्रीयुत मनोहरदास खत्री संपादक भारतमित्र आनंदित रहो—आपने मेरे भेजे पत्र को प्रसन्नतापूर्वक छाप दिया उस का उपकार मानता हूं परन्तु शेष विषय भी छापने के योग्य जान कर मैंने लिखा था क्योंकि इस पूर्व पक्ष के संबंधी थियोसोफ़ीकल सुसायटी के प्रधान हैं इसीलिये यह विषय लिखा था और मैं आप को सुहृद्भाव से लिखता हूं कि यदि आप अपने भारतमित्र समाचार की विद्वानों में प्रतिष्ठा चाहें तो करणल ओल्काट आदि के करामात वा मिसमिरेजन से अनेकों के रोग निवारण आदि नितांत मिथ्या विषयक भी न छापें नहीं तो समाचार की प्रतिष्ठा नष्ट हो जायगी अब थोड़े समय में करणेल ओल्काट लाहौर में गये थे उन का रोग निवारणादि सामर्थ्य अत्यंत झूठ बड़े २ बुद्धिमान् लाहौर निवासियों ने निश्चित करके लिखा कि इन का

यह सब ऊपर का ढोंग है और जितना व्यवहार बाहर वा भीतर का थियासोफ़ीष्टों का मैं जानता हूं इतना आर्यावर्तीय लोगों में बहुत थोड़े लोग जानते हैं जब इन लोगों ने झूठे दांभिक मिथ्या छल व्यवहारों में मेरी संमति लेनी चाही मैंने नहीं दी तभी से वे अपना प्रपंच पृथक् करने लगे और मैं उन से पृथक् हो गया अस्तु थोड़े ही लेख से आप बहुत समझ लेंगे एक श्रीकृश्न खत्री ने ता० २८ वीं जुलाई सन् १८८३ को लिखकर हमारे पास भेजा है और उन्होंने बहुत से सनातन आर्य धर्म के प्रयोजनादि विषयों में आर्य पंचांग बनाने के लिये मुझ से सहाय चाहते हैं तथा आर्यसमाजों से भी जिस पत्र पर लेख किया है वह पत्र भारत-मित्र कार्यालय का है इसलिये मैं आप से पूछता हूं कि उक्त महाशय किस प्रकार के गुण कर्म स्वभाव वाले हैं और जैसा उन ने लिखा है कि इस में भारतमित्र संपादक की भी विशेष सहानुभूति है आप इन को योग्य समझते हैं यदि इस कार्य के योग्य समझते हों तो इस पत्र को देखते ही मुझ को प्रत्युत्तर लिखिये तत्पश्चात् आर्यसमाजों को उचित होगा, लिखा जायगा और जो एक पत्र बहुत दिन हुए मैंने लिखा था जिस में गोरक्षार्थ अर्जी देने का मसोदा वहां के वकील वारिष्टरों से पूछ के आप लिखें उस का क्या हुआ अब उस में अधिक विलंब करना उचित मैं

नहीं समझता यहां जोधपुर का समाचार पश्चात् लिखा जायगा=*

श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य्य
श्री१०८ स्वामी दयानन्दसरस्वतीजी महाराज की सेवा में
श्रीयुत महाशय श्रीकृष्ण जी खत्री सम्पादक
भारतमित्र कलकत्ता का पत्र ।

भारतमित्र कार्यालय ।

नं ६० क्रौसष्ट्रीट कलकत्ता, १८ आगष्ट १८८३

महानुभव !

आपके कृपा पत्र से कृतार्थ हुआ । आप "भारतमित्र" के यथार्थ हितैषी–हैं–इस लिये भारतमित्र आपके पास ऋणी है । हम आपको अनेक धन्यवाद देते हैं । परंतु इस अवसर पर इसका कुछ विवरण आपसे कहना उचित समझता हुं ।

देश हित के लिये कई मित्रों ने मिलकर 'भारतमित्र पत्र प्रकाशित कीया है । इस मे किसी का कुछ–स्वार्थ–नहीं है ।

* इस पत्र के अन्त में श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का हस्ताक्षर नहीं है परन्तु इस पत्र में श्रीयुत महाशय श्रीकृष्ण जी खत्री कलकत्ता के २८ जूलाई १८८३ के पत्र का वर्णन है जो श्रीस्वामी जी मह ॰ के नाम उक्त महाशय जी ने भेजा था ।

मित्रगण अपना २ अवसर समय इस पत्र की सेवा मे लगाते हैं। इन हीं मित्र वर्गने एक कमेटी स्थापित की है उसी—भारतमित्र कमेटी से सब कार्य्य निर्वाह होता है। वाबु मनोहरदास खत्री भारतमित्र के सम्पादक नहीं है जैसा को आप जानते हैं परंतु मैनेजर (कार्य सम्पादक) हैं। पं छोटुलाल मिश्र—इस पत्र के सम्पादक है। कई माससे विषय कर्म्म मे व्यासत रहने के कारण यह भारतमित्र का सम्पादन नहीं कर सकते। इनके एक मित्र श्रीकृष्ण क्षत्री ने सम्पादन का भार लिया है। भारतमित्र मे अव सव लेख उन्हीं का है। वास्तव मे अव वही—भारतमित्र सम्पादक हैं। अवशय इन सव लेखों मे छोटुजी की सम्मति रहती है। यही श्रीकृष्ण क्षत्री "ज्ञानवर्धिणी" सभाके सम्पादक भी हैं जिन के विशेष परिश्रम से गोरक्षा विषय के शाक्षर यहां से आप की सेवा मे गये थे। यह—महाशय अंरेजी मे भी व्युतपन्न हैं। इस पत्र के लेखक भी वही श्रीकृष्ण क्षत्री हैं।

अव मैं (श्रीकृष्ण क्षत्री) आपसे परिचित होगया॥ आप भारतमित्र—पत्र को देख कर जैसी कुछ मेरी योग्यता समझें। "आर्य्य पंचाङ्ग" वनाने से मेरी यह इच्छा है कि इस से सर्व साधारण को आर्य्य समाज के बेभव का ज्ञानै हो जायगा। इन समाजों से भारत वर्ष की—कांहा तक उन्नति हुई ओर होने की सम्भावना है—यथार्थ मे स्वामी दयानन्द जी—से आर्य्य भुमि का

कैसा हित हुआ, सबको "आर्य्य पंचाङ्ग" से घर बैठे इस विषय का ज्ञान हो जायगा। इसी अभिप्राय से मैने आप की सहायता मांगी है। अब आप जैसा उचित समझें। लाहोर "आर्य्या" के सम्पादक अजमेर, प्रयाग, फरुखाबाद, साजिहानपुर इत्यादि नगरों के आर्य्य समाजों के मंत्रि हम लोगों पर विशेष कृपा रखते हैं।

गोरक्ष विषय के आवेदन पत्र के लिये आपने लिखा सो उस का यत्न हो रहा है। यथा समय मे आपको लिखुंगा।

कार्नैल आलकट साहब के विषय मे आपके उपदेश के लिये मै कृतज्ञ हुं। ऐसा कोई विषय भारतमित्र मे नहीं रहता जिसका विशेष प्रमाण हमे न मिला हो। परंतु जब बात बात मे हमे दूसरे संबाद पत्र ओर मान्य मनुष्यों पर निर्भर करना होता है तो किसी समय मे भ्रम होना असम्भव नहीं है। अंत में "आर्य्य पंचाङ्ग" के विषय मे आपकी इच्छा जानने की आशा लगी रही। आपकी अभिरुचि जानने पर इस विषय का एक विज्ञापन भारतमित्र में दूंगा। कृपाकर इस पत्र का उत्तर शीघ्र दीजिएगा।

आपका कृपाकाङ्क्षी

श्रीकृष्ण खत्री

सम्पादक "भारतमित्र"।

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की सेवा में राजस्थान से

सम्बन्ध रखने वाले महाशयों के पत्रः—

श्रीयुत महाशय विहारीलाल जी मन्त्री वैदिक धर्म्म सभा जयपुर के पत्र

ओम् तत्सत्

श्रीमन् महाराज शोभित समाज जगदुद्धारक श्री स्वामी जी महाराज—नमस्ते वृत्तांत यह है कि इस सभा को स्थापित हुवे एक वर्ष होगया था इस कारण सभा ने संमति की कि वार्षिक उत्सव होना उचित है सो अंतरंग सभा में यह वात विचारी गई सभा का मनोरथ तो यह था कि सर्वत्र विज्ञापन देकर सभासदों को अन्य नगरों से वुलाया जावे परंतु कुछ मनुष्यों ने यह संमति दी कि यह प्रथम उत्सव है और द्वितीय यहां पर महाराज के गुरु ब्रह्मचारी जो मथुरा के रहने वाले हैं विद्यमान हैं इस कारण अन्य नगरों से सज्जन पुरुषों का वुलाना तो उचित नहीं परंतु इस नगर मों प्रधान २ पुरुषों को विज्ञापन देकर वड़ी धूम धाम के साथ उत्सव हानो चाहिये ॥ सो वैदिक यंत्रालय में

२०० विज्ञापन पत्र छपवा कर चैत्र शुक्ला २ सोमवार संवत् १९ का उत्सव विदित किया उन विज्ञापन पत्रों में से एक पत्र आ की सेवा में भेजा जाता है ॥ सो उक्त तिथि पर प्रातःकाल ७ वजे से १० वजे तक वडे उत्साह के साथ अग्निहोत्र हु जिसमें ९ आर्य्यों संस्कार भी कराया गया जिस समय अग्निहो हुवा तो समीप ६० या ७० मनुष्यों के विद्यमान थे और उ समय प्रत्येक मनुष्य के अंतःकरण में आपही का ध्यान हो रह था खैर विशेष कहां तक वर्णन करूं संध्या के पांच वजे से १० तक उपदेश हुवा जिस में सभी ७०० मनुष्यों के विद्यमान थे उपदेश का समय ऐसा आनंदायक था जिस को हम वर्ण नहीं करते ।

संपूर्ण शहर में सभा के उत्सव का ऐसा धन्यवाद हुवा कि यथार्थ में वेदानुकूल कर्म यही है ॥

इस परमानंद के नगर में प्रचरित होते ही पोप लोगों क श्मशान चैतन्य हुवा और हाय तोवा करते हुवे ब्रह्मचारी के पा जाकर पुकारे वहां पर अविद्या तथांधकार पूर्ण विराजमान उन्होंने प्रथम गौरीशंकर तथा प्रधानादिकों के नाम अनुक्रम लिख कर समीप २९ मनुष्यों के छांटे और उन के साथ ए पत्री महाराज को लिखी तू गोपालजी का भक्त है और यह दया नंद सरस्वती की सभा के मनुष्य प्रतिमा का खंडन करते हैं

कारण इन मनुष्यों का भद्र करा कर राज से वाहर निकाल दो और एक विज्ञापन भी इसके साथ भेजा कि इस प्रकार का विज्ञा-पन देकर लोगों को नास्तिक करते हैं ॥

यह संपूर्ण समाचार महाराज के पास पहोंचा और उन्होंने देख कर ठाकुर गोविंदसिंह तथा रघुनाथसिंह जी को बुलाया और कहा कि यह क्या वात है उस समय ठाकुर रघुनाथ सिंह की क्षात्रवृत्ति ने प्रकाश किया और निश्शंक होकर कहा कि महाराज वेशक इन लोंगो का भद्र करा कर निकालने चाहियें परंतु मेरा नाम इस पत्र में अवश्य प्रथम होना चाहियें और जो कुछ इन के वास्ते हुकम हो सोई मेरे लिये होना चाहिये क्योंकि मैं इस शहर में स्वामी दयानंद सरस्वती का प्रथम शिष्य हूं खैर कुछ चिंता नहीं अव तक आप की आज्ञा वा कृपा से राज किया अव आप की आज्ञा से इस स्वरूप को धारण करेंगे ॥ महाराज ने यह समार सुन कर कहा कि तुम भी दयानंद सरस्वती के शिष्य हो ठाकुर रघुनाथ सिंह जी ने कहा कि मैं इस शहर में उन का प्रथम शिष्य हूं और मूर्ती पूजन को मैं भी नहीं मानता हूं क्योंकि यह वेदोक्त नहीं है अव जो कुछ आप इस पर आज्ञा देवें सो तामील की जावे ॥ महाराज ने कहा कि स्वामी जी को मैंने भी सुना है यह कोई वात रज्य को हानिकारक नहीं है ब्रह्मचारी जी को किसी ने वहका दिया है रखो इस पत्र

को फिर देखा जावेगा इतने में ठाकुर रघुनाथ सिंह अपनी कचहरी के कमरे में चले आये और ठाकुर गोंदिसिंह भी आगये तो ठाकुर रघुनाथसिंह ने कहा कि जब तक इसाई तथा मुसल इस राज से नहीं निकाले जावेंगे तब तक इस सभा को कभी नुकसान न होना चाहिये ठाकुर गोविंद ने कहा कि इस में क्या संदेह है नाना प्रकार के मनुष्य मूर्त्ति का खंडन करते हैं यहां तक यह समाचार हुवा है सो हमने आपकी सेवा में निवेदन कर दिया है अब प्रार्थना यह है कि इस विषय में एक धन्यवाद पत्र ठाकुर रघुनाथसिंहजी के पास आप भेज देवें ताकि वोह और सहायक हो जावें आगे आपकी संमति है और हम लोगों को भी आज्ञा दी जावे कि हम इस विषय में क्या यत्न करै सभा तो हम प्रति शुक्रबार को निश्शंक करैंगे और किसी प्रकार से भी पुरुषार्थ में हानि नहीं है परंतु तदपि आपसे आज्ञा लेना उचित है और विशेष क्या लिखें

और हम यहां प ४० मनुष्य ऐसे दृढ हो रहे हैं कि हमारे वास्ते चाहे कुछ ही विपत आ जावे परंतु हम भयभीत होने वाले नहीं हैं

आपका सेवक

विहारीलाल मंत्री

Nandkisor Singh

---

(२)

ओ३म् तत्सत्

महाशय !

नमस्ते

चैत्र शुक्ला द्वितिया सोमवार संवत् १९४० मुताबिक् तारीख ९ अप्रैल सन १८८३ ईसवी को वैदिकधर्म्मसभा सवाई जयपुर का वार्षिक उत्सव है जिस में प्रातःकाल के ७ बजे से १० बजे तक वेदानुकूल अग्निहोत्र और संध्या के ९ बजे से आठ बजे तक वेदोक्त व्याख्यान होगा ॥

इस कारण सभा की प्रार्थना है कि आप उक्त समय पर उपस्थित हो कर सभा को सुशोभित और कृतकृत्य करें। अत्यन्त कृपा होगी ॥

एक एव सुहृद्धर्मो निधनेप्यनुयातियः ।
शरीरेण समं नाशं सर्व मन्यद्धि गच्छति ॥ मनुः ८

आप का शुभचिन्तक

विहारीलाल

मंत्री "वैदिकधर्म्मसभा" सवाई जयपुर

दरवाजे सांगानेर रास्ते कोठियारान

नहोरा चंदरावत जी

(३)

॥ ओ३म् ॥

श्रीमन्महाराजाधिराजेषु । शोभितसमाजेष्व स्मदुद्धारकेषु ॥ श्रीमत्स्वामीदयानदसरस्वती ष्वस्मत् कृत्ता नतिततेयाधाराः सदोल्लसंतु कोटिशः ॥

ऽदत्तस्त्वेषः ॥

यहां पर राज में एक मासिक पत्र जिसका नाम धर्म्मजीवन है लाहोर से प्रतिमास आता है ॥ अब की वार मारच संबंधी पुस्तक १ अंक ३ जो आया तो उसमें यह समाचार मुद्रित था श्रीस्वामीदयानंद सरस्वती जी महाराज को महाराजा जोधपुर ने जन्म भर के लिये कैद कर दिया है ॥ यहां के जयपुर गजट वालेने भी इस समाचार को अपने पत्र में मुद्रित कर दिया इस असत्य समाचार को देख हमारी सभा को बडा शोक हुवा क्यों-कि यह प्रतिष्ठा भंग समाचार जिसको ताजीरात हिंद में इजाले हैसियत उर्फी लिखा है साक्षात विदित है इस कारण यहां की अंतरंग सभा से प्रबंध होकर एक पत्र इसका उत्तर लेने के लिये लाहोर धर्म जीवन के पास भेजा गया है और लाहोर समाज तथा मेरठ समाज को भी इस विषय में संमति लेने के लिये लिखा

गया है क्योंकि इस सभा का मनोरथ इस विषय में नालिश करने का है इस कारण आप के चरणार्विंद में प्रार्थ है कि इस विषय में क्या अनुष्ठान होना उचित है ॥

ओमृतत्सत्

बिहारीलाल

मंत्री वैदिक धर्म्म सभा

सवाई जयपुर

---

(४)

॥ ओम् तत्सत् ॥

श्रीयुतपरमहंस परिव्राजकाचार्य अनेक गुण संपद्विराजमान श्रीमद्वेदविहिताचारधर्म्म निरूपक श्रीमत्स्वामी दयानंद सरस्वती जी महाराज नमस्ते ।

प्रार्थना यह है कि डेढ वर्ष से पंडित गौरीशंकर यहां पर विराजमान हैं इनकी सहायता तथा पूरुषार्थ से हमारी सभा को अत्यंत उन्नति हुई है और आगे को आशा है कि हम अपने मनोरथ को पहोंच जावेंगे क्योंकि इनका शुद्धांतःकरण आर्य धर्म्मा-

नुकूल और उपदेशकी युक्ति इस प्रकार की है कि इस नगर में विख्यात है और आशा है कि यह उपदेश द्वारा हमारे देश के मनुष्यों को वहुत लाभ पहुंचावेंगे परंतु इस डेढ वर्ष के अंतर में इनको यहां पर कुच्छ सुख नहीं हुवा क्योंकि प्रथम· महकम इमारत में ये नोकर हुवे थे इस सभा में आने के कारण ही वहां के हाकिम ने इनको पृथक किया था और पश्चात् सभा के पुरुषार्थ से अंग्रेज के पास नोकर हुवे परंतु पोप लोगों ने वहां पर भी अत्यंत विरोध किया और साहव से यहां तक कहा कि यह पुरुष हमारे धर्म्म की निंदा करता है ओर महाराज के धर्म्म तथा इसाई धर्म्म का भी निंदक है और स्वामी दयानन्द सरस्वती की तरफ से नोकर होकर यहां उपदेश करने आया है और आप के यहां भी नोकरी करता है इत्यादिक कथनों से साहव का चित् प्रथम ही बिगाड दिया था परंतु अब एक कारण यह हुवा कि गौरीशंकर एक दिन के लिये कह कर गत आदित्यवार को अजमेर की सभा में उपदेश करने को गये थे अगले दिन रेल न मिलने के कारण समय पर उपस्थित न हो सके इस कारण अनुपस्थिति दोष में इनका नाम पृथक कर दिया गया है अब इनका आजीवन् विनाश होने के सबब से हम को अत्यंत शोक है और सभा की वहुत हानी है क्योंकि यह सभा इन ही के रहने से नगर में विख्यात तथा स्थिर है ॥

इस कारण आप कि सेवा में प्रार्थना है कि कुछ सहायता आप करें और अवशेष हमारी सभा देवें तो यह भी एक उपदेशक हो जावें कुच्छ काल जयपुर में भी रहा करें और अवशेष रजवाडे में तथा अन्यत्र उपदेश करते रहैं क्योंकि हमारी सभा अभी सारा खरच नहीं उठा सक्ति है यद्वा जो एक उपदेशक के लिये महाराजा शाहपुर ने सायता दइ है उस स्थान पर इनको रखा जावे इनको अंग्रेजी फारसी के होने से नोकरी ओर अन्यत्र भी अवश्य मिल जावेगी परंतु इन का आजीवन् सभा की तरफ से होना अत्यंत गुण दायक है क्योंकि ऐसे पुरुषार्थी शुद्धांतःकरण का मिलना इस समय किंचित् कठिन है और पोप लोगों से हमारा काम नहीं चल सकता और इनकी व्याख्यान शक्ति तथा योग्यता की अजमेर समाज तथा अन्य आर्य पुरुष जिनोंनें इन को देखा और सुना होगा अच्छी प्रकार शाक्षी दे सक्ता है आशा है कि आप इस बिषय को कृपा दृष्टि से अवलोकन करके इसका अच्छा प्रबन्ध कर देंगे और उत्तर से शीघ्र अनुमोदित करेंगे ॥

पुनर्नमस्ते

आपका सेवक **बिहारीलाल मंत्री**

वैदिक धर्म्म सभा जयपुर

भा० कृ० द्वादशी स० १९४०

Nand Kishor Sing

Pradhan

(१)

श्रीयुत ठाकुर ज़ालिमसिंह जी
रूपधनी के पत्र—
ओ३म तत्सत्

श्रीयुत पूज्यवर विद्वज्जन भूषन श्री ६ पण्डित दयानंद सरस्वती जी महाराज को अभिवादन आपु की कृपा से मैं प्रशन्न हूं आपुकी प्रशन्नता उस सर्व शक्तिमान् से नित्य वा चाहता हूं मैं मैनपुरी से व सवव मुकदमें भरोलि के हाजिर होने से रह गया कि भारोलि वालो ने अपने मुकदमें की पेरवी को कहा उसकी पत्री मैनपुरी भेज् चुका हूं आशा है कि पहुची होगी अपना दास मुझ को समझ कर कृपा का पात्र वनाऐं हिऐ विनती यह है मैने सुना है कि मोहनलाल साहूकार वहीं हैं उनसे आपु कृपा करिकै आज्ञा दे देवे कि एक जेवघडी मेरे वास्तै खरीदि करिकै भेजि देवै उसे वास्तै ३०) रुपै मैं भेजता हूं ओरु जो कुछ जादा लगि जावै सो उस पता ठीक २ लिखै वहा को भेजिं दूंगा ओरु ४०) आपु के पास धरमार्थ में भेजता हूं उसमें २०) खास मेरे ओरु २०) अमरचंद कोठीवाल रुपधनी के कुंल्हिं ७०) रुपैया का मनीआर्डर करिकै भेजता हू

तारीख २९ फरवरी फालगुण सुदी ८ सम्वत् १९३८

आपुका दास—
जालिमसिंह रुपधनी का

(२)

ओ३म

श्रीयुत मान्यवर विद्वज्जन भूषन जक्त गुरू महाराज

पण्डित श्री स्वामी दयानंद सरस्वती जी

अभिवादन दो विज्ञापन पत्र गौरक्षया विष्य में हस्ताक्षर करिकै आपु पास भेजता हूं ऐतौ कोटिला की **ठकुरानी साहिवा ने ६३०३ नौ हजार तीन सौ आठ मनुष्यों की सही** करिकैं उसकी पीठ पर लिखा कर भेजा है उसके उपर मेंने सही लिखी है ओरु उसी कितावै भी मेरे पास ठकुरानी साहिवा ने भेजदी है कि जिनमे हस्ताक्षर उक्त मनुष्यों के लिखे है मोजूद है ओरु दस हजार (१००००) मनुष्यो के हस्ताक्षर यहा से करा कर उसकी सही मैने ओरु मेरे भतीजे गुलावसिंह ने की है भेजता हू डाक सरकारी में रजष्टरी कराकर ओरु मुझे ऐक छोटा सेवक अपना समझ कर कार्य मेरे योग्य सिवकाई का लिया करै जादा सुभ भाद्रपद सुदी ११ सम्वत १९३९

आपु का आज्ञाकारी—

जालिमसिंह रूपधनी

डाकखाना धुमरी

जिलै ऐटा

---

(३)

ओ३म्

श्रीयुत मान्यवर विद्वज्जन भूषन

श्री महाराज पण्डित स्वामी दयानंद जी

नमस्ते मैं आपुकी कृपा से आनंद से हू आपुक आरोग्यता ओरु प्रशन्नता परमात्मा से सदां चाहता हूं आपुके पत्र आने से बडाही आनंद हुआ उत्तम धार्मिक मनुष्य का मिलना दुर्लभ है यह तो वहुत ही ठीक है ओरू सम्मति मेरी तो आपुके सामुने सूर्य को दीपक दिखाना है ओरु आपुका अनुमान भी मेरे प्रत्यक्ष से वढ कर है निस्संदेह दोनों गुण मिश्रत है परन्तु खुलां वजां कोई पोपलीला नही की है ओरू अव तक कोई काम आपुके विरोध भी नहीं प्रगट किया यदि आपुकी मरजी होवै तौ फिरि भी अवकी वार उनके लिखने ओरू प्रतिज्ञा कों देखि लीजिये यदि आपुकी आज्ञानुसार न चलें निकाल वाहर कीजिये आपुकी कुछ हांनि न होगी उनकी हानिं ओरू हंसी होगी यदि अव की वार भी अपने कहे की भूल जावै तौ फिरि विस्वास कभी न कीजिये ओरू चरित्र वदरीका देख कर तौ यह समझ लिया किं पूरा विस्वास तौ अपना भी समझ कर आपुको लिखोंगा ओरू जोधपुर में विराजमान रहने का कव तक अनुमान् है राज जोधपुर का

बरताव उदयपुर के ही समान है वा कुछ नूनाधिक

मिति भाद्र सुदी १० सम्वत् १९४०
आपका शिष्य–
जालिमसिंह रूपधर्ना

---

(४)

ओ३म्

श्रीयुत मान्यवर विद्वज्जन भूषण श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री पण्डित स्वामी दयानन्द जी महाराज

अभिवादन आपकी कृपा से मे आनंद से हूं आपकी प्रशन्नता परमात्मा से चाहता हूं पत्र आपका मेरे पास आया वड़ा हर्ष हुआ आपके लिखने माफक कहार तलाश क्या ऐक ने नोकरी करना चाहा परन्तु नोकरी ३) रू: महीना कहिता है मै २) कहे थे ओरू यह भी कहा है कि का अच्छा देने पर ३) भी होसक्ते है ओरू भीमसेनि को मेने यह पत्र आपका आया था वुह सुना कर समझा दिया उन्होने इकरार किया है कि में श्रीयुत यानी आपकी नाराजी किसी तरह से न करूंगा जदि करेंगे तौ अपने किये को पहुंचेगे

मिती कुआर सुदी १ संम्वत १९४०
आपका आज्ञाकारी
जालिमसिंह

---

(१)

श्रीयुत ठाकुर नन्दकिशोरसिंह जी
जयपुर के पत्र—

ओम् तत्सत्

जगदुद्धारक परमार्थ दर्शक श्रीस्वामी जी महाराज नमस्ते

जिस पंडित का विज्ञापन देशहितैषी में दिया गया था उस का समाचार यह है कि आजकल वोह कुछ दिनों के लिये पाठ-शाला मिशन देहली में एवजी होरहे हैं पश्चात् पूर्ण होने इस एवजी के जो आप को आवश्यकता हुई तो उन से पूछ कर फिर उत्तर दिया जावेगा यद्वा मैं स्वयं उन से पूछ कर आप से निवे-दन करूंगा ॥

यहां का समाचार यह है कि आजकल चतुर्भुज भी उपदेश कर रहा है और इधर वैदिक धर्म्म सभा ने भी एक विज्ञापन जयपुर गजट में छपवा दिया है कि प्रति शुक्रवार को वैदिकधर्म्म सभा में चतुर्भुज के कथन का खंडन होगा इस कारण सब सज्जन पुरुषों को उचित है कि उभयत्र श्रवण करके सत्य की धारणा और असत्य का परित्याग करैं। सो इस प्रकार पाक्षिक उपदेश को श्रवण करने से लोगों को चतुर्भुज का जाल प्रकाशित होता जाता है और लोगों के संस्कार वदलते जाते हैं ॥

हम को विदित हुवा है कि आप महाराजा जोधपुर ने निवेदन

पूर्वक बुलाये हैं ॥ और आप वहां पर पधारे हैं इस कारण प्रार्थना है कि आप वहां के मंगल समाचार अवश्य लिखें जिससे हम को और विशेष हर्ष होगा ॥

रामानंद ब्रह्मचारी जी महाराज यहां पर आये थे उन से संपूर्ण वृत्तांत यहां का कहा गया था सो आप को भी । मालूम हुवा होगा ॥ और विशेष क्या निवेदन करें ॥ पुनर्नमस्ते ॥

रामानंद ब्रह्मचारी को मेरी तरफ से नमस्ते पहोंचे

श्रीस्वामी जी महाराज को गौरीशंकर का अत्यंत प्रेमपूर्वक नमस्ते पहोंचे ॥

आप का सेवक
नन्दकिशोरसिंह
उपप्रधान सभा जयपुर ॥
ज्येष्ठ कृष्णा ३० भौमवार ॥ संवत् १९४०

---

(२)

ओ३म्

तत्सत

परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीमन स्वामी दयानंद सरस्वती जी महाराज नमस्ते कृपा पत्र आप का आया और जोधपुर में

७

आप के व्याख्यान होने का वृतात और अन्य शुभ समाचार जान अत्यन्त आनंद हुआ आप की आज्ञा अनुसार बाईबिल के पूर्वापर विरुद्ध का उल्था हिन्दी में हो रहा है तैयार होने पर भेजा जायगा।

चतुर्भुज पौराणिक का दुराचारण यहां पर भी लोगों को भले प्रकार प्रकाशित हो गया क्योंकि वह सत्यार्थप्रकाशादिक वेदोक्त ग्रन्थों में बादी के प्रश्नो को आप का कथन बतला कर लोगों को धोखा देते थे सो उन्की यह दग़ाबाज़ी उन्के श्रोताजनो को स्पष्ट मालूम होगई और वह बड़े निरादर से रुख़सत किये गये

थोड़े दिवस से पंडित गौरीशंकर बहुत बिमार है लेकिन अब आराम होता जाता है और आप की कृपा से सभा बदस्तूर जारी और दिन बदिन उन्नति पर है कि आजकल सप्ताह में दो बार अर्थात् शुक्रवार व सोमवार हुआ करती है

और यह तजवीज़ हमारे सभासद डाक्टर किशनलाल की सम्मति से हुई है और यह आजकल बड़े परोपकारी पुरुष हैं महाराज के ख़ास दफ़तर में नौकर हैं और सभासदों की सेवा और सभा की उन्नति में अत्यन्त कटिबध मालूम होते हैं

आप के उपदेशों की प्रशंसा महाराज साहब जैपुराधीश के निकट कैईवार हुई और उन्होंने उस्की सत्यता पर सम्मति भी की परंतु और कुछ विशेष वार्ता न हुई

प्रयाग से मुद्रित किया हुआ धन्यवाद पत्र आया था उस

पर आज्ञानुसार हस्ताक्षर करके उदयपुराधीश की सेवा में भेज दिया गया परंतु अभी तक उत्तर नहीं आया सो जवाब आने पर जैसा हाल होगा निवेदन किया जायगा

और सर्व सभासदों को प्रेमपूर्वक नमस्ते मालूम हो

आप का शिष्य **नन्दकिशोरसिंह**

जैपुर मिती आषाढ शुक्ला २ शनी सं० ४०

---

(३)

ओम् तत्सत्

श्रीस्वामी जी महाराज नमस्ते ॥

समाचार यह है कि वाईविल का पूर्वापर विरुद्ध तर्जुमा जो आपने मंगाया था उस के विषय में प्रार्थना यह है कि कुछ तो होगया है और कुछ अवशेष है विलंब का कारण यह है कि जिस की वोह किताब थी उस ने अपने किसी मित्र को दिखलाने के लिये लेली थी हमने और किताब मंगवाई है वोह अभी आने वाली है और उस किताब वाले ने भी आज या कल ही देने की प्रतिज्ञा की है इस कारण अब मैं आप की सेवा में प्रार्थना करता

हूं कि बहुत शीघ्र तर्जुमा करके आप की सेवा में समर्पण करूंगा॥ और जो कुछ तर्जुमा हो चुका है उस में से दो चार खंडन आप की सेवा में भेजता हूं॥

प्र०—१ परमेश्वर का अपने कामों से राजी होना॥

फिर परमेश्वर ने हरएक वस्तु पर जिसे उसने बनाया था दृष्टि कि और देखा कि बहुत अच्छी है॥ (उत्पत्ति विषय पर्व १ आयत ३१॥

परमेश्वर का अपने कामों से नाराज़ होना॥

तब मनुष्य को पृथिवी पर उत्पन्न करने से परमेश्वर पचताया और उसे अति शोक हुवा। उत्पत्ति वि० प० ६ आयत ६॥

५ धपरमेश्वर का थकना और आराम लेना॥

परमेश्वर ने छ दिन में स्वर्ग और पृथिवी उत्पन्न किये और सातवें दिन आराम पाया (यात्रा वि० प० ३१ आयत १७॥

क्षमा करने से मैं थक गया हूं॥ (यर्मिया) प० १५ आयत ६

तूने मुझे अपने कुकर्म्मों से थका दिया॥ (यसिइयाह) प० ४३ आ० २४

परमेश्वर न कभी थकता है न आराम लेता है॥

क्या तूने नहीं जाना और क्या तूने नहीं सुना कि परमेश्वर सनातन का ईश्वर है पृथि के सिवानों का सृष्टिकर्त्ता थोड़ न निर्बल होता न थकता है (यसिइयाह) प० ४० आ० २८ ॥

आप का दर्शनाभिलाषी

नन्दकिशोरसिंह

जयपुर २४ जोलाई ८३

---

(४)

ओ३म् तत्सत्

श्रीस्वामी जी महाराज नमस्ते

अत्यंत शोक का समाचार है कि श्रावण शुक्ला ७ शुक्रवार तदनुकूल १० अगस्त सन वर्त्तमान को प्रातःकाल के समय मुंशी गंगाप्रसाद जी वैश्य निवासी चौमुका कि जो इस वैदिकधर्म्मसभा के प्रधान थे हैजे के उपद्रव से स्वर्गवास हो गया इस कारण हम को अत्यंत ही शोक हुवा है कि ऐसे पुरुषार्थी तथा धर्म्मानुयायी पुरुष का समागम होना अत्यंत कठिन है इन की आर्य्यत्व वा पुरुषार्थ तथा वेदानुकूलाचरण इस नगर में विख्यात हो चला था और उस

से उन्नति की अत्यंत आशा होती थी परंतु क्या किया जावे इस में दैव ही प्रवल है ॥ ऐसी युवा अवस्था में ऐसे श्रेष्ट पुरुष का वियोग अत्यंत दुःखदायक होता है अव आशा है कि आप पत्र द्वारा शीघ्र ही अनुमोदित करैंगे ॥

आप का सेवक

नंदकिशोरसिंह ॥

जयपुर

श्रा० शु० १० सोमवार

---

(९)

॥ ओं तत्सत् ॥

नं० ६०

श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य अनेक गुण संपद्विराजमान वेदविहिता चारधर्म्म निरूपक श्रीमत्स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज नमस्ते ॥

पत्र आप का मिति भाद्रपद शुक्ला १ सं. १९४०, का आया समाचार विदित हुवा उसके उत्तर में प्रति नियम यथा संख्या निवेदन किया जाता है ।

(१) पं० गोरीशंकर जब सहारनपुर में नोकर थे तब रु ३२॥) मासिक पाते थे और जब यहां आये तो राज में तथ अग्रेज के यहां भी रु १९) मासिक पाते रहे प्रंन्तु इस मासिक पर वे यहां इस आशा पर ठरे थे के शीघ्र ही कहीं अच्छी तर्क्की हो जावेगी क्योंकि उस समय यहां विदेशी के रखने की आज्ञा नहीं थी इस लिये हाकिम ने यह भरोसा दिया था के कुछ समय के पश्चात् जब तुमारा हक हो जायगा तो तुम को बडी नोकरी पर नियत कर देंगे इस आशा पर उक्त पंडितजी अपने पांच आदमियों का बडी कठिनता से निरवाह करते थे बल्कि संस्कारादि कर्म्म द्वारा सभा में भी सहयता पहुंचा करती थी।

(२) इन के ग्रहस्त के खरच को देख कर हम निश्चय करते हैं कि न्यून से न्यून रु २९) मासिक में इन का निरवाह सुगमता से हो सक्ता है ।

(३–९) आपने ज्यो दरयाफ्त किया के इस प्रबन्ध में तुम क्या सहयता करोगे इत्यादिक के उत्तर में प्रार्थना यह है के अभी इस सभा में केवल ३ तथा ४ पुरुष द्रव्य से सहयता करने वाले हैं केवल इन ही के पुरुषार्थ से यहां का मासिक खरच अर्थात किराया

मकान स्थान रक्षक का मासिक वार्षिक उत्सव वा आर्य्य जन का सत्कार तथा फरश पुस्तकादिक चलता है और अन्य सभासद वे नोकर अथवा पराधीन होने के कारण कुच्छ सहयता नहीं कर सक्ते इस कारण इस समय यह सभा कोइ विशेष खरच नहीं उठा सक्ती हां आशा है कि किसी समय पर यहां ऐसी उन्नति होगी के फिर अन्यत्र से अन्य सहयता की आवश्यक्ता न रहेगी प्ररन्तु जो आप पंडितजी को उपदेशक नियत कर केवल यहां रखना चाहें तो सभा कुच्छ देसक्ती है यदि आप इन को एक उपदेशक नियत कर के अन्यत्र समाजों में धूमाना चाहे तो न्याय से किसी समाज पर इन के मासिक का भार न होना चाहिये और इन के यहां रहने और अन्यत्र धूमने के विषय में प्रार्थना यह है कि जब इन को आपने समाजों का १ उपदेशक रखा तो इनका धूमना, आप के मनोर्थानूकूल होगा हां इतनी प्रार्थना है के यहां ऐसे उपदेशक की अत्यन्त आवश्यक्ता है क्यों के इन के यहां पर न रहनें से उन्नती में हानी हो जावेगी द्वितिय पण्डितजी ग्रहस्ती हैं १२ महीने नहीं धूम सकेंगे इस कारण ६ महीने तो इन को अवश्य १ जगह रहना

होगा इस ६ महीने में यह जैपुर रहकर उपदेश तथा पढ़ाना वा देश हितैषादिक आर्य्य पत्रों को सहयता दियाकरें और वर्ष के द्वितिय भाग में आप के नियमानूकूल घूमा करें।

(४) आपने ज्यो लिखा के इन के भोजन तथा रेल का खरच समाज से मिला करेगा इस विषय में प्रार्थना है कि ज्यो समाज शब्द से भिन्न २ समाज का अभीप्राय है के जहां जावे वहां से मिले तो हमारी सम्मती में सब समाजों में यह भार उचित नहीं है और ज्यो समाज शब्द से उपदेश नैमितिक कोष का अभीप्राय है तो ठीक है और भोजन खरच के लिये ऐसा प्रबन्ध होना उचित है के इन के घूमने के समय में ६) तथा ७) रु० मासिक भत्ते के तौर से आधिक मिला करें अन्यथा नहीं ॥

सम्पूर्ण सभा की सम्मती पूर्वक आप की सेवा में प्रार्थना है के उपर के लिखे हुवे नियमोत्तरों को दृष्टिगोचर कर के शीघ्र प्रबन्ध करेंगे पंडित गौरीशंकर से इस बात में दरयाफ्त कियागया तो उन को भी यह सभा का विचार माननीय है और ज्यो कुच्छ सम्मती तथा अज्ञा आप की होगी वही सभा तथा पंडितजी को सर्वथा माननिय है परन्तु इन को आजीवका का प्रबन्ध शीघ्र हो जावे क्यों के आज कल यह बेकार हैं और

खरच विशेष है इस लिये इन को इस समय आर्य्यसमाज से सहयता पहुंचनी आवश्यक है ॥

मुन्सी गङ्गाप्रशाद की अनुपस्थिति में सभा का यह प्रबन्ध हूवा है ।

(१) प्रधान डाक्टर कुन्नलाल वैश्य
(२) उप० ठाकुर नन्दकिशोरसिंह
(३) मंत्री श्यामसुन्द्रलाल शर्म्मा
(४) उप० जगन्नाथ शर्म्मा
(५) कोशा० रामशरण शर्म्मा
(६) पुस्त० गोपीनाथ शर्म्मा

वर्षा यहां वहुत हूइ है और हो रही है और सब प्रकार कुसल क्षेम है ।

संपूर्ण सेवक जनों का आप को नमस्ते पहुंचे
उत्तर से शीघ्रऽनुमोदित किजियेगा

आप का सेवक
श्यामसुन्द्रलाल मंत्री
वैदिक धर्म्म सभा
सवाई जयपुर
मिति भाद्रपद शुक्ला ९ सं १९४०

श्रीयुत महाशय उज्वल जयकरणजी
उदयपुर के पत्र

(१)

॥ श्रीपरमैश्वरजी ॥

॥ स्वस्ति श्री जोधपुर शुभस्थानस्थ सर्वोपमा विराजमान स्वामीजी महाराज श्री १०८ श्री दयानन्दजी सरस्वतीजी के चरण कमलेषु उदयपुरस्थलिपितं उज्वलजयकर्ण का शाष्टांक नमस्ते निवेदन होवै अपर ॥ कृपा पत्र आप का आया जिस में लिखा मेरै पिता के ओर महाराज प्रतापसिंघ जी सैं अैक्यता करादी सो तो आप करुणानिधि है यावत आर्यावर्त का आप उपकार कर्त्तं हैं इस में हमारा उपकार कीया सों आप की अधिकाइ अधिक तो अ क जिह्वा सें क्या लिखुं परंतु जिस कार्य के वस मैं पांच वर्ष सें यहा तपस्या करता हुं सो इतना तो सांवल्दासजी ने किया कि यहा स्थापत कर दिये परंतु मन की भ्रांती यावत थी तावत् कुछ न था सो आपनै शुभ दृष्टी करकै मिटादी अब अके प्रताप से त्था यावदार्यकुलदिवाकर महाराणा जी के प्रताप सें जन्मभर आनंदित रहेंगे नहीं तो बड़ा कष्ट था इश्वर आपकों चिरंजीवी करे ॥ ये व्रतांत मेरे पिताजी ने पहेलै भी लिख दिया था फेर आप परोपकारी है

सो न्याय की रीति सैं हमारा उपकार वनै सो करोइगें ॥ और मास्टर के विषय मै कृस्न जी नैं उत्तर लिखाइहै ॥ संमत १९४० का श्रावण शुक्ला २ द्वितीय ॥

---

(२)

॥ श्रीरामायनमः ॥

॥ सिध श्री गढ जोधपुर शुभस्थानस्य सर्वोपमा विराजमान स्वामी जी महाराज श्री १०८ श्री दयानन्द जी सरस्वती चरण-कमलेषु उदयपुरस्य लिषितं उज्वल जयकरणस्य नमस्ते

अपर ॥ कविराजा सांवल्दासजी इंदोर सैं याहां आये और किंचित वायू के कारण से तथा घर्म से नेत्र में पीड़ा हो गइ दूजा नेत्र में सो पुनः इँदोर जाणे का विचार है सो कल जावेंगे और कविराज जी नें कहा है कि स्वांमी जी माराज कुं लिख दो कि हुल्कर साब कुं हमनै गोकरुणानिधी के विषय में कया तो उनाँनें कहा के स्वामीजी महाराज यहां पधारैंगे तब मै जरूर लिख दूंगा ओर तुम कुं नहीं ओर । रतलांम विकानेर जेसल्मेर के वास्ते मुरारिदान जी कुं लिख दिया है सो वे उद्योग करैगा पुनः आप बी आज्ञा करते रहिये अैसा सावल्दासजी ने कया है और

मेरी प्रार्थना ये है कि आप यहां कितने दिवस विराजेंगे कारण य-
हां लोक पूछते है ओर श्रीदरबार के हृदय में आपकी भक्ती
जैसी थी वैसी हैं ओर अब भादवा के शुक्ल पक्ष में मेरा ही विचार
आणे का है सो याद रहे संमत १९४० का भाद्रपद कृष्णा ७ सप्तमी

श्रीयुत दामोदर शास्त्री नाथद्वारा का पत्र

श्रीमान् जगद्विहारी विचरताम्

(१)

दिन	समय	स्थल
श्रीनृसिंह जयंती	माध्यान्ह	श्रीनाथद्वारा

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी"

जयंतु श्रीश चरणाः सर्वे सर्वैः समं सदा.

ईशेयथा चैकवचः प्रयुज्यते तथैव चास्तां त्वयि माननीये ॥
प्रयुक्तमेतद्वहुलार्थदं मे स्वामिन् दयानंद नमो नमस्ते
यद्यप्ययं नास्तिभवच्छ्रुतीनां पात्रोऽथवा नेत्रपथं प्रयातः ॥
तथापियुष्मद्गुणदर्शनैर्वा आकर्णनैर्यः परिपूज्य बुद्धिः
क्वारशां दृष्टतनूः पूर्वं मोहमय्यां च दर्शने ॥

सप्रत्युत्कोपि भावत्कमतवन्मूर्त्यदर्शनः ॥ ३ ॥
स्वतोपिध्यान योगेन पुरुषार्थार्थदर्शनः ॥
भवन्मूर्तिं ध्यायमानः सदा भाव्यादि लोकते ॥
मोहनलालवचोभिःसंस्मृतिमेवं प्रयाति निश्चयः ॥
स्वस्मृतिपात्री भवने प्रार्थयते स्वांत (भवता मितिशेषः) कोणतः स्थानं ॥४॥
भवेत्कदातत्सुदिनं सुखाय यस्मिन्कृपास्यात् भवतां तु दर्शने ॥
हरेस्तथावः, प्रणयानुबद्धे विद्यावतां विद्वद्वर सूरिणां भोः ॥ ५ ॥
सदा कृपापत्रइतेः दीनदामोदरस्य मे प्रष्टव्यं कुशलं चार्य बोधनीयस्तथात्मनः ॥ ६ ॥

श्रीमदीयः
दामोदर शास्त्री

अनुवाद

जिस प्रकार ईश्वर में एक वचन का प्रयोग किया जाता है, उसी प्रकार मेरे कल्याण करने वाला एक वचन आप में प्रयुक्त हो, हे स्वामि दयानन्द, तुझे नमस्कार है।

[२]

यद्यपि आपने इस को (मुझे) कभी सुना नहीं है, और नाहीं कभी देखा है, तथापि आपके गुणों के देखने या सुनने से ही इस में (मुझ में) आप के लिये पूज्य बुद्धि उत्पन्न हो गई है।

[३]

काशी में इसने आप के शरीर को देखा है और यद्यपि मुम्बई में भी यह [मैं] आप की मूर्ति को देखना चाहता है तथापि देख नहीं सका जैसे आप के मन में मूर्ति का दर्शन नहीं होता।

[४]

[तथापि] अपने ध्यान से ही मैंने, पुरुषार्थ के साध्य रूपी आप के दर्शन को ही पालिया है, आप की मूर्ति का ध्यान करता हुवा सदा वेदभाष्यादि पढ़ा करता है [मैं पढ़ता हूं]

[५]

आप मोहनलाल की बातों से नित्य याद आते रहते हैं, मैं आप के हृदय में थोड़ा स्थान चाहता हूं जिससे मैं भी याद आता रहूं।

[६]

वह सुख देने वाला कौन सा शुभ दिन होगा जिस दिन, आपके दर्शन के लिए, इस स्नेह से आप में लगे हुवे जन में महाविद्वान् आप की और परमात्मा की कृपा होगी।

[७]

सदा कृपा कीजिये, पत्ररूपी दूत से इस दीन दामोदर का कुशल पूछते रहिये, और इस अपने [जन०] को समझाते रहिये।

श्रीमदीयः

दामोदर शास्त्री

श्रीयुत दवे घुड़ाराम जी श्रीमाली जालोर का पत्र ।

(१)

॥ श्री ॥ परमेश्वर जी सत्यंछे ॥

॥ श्री विध्नंतराय नमः ॥

॥ स्वस्ति श्री जोधपुर नग्रे सर्व गुण निधान सर्वोपमालंकृत् श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री दयानंद सरस्वति जी योग्य जालोर से लिषितं ब्राह्मण श्रीमालि आवसति पुष्कर दवे घुडा राम का प्रणाम नमो नारायण बंचणा अत्रकुशलं तत्रास्तीकुशलं अपंच समाचार वाचणा कि आप मरुस्थल देश मे मेवैहत्पुर श पधारे सो देश पावन किया ओर आप कि कीर्त्ति ईदर बोहोत सुणे मे आइ हे कि सनातन वेद धर्म्म मे वर्त्तते हे ओर पाखंड मतां कु खंडन करते हे सो अबी इस वषत मे कलु के बिच मे शंकर स्वामि कैलाश पधारियां पिछे असा कोई महतपुरुश प्रगट्या नहि था ने पाशंड मत बहोत चला हे सो अब हमने तो असे बीचारा के आप सनातन वेद धर्म प्रवृतमान करणे के अर्थे ओर अंधे मनुष्यां के नेत्र प्रकाश करणे के वास्ते परमेश्वर जी ने आपकु सृष्टि मे भेजे हे सो आप जरूर जगत का सुधारा करोगे एशि बरावो ईश्वर कि तरफ आई है परंतु अबी वषत एसा हे के गउ ब्राह्मणकु वेदन करते हे फेर सनातन धर्म केसे चलेगा फेर गउ ब्राह्मण केसे है

प्रत्यक्ष कामधेन कल्पवृक्ष हे जिण से सर्व स्रिष्टि का भरण पोशण होता हे इसका घृत शे श्रौतस्मार्त्त कर्म होता हे ओर गौउ का पुत्र शे सर्व नाज निपजता हे वृशभ जेशे फेर कोई बलवान् न जानवर हे नही ईस का नाम बलहद। जगत केते हे फेर जीस वृषभ की माता गउ स्सो सर्व जगत कुं दुद प्रीत सर्व तरे का आनंद देवे वो आप तो घाश पावे ओर जगत कुं दुद पिलावे एसी पर उपगारी गउ जीश कु जीश कु वध करणे लगे जीश मे कोई मना करणेवाला समर्थ नाहि ओर गउ ब्राह्मण का जोड़ा हे परंत्रु कोई एसे हकेगा की ब्राह्मण ने ब्रह्मत्व पणा छोड दिया जीस से ब्राह्मण का मान्य कम हाये गया परंत्रु गउ ने तो गउ पणा छोडा नाहि घाश खाति हे ने दुद देती हे फेर गउ वध किऊं होति हे हम ने गउ ब्राह्मण का अधीकार लीखा सो एशा नाहि के एहिज धर्म्म सबाहे परंत्रु एशे जानते हे के वेद शबहि वेद के सूत्र । स्मृतियां मे पंडित कहते हे के श्रौत्रस्मार्त अग्निहोत्रादिक कर्म्म कहा हे तिण शे गउ ब्राह्म कि कथा आप कु लिषी है सो गेलि गुगि लिखि होय तो गुना माफ करणा सत्य असत्य कि तो आप जानो सो षरि हे सतगुरु मिले तो संशे मिटे

१ प्रश्न: १ ओर आपकु प्रश्न पुछते हे सो आप संदे मिटाणा हमारा। कोई एसा कहते हे के वेद मे पशु वध करणा कहा है परंतु हमारे मांनणे मे आई नहि तब उसने कहा के वेद प्रमाण हे

वेद प्रमाण देते हे ईश मंत्र शे होता यक्षदग्नि रिवष्टकृतम याडग्निरश्विनोरछागस्य हविष प्रिया धामान्ययाट् सरस्वत्या मेषस्य हविषः प्रिया धामान्ययाडिन्द्रस्य ऋषभस्य हविषः प्रिया धामान्ययाडग्नेः प्रिया धामान्ययाट् सोमस्य प्रिया धामान्ययाडिन्द्रस्य सुत्राम्णः प्रिया धामान्ययाट् सवितुः प्रिया धामान्ययाड्वरुणस्य प्रिया धामान्ययाड्वनस्पतेः प्रिया पाथाऽस्य-याड् देवानामाज्यपानां प्रिया धामानि यक्षदग्नेर्होतुः प्रिया धामानि यक्षत् स्वं माहिमानमायजतामेज्या इषः कृणोतु सो अध्वरा जातवेदा जुषता ँ हविर्होतर्यज ॥ इश मंत्र से प्रमाण देते हे.

२ प्रश्न २ ओर वेद मे अहंब्रह्मास्मि । लिषते हे ओर कोई ना बोलते हे अहं ब्रह्मास्मि ये बात किलाप हे ओर वेद मे लीषते हे हिरण्ययेन पात्रेण सत्यस्यापि हितम्मुखम् । योसावादित्ये पुरुषः सोसावहम २ ऊँम् खंब्रह्म प्रथम तो कहा के सो सावहम् पत्र-कहारक खंब्रह्म सो ये बात केसे हे । ओर ईश मंत्र मे हिरण्ययेन पात्रेण हे के हिरण्मये न पात्रेण हे तिश का प्रत्युतरः

३ प्रश्न ३ ओर वेद मे श्रौतस्मार्त्त कर्म्म करणा कहते हे फेर कोई कर्म्म कि नास्तिक कहते हे सो अब आप महत् पुरुषो के पास विणती भेजी हे सो निरधार कर पिछा प्रत्युतर भेजणा ओ आप कबीर से बिचारो के उदर बेखई प्रश्न का उत्तर लिखा

चाहाते हे आप तो ज्ञानी हो सो एसा कबि विचारो नह। परंतु हम तुछ बुद्धी वाले हे सो एसा छीरते हे ओर हमारा प्रणाम तो एसे रहता हे के माराज के पाश उरूबरु जाय के माराज के श्री मुष के बचन सुणे ओर असे पुरुषां के चरणारवंद मे रहे मन तो एसे रहता हे परंतु माया के पास मे बंधे हे सो आणेकु फुरसत नही कारण के गरीब आदमि हे भिक्षा मांग के गुजर चलाते हे परंतु आपकु जोधपुर मे पधारे सुणे जीस दिन से आप के दरसण कि अभिलाषा लग रहि हे

फेर कबि आप एसे बिचारो के ये मूर्ष ने क्या गडबड रासा भेज दिया हे सो हम कुछु पंडित हे नही ओर बुद्धीमान बि हे नाहि जेसी जगत मे विष्यात वातां सुणणे मे आई तेसी अरजी आपकु भेजा है सो अक्षर आगा पाछा के ज्यादा कमति लिषण मे आया होय तो गुना माफ करणा ओर आप बडे हो जेसी वाडि विचार के प्रश्ना का प्रत्युतर भेजणा

ओर हमारा मन ईहा तो एसे रेता हे के आप के पाश बेद पढे ओर गुरु की बंदकी करे परंतु भरण पोशण का कोई तरफ से उपाय लगावो तो आप के पास चले आवे बेद पढाणाये उपगार का कांम हे इति

। आप कीरपा करके पत्र भेजो तब गांम जालेर मध्ये शीरी

माली ब्राह्मण धुडाराम पोकरदास के पास पोछे ठीकीणा ब्रह्मपुरी मे

। धुडारांम की उमर बरश २९ की

। पुसकर की उमर बरश २९ की

॥ संवत् १९४० रा मिति भाद्रपद् सुद १ मे

श्रीयुत भाई जवाहरसिंह जी
(लाहौर तथा शाहपुरा) के पत्र

(१)

ओम्

No.... ६१७

ARYA SAMAJ OFFICE, LAHORE.
Dated 17th February 188[illegible].

To

श्रीमत्परिव्राजकाचार्य
श्री १०८ मद्दयानन्द सरस्वती जी
महाराज योग्य " नमस्ते "।

SRI,

आप के दोनों क्रिपा पत्र आये पढ़कर बहुत ही आनन्द प्राप्त हुआ; अब आप के प्रश्नों का क्रम से उत्र दिया जाता है॥

कारीगरी का स्कूल हम नहीं खोलना चाहते किन्तू तत्व अर्थात् पदार्थ विद्या का स्कूल खोलना चाहते हैं।।द्वितीय श्रेष्ठ है।।

लाला शालगराम सम्पादक आर्य यंत्रालय नें समाज के प्रति देने को कहा है उस की लिखाई इसी स्थान में होगी अन्यत्र नहीं ।। मैंने पूर्व पत्र में यह लिखा था कि पूर्वोक्त सम्पादक समाज को दान देकर कलकत्ते मे स्वकार्यार्थ चले गये हैं । जब आवेंगे तो लिखा पढ़ी हो जायगी ।। सो वह महाशय अब आ गये हैं ।। दुष्ट लोग उसको भ्रमा रहे हैं ।। ऐक पत्र धन्यवाद का यदि आप उनके नाम भेजें तो लाभदायक हो ।।

आप का येह कथन कि हम मद्रास्यों को भूल रहे हैं सत्य है निस्सन्देह आप का उस दिशा में उपदेशार्थ रटन करना बंगाल हाथे से उत्तम होगा ।।

आप के द्वितीय पत्र से सिद्ध होता है कि आप दो स्त्रीयों के वास्ते मुझे इससे पूर्व भी लिख चुके हैं परंतु इस विषय में मेरे पास कोई अन्य पत्र नहीं आया ।। दो स्त्री जो पतीवाली शुद्ध आचरण वाली कसीदा अर पढ़ाना जाणने वाली हो तथा दो पुर्ष ऐक अन्तरंग मंत्री जो स्वदेश हितैशी धार्मिक राजनीती में नि-पुण इंगलिश भाषा का पण्डित अर कोई विष्म हो उसके लिखने में भी निपुण तथा परिश्रमी अर घर के समान काम करने वाला स्वामी भक्त कृतग्य आदि हो ।। अर द्वितीय " ओवर सीयर "

जो अपने कार्य में निपुण आदि हो मागते हैं ॥ ॥ इसमें दास के बहुत बिचार हैं तथाहि:—

१ देश की दुर्भाग्यता से प्रथम तो ऐसी स्त्रीयों का मिलना बहुत ही कठन है ॥ जो ढूढे से मिलें भी तो पतीवाली का होना भी कठन हुआ ॥ शुद्ध आचरण मे संदेह रहा तो भी ठीक न हूआ ॥ यदि पतिवाली भी ऐसी कोई स्त्री हुई तो वह इतनी दूर जाकर नौकरी न करेंगी यावत काल उसका पती भी राजस्थान में सङ्ग न जावे । अर ऐसा पती भी कोई न होगा जिस की स्त्री ऐसी होने पर वह आप निकम्मा होगा अर स्वपतनी को द्रव्य के लिये परदेश भेजने पर राजी होगा इससे पती अर पतनी दोनों को राजस्थान में नोकरी चाहिये ॥ तब काम चले ॥

२ स्त्रीयों का मासिक आपने नहीं लिखा ? ओर न येह लिखा कि वह उदयपुराधीश तथा शाहपुराधीश के किसी देशी पाठशाला में पढ़ायेंगी या उनके राज ग्रह में ? ऐसी स्त्रीयें हम ढूढ रहे हैं शीघ्र ही इसका ब्योरा लिख भेजेंगे ॥

पूर्वोक्त गुण युक्त अंत्रग मंत्री ढूढे से मिल तो सकता है परंतु ५०) मासिक पर मिलना कठन है ॥ येह बात आप पर प्रगट होगी कि रेल के मिस्त्री वा त्रखान ३०) वा ४०) मासिक पाते हैं अर सामान्य इंगलिश के ज्ञाता ५०) वा ६०) मासिक पाते हैं । तो ऐसा पुरुष जैसा आप चाहते हैं ५०) मासिक पर

भला कब आ सक्ता है ? हां येह भी सत्य है कि ५०) पर सेकड़ों अने को तयार हो जावेंगे परन्तु जैसे आप चाहते हैं कि वह पुरष हास्य का कारण न होवे अैसा ५०) को नहीं मिलेगा इस दास के विचार में तो यह आता है कि पूरण गुण युक्त १५०) मासिक पर मिलने से भी ससता है ॥ तथापि हम सब अैसे गुण्यवान पुरप की परताल रखेंगे ॥

निम्न लिखत बातें प्रष्ठव्य हैं इससे सहज से कोई मनुष्य मिल जावेगा कृपा द्रिष्ठ से उत्र लिख भेजें ॥ तथाहि:—

१ अन्तरंग मंत्री उदयपुराधीश वा शाहपुराधीश को चाहये ?
२ पश्चिमोक्त राज्य की विभूती कितने लक्ष की है ?
३ मासिक में बड़ती कब २ अर कहां तक होगी ?
४ मासिक से भिन्य रसद कितनी मिलेगी ?
५ निवास स्थान गत असबाब राज्य से होगा वा नहीं ?
६ स्वारी के सारे ख़रच नोकर आदि के किसके ज़िम्मे होंगे ?
७ मासिक हर महीने मिलेगा या नहीं ?
८ राजा की आयू अर स्वभाव अर विद्या ?

इस विषय में प्रधानादिकों से जहां तक विचार हो चुका है वह यद्यपि मैं अपनी लेखनी से नहीं लिख सक्ता तथापी सारांश येह कह देता हूं कि प्रधानादिकों का विचार है कि यदि मासिक अधिक हो जावे अर स्वामी जी भी संमती इस बात पर दे दें

कि येह बात उत्तम है तो मैं इस नौकरी को कबूल करलूं ॥ परंतू मैं अभी तक कुच्छ नहीं कह सकता किउ कि ९०) मासिक मुझे अपने घर में मिल जाते हैं जो बाहर के १००) के बराबर हैं ॥ अर यहां कानून का पड़ना समाजों में व्याख्यान देने सब रह जावेंगे अन्य परकार सें भी संकोच है कि देशी राज की नौकरी कबी नहीं करी अर न देशी राज प्रबंध की उपमा किसी पत्र में देखी जे कर देखी तो बहुत कम देखी॥ऐसे समें में अपनी योग्यता की प्रशंसा करनी भी महां अयुक्त होगी अर न वास्तव सें किसी योग्य हूं मैं ॥ हां कुच्छ पुलीटकल विद्या का स्वभाव से प्रेम है यांते समाज के सज्जन पुरुष यही कहते हैं कि तुम इस काम को अच्छा निबाहोगे ॥ परंतू मैनें हां या नां नही कही अबी विचार हो रहा है देखये परिणाम । क्या होता है ॥

हां आप के कृपा पत्र में इक बात ऐसी है जो आकरषण कर लेती हैं अर्थात **"देश के हित का काम"** व **"जिनके भाग्य होंगे वह आयेंगे"**॥इस सें मन में आती है कि कुच्छ काम करना चाहये ॥ अच्छा देखा चाहये क्या होता है ॥ बहुत जल्द आप के प्रत्युत्र आने पर उत्र लिखा जावेगा ॥ अर हम सब ऐसे पुरष की तलाश मे हैं ।

"ओवरसीयर" भी ३०) मासिक पर नहीं मिलेगा । हां "स बओवरसीयर" मिल जायेगा । इस विषय में भी प्रयत्न होगा

इस पत्र में जो प्रश्न हैं उन के उत्र लिखने में आप को जो परिश्रम होगा उस के लिये क्षिमा मांगता हूं ॥ येक दो प्रश्न तो सामान्य हैं परंतू उन के जाणने की भी आवशक्त हुई है ॥

इतिः ———————————— जः सः

आज से १९ दिन हुये कि राय बिश्नुलाल ऐमः ऐः वकील हाईकोर्ट इलाहाबाद ने लाहौर में ऐक व्यख्यान दीया था जिस का विषय येह था कि "आर्यसमाज अर थीओसोफीकल सुसायटी के मिलाप की आवश्यक्ता" उस के साथ कूतहूमीलालसिंह का ऐक अवतार भी था जिसने येह कहा कि योग बल सें व लाल-सिंह की सहायता से वह सभ काम कर सक्ता है जो काम ईसा मुहम्मद नानक राम कृश्न न कर सके ॥ वह आज कर देनें को प्रस्तुत हैं अर येह भी कहा कि समाज व सोसायटी के प्रधानों को जो परस्पर झगड़ते हैं दूर कर के सभासद मिलाप करलें इस सें आर्यवरत की उन्नती होगी ॥ इत्यादिक कहकर कहा कि योग की महमां दिखलाने के वासते हम आज अैसे अचम्भे की बात दिखलाते हैं कि कोई आंगुली हमारी काट लेवे यदि किसी में सामर्थ हो ॥ ओर यदि कट भी गई तो उसी समें हम अंगुली अच्छी कर लेवेंगे ॥ फिर इकरारनामा लिखा गया ॥ उङ्गली काटी गई ॥ वह टुकड़ा मांस का अर इकरारनामा समाज में रखा है ॥ इकरारनांमे पर येह लिखा था कि "अगर आंगुली काटी

गई तो निश्चे से थीउसोफीकल सोसायटी में कोई योगी नहीं" शरम खाकर वह दोनों काशमीर चले गये अर फिर योगी बन गये ॥ वहां राजा ने बड़ा सतकार कीया है ॥ शोक है कि लाला शालग्राम के इंगलिश परचे के बिना किसी दूसरे पत्र में येह पांज नहीं प्रगृ हुआ ॥

आप के पास (रीजिनेटर ओफ आर्य्यवरत) इंगलिश पत्र आता है उस में विस्तारपूर्वक निर्ण्य कीया है उन को आवश्य देखना ॥ यहां इतने बड़े भारी जलसे में कई पत्रों के इडीटर विद्यमान थे परंतु बड़े ही आश्चर्य की बात है कि इस पाखण्ड को किसी अखबार वाले ने नही छापा उलटा कलकत्ते के पत्रों में छप गया है कि जब "किसी से उंगली न काटी गई तब योगी ने कहा कि अच्छा अब काटो तब कट गई" ॥ यहां येह हाल गुज़रा है ॥ क्या झूठ की महमा हो रही है ॥

मुद्रित स्वाकार पत्र की ऐक प्रति जो आपने यहां भेजी है यदि आज्ञा दें तो इस को लोकों में प्रगृ कर दिया जावे ?

ऐसा विचार में आता है कि "मैडिमब्लैवटस्की" ने सर्व साधार्ण पत्र वालों पर अपना असर डाल रखा हे ॥ नहीं तो इतने बड़े झूठ को किसी दूसरे ने छापा किउना मैं बड़ा आश्चर्यमान होगया हूं ॥

लाला रत्नचंद बेरी सम्पादक "आर्य्य" का समाज संबंधी विवहार बहुत अनुचित है (इन्द्रमणी दूसरा मानो कभी होगा) बेह सभासदों को परस्पर चुग्ली झूठ से लड़ाते हैं ॥ लाला शाल-गराम को जा जा कर भ्रमाते हैं ॥ अन्तरंग सभासदों की निन्दा करते हैं अर आप पक्के आर्य बनते हैं ॥ युक्ति येह देते हैं कि "आर्य में कोई बात आर्य धर्म्म के विरुद्ध आज तक नहीं छपी॥ परंतू हमारा तो येह विचार है कि जिस समें उस के पत्र के ग्राहक आर्यसमाजयीयों के बिना इतने हो गये जो उस का पत्र चल निकले तो वह उसी समें विरुद्ध हो जावेगा ब्लैवटस्की की चि-ठ्ठीआं उस के पास आती हैं अर जाती हैं अर हम को पीछे उस ने कहा था कि "मैंनें सोसाइटी को इसतीफ़ा लिख भेजा है" पर जगह २ अपने नाम के पीछे "F. T. S." लिखता है जिस का अर्थ यह है कि वह सोसायटी का सभासद है ॥ जब आर्य-समाज व थीः सोसायटी का संबंध टूटा था उस समें रत्नचंद को कहा था कि "तुम कुच्छ अपनी ओर से छापो" इस का तात्पर्य येह था कि रत्नचंद के पास अैसी चिठ्ठीआं हैं जो वह छप जातीं तो उस सोसायटी की आर्यवरत से जड़ उखड़ जाती परंतू रत्न-चंद ने यही कहा कि "वह चिठ्ठीयां यदि छाप दूं तो "मैडिम" मुझ पर नालिश कर देंगी" बस येह उत्र देकर टालदीआ ! ॥ अच्छा देखये कहां तक कारवाई होती है !!

चिठ्ठी के उत्र लिखने में देर इस कारण सें हुई कि मैं अम-रतसर चला गया था ॥ वहां पहला वारषिक उत्सव हुया था वहां के मंत्री जी ने येह कहकर कि "उत्सव हमनें पहले कभी कीया नहीं कोई दिन के वासते यदि भाई जवाहरसिंह पहले आ जावें तो अच्छा हो" मुझे बुल्वाया था ॥ उत्सव अच्छा हो गया ॥ वहां मेरठ के पं: विहारीलाल ने "थीयोसोफीकल सोसाइटी" की खूब गत बनाई थी ॥

आज रात अंत्रंग सभा हुई आप के दोनों पत्र सुना दीये स्त्रीयें मिलजाने की संभावना हूई परंतू विधवा होंगी ॥ निर्णय येह अंत्य में हुआ [कि स्त्रियों के स्कूल मासटर से पूच्छा जावे कि वह अैसी दो स्त्रीयें दे सक्ता है जैसी चाहये] "ओवरसीयर" व "अंत्रंग मंत्री" के विषय में भी येही फैसला हुआ कि [तलाश की जावे अर यदि मंत्री की नोकरी भाई ज्वाहरसिंह स्वीकार कर लें तो बहुत अच्छा हो] ये दोने फैसले ज़बानी हुये लिखे नहीं गये किउंकि असल में ठीक फैसला कोई नहीं हुया अर न हो सक्ता था इस पत्र के उत्र आने पर फैसला होगा ॥

" Aryan Science Institution " जो हम खोलना चाहते हैं उस को आर्य भाषा में [आर्य प्रकृति विद्या अनुष्ठान] कह सक्ते हैं ॥

अंत्य में पुना इस वात को लिखना "कि आर्य भाषा के लिखने में बहुत अशुद्धिये हो जाती है क्षिमा कीजिये" गौरव है जब कि आप का अमृतवत मधुर बचन कि [जो तुमने इतनी बड़ी चिट्ठी आर्य भाषा में लिखी यही हमने तुम्हारी शुद्धी जानी मेरे पास विद्यमान है ॥

नमस्ते ॥ लिखी बुद्धिवार १८ अप्रेल सं: १८८३ ई

आपका दास
ज्वाहर सिंह
मंत्री आर्य समाज। लाहौर

P. S.

[यदि अनुचित न हो तो] आप से संमती मांगता हूं अर वह थोड़े अक्षरों में है कि "यदि मैं इस नौकरी को स्वीकार कर लूं [जैसे कि प्रधानादिकों का विचार है] तो कैसा हो" ? यह बात मैं पीच्छे पूच्छनी चाहता था परंतू न रह सका ॥

आपका दास
ज्वा: सिं:
लाहौर

वह योगी का स्वांग जिसनें उंगली कटाई थी मद्रासी मालूम होता है अर कई कहते हैं कि येह वही नौकर है जो मैडम के साथ लहौर में आया था ॥ मुझे भी ऐसा ही प्रतीत होता है ॥

जः सिः

---

(२)

ओम्

No.........

ARYA SAMAJ OFFICE, LAHORE,
Dated......16th......March...*188*

To,

श्रीमन्महाराज श्री १०८ स्वामि
पण्डित दयानन्द सरस्वति जी
(चितौड़ गड़)

SIR.

महाशय !

नमस्ते ! !

आपके अनुग्रह पत्र को आये ८ दिन हो गये ॥ प्रत्युत्र में जो देर लगी इस का कारण है ॥ जो मुख्य करके रुपये देने वालों से कुछ बात चीत करनी थी ॥ सो यह है।

कि यहां सें ९ पुरुषों ने ३३०) रुपये दीये थे इस क्रम से:—
लाला सांईदास १००); लाला जीवनदास १००); लाला राम-
सहाय ९०); लाला मङ्गूमल ९०); लाला दिलबागराय ३०);
कुल ३३०); ॥ इनमें से लाला सांईदास जी और लाला जीवन-
दास जी ने अपनी उदारता से अपना २ रुपया वेद भाष्य के
सहाय में दे देना स्वीकार कीया है ॥ दोनों महाशय पर उपकार
में सदा युक्त रहते है ॥ परशंसनीय हैं ॥ बाकी रहे १३०) रुपये;
सो इस प्रकार सोचा गया है कि यंत्रालय में लहोर समाज के
नाम १३०) जमा कर लीये जावें और यहां जो पुसतक यंत्रालय
सें आये हूये हैं उस हिसाब में से १३०) क्रम पूर्वक लाला
रामसहाइ मङ्गुमल; और दिलबागराय को दिये जावें ॥ आगे
जिस प्रकार आपकी आज्ञा हो वैसी कीजायगी ॥ ॥ दोनों
पत्र येक आर्य्यसभासद के हैं जिसका नाम लाला सालगराम है ॥
आर्य्य यंत्रालयाध्यक्ष वही हैं ॥ बहुत उतसाही हैं ॥ इसने अपनी
सारी जायदाद का चौथा हिस्सा; तथा आयुष प्रयंत $\frac{1}{4}$ आमदनी
दे देना स्वीकार कर लिया है; अर सारी जायदाद १$\frac{1}{2}$ लाख रुपये
की बताई है; प्रंतू येह लिखत नही हूई ॥ लाला सालगराम कल-
कत्ते सें जब आवेंगे तब लिखत होजायगी ॥ जायदाद पर समाज
का कबज़ा सवाकार पत्र द्वारा होगा अर्थात उसकी म्रत्यू पश्चात ॥

श्रीमान् उदयपुराधीश का उतसाह पढ़ कर परम हरष

प्रकाशित हुआ । ईश्वर भारतवरष गन सगल राजा गण को इसी प्रकार सद मारग प्रयुक्त करे ॥

येक परम हरष की बात है कि हमारी समाज से येक Aryan Scine Intitntion (शिलपादि विध्यालय) खुलने वाला है येह हमारे देश में पहली बात होगी । इसमे सब प्रकार की विध्या हसत क्रया से करके दिखाई जायेंगी बिजली तार रेल आदि कररीगरी सब सिखाई जायेंगी सब असबाब विलायत से मंगवाया जायगा ॥ ४००) चंदा होगया थेढ़ी जगह से ॥ और कोशश कीजायगी ॥ परंतू समाजो से नही किउ कि वैदिक मिशन फंड के वासते १ लक्ष रुपये की आवशक्ता है ॥ उधर बी ध्यान है ॥

पुना येह बात आप पर विदित होगी कि यहां पर लड़कीओं का सकूल है १ बरस व्यतीत होगया अब ३० लड़की पढ़ती है ॥ स्कूल समाज के मन्दर के अंदर है ॥ हिन्दी की पड़ाई होती है ॥ अर दसताने जुराब अर गलूबंद बुनती हैं ॥ अर कसीदा काड़ती हैं ॥ प्रीक्षा पूर्व्वक इनाम बी दिये जाते हैं । अब उनन्ती बी है ॥

लाला साईदास जी कहते है कि आपका जैसा कोई पत्र नहीं आया जिसमें रुप्यों की बावत आपने कुछ पूछा हो ॥

मंत्री आर्य्यसमाज के पत्र से विदित हुआ कि महाराजा फरीदकोट ने १०००) अनाथालय के सहाय में देना स्वीकार कीआ है

आपके दरशनों की अभिलाषा पंजाब में लग रही है आप कब तक दर्शन देंगे ? ॥

बंगाल हाता समाजों से शुन्य पड़ा है । कलकते की ओर जाना भी आवशक प्रतीत होता है ॥ अब आपके ईरादे किस तरफ है ॥ हमको तो इस तरफ़ आने से दर्शन का लाभ है उस तरफ जाने से अपने बंगाली भ्रात्री वाबा की उनन्ती का लाभ है ॥

मुझे हिन्दी लिखनी नहीं आती यदि लिखता हूं तो बहुत अशुध लिखी जाती है जैसे इसी पत्र से विदित होगा इस कारण उर्दू वा अंग्रेज़ी में पत्र लिखता रहा हूं और अब बी अंग्रेज़ी में लिखने लगा था ॥ प्रन्तू जैसे आई वैसे लिखदी इस कारण कि शायद तकलीफ़ न होवे ॥

और सब ईश्वर की किरपा से कुशल है ॥

आपका दास—

जुवाहरसिंह

---

(३)

ओम्

No. ...११०

ARYA SAMAJ OFFICE, LAHORE.

Dated ११ मई सं: १९४० वि० *1883.*

To,

श्री १०८ मत परमहंस प्रविराजकाचार्य

श्री १०८ पं० दयानन्द सरस्वती स्वामीजी ॥

शाहपुरा, देश मेवाड़, राजस्थान

SIR,

इससे प्रथिम तार के द्वारा लिख चुका हूं अब पत्र द्वारा अपने आशय को प्रगट करता हूं ॥

जब से मैं आर्य्य भाषा में पत्र विवहार करने लगा हूं तब से कोई न कोई ऐसी भूल रह जाती है जिसको पीछे देख कर शोक होता है ॥ मेरा तातपर्य येह नहीं कि लिखने में अशुद्धयें ही रह जाती हैं किंवा लिखने में तो रहेंहींगी प्रन्तु भावार्थ में भी रह जाती देख कर शोक होता है ॥ यद्यपि येह मन में आता है कि यावत आर्य भाषा में पंडित न हो जावें तावत पत्र विवहार

इंगलिश वा उरदू आदि में रख लिया जावे ॥ तथापि येह बात अयुक्त जाण कर इसी भाषा में लिखना उचित प्रतीत होता है ॥ मुझे ऐसा स्मरण होता है कि मैनें प्रथिम पत्र में लाला शालग्राम का कलकत्ते में जाना स्वकार्य नमित्त से लिखा था प्रन्तू उस लेख में कुछ भ्रम रह गया ॥ पुना ॥ चैत्र शुक्ल २ मंगल का लिखा पत्र जो आपका मेरे पास आया उससे विदित होता था कि स्त्रियों के विषय में आप उससे पहले भी लिख चुके हैं उस पर मैनें अपने पत्र में लिख दीया था कि ऐसा पत्र आपका कोई मेरे पास नहीं आया परन्तू फिर आपके अन्तयम् पत्र से अनुमान होता है कि कोई टुकड़ा काग़ज़ का उससे पूर्ब्ब पत्र में आपसे लफाफा बंद करने के समय रह गया होगा ॥ नहीं तो आप का यह लेख कि (हमारे पत्रस्थ दो बातों का उत्तर तुमने नही दीया, एक तो लाला मूलराज के भाई आदि आदि) ऐसा न होता, जिसका अर्थ यह है, कि आपने तो मुझे लिखा था परन्तू मैंने उसका उत्तर न दीया ॥ अर वास्तव में मुझे श्रीराम के विषय में इससें प्रथिम कोई आपकी आज्ञा नहीं आई ॥ नही तो मैं अवश्य लिखता येह सारी ख़राबी मेरी अशुद्धीयों के कारण से होगी ॥ पत्रस्थ तातपर्य्य प्रगट करने योगय सरवत्र नही होते इससे किसी से शुद्ध भी नहीं कराते ॥ अर्थात जैसा आता है वैसा लिख देता हूं ॥

मेरे पूर्ब्ब पत्र में येक अशुद्धि यह रह गई कि लाला रव-

चन्द बेरी स्थान २ में अपने नाम के पीछे F. T. S. अर्थात थीयोसोफीकल सोसायटी का सभासद कहलाता है ॥ ऐसा नहीं बाकी सब हाल ठीक है ॥ यह बात ल: जीवनदास जी से विदित हुई ॥

दोनों पत्र जो आपके पास आते हैं वह लाला शालग्राम के हैं मैं ऐसा लिख चुका था ॥ परन्तू जब दान की लिखा पढ़ी हो जायगी तो वह समाज के ही समझे जांयगे ॥ "**देशोपकारक व रीजिनरेठर**" ॥

लाला रतनचन्द बेरी ने लाहोर आर्यसमाज के साथ जो अनुचत विवहार कीया है वह आप पर विदित था इस पर भी न जाणें कि यूं वेदभाषय के ऊपर उसकी उसतती छापदी गई ॥ यहां सरब्ब साधार्ण को उसका शोक है ॥ लाला समर्थदान से इसका ज्वाब मांगा गया है ॥

आपके पत्र के उत्तर लिखने में बहुत विलंब होगया जो लाला रामशरणदास प्रधान आर्यसमाज मेरठ ऐसे बीमार हैं कि जान का रहना भी दुर्घट सा प्रतीत होता है ॥ तार पर तार चली आती है अर चली जाती है इससे बहुत शोक हो रहा है ॥ ऐसा "भद्र पुरुष" "आर्य" "सरब गुण युक्त" बहुत ही कठनता से मिलेगा "**ईश्वर उनको बचावे**" ॥ आनन्दलाल जी मेर्ठ से यहां डाकट्रों को बुलाने आये थे पीछे से तार और आगई कि

डाकट्रो को न लाओ वापस चले आओ ॥ इससें ओर भीं दुखीं हो रहे हैं ॥ क्या करें ॥

मुन्शी इन्द्रमणि भी बैठे २ निन्दत विवहार करने लग पड़ा है ॥ लाला **रामशरणदास** और **आप येह दास** तीनों ने उसके मुकदमे में बहुत मदद दी थी जिसका बदला उसने अब दीया है आर्य्य देश की दुरवश अैसे पुरुषों ने ही कर रक्खी है। क्या करें पं० उमराउसिंह रुड़की सें मुझ को लिखते हैं कि उस पर तुम नालिश करदो ॥ परन्तू मेरी सलाह नहीं ॥ आपकी इसमें स्मती क्या है ॥ ? ॥

स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी यहां आये हूये हैं जो कुछ यहां होरहा है मैं ज़बानी आकर कहूंगा ॥ अब संक्षेप से मुख्य बातों का उत्तर लिखता हूं ॥

मूलराज के भाई श्रीराम एम. ए. M- A- नहीं हैं ॥ अर न बी. ए. B- A- किन्तू बी. ए. B. A- की प्रीक्षा आगामी वरष को देवेंगे ॥ यह समाज उनको उस पद के योग्य नहीं समझती है ॥ एम. ए. M- A. हैं तो बहुत पर हमारे मतलब के अर्थात आर्य्य थोड़े हैं अर जो थोड़े हैं वह अपनी २ जगह युक्त हैं आने वाले नहीं ॥ इसकी तलाश है ॥ मूलराज, द्वारकादासादिकों को भी लिख भेजा है कि वह भी तलाश करें ॥ क्या बी. ये. को आप स्वीकार कर लेवेंगे ॥ ? ॥

सबओवरसीयर के वासते पं: उमराउसिंह को लिखा है आपका पत्र भी उनके पास पहुंचा है ॥ यह काम उनके ज़िम्मे दीया गया है ॥ हमको भी तलाश है पठित स्त्रीयें मिल तो गई हैं उनके आचर्ण की प्रीक्षा बाक़ी है उनका मासिक २५) वा ३०) रोक का होना चाहये ॥ यह हमारी अपनी तजवीज़ है ॥

रहा अन्त्रंग मन्त्री सो पं: उमराउसिंह को भी लिखा वह भी न आ सके अन्य कई पुरुषों को भी कहा सब मासिक थोड़ा जाण कर नही आते मैनें भी अपने संबंधीओं से कहा कि मुझ को जाने दो परंतू माता पिता का यह कथन हैं "कि ईश्वर ने घर में सभ कुच्छ दीया है ५०) मासिक भी मिल जाते हैं ॥ फिर इतनी दूर क्यूं जाते हो" ॥ उपकार अपकार को वह समझते नहीं आर्य्य धर्म्म को सराहते नहीं ॥ पर सारी लाहौर **समाज** अर **अन्य** समाजस्थ **मन्त्री** मुझको लिखते हैं कि तुम जरूर चले जाओ आर्य्यधर्म्म राजस्थान मे खूब फैलेगा ॥ पिछ्ली सभा में मैने ऊंचे स्वर से कहा कि कोई निकले वा मेरे जाने में किसी को शंका हो तो प्रधानादिकों से कहे सभ ने मेरे लिये स्मती दी ॥ पं० उमराउसिंह जी ने मुझे लिखा है कि तुम चले जाओ आनन्दलाल जी की भी यही स्मती है ॥

इसकी इत्तला मैंने तार में आपको दी थी कि यहां मेरा जाना सभ स्वीकार करते हैं आप अपनी अंत्यम् समंती लिख

भेजिये सो अभ मैं आपके अम्रतवत बचनों सें पूरत पत्र को आदर सहत स्वीकार करता हूं अर शाहपुराधिश की **सहयोगयता** बड़ी प्रसन्ता पुरब्बक ग्रहण करणे की इच्छा प्रगट करता हूं ॥ तार द्वारा मुझ को विदित करदें कि कब तक आजाऊं ॥ हां १९ दिवस आने सें प्राथिम विज्ञापन आना चाहये ताके तयारी की जाये ॥ अर मेरी इच्छा है कि जाती बेर मारग में व्याख्यान देता जाऊं ॥ आगे आपकी जैसे आज्ञा हो वैसे करूं ॥ गोरक्षा के लिये जो बहुत से हस्ताक्षर इधर उधर हैं उनको इकत्र करना उचित है या किया, सभ नमस्ते कहते है ॥ अलं ॥

आपका दास–

ज्वाहरसिंह ॥ मंत्री ॥

---

(४)

लाहौर आर्य्यसमाज

३० मई सं १८८३

श्री १०८ स्वामी जी महाराज ॥ नमस्ते

गत रात्री को अन्त्रंगसभा का जलसा हूआ ॥ पहले लाला साईंदास जी ने मेरी ३ वा ४ बरष की समाज सेवा की बहुत

प्रशंसा की अर लाला मदनसिंह जी ने उस की प्रौढता की ॥ पश्चात् इस पर ऐक प्रशंसा पत्र लिखकर समाज पुस्तक मे लिखवा दिया गया तथा लाला मदनसिंह जी को आज्ञा हुई कि वह इस प्रशंसा पत्र की ऐक प्रति श्री १०८ स्वामी जी महाराज के पास भेज देवें। यह भी समाज में निश्चय हूया कि लाला साईदास जी (जो आज अम्रतसर में किसी संबंधी के विवाह पर जाते है) अपने हस्ताक्षर का अधिकार लाला जीवनदास को देवें जैसे अन्य समाजक विवहारों में होता है आप के पत्र न पहुंचने के कारण यही मान्य पत्र समझा गया, मैं परसो चल दूंगा ॥ अवकाश न होने से कारड लिख भेजा है ॥

आप का दास

जः सिंः

---

(९)

"ओ३म्"

श्रीयुत परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री १०८ मद्दयानन्द सरस्वती जी, नमस्ते

मैं इह पत्र श्री हजूर की आज्ञानुसार लिखता हूं। मैं

अपनी प्रतिज्ञानुकूल रूपाहेली के स्टेशन पर ९ जून को पहुंच गया था. दोनों ज्येष्ठ भ्राता मेरे संग थे, परन्तू अपनी अभाग्यता से वहां पर स्वारी का कोई बन्दोबसत न था। कारण यह था कि श्री हजूर को मेरे आने की ८ वीं तारीख़ की सम्भावना रही; और दोनों पत्र, वा तार, आप के पास चले गये, इस से सवारी के वासते वड़ा क्लेश प्रापत हूआ. दोनों भाई वापस हो गये, अर मैं थोड़ा सा पैदल अर वाकी टूटी फूटी स्वारी पर आ पहुंचा ॥ येह मेरे मंद भाग की अवधि थी कि आप अचेत ही मुझे दर्शन दिये बिना इहां से पधार गये। जो कुच्छ आप के चले जाने से मेरे चित्त में आया होगा उस का अनुमान आप कर लेवें ॥ चिरकाल के बिछड़े सज्जनों को जिस प्रकार मिलाप करणे की आशा होती अर फिर टूटती है वह दशा मेरे साथ भई, इस का वर्णन करना मेरे वासते असम्भव है मैं सर्व शक्तीमान जग्दीश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह शीघ्र आप के दर्शन से मुझे त्रिप्ती प्रदान करें ॥

॥ आप की आज्ञानुसार लवपुरीय आर्य्यसमाज से ऐक मान्य पत्र ले आया हूं जो आप के अवलोकनार्थ इस पत्र के साथ भेजता हूं ॥ इस पत्र को श्रीमान शाहपुरेश अवलोकन कर चुके हैं ॥

॥ श्रीमान को उत्तम स्वभाव इस योग्य है, कि उस की प्रशंसा

करणी कठिन है. आप जैसे विद्वान, गुणिक, धार्म्मिक, अर दया-शील, सुने गये थे, वैसे देखे गये। उन के साथ बात चीत करणे से चित्त में अनुमोदता, व प्रसिन्नता, बहुत हुई॥ यद्यपि मेरे यहां रहने में अनेक प्रतिबंध हैं जैसे माता, पिता, अर भ्राता, का वियोग से संताप मानणा; अर पहली सरकारी नौकरी से जहां से ४ मास की रूखसत लेके आया हूं अर जिस के वासते १ जूलाई से ७९) मासिक देने की हाकम ने प्रतिज्ञा की थी उन का उस से वियोग न करणे देना, आदि २ रूप प्रतिबंध हैं, तथापि श्रीमान शाहपुराधीश का मृदु स्वभाव, अर सहयोग वरतना, इन सभ प्रतिबंधकों के नाश करने वाली प्रतीत होती है ईश्वर ऐसा करे कि मुझ से अपने "स्वामी" वा देश वासियों का कुच्छ उप-कार हो. अर ईश्वर से, व समाज से, व आप से, व "श्रीमान" से, व अपने देश बासीयों से, खाली रहे; अर ऐसा न हो कि सब का देनदार रह जाऊं, यही प्रकट हो कि मैंने यहां आकर अच्छा काम कीया॥

॥ आप श्रीमान शाहपुराधीश को लिखते हैं, कि मैं आप के चले आने से उदासीन न हो जांऊ; सो कृपानिधे! जिस प्र-कार आप इस दास पर अनुग्रह करते चले आये हैं अर करते हैं उसी प्रकार श्रीमान भी अपने आतमा से मुझ पर दया रखते हैं अर अधिक से अधिक भविष्यत काल में रखने की आशा है.

यह बात मेरे बड़े उत्साह की कारण है. तथापि आप के दर्शन के न होने से उदासीनता जो ऐक बार उत्पन्न हूई वह अभी तक दूर नहीं हुई ! ॥

॥ वेद भाष्य की बात छीत्र दत्त जी को कह दी गई ॥

नमस्ते !

९ जून सं: १८८३ शनिवार

ह: आप का दर्शनाभिलाषी
जवाहर सिंह
अं: मं: श्रीः शः पुः मेः

श्रीमान इस पत्र को अवलोकन कर चुके है ॥

कोई ऐसा कारण हो जिससे आप के दर्शन हो जांय ॥ ९ वा ७ रोज को यहां से २ वा ३ पुरुष राज की ओर से आप के पास समाचार लेने आप से यदि हो सका तो मैं आज्ञा मागूंगा

———

(६)

ओ३म्

श्री स्वामीजी महाराज । नमस्ते

कल ठाकुर सवलसिंहजी समाचार लेने के नमित्त सें आप के पास राज्य की ओर से आंवगे, स्वारी आदि का प्रबंद्ध न करें यही यहां पर सोचा गया है ॥

मै कल रिजिष्ठरी करा के ऐक पत्र भेज चुका हूं इस लिये आज कुच्छ लिखने योग्य बात नहीं हैं ॥

मेरठ वाले जिस "ब्रह्म स्वरूप" को सबओवरसीयर के वासते यहां भेजते हैं वह **आर्य** नंही किन्तू आर्य का **भाई** हैं उस को हम स्वीकार करें वा नंही? मेरठ समाज वाले **सामान्यता** से उसकी सफ़ारश करते हैं साफ़ २ नही करते

आप मेरे पत्र को सवलसिंहजी को न दिखलावेंगे येह मुझे आश्य है ॥ उन सें सुन लेना पर मेरी बाबत बताना नंही शेष जो योग्य हो वह करें ॥

गो रक्षा का एक पत्र भेजता हूं पटयाला में ऐक पुर्ष ने ६०,००० पुरषों के हस्ताक्षर कराये हैं ॥ इस विषय में समाजों ने वहुत सुसती करी, नंही तो आज तक काम बहुत हो जाता बूंदी महाराज का हाल फिर नहीं सुना ॥

देवीदत्त बोरा आपको बहुत करके नमस्ते कहता है आप के दर्शन की अभिलाषा लग रही हैं ॥

रामानन्दजी को नमस्ते—

आपका दास

जवाहरसिंह

---

(७)

ओ३म्

सिद्धि श्री श्री १०८ सर्व सुगुण सम्पन्न कारुणिक परमहंस परिब्राजकाचार्य श्री मद् दयानन्द सरस्वति जी की सेवा में

दास जवाहरसिंह की कोटवार नमस्ते पहुंचे पत्र आप का तीन चार रोज से आया है अधिक काम होने से उत्तर नंही लिखा गया था. शाहपुरेश भी इसी कारण से उत्तर नहीं लिख सके थे. कल्ह को मैं राजाधिराज के साथ "काछोला को जाऊंगा वहां सें हजूर ऐक पत्र भेजेंगें उसमें सम्पूर्ण ब्रितान्त लिख दिया जायगा. स्वामीजी महाराज आप के पत्र अविलोकन से जो कुछ दिल पर गुजरा था उसके प्रकट करने में तो कुछ लाभ नंही,

परंतु यह सत्य है, कि उस से मैं अपना "अब" उपकार समझता हूं. मासिक के विषय में मैंने निस्सन्देह बहुत दफै लिखा था, परन्तु "स्वामीजी" जो मैं आपको" न लिखता तो किसको लिखता ? यहां आपके बिना मुझे हुल्लास देने वाला कौन था वा है. जिस हाल से निकलकर मैं लाहौर से आया हूं वह अैसे थे कि उनका अब लिखा व्यर्थ है केवल इतना ही कह देता हूं कि आपके सहारे होकर ही आया हूं नहीं तो मुझे समाज वाले तथा संबंद्धी कदापि न आने देते: आप भत्ते आदि के विष्य में लिखते हैं सो हरी इच्छा, अब दांत हिलाने से मुझे कुच्छ नफा न होगा५)मिलें,व ५०)मिलें उस से मेरा परदेश में गुज़ारा हो वा न हो, अब तो रहूंगा ही, ओर जो कुछ हो सके करूंगाही. रोटी अलग करने के विष्य में आर्धीश से प्रार्थना पूर्वक कहा गया, तथा वह पत्र भी जो इस विष्य में आप की ओर से आया था श्रीमान को दिखलाया गया उन्हों ने कहा कि अब तो इसी प्रकार से चलने दो फिर देखा जायगा.

मै यहां अकेला हूं कोई संबंद्धी नहीं लाया. जब लाऊंगा तो फिर वैसा प्रबंध कर लिया जायगा जैसा हजूर (आप) आज्ञा करते हैं: ओर जो यह भी स्वीकृत न हो तो आप मुझ को फिर ऐक बार आज्ञा पत्र भेजें मैं आप रोटी बना लिया करूंगा.

मैंनें अब यहां समाज बनाने की चेष्टा की है आश्य है कि १९ दिवस तक समाज नियम कर दूंगा. लाहौर से नियमोपनियमादिक मंगाए हैं ताके दूसरे पुरुष समाज संबंद्धी उपनियमों से ज्ञानी हो जाये. ईश्वर ने चाहा तो मेरे व्याख्यानों से साधारण को बहुत लाभ होगा यह एक राज पुस्तकालय, बनाया जायगा जिस में अच्छे २ पुस्तक रखे जायगें ओर साधारण के अवलोकनार्थ वह पुस्तकालय खुला रहा करेगा.

यहां यह बात देखी गई है कि हजूर जो कुछ करना चाहें चाहे वह योग्य हो चाहे अयोग्य दूसरे पुरुष उसकी बड़ी उपमां करने लग जाते हैं. मैं इस बात के विरुद्ध हूं: एक दो वार मैंने श्री जी को किसी खेल के खेलने से मना किया था. लोगों ने बुरा मनाया होगा, यह मैं नहीं जानता: परंतू आधीश जी ने दो तीन वार के कहने सुनणे से उसका प्रतियाग कर दिया. यह बात उत्साह दायक है. अब तो समाज बनाने का ख्याल लग रहा है काछोला से आते ही प्रारंभ होगा.

मैं जब लाहोर से चला था तो ९ मोहर सोने की हजूर की नजर वासते अर २९) रु० श्री हजूर (आप) के वासते लाया था. परन्तू हजूर ने नहीं ली थी. प्रार्थना पूर्वक आप से पूछता हूं कि वह २९) रु जो इसी नमित्त से लाया था श्री जी स्वीकार

कर लेवे ओर आज्ञा करें ते मनीआरडर करके भेज दियो जावे.

आश्य है कि दास पर अपनी कृपाद्रिष्टी सदीव रखेगे

मिती अ०वि० ९ सं १९४० } दास जवाहरसिंह-
शाहपुरा.

---

(८)

सं: १६ | शाहपुरा ता: २० जून
सं १८८३ ॥

॥ ओ३म् ॥

श्री मत्परमहंस प्रिव्राजकाचार्य श्री१०९स्वामी दयानन्द सरस्वती
जी योग्य दास जवाहर सिंहस्य

नमस्ते ॥

आपका पत्र परम् उत्साह के देने वाला कल मुझ को मिला, जिस के अवलोकन से महोपकृति हूआ॥आप की दया का मैं कहां तक धन्यवाद करूं ॥ आप के उपकारों अर दयामय कार्यों को केवल मेरी आतमा ही अनुभव करती है, अक्षरों से प्रगट नहीं कीया जाता ॥ ईश्वर सर्वशक्तिमान आप को इसी योग्य रखे॥

॥२॥ आर्य्यावर्त्त गत देशी राजाओं का प्रथम सुदार करना रूप भाव आर्य्य जनों से आद्रणीय हैं. ओर इस आदर अर धन्य-वाद के आप पात्र हैं ॥ निश्चय से हम लोग आप के इस कर्तव्य को बड़े आदर वा सन्मान से देख २ कर अनुमोदित होते हैं. मेरा इस स्थान पर नियुक्त करणा भी आप के **नैतिक कारयों** का एक भाग हैं.

॥३॥ आप के सत्योपदेश से तो आतमा तृप्ति हूई थी, पर संसारक द्रष्टी से भी शरीर पोशन के साधन आपने उपस्थित कर दिये. हम अभाग्य होंगे यदि उस से उपयोग न लेवेंगे ॥ ॥ अब मैं जी खोल कर अपना हाल लिखता हूं ॥ क्षिमा करें ॥

॥४॥ संक्षेप से केवल इतना लिख देना ठीक होगा, कि मेरा मासिक बहुत थोड़ा हैः बाकी सब शिकायतें इसी की शाख उप शाख होंगीः जिसके पद पर मैं आया हूं, वह १९०) मासिक पाता थाः मेम साहिब जिसका बहुत थेड़ा काम है, १९०) मासिक पाती हैंः यह आक्षेप अधिक करके अपने संबंद्धीयों की द्रिष्ठि से हैः अपनी से नहीं ॥

मैं आप को निश्चय दिलाता हूं कि जब मासिक वासिक का नाम मुझ को लिखना पढ़ता है तो शरम से पानी २ हो जाता हूं॥। जानता हूं, कि जिस को यह बात सुनाता हूं, उसने परोप-कारार्थ क्या २ काम किये हैं. ओर मासिक का बार २ लिखना

उसकी द्रिष्ठि में मुझ को कितना हलका बनाऐगी. तथापि लिखने से न रह सका. कारण केवल यही है, कि ग्रहस्थ कर चुके हैं, रुपये बिना काम नंही चलता है. यदि अैसा न होता तो मैं अैसी बात करना वा लिखना "अनार्यपन" समझता: अतः ऐव, मैं अैसा लिखते हूऐ शरम खाता हूं ॥ पर रुकता नंही ॥

॥५॥ राजाधिराज ने रामलाल की मारफेत मुझ को कहा है कि तुम को २५) राज्य से व २५) निज से मिला करेंगे, ओर अबी अपनी नौकरी प्रसिद्ध नंही करनी होगी, क्यूंकि पुलिटिक्ल ऐजेंट के पास लोग शिकायत न करें: इसमें सन्देह यह रहता है, कि क्या मेरा पद अैसा है, जो छिपा रह सके, वा पुलिटिक्ल ऐजेंट को खबर न हो ॥ वरन आप कर देनी चाहीये अर किया जाने कर भी दी हो.

॥६॥ इन ५०) से भिन्न रोटी ऊपर से आती है, परन्तू बीच के लोग अैसे हैं कि २ वा ३ दिन तो अच्छा भोजन मिला अब ठीक नंही मिलता है ॥ मैं देखता हूं कि राज्य में बहुत लूट मची है. ओर इन्तिजाम बहुत थोड़ा है. इन दोषों को दूर करणा अवश्य है ॥ श्रीमान को तो लाभ बहुत करा दूंगा, अन्य इन्तिजाम में हाथ डालना अच्छा नंही मालूम होता. मैं सुनता ओर समझता हूं कि "पुलिटिक्ल ऐजिन्ट्" रयासत् को सुद्धरने वा उठने नहीं देते. जो पुरुष योग्य होता है वह ठहर नहीं सकता. यह भी ऐक

ता है, परन्तू कहां तक यह सत्य है, यह नंही कह सकता हूं ॥

॥७॥ १९ मई सं १८८३ से राज्य के पत्रानुकूल मैं नोकर समझा गया था, और १ जून को लवपुर से चल के ६को शाहपुर पहुंचा; अपना ओर ऐक नौकर का मारग ख़रच २९) आये; अब देखये किस तारीख़ से नोकरी मिलेगी, अर मारग ख़रच कहां तक मिलेगा: येह बात परसंग से लिख दी गई है ॥ नहीं तो कुछ काम नथा.

॥८॥ समाज का सथापन करना वा व्याख्यानों का देना आदि इस रियासत् में कठन हैं क्यूंकि फिर यह बात **पुलीटकल** हो जायगी, यदि मैं इस में बहुत दखल दूं तो ॥ विशेष अनुमति होने से विशेष लिखा जायगा.

॥९॥ राजाधिराज ने रामलाल की मारफ़त येह भी पूछा था कि तुम को ९०) की नौकरी कबूल है वा नंहीं. मैं इस और ऐसे प्रश्न से घबरा गया था, जवाब दे भेजा था कि सोच के थोड़े दिनों को बता दूंगा. इत्तने में आप का पत्र परम हरष ओर उत्साह के बढ़ाने वाला आगया. मैंने उसी समें महाराजाधिराज को कहला भेजा कि स्वीकार करता हूं ॥ यहां के आधीश अब प्रसन्न बहुत हैं ॥ मासिक के विष में मैं अब आप को कभी नंही लिखूंगा (परन्तू आवश्यक्ता से)

॥१०॥ मैं अपने शिर पर "ईश्वर" को अर फिर "आप" को समझता हूं; अब मैं निरशंस होकर यहां काम करूंगा अर वापस न जाऊंगा परन्तू ३ मास से पहले २ यदि कोई अैसा और कारय हो जावे जिससे चले जाना अच्छा समझूं तो झूठ न समझा जायगा हां अपनी ओर तें तो निशचय से ठहरना ही उत्तम जान लिया है ॥

॥११॥ आधीश की ओर मेरी कबी अैसी स्वर नहीं मिली जैसे मैं चाहता हूं कि मिल जावे. यह बात होगी तो सही, परन्तू धीरे २ ॥ यदि आप का यहां पर ओर ठहरना होता, तो सब काम अच्छे हो जाते. पर अब क्या कीया जावे ॥ इस लेख से यह सिद्ध न होवे कि वह मुझ से अभी शंका किसी प्रकार की रखते हैं वा दिल खोल कर हास्य पूर्वक बात चीत नहीं होती. हां मेरा तातपर्य्य ओर है वह येह, कि मुझ से अबी कई पुरुषो की अपेक्षा बहरंग समझते हैं.

॥१२॥ मेरी आश्य है कि आधीश को "पुलीटिक्स" विद्या पढ़ाऊ जिस से राज्य संबंधी आंखे खुल जावे ॥ अर गवरनमिंट की सीमा विदित हो जावे.

॥१३॥ मैं जब तक आप का दर्शन नहीं कर लूंगा तब तक आतमा में शान्ति कदापि नही आयगी. ओर यह बात अब अपने बससे बाहर चली गई है ॥ क्या करूं ॥

॥१४॥ आर्य समाज मेरठ से **ब्रह्म स्वरूप** के मान्य पत्र आये हैं परन्तू कोई समाचार पत्र नहीं आयाः उन मान्य पत्रों से विदित होता है, कि वह "सब ओवर सियर" के पद पर आकर अच्छा काम करेंगे. मैंने उनसे आने को लिख दिया है. प्रत्युत्र आने पर आप को विदित कर दिया जायगा.

॥१५॥ अग्नि शाला में होम प्रति दिन होता हैः प्रारम्भ में तो पोप लीला खूब मची थी. गणेश हाथी की मूर्त्ती की पूजा आदि बिवहार भी हूआ. जिस से मेरी आतमा में बहुत खेद हुआ॥ **श्रीमान प्रति दिन मूर्त्ति पूजा करते हैं परन्तु निश्चय से नहीं करते. येह पालुसी है**ः अरथात नीति है॥

॥१६॥ जो मान्य पत्र मुझ को आर्य समाज लाहोर ने दिया था आप के पास पहुंचा होगा अर अवलोकन कीया होगा यदि अयोग्य न हो तो वह मुझ को ही दे छोड़ें, मेरे पास रहेगा ओर यदि उसको अपने हस्ताक्षरों से भी प्ररिभूषत कर देंगे तो वह मेरे पास ऐक सनंद के परकार रहेगा, अर अपने काम मुझ को याद रहेंगे अर न भूलेंगे॥

॥१७॥ मेरी ऐक प्रार्थना है, कि मैं राजपूताने की सैर कीया चाहता हूं उसके पूरा करने के उपाय भी आप के हाथ में

हैं ॥ मेरी इस प्रार्थना को याद रखे अर जब अवसर कोई निकले, तो आज्ञा कर देना, इससे मुझे आप कृत्य २ कर देंगे ॥

॥१८॥ इस पत्र लिखने में कई बातें उल्ट पुल्ट हो गई हैं अर्थात्त प्रसंग से निकली रही हैं, आप क्षिमा करेंगे ॥

ब्रह्मचारी जी को नमस्ते कह देना ॥ मेरे नाम का पिछला पत्र आर्यांश के नाम से आया था.

आप का दासानुदास. दर्शना भिलाषी

जवाहरसिंह

---

(९)

श्रीमत्परमहंस परिब्राजकाचार्य श्री १०८

मद्दयानन्द सरस्वती स्वामी जी महाराज नमस्ते

बिन्य पूर्बक प्रार्थना है कि लाहैर आर्य्यसमाज मुझ से ल: मदनसिंह जी के विष्य में पूछती है कि उदयपुर में वह हैडमास्टर् के पद के लिये स्वीकार किये गये कि नहीं.

२ ऐक सब ओवरसियर मेरठ समाज वाले भेजते हैं परन्तु वह आप आर्य्य नहीं है किंतू वह ऐक आर्य्य का भाई है. और

पं: उमरावसिंह जी रुड़की से लिखते हैं कि सबओवरसियर ३०) मासिक पर कोई नंही आता अधिक मांगते हैं. आज पण्डित जी ने फिर पूछा है कि क्या अधिक मांगते हैं ? इस में जो कुछ आप की आज्ञा हो, वह कीया जायगा.

३ ऐक पत्र रिजिष्टरी कीया हूआ महाराज की ओर भेज चुका हूं उस का उत्तर आपने नंही दिया. उस की चिंता है, कि वह पंहुच गया हो. क्या क: सवलसिंह जी के हाथ ही उत्तर आयेगा.

४ आधीश यहां के आनन्द में हैं.

५ विशेष समाचार मेरे पूर्व पत्र के उत्तर आने पर निरभर है उस से पूर्व नहीं लिख सकता.

६ ईश्वर मुझ को आप के दर्शनों से कब त्रिप्ति प्रदान करेंगे.

आप का दास व दर्शनाभिलाषी

ज्वाहरसिंह: उ. म, म. श. पु.

देश मेवाड़

(३० जुन सं १८८३)

---

(१०)

उँ श्रीसर्वोपकारक कारुणिक श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामीनां दास ज्वाहरसिंहस्य वारम्वार नमस्तेस्तू ॥ अपरंच ॥ यहां आप की कृपा से आनन्द मङ्गल है और सर्व शक्तिमान जगदीश्वर से नितान्त प्रार्थना है कि वह आप के शरीर को सर्वोपकारार्थ सदा नीरोग रखें ॥१॥ बड़ा समाचार यहां का येह है कि अब दास यहां से चलने को उपस्थित हूआ है !!! यह समाचार कारण जाने बिना यदि मेरे पूर्व पत्र गत समाचारों के संग मिलाया जावे तो इस में केवल मेरा अविचार ही समझा जायगा । और आप को निश्चय होने की सम्भावना भी रहेगी कि मैंने यहां न रहने में जल्दी की है और समाज तथा आप की इच्छा के प्रतिकूल आचरण कीया है वा उनके कहने को कम सुना है और अैसा जानणा कुछ असंगत भी प्रतीत नहीं होगा किउं कि इस से पूर्व अपने यहां रहने में मासिक की न्यूनतादि की शंका [जो पीछे निरमूल सिद्धि की गई थी] आप से में कर चुका हूं ॥ और अब भी श्री शाहपुरेश ने अपने अंत्यम पत्र में मुझे सीख देने का यही मुख हेतू बताया है तथा यह ज्ञान से कि मेरी सरकारी छुट्टी में भी थोड़ा सम्य वाकी रहा था उर्द लिखित निश्चय को दिढ़ता होती है कि मैंने अविचार पूर्वक यहां से रुखसत मांगी है परन्तु में निमृता पूर्वक बेनती करता हूं कि आप अैसा विचार न

करें ॥ २ ॥ मैं आप को निश्चय दिलाता हूं कि जोधपुर से शिक्षक पत्र आने के पश्चात् मैंने मासिक वासिक का समूल ही विचार छोड़ दिया था और दृढ़ता से रहने का विचार कर लिया था !!! इस लेख से मुझे निश्चय है कि अब आप को यह जानणे की आकांक्षा हो गई होगी कि फिर चले जाने का ठीक कारण क्या है ? इस का उत्तर संक्षेप से तो यह है कि मेरे चले जाने का मुख्य कारण वह है जिसको श्री शाहपुरेश स्वपत्र में दूसरा कह कर लिखते हैं ॥ असल यह हूई है कि ऐजिण्ट साहिब के यहां आने से १९ दिन पहले नाथोसिंह आदिक जागीरदारों ने देवली में साहिब को रियासत के विरुद्ध कई बातें लिखी उन में एक यह थी कि मोहनकृष्ण का भेजा हूआ ज्वाहरसिंह आया है और कामदारी करेगा ! जब साहिब यहां आये तो ८ दिन रहे मुझको श्री शाहपुरेश ने उनसे नहीं मिलने दिया ॥ उस से मेरा मिलना इस हेतू से बंद किया गया कि यदि विशेष सरदारों की रीति से मुलाकात होगई तो साहिब ऐजिण्ट को नाथोसिंह की शिकायतें सारी सच्ची परतीत हो जायंगी, याते मिलना बंद रहा इस विवहार से मेरी कमर टूट गई कि कब तक छिपा रहूंगा ॥ ३ ॥ एक दिन साहिब ने आप शाहपुरेश से पूछा कि ज्वाहरसिंह कौन है और किस काम के वासते बुलाया है ? अब यह समय था कि कि जो कुछ कहा जाता में उसको पूर्ण रूप से अपने ऊपर बरतन

योग्य निश्चय करता. सो श्री शाहपुरेश ने उस समय यह जान कर कि प्राईवेट सैक्रट्री कहने से नाथोसिंह का कहना सत्य वा सत्य के निकट २ हो जायगा, तथा यह भी कि ऐसा कहने से कोई और बात न निकल आवे साहिब को उत्तर दिया कि हमने जुवाहर सिंह को क्षात्र पाठशाला के वासते बुलाया है, रियासत के काम से उसका कोई बासता नहीं है !!! जब यह समाचार राजाधिराज की जुबानी मुझ पर खुला तो मेरी रही सही कमर टूट गई ! और निश्चय हूआ कि किसी प्रकार का शुभ काम अब नहीं हो सकेगा ॥४॥ यद्यपि इस विवहार से मुझ को बहुत खेद हूआ तथापी कहने की हिमत न की. परन्तू इस पर और भी दुख होने लगा कि साहिब चले जाने के पीछे मेम ने जो २ मास की रियासत से छुट्टी ली उसका पड़ाने का काम मेरे हवाले हुआ !!

सो यहां तक तो कुछ तकलीफ न थी परंन्तू ढीकोला जब राजकुमार जाने लगे तो मुझे भी ऐक (अध्यापक) मुअल्म की हैसीयत समझ साथ भेजा और बाकी के पड़ने वाले लड़के भी साथ कर दिये कि सफर में भी उनको में पड़ाऊं ॥ सोचने की बात है, कि अध्यापक व प्राईवेट सैक्ररी के क्या२ काम हैं!॥ जब आदमी का दिल किसी कारण से उटकता है तो फिर ज़रा२ सी बातों में भी नुकस दिखाई देते हैं; मदरस्से के काम में लगने

से दरबार की समीपता में फ़रक आया, और छोरों की संङ्गत प्रापत हुई ॥९॥

॥ साहिब आने से पहले तो हजूर इस प्रकार की मुझ से बातें करते थे कि साहिब आजाने के पीछे हम तुम्हारी राय भी लिया करेंगे और कोई काम भी देंगे; इससे मैंने ९ रोज साहिब के चले जाने के पीछे श्री शाहपुरेश से अरज़ की (यह अरज़ दिल की असल तस्वीर उतारने वाली न थी क्यिुकि मैं आपको निश्चय दिलाता हूं, कि में तकलीफ अपनी को कम कहा करता हूं) दिल में तो यह था कि नाम मात्र के प्राईवेट सैक्रट्री रहना अच्छा नहीं लहोर में रहकर तो सामाजिक उनन्ती भी करते थे यहां समय व्यर्थ जाता है ॥ द्वितीय वह मान जिसका पूर्व पत्रों में व्याख्यान हो चुका था, देखने में न आया अर साहिब वाली काररवाई से भी दिल टूटा था यांते रुखसत मांगने को दिल ने चाहा परन्तू आप का उपदेश भूला न था इससे रुखसत भी मांग न सकता था और दिल शिकस्तगी भी प्रगट नहीं करनी चाहता था, यांते मैंने गोल मोल अक्षरों में अरज़ की कि मुझे कोई काम करने को मिल जावे क्यिु कि बिना काम मासिक लेना मैं आतमा से शरमिंदा होता हूं ॥ और साथ यह भी अरज़ की कि आप ऐजिंट साहिब को ऐसे कह चुके हैं [इस से मुझ को कोई काम भी आप नहीं दे सकेंगे] तो फ़रमाने लगे कि सोचकर जवाब

देंगे सो १० दिन पीछे वह पत्र मेरे पास भेज दिया जो परसों आप के पास भेजा गया है और जिस में मुख हेतु मेरा मासिक रखा है, और जागीरदारों का पेंच गवन ॥ और जिसमें लिखा है कि जवाहर सिंह की लियाकत के मुकाबले का मासिक अभी नहीं दिया जा सकता ॥६॥

॥ मैं निश्चय करता हू कि मैंने संक्षेप से अपना असली हाल कह दिया है ॥ इस से सिद्ध होता है कि मैंने आप सीख नहीं मांगी वरन मेरी अरज के उत्तर में मुझ को रुखसत मिल गई॥७॥ इस सफ़र में मेरा ३००) खरच आया और जाती दफ़े २५०) मिलेंगे. १००) सफर खरच और तीन महीने की तनखाह ५०) के हिसाब स १५०) ॥८॥

॥ बैसाख सुदी ९ मंगलवार मुताबिक १५ मई सं १८८३ को रियासत की चिठी अनुसार नौकर हुआ था. १५दिन तय्यारी में लग गये थे ५ दिन सफर में, ६ जून को यहां पहुचा था जिस तारीख से जो कुछ मिलना होगा असतू कह कर ले लूंगा९॥

॥ इस सफ़र में बड़ा लाभ यह हूआ कि श्री शाहपुरेश को बहूत प्रसन्न रखां, और हमेशा के वासते मुलाकात रही ॥ द्वितीय बंदूक चलानी अच्छी सीखली. तीसरे अमनचेन से गुजरान रोई हासल हुई, और आप के पास राजाधिराज के भी मेरी प्रशंसा में लेख पहुंचे ॥१०॥ मेरे निश्चय में दो बातें हैं ॥ ऐक तो येह

कि यदि मेरे आने तक आप यहां ब्राजमान रहते तो सब काम ठीक हो जाते द्वितिय यदि हजूर से उस वकत साहिब को ठीक उत्तर दिया जाता तो भी ठीक था. पर अब खैर !! किया है ॥

यदिपी मैं यहां से कुछ तो हरष से और कुछ शोक से जाता हूं तथापि एक बहुत बड़ा शोक जो मुझे है और कुछ काल तक रहेगा भी, वह यह है कि मैं इतनी दूर आकर भी आप के दर्शन न कर सका ॥ इस से मैं अपने को बहुत अभाग्य समझता हूं ॥१२॥ आज से मैं १२ रोज तक रहूंगा [ऐसा मैं ख्याल करता हूं] और आप का उत्तर इस विष्य में यदि मुझ को प्राप्त होगा तो मेरे अहो भाग्य होंगें आज कल यहां अछी बारश हो रही है आश्य है कि जोधपुर में भी होगी.

भाद सुदी २ सोमवार
शाहपुरा

ह० आपका दास
जवाहरसिंह

---

(११)

ओ३म् ॥ सिधिश्री सर्वोपकारार्थ—कारुणिक परमहंस परि-व्राजकाचार्य्य श्री १०८ मद्दयानन्द सरस्वती स्वामी जी महाराज दास जवाहरसिंहस्य नमस्तेस्तू अपरंच ॥ ईश्वर की कृपा से मैं आनन्द सहत यहां पहुंच गया. परन्तू यहां आत्ते ही हवा के

बदलने से शरीर में खेदसा हो गया था जिस से मैं आप को पत्र न लिख सका था अब आराम है ।। मैं शाहपुरा से १३ सितम्बर को चल के अजमेर में आया ।। १६ तारीख को वहां पर व्याख्यान दिया. विष्य "आर्य्यसमाज के स्थापन की क्या आवश्यक्ता थी." था, बहुत उत्तम रीत्त से व्याख्यान दिया गया. फिर जैपुर समाजस्थ आर्य्य पुरुषों से मिलना हुआ उन को बहुत उतसाह दिया गया. ऐक व्याख्यान दिल्ली में गुरद्वारे के बीच दिया. वहां से सीधा लाहौर चला आया.

इस गत यात्रा में श्रीमानों के मिलने का और बंदूकादि शस्त्र चलाने का लाभ हूआ, जो बहुत भारी है, और नुकसान केवल २९०) रुपये का हूआ ।। दूसरा यह कि अपने साहिब ने जो तरक्की देनी कही थी और जिस बात के पुना २ लिखने से आप को भी मेरे समझाने नमित्त ऐक पत्र लिखना पड़ा था बंद होगई!! यह करना अङ्ग्रेज़ों का धर्म है !! परन्तू शोक का स्थान नहीं, क्यूंकि इस के बदले ऐक बड़ा लाभ यह हो गया है कि मुझ को देशी राज काज के सब ढंग मालूम होगये ।। देशी विदेशी प्रणाली के सब भेद खुल गये. अब राज प्रबंध करना सहल प्रतीत होता है यह बहुत लाभ की बात होगई ।।

राजाधिराज ने मुझ को आते हूये ऐक मान्य पत्र प्रदान किया जिस मे मेरी प्रशंसा कही है ।। उस मे यह भी लिख दिया है

अर ज़बानी भी बहुत कहा है कि "तुम को जल्दी अछे काम पर बुलावेंगे." अब देखना चाहीये कि कब तक याद करेंहगे ॥

यहां समाज में ईश्वर की ओर आप की दया से बहुत उनत्ती है नवंबर के अन्त में उत्तसव होगा. उस से पृथम चिजर्ला आदिक विद्या लिखलाने वाला सकूल खोल दिया जायगा.

यहां हमारी सब की इच्छा है कि आप राजपूताने को छोड़ कर पहले कलकत्ते में "नुमाइशगाह देखें. फिर ऐक वार पंजाब में आकर मदरास या बंगाले को पधारें. राजा लोगों से होता कुछ नज़र नहीं आता ! जो कुछ उनत्ती देस की होगी, वह असमदादिक लोगों से ही होगी. ऐसा निश्चय होता ॥

लाला सांईदासजी आप के पत्र का उत्तर इस कारण से न दे सके कि लाला मथरादास साहिब यहां नहीं मिले थे अब उन से पूछ कर लिखा जाता है कि जैन मत्त खंडन की २०० अलग प्रति छपाई जावें उस की अलग कीमत्त देदी जावेगी. और ह्यूमसाहिब के प्रश्न का उत्तर भी छपा दिया जावेगा.

शाहपुरा में जो दूसरा ओवरसीयर चाहीये वह पंडित गौरीशङ्कर जैपुर वाले लिये जावें तो अच्छा है. इस विष्य में मैं आज शाहपुरा लिखता हूं यदि उन की इच्छा हूई तो वह जैपुर से पत्र भेज कर मगवा लेंवेंगे ॥

अजमेर में मैने आप के चोरी हो जाने का समाचार सुना बहुत शोक हूआ था. क्या कुछ पता लगा या नहीं—मसूदा जाने का विचार है वा नहीं वा कहां जाने की इच्छा है ? सब आर्य्य पुरुष आप को नमस्ते कहते हैं.

ह० आप का दास

जवाहरसिंह. प्र: स: आर्य्य समाज लाहौर-

१३ अक्तूबर संन १८८३–]

श्रीयुत कालूराम जी रामगढ़ के पत्र

(१)

॥ ओ३म् ॥

श्रीयुत प्रतिष्टित्ता चार्य्य परम गुरू अतीदयाल पूजनीय० महाशय ! स्वामी जी श्री दयानन्द सरस्वति जी महाराज नमस्ते नू प्रग ् हो कि आप के जोधपुर पधारने की खबर पक्की मिली ह:॥ सो सर्व शक्तिमान० ।के कृपया ते हमको बिश्वास है कि ए कार्य्य शिघ्र ही शिद्ध होवेगा जी०॥ ओर मेरी अल्प बुद्धि मे अैसा आता है कि कधी! परतापसिंहजी के ईसाई मत की आग्र

होवे तो आ........म ताके साथ औसिरित्ती से खण्डन किजिये इस मत का अ...............फेर कवीनै जमः ॥ ओर हमने अैसा सुना है कि ये सच्चे सूर...............दातार पूरे देश हितैषिक है ॥ सो इनों को अैसा उपदेश हो...........फेर। कोई भेद नैं हो आमि तरफ।। इसी रिती से ॥ ओर ईसाई म० खण्डन हो ज्याय; ओर हजूर. कै. परतापसिंह जी का सनातन मत दृढ निश्चय होते ही ए मंगल समाचार मय कृपा पत्र आप लि० देवदत्त ब्राह्मण जे. कृ. ९ मी को साहपुर को रवन्ने हुआ १ कोथली साङ्गरीन्की आप के वास्ते भेजी सो मिलने स देवेगा जी॥ ओर पुस्त........दत्त० डाक द्वारा घर भेजने दे गया पार्सल बनाके सो मुन्शी २॥)........लेके तो रसीद दे देगा नाहिं तो ॥ १।) सवामें पहुंच शक्ति है........र रसीद लिये सो इस विसय म जो देवदत्त कि मर्जि हो सो २........॥रसीद २॥) खरचे मिलगी ओर रसीद विगर लिये १।)........सो सर्वाभिशाय अवश्य जरूर ४ लिखवावे आप श्री........के मिलन से बूजकर ॥ ओर १ विनय पत्र साहपुर........कल्ल दिई सो जाने आप क पास पहुँचः वान॥ परञ्च ॥ सर्वाभिशाय संयुक्त कृपा पत्र आप अवश्यहि लिखवावें जी ॥ जपुका तलटा ईलाका शीकर आर्य्यसमाज सेठों का रामगढ़. स. प. प. कालूराम. नमस्ते केदारकि. जे. शु. ४ सं. १९४०॥

(२)

॥ ओ३म् ॥

श्रीयुत पूजनियोतम प्रतिष्टिता चार्य्य श्रीमान सर्वोपमालायक ॥ महाशय ! स्वामी जी श्री दयानन्द सरस्वतीजी महाराज नमस्ते २ प्रगट हो कि ॥ देवदत्त ब्राह्मण आप के पास पहुंचा होयगा जी कोथली साङ्गर की आप कों भेजी सो पहुंची होवेगी जी लिखना ....र छाछ फीटकड़ी की साधन जो शिरकार कः मनुष्य करी........उस्का आजार मिटा वा न मिटा सो लिखना जी ॥ यहां पर तो........मनुष्य को ए साधन उसी रोग पर कराया था सो गुण हुआ इस वास्ते आप को लिखा ॥ हमने साहपुरा से आया पीछे ॥ ओर । शीकर का समंचार पक्का होने से लिखैंगे जी ॥ ओर नई जूति ह कि गत आप कृपा करके लिखवावें जी ओर हमारे तो आप को इष्टह ॥ ओर गउओं के विषय मे हस्ताक्षर करवावेंगे ॥ ठाडी बरखा होने से॥ ओर हजूर से........री नमस्ते कहणा जी ॥ कृपा पत्र अवश्य जरूर २ लिख........जी॥ ओर देवदत्त सें नमस्ते कहणा वे पुस्तक भेज........को देवदत्त देगा था सो सीमने में पारसल बना दई सो........।।) डाकमुन्शी लेके रवैन्ने करेगा जद तो रशीद देवे........ओर नहिं तो बिगर रसीद लिये १।) में पूच शाक्ति है........देवदत्त का जो अभिप्राय होवे सो २ लिखवाना जरूर ४ जैपुर्कि तलैटी ईलाका शी-

कर आर्य्य समाज सेठों का रामगढ़ स. प. प. कालूराम जी लिखतमाज्ञा कारिक शिष्य केदारवल्लभ ओर यहां के सर्व सभासद वा समाजस्थों कि अभिवादन धन्यवाद ज्ञातम् पत्र दिजिये जी........शु. ३ सं० १९४० ॥

श्रीयुत मन्त्री जी आर्य्यसमाज अजमेर के पत्र ।

(१)

ओ३म् ।

आर्य्यसमाज अजमेर ।

२८-३-८३ ।

श्री स्वामीजी महाराज नमस्ते ।

आगे निवेदन यह है कि आपकी आज्ञानुसार सहजानन्द सरस्वती जी को जयपुर समाज में उन की इच्छानुसार भेज दीये अवकाश न होने से पत्र लिखने में विलंब हूआ क्षमा करिये—यहां पर सब प्रकार से आनन्द है आप अपनी सर्व व्यवस्था से दास को सूचित करते रहिये--आपने मुन्शी इन्द्रमणि का हिसाब अभी तक

नहीं भेजा इस्का क्या कारण है—हमारा उत्सव बड़ी धूमधाम से हुआ और आनंद रहा पंडित् लक्ष्मीदत्त जी फरुख़ाबाद से और कानपुर से श्रीनरायण खन्ना मेरठ से भोलानाथ पंडित् और जयपुर से वहां के पंडित् आदि आये थे जिस्की व्यवस्था आप को देश-हितैषी द्वारा भलीभांति से विदित होगी इस पत्र का उत्तर शीघ्र प्रदान कीजिये एक दुष्ट सम्पादक ने आप के प्रति बहुत कुछ लिखा है जिस्के विषय में हम उस्के उपर नालिश करने वाले है आप उत्तर शीघ्र दें तब सर्व हाल लिखुंगा *

आपका दास .

मुन्नालाल।

---

(२)

आर्य्यसमाज अजमेर

नं० ४०३ ता० ७–६–८३

श्रीस्वामी जी महाराज. नमस्ते.

कुछ दिन हुये पोष्ट कार्ड आप का आया था और जिस

---

* इस कार्ड के पृष्ट पर लिखा है "श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती जी योग्य, शाहपुरा राजपुताना"।

विषय के वास्ते आप ने मुझ को मितीवार लिखने को लिखा है मैं उस की फ़िक्र में प्रथम ही दिन से लगा हुआ हूं परन्तु कालेज की छुट्टी होने से अभीतक उस का ठीक ठीक पता नहीं लगा क्योंकि जिन मनुष्यों से पूछा जाता वह यहां है हीं नहीं यद्यपि मैंने अन्यत्र स्थानों से बहुत कुछ दरयाफ्त किया जिस से आशा होती है कि वह दिन जिस दिन उक्त साहिब का असबाब नीलाम हुआ था तारीख़ वार एक दो दिन में निश्चय हो जायगा उस से अनुमान १०, १२, दिन घटा कर उन के जाने की मिती निकल आवेगी सो इस को मैं आप की सेवा में शीघ्र ही भेजूंगा.

यहां पर ६ तारीख़ को पं० चतुर्भुज आये हैं और अपनी निकृष्ट बुद्धि के अनुसार आर्य्यों का यश और कीर्तन कर रहे हैं और बड़े लंबे २ डीग मारते हैं और कहते हैं कि अब हम स्वामी जी से शास्त्रार्थ करने को जोधपुर जांयगे और यहां अजमेर नगर में बड़े २ विज्ञापन लगा दिये हैं.

आपने जोधपुर का हाल नहीं लिखा महाराजा साहिब से मुलाक़ात हुई वा नहीं.

स्वामी केशवानन्द जिन्होंने आप से बाग में वार्तालाप की थी जोधपुर आने को तैयार हैं और कहते हैं कि जब तक हम स्वामी जी के पास ६, ७ महीन न रहलें तब तक हम अपने मन

की दृढ़ता नहीं कर सक्के अब इन के विषय में जैसी कुछ आप आज्ञा दें वैसा किया जावे.

प्रिय बन्धु अमरदान जी को बहुत २ नमस्ते पहुंचै और ज्ञात हो कि आपने भी अभी तक वहां के कुछ समाचार नहीं भेजे जैसा कि मुझ से प्रतिज्ञा की थी इस कारण आप से निवेदन है कि उक्त प्रतिज्ञानुसार सप्ताहिक चिट्ठी पत्री भेजते रहें और मुन्शी कन्हैयालाल को मेरा बहुत २ नमस्ते कहना—और सब सभासदों की ओर से स्वामी जी की सेवा में नमस्ते पहुंचै

आप का दास

कमलनयन शर्म्मा

मंत्री आर्य्यसमाज अजमेर

---

(३)

आर्य्यसमाज अजमेर

नं०

ता: १७–६–८३

श्रीस्वामी जी महाराज नमस्ते—

कृपा पत्र आया जोधपुर के समाचार ज्ञात होने से अत्या-

नन्द हुआ. ईश्वर इन राज पुरुषों को प्रतिदिन देश उन्नति कारक करे.

पं० सुखदेव और पं० दामोदर जी अजमेर में हैं परन्तु पं० शालिकराम जी छुट्टी पर गये हैं छुट्टी से आने पर आप को ख़बर दी जायगी. आप का यह कृपा पत्र पं० छगनलाल वा बृतीचन्द अन्य श्रेष्ट सभासदों के सामने पढ़ा गया था इस में जो आपने तीन पंडितों के वास्ते लिखा है उस का पूरा वृत्तान्त नहीं मिला कि इन पं० के वास्ते क्यों लिखा है क्योंकि इन लोगों का प्रगट और आत्मिक अभिप्राय में सदैव ही भेद रहता है जिस को समाज के सभासद आप की अपेक्षा अधिक जानते हैं क्योंकि आप के तेज के सामने तो विरोधी मनुष्य भी हां में हां मिलाने लगता है इस कारण आप उन का आत्मिक अभिप्राय नहीं जान सक्ते यह विचार एकत्रित सभासदों की यह राय हुई कि स्वामी जी महाराज को ऐसा लिखो कि जिस किसी पुरुष को बुलाना चाहैं तो प्रथम वहां के समाज से उस के चाल चलन और आत्मिक अभिप्राय के विषय में पूछ लिया करें ऐसा करने से समाज का भी मान्य होगा और जानेंगे कि ये भी किसी खेत की मूली है और एकाएकी समाज में विघ्न भी न डालेंगे यदि सदैव ही से आप ऐसा करते और मुन्शी बख़्तावरसिंह और इन्द्र-मणि के विषय में वहां की सभाजों से राय लेते तो आज के दिन

यह धोखा न खाते पं० सुखदेव ने जैसा कुछ इस समाज में विघ्न डाला और ठौर २ हजरत ईशा को आप की अपेक्षा उत्तम ठहरा निन्दा करता फिरा क्या यह वृत्तान्त आप को सांगोपांग से विदित नहीं है हां यदि कोई ऐसा कार्य्य हो कि ऐसे मनुष्यों के सिवाय काम नहीं चले तो कुछ डर नहीं परन्तु जब आप इन के साथ कुछ सहायता करना चाहें तो प्रथम इस आर्य्यावर्त में जितने सामाजिक सभासद जो तन मन धन से समाज उन्नति में तत्पर हैं जिन के ऊपर वर्तमान पोप मतावलम्बियों और कुटुम्बियों के घोर प्रहारों को सह चुके हैं उन का हक़ है आगे आप सर्वोपरि बुद्धिमान हैं जैसा उचित जानें वैसा करें मुरादाबाद समाज से एक पत्र आया है जिस्में लिखा है कि मुं० इन्द्रमणि प्रधान, और जगन्नाथ-दास पुस्तकाध्यक्ष अपने भ्रष्ट आचारों से इस समाज से दूर किये गये जो आगामी देशहितैषी में छपेगा—स्वामी केशवानन्द जी कहते है कि जब तक हम चार पांच मास स्वामी जी के पास रह कर मन की दृढ़ता न करलें तब तक प्रतिज्ञा नहीं कर सक्ते आप जैसा लिखें वैसा किया जावे पं० चतुर्भुज यहां पर १ दिन व्याख्यान दे दुर्दशा सहित चल दिये इन की निष्फल बकवाद यहां के पोपों को भी अच्छी नहीं लगी इन के पश्चात् पं० रामलाल जी ने जिन्होंने आप से मुकाम बंबई में शास्त्रार्थ किया था चार पांच व्याख्यान दिये. परन्तु व्याख्यान शक्ति इन की अच्छी नहीं थी.

जिस वस्तु का खन्डन करते थे इन्हीं के मुंह से उस का मंडन हो जाता था. ये भी यहां से विना कौड़ी पैसे के गये, और समाज में सब आनन्द है. सब सभासदों की ओर से आप को बहुत २ नमस्ते पहुंचे.

मऊ कालिज से लॉंगसाहिब का असबाव उन के जाने से तीन मास पीछे ३० जोलाई सन् १८८० ई० को नीलाम हुआ था इस्से आप उन के जाने का दिन निकाल सक्ते हैं और जोधपुर के वृत्तांत से सूचित करते रहें.

आप का दास

कमलनयन शर्म्मा

मंत्री आर्य्यसमाज अजमेर

---

(४)

आर्य्यसमाज अजमेर

नं० ४२६ ता: ३-७-८३

श्री स्वामी जी महाराज नमस्ते-

कुछ दिन हुये आपका कृपा पत्र आया था कई कारणों से

में उसका उत्तर नहीं दे सका. आपके जोधपुर जाते समय गाड़ी का न मिलना वास्तव में शोकदायक है और इस क्रम से कितने एक सभासदों का मन आपके लिखने से प्रथम ही उदास है परन्तु समाज में जुदी २ प्रकृति के मनुष्य होते हैं इस कारण इस क्रम के भी कुछ भागी होंगे. इसमें विशेष लिखना नहीं चाहता. आप जो कुछ अनुचित हुआ क्षमा करें

पंडितों अथवा और किसी मनुष्यों का समाज की मार्फ़त बुलाने से ईस समाज का यह अभिप्राय था कि उक्त मनुष्यों का चाल चलन आपको भली भांत प्रतीत हो जावेगा जिस्से आगे को कोई विघ्न न पड़े.

पंडित दामोदर दास और स्वामी केशवानन्द आप की सेवा में पहुंचे होंगे स्वामी केशवानन्द जी ने मार्ग का खर्च इस समाज से मांगा था परन्तु समाज ने यह विचार कर कि दो मनुष्य तो इनके साथ में हैं दूसरे आर्य्य समाजों के नियम अनुसार बैदिक धर्म पर इनकी दृढ़ता भी नहीं है वृथा धन जाते देख नहीं दिया और कहा गया कि यदि स्वामी जी के पास जाने से बैदिक धर्म पर आपकी पूर्ण दृढ़ता हो जावेगी और स्वामी जी हमको लिखेंगे तो हम पूर्ण रीति से आपकी सेवा करेंगे. सो अब जैसा कुछ हाल इनका आपने देखाहो उस्से सूचित करें

पंडित सालिकरामजी छुट्टी से आगये हैं उनको पंडित के

वास्ते पूछा कि काशी में क्या बंदोवस्त कर आये उन्होंने कहा कि मैं तो काशी नहीं गया परन्तु पंडित रामचन्द्र जो हमारे कालेज के नायब पं० हैं वे गये थे उनसे जो पूछा तो उन्होंने कहा कि काशी में और तो कोई पंडित स्वामी दयानन्द सरस्वती के पास जाने को उद्यत नहीं हुआ परन्तु एक पंडित राम निरञ्जन नाथ त्रिपाठी ३०) मासिक पर आने को उद्यत हुआ सो यदि आप को स्वीकार हो तो लिखें आप के लेख आने पर उनको काशी से बुला लिया जावेगा. पं. शालिकराम जी ने यह भी कहा यदि स्वामी जी उक्त पं. को स्वीकार करेंगे तो हम काशी के पंडितों से उक्त पं जी की विद्या की और भी निश्चय करलेंगे इस में जैसा आप उचित समझें वैसा लिखें मेव कालेज डिवीजन के जो इन्जि-नियर साहब थे वे शिमले को बदल गये उनकी जगह पर सरदार भगतसिंह इन्जिनियर हुये हैं उन्हीं के दफ्तर में मैं भी काम करता हूं वे कहते थे कि गुजरात में मूलराज ए०मे० हम से मिले थे और आर्य्य समाजों को पक्षपाती कहते थे इस कारण हमने और उन्हों ने मिलकर एक संस्कृत पाठशाला जुदे होकर नियत की है परन्तु आपने जो उदयपुर में २३ मनुष्यों से सभा नियत की है उसमें इन्हीं महाशय मूलराज ए० मे० का दूसरा नम्बर है यह देखते हुये हमको आशा नहीं कि वे आर्य्य समाजों को पक्षपाती बताते हों. यह केवल सिरदार साहब का कथन मालूम

होता है यहां एक सभा देश उन्नति के लिये नियत हुई है जिस में बहुधा प्रार्थना समाज के सभासद हैं उस सभा के सभापति सरदार भगतसिंह जी हुये हैं—शोक है कि ऐसे योग्य पुरुष इस आर्य्य समाज के कोई सहायकारी नहीं हैं. जोधपुर के समाचार लिखिये. सब सभासदों की ओर से नमस्ते.

रामानन्द ब्रह्मचारी और अमरदान जी को बहु प्रकार से नमस्ते

आपका दास
कमलनयन शर्म्मा
मंत्री आर्य्य समाज अजमेर

---

(९)

आर्य्य समाज अजमेर

नं० ४९४ ता: २१-७-८३

श्री स्वामी जी महाराज

नमस्ते.

इससे प्रथम एक चिट्ठी आप की सेवा में भेजी गई थी जिसमें पंडितों और स्वामी केशवानन्द का आप के पास जाने

का हाल लिखा था पर न जाने आपने उत्तर क्यों नहीं दिया. आज कल इस नगर में पोप लोगों ने यह गप्प उड़ा रक्खी है कि जोधपुर में स्वामी जी से फौजदारी हो गई है यद्यपि हम जानते हैं कि यह सर्वदा असत्य ही है तथापि अल्पज्ञता के कारण कितने ही प्रकार के संकल्प विकल्प उठते हैं. इस कारण आप कृपा कर इसका सत्य वृत्तान्त लिखें

१२ वीं जोलाई सन् ८३ ० का भारतमित्र आप की सेवा में पहुंचा होगा उसमें ए ओ. होम साहब ने जो थियोसाफिष्ट के मेम्बर हैं. वेद भ्रान्ति अभ्रान्ति का वृत्तान्त लिखा है और आप से उत्तर मांगा है सो उत्तर अवश्य देना चाहिये.

और जोधपुर का वृत्तान्त भी लिखें कि वहां के लोगों को कैसी भक्ति है. और महाराजा साहब का कैसा स्नेह है. किमधिकम्.

रामानन्द ब्रह्मचारी, अमरदान जी कन्हैयालाल जी महाशयों को नमस्ते पहुचै. और सब सभासदों की और से आपकी सेवा में नमस्ते पहुंचे.

आपका दास

कमलनयन शर्म्मा

मंत्री आर्य्य स. अजमेर

---

(६)

आर्य्यसमाज अजमेर

नं० ४६९ ता: २९-७-८३

श्री स्वामी जी महाराज.

नमस्ते—

आपका कृपापत्र आया सब को आनन्दित किया. मिष्टर ए. यू. होम साहब के कथन का खन्डन जो आपने दे० हि० में छपने को भेजा है सो पहुंचा. दे० हि० के भाद्रपद मास के मसौदे में जो कि १० अगस्त को छपने को जावेगा उसमें लिखा गया.

भारतमित्र और अन्यत्र पत्रों में आपने मुद्रितार्थ भेज दिया. अच्छा किया क्योंकि उनमें शीघ्र प्रकाश होगा. सब सभासदों की ओर से नमस्ते पहुंचे.

आपका दास

कमलनयन शर्म्मा

मंत्री. आर्य्य. स. अजमेर

---

(७)

समय ½ घंटा

ऐन्द्रं सानसिं रयिं सजित्वानं सदासहम् ॥ वर्षिष्ठमूतये भर ॥१॥ नियेन मुष्टिहत्यया नि वृत्रा रुणधामहै ॥ ॥ त्वोतासो न्यर्वता ॥२॥ इन्द्रत्वोतास आवयं वज्रं घना ददीमहि ॥ जयेम संयुधिस्पृधः ॥३॥ वयं शूरेभिरस्तृभिरिन्द्र त्वया युजावयम् ॥ सासह्याम पृतन्यतः ॥४॥ महाँ इन्द्रः परश्चनु महित्वमस्तु वज्रिणे ॥ द्यौर्नप्रथिना शवः ॥ ५ ॥ समोहेवाय आशत नरस्तोकस्यसनितौ ॥ विप्रासोवाधियायवः ॥ ६ ॥ यः कुक्षिः सोमपातमः समुद्र इव पिन्वते ॥ उर्वीरापो न काकुदः॥ ७ ॥ एवाह्यस्यसूनृता विरप्शीगोमतीमही ॥ पक्काशाखानदाशुषे ॥ ८ ॥

हस्ताक्षर बालकराम वाजपेई

श्री स्वामी जी म्हाराज नमस्ते

उपर यह बालकराम ने वेदभास देख कर आध घंटे में लीखा है लेख ईस्का अछा है परन्तु संस्कीत का बोध नहीं है समाज ने इस्को आठ रुपे मासिक पे नोकर रखाया है ईस कारण विना समाज

की आज्ञा के बालकराम के विश्य में कुछ नहीं लिख सकता था ईसी कारण उत्तर मे बिलम्भ हुवा अब समाज में ईस्का निर्णे हो गया है

समाज की आज्ञा

यद्यपि बालकराम स्वामी जी के पास बोहत थोड़े दिन ठेरेगा क्योंकि ईसमें पोप लीला और बाजारु चालचलन और सुस्ती अधिक है ईसी कारण समाज भी अप्रसन्न है परन्तु आज-कल प. मुन्नालाल के काम छोडने से और प. कमलनयन के नागरी अक्षरों में शीघ्र न लिखने से और दुसरा आदमी न मिलने से ईस को रख रखा था इसके जाने से समाज के कार्य्य में हानी तो होगी

परन्तु स्वामी जी के पास बालकराम के जाने से यदी वेद-भाष्य में अधिक सहायता मीले तो हम ईस हानी को कुछ नहीं गिनते

अब ईस पे आप बिचार करके बालकराम को बुलालें मुन्ना-लाल ने कार्य्य क्यों छोड़ दिया ईस्के लिखने की मुझ को समाज की आज्ञा नहीं है परन्तु ईतना तो अवश्य लिखता हुं की ऐसा करने से समाज में हानी होती है दुसरा समाचार यह है कि वह ईसाई औरत जिस्का मेंने आप से अजमेर में जीकर कीया था २६ तारीख आगस्त को आर्य्यसमाज में प० भागराम और सरदार भगतसींघ इत्यादि सरेष्ट पुर्षों के सामने जो की उक्त तारीख

समाज में रक्षाबन्धन के उत्सव में सुसोभित हुये थे अपने दो बच्चों सहित ईसाई मत्त छोड वेदमत्त स्वीकार कीया ईस पे उक्त सज्जन महाशय बोहत आनन्द हुये अब ईस्का पालन पोषन करना समाज को करतव्य है पढी लिखी कसीदे के काम में अती निपुण है जोधपुर के मंगल समाचार लिखये सव सभासदों की नमस्त पोहचे ईस ईसत्री का पुरा व्रीतांत दे. हि. न. ९ में लीखा जावेगा

आपका दास

कमलनयन शर्म्मा

मन्त्री आर्य्यसमाज अजमेर

ता: ३१ । ८ । ८३

---

(८)

आर्य्यसमाज अजमेर

नं. ९२९ ता: ६-९-८३

श्रीयुत स्वामी जी महाराज,

नमस्ते.

आपका आनन्द पत्र आया समाचार विदित हो अत्यानन्द हुआ.

१—पंडित मुन्नालाल को आपका पत्र दिखाया गया लिखना व न लिखना उत्तर का उनकी मर्जी पर निर्भर है.

२—वालकराम बाजपेई को भी पत्र दिखा दिया.

३—इस स्त्री के विषय में जो आपने पूछा है उनका उत्तर यह है.

१—यह ईसाई की लड़की नहीं थी. आठ मास से ईसाई हुई थी.

२—इसका जन्म बम्बई का है प्रभू अर्थात् कायस्थ जाति की है—

३—इसकी अवस्था २२ वर्ष की है इसके बड़े लड़के की अवस्था ८ वर्ष की छोटे की ६ वर्ष की.

४—दोनों लड़के हैं.

५—इसका चालचलन जहां तक हमने देखा है कोई दोष दृष्टि नहीं पड़ता. दूसरे विवाह की भी इसकी इच्छा नहीं है क्योंकि वो कहती है कि यदि मुझ को दूसरा विवाह करना होता तो मैं ईसाई मत में विना रोक टोक के कर सक्ती थी, इस स्त्री पर यह आपत्काल का समय है दो वर्ष हुये कि इसके पति की मृत्यु होगई है इसका पति अजमेर में १००) मासिक पर नौकर था. अपनी गुजरान अच्छी तरह से करते थे. परन्तु यही मेम लोग जो घर २ पढ़ाती फिरतीं है इनके घर भी जाया करतीं थी इनके सत्संग से पति के मृत्यु के पश्चात्. ईसाइयों ने बहका कर इसको इसके लड़कों समेत ईसाई कर लिया था। अब आर्य्य-समाज के उपदेश से वह मत छोड़ दिया ईसाई औरतों में यह

उपदेश किया करती थी आशा है कि यदि इसको सत्यार्थ-प्रकाश और अन्य आर्य्य ग्रन्थों का अवलोकन कराया जावे तो अच्छी उपदेशका होजा वेगी—

इस स्त्री के वेद मत स्वीकार करने से यहां के ईसाइयों में बड़ी हलचल मच रही है. और परस्पर ईसाई मत में उन्हीं को शंका उत्पन्न होने लगी. आशा है कि वर्ष दिन के भीतर और भी कितनेक ईसाई. मनुष्य और स्त्रियें वेद मत को स्वीकार करेंगे. परन्तु यह पहला नमूना है यदि अच्छा बन गया और इसकी सुदशा और मान्य दूसरे ईसाई लोग जब देखेंगे तो शीघ्र ही वेदमत को स्वीकार करेंगे.

पंडित दामोदर शास्त्री अपनी पहली जगह पर नौकर होगये. धन्नालाल का कुछ हाल मालूम नहीं.

पं. भागराम जी तथा सरदार भगतसिंह जी को आपका पत्र दिखाया. उन्होंने बड़ा आनन्द माना और सरदार भगतसिंह जी ने कहा कि मेरी ओर से स्वामी जी को लिखदें कि जब आप जोधपुर से गमन करें तो अजमेर होकर जावें. जिस्से हम को भी दर्शन हो जांय—

वर्षा यहां भी प्रतिदिन होती है. पं० मुन्नालाल जो आपको लिखें वह हम पर भी प्रघट होना चाहिये.

सब सभासदों की ओर से बहुत २ करके नमस्ते पहुंचै, स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी ने भी एक आर्य्यसमाज शिकारपुर पंजाब में स्थापित किया. किमधिकम्.

मिती भादवा सुदी ९ संबत् १९४०

आपका दास

कमलनयन शर्म्मा

मंत्री आर्य्यसमाज अजमेर

---

(९)

॥ ओं ॥

अजमेर ७ सितम्बर सन् १८८३

श्रीयुत सकल गुणालंकृत श्री स्वामीजी महाराज नमस्ते—

आप के कृपा पत्र को अवलोकन करने से बड़ा आनंद प्राप्त हूआ आपने जो कृपा करकें दास से मंत्रीत्व का पद त्यागन करने के विषय में प्रश्न कीया है वास्तव में मेरे लीये अतीव लाभदायक हूआ कि जिस्के कारण मुझको आपकी सेवा में अपने दुःख की व्यवस्था निवेदन करने का समय हस्तगत हूआ इसलिये मैं ईश्वर सर्व शक्तिमान न्यायकारी को मध्यस्थ मान आपकी सेवा

में सत्य २ निवेदन करता हूं यदि इस में तनिक भी असत्य लिखू तो ईश्वर मुझ को अवश्य दण्ड दे और आप के सन्मुख भी दोषी ठहरूं—

स्वामीजी महाराज! यह वृतांत इस प्रकार से है जिस समय आप द्वितिय समय अजमेर में सुशोभित हुये थे पं० सुकदेवप्रशाद को मंत्रीनियत कर मुझ को उपमंत्री स्थापित कीया था परंतु पं० सुकदेवप्रशाद ने जब मंत्री की पदवी छोड़ी तो सभाज ने मुझ को मंत्री नियत कीया इस के उपरान्त में बराबर अपने नियमानुसार अथाशक्य समाज का कार्य्य बड़े उत्साह से करता रहा अब इसी उत्साह में मैंने विचार कीया कि इस समाज से एक पत्र [माषिक] निकला करे जिस्से इस समाज की उन्नति और समाचारादि पत्न आया करे और जो कुछ पत्न से धन का लाभ होय वह समाजो-न्नति में व्यय होय मेने एसा विचार ठान इस विषय को अंतरंग समाज में निवेदन कीया परंतु समाज कोष में इतना धन नहीं था कि एक माषिक पत्र निकाल सकें परंतु मुन्शी पदमचंद जी वा पं० कमलनयन जी की भी यही अभिलाषा थी की अपने यहां से माषिकपत्र निकले तो बहुत अच्छी बात होय, तव मैंने कहा कि जो होय में पत्न निकालुंगा तिस्पर अंतरंग सभाने अंतको वादानुवाद होते यह नियम ठहराया कि अच्छा तुम पत्र निकालो इसके लाभ हानि के तुम्ही मालक हो—में ने इस वात को स्वीकार

कर अपने जी में यह कहा कि कुछ चिन्ता नहीं लाभ समाज को और हानि में दुंगा [इस बात को मैं ने केवल दो एक सभासदों पर प्रकट भी कर दीया था और वे इसके साक्षी भी है] तब मैंने देशहितैषी का आरंभ कर दीया और आप की कृपा से बड़े आनंद से चलता रहा—परंतु आप जानते है कि यह देश ईर्षा से ही नष्ट हूआ है, जो दस माष तक देशहितैषी में बड़े उत्साह से चलाता रहा परंतु समाज के सभासदों ने एक ने भी आकर मुझ को अणुमात्र भी सहायता इतनी भी नहीं दी कि देशहितेषी के ग्राहकों के नाम तक लिख दें [हां पं० कमलनयन जी ने दो एक विषय मुझको छपने को दिये थे] मैं ही केवल विषय बनाता ग्राहकों को उत्तर देता देशहितैषी को छपवाने भेजता जब छप कर आजाता था तब मैं ही उनको प्रत्येक ग्राहक के पास भेजने को उन पर कागज चढ़ाता उनके ऊपर नाम लिखता रिजष्टर करता इत्यादि सर्व काम मैं ही करता अणुमात्र भी किसी से सहायता नहीं ली थी [हां मेरी स्त्री मुझ को वास्तव में बहुत दे० हि० के काम में सहायता देती थी जिस्के कारण मैं किसी की सहायता लेने की परवा नहीं करता था] इसी प्रकार से बड़े आनंद से कार्य्य चलता रहा और समाज का अन्य काम भी करता रहा, इसी अवसर में **पाड़े श्यामसुन्दर** मेरठ समाज के उत्सव में मेरठ गये और वहां पर यह वार्ता हुयी कि

[श्यामसुन्दरा के कथनानुसार] जो पत्र समाज की ओर से निकलते हैं परन्तु कोई मनुष्य ही उसका मालिक है सो एसा करना उचित नहीं वह पत्र समाज का होना चाहिये और समाज ही उसके लाभ हानि की मालिक रहै] इत्यादि बातें जब श्यामसुन्दर मेरठ से लोट कर यहां आये तब उन्होंने मुझ को छोड़ दो एक और सभासदों से इस बात को कहा जब उन लोगों ने इस बात को स्विकार कीया कि एसा ही होना चाहिये, तब एक दिन प्रथम अंतरंग सभा होने के श्यामसुन्दर ने मुझ से कहा कि समाज दे० हि० को अपना करना चाहती है, मैंने इस बात के सुनते ही उसी समय कहा कि हां ! वडी अच्छी बात है यदि मेरठ समाज ने इस बात को नियत करना चाहा है तो मैं कभी नकार न करूंगा, अंत को दूसरे दिन अंतरंग सभा हुई और मुझ से पूछा गया कि समाज दे० हि० को अपना करना चाहती है तुम इस पत्र को समाज ही को दे दो मैंने कहा कि वहुत अच्छी वात है और मैं इस बात से बड़ा खुश हूं कि अब समाज का पत्र होने से मुझ को सहायता भी मिलेगी, बस स्वामी जी महाराज ! जब से यह पत्र समाज का हूआ—और जितना धन मेरे पास देश हितैषी के मध्ये का था कोषाध्यक्ष को सौंपा, और मैं उसी उत्साह से अपना कार्य करता रहा——

(२) अब इसी अवसर में पांडे श्यामसुन्दर ने पं० कमल

नयन जी और मुशी पद्मचंद्रादिजी को यह विपरीति बुद्धि सुझायी कि मुन्नालाल के पास जो डांक रोज़ अती है सो उस्के पास न जाया करे दूसरी जगह आया करे और चार सभासदों के बीच खुला करे जब मुन्नालाल के पास डांक भेज दी जाय, क्योंकि एसा न होय कि मुन्नालाल कही कोई किताब वा मनीआर्डर चुराले, अंत को एक दिन यह हूआ कि अकस्मात न तो मुझको सूचना कि कि आज से तुम्हारे पास डांक न आया करेगी वस आपस में बातें कर डांक अपने पास मंगवाली और मैं वांट ही देखता रहा कि डांक अब तक नहीं आई, परंतु उस दिन एसा हूआ कि मुन्शी पद्मचंद जी ने जो डांक घर उस आदमी को भेजा दैव योग से वह डांक घर में पहुंचा और डांकिया कुछ देर पीछे मेरे पास डांक लाया और डांकिये के पीछे २ मुं० पद्मचंद जी का नोकर भी आया और मुझ से कहने लगा कि डांक तुम मत लो मुं० पद्मचन्द जी ने कहा है तब मैंने यह जाना कि मुं० पद्मचंदजी ने इस चपड़ासी से न जाने क्या कहा है यह समझा नहीं है तब मेंने मुं० पद्मचंदजी के चपड़ासी से कह दीया कि अच्छा जाओ मु० प० चं० जी से फिर पूछ कर आओ—यह चपड़ासी गया ही था कि पं. कमलनयन और पं. श्यामसुन्दर आये और मुझ से [एक प्रकार से] कहने लगे कि अब से तुम्हारे पास डांक न आया करेंगी और दो वा चार सभासदों के बीच में

खुला करेगी, मैंने कहा क्यों ? यह प्रबंध कब हुआ और क्यों हूआ ? इसका क्या कारण है ? तो कहने लगे कि समाज की मरजी, यह तो अच्छी बात है तब मैंने कहा कि विना कारण के कोई कार्य नहीं होता क्या समाज में मेरी कोई चोरी पकड़ी वा मैंने डांक में से कुछ चुराया यदि एसा है तो आप उसका प्रमाण दें अन्यथा एसा प्रबंध करना मानो मुझ को चोर बनाना है तब पं० कमलनयन जी ने कहा कि तुम एसा आग्रह क्यों करते हो समाज की यही इच्छा है जब मैंने यह सुना तो बस आप सत्य जानिये कि मेरी आखों में आश्रुपात भर आये और मुझ से उस समय इन दोनों पुरुषों से कुछ कहते न बना, जब वे अपने घर को चले गये तब मुझ को इतना खेद हुआ कि लेखनी द्वारा आपके सन्मुख प्रकट करना असम्भव है—केवल थोड़ी देर के रोने के और कुछ न बना और अपने को धृकारा कि जब इन लोगों को मेरा इतना भरोसा नहीं है तब इस समाज का मंत्री होना मानो प्रतिष्ठा का एक दिन खोना है इत्यादि पाश्चात्ताप कर मैंने अपने जी को ढाढ़स बंधाया—और डांक पं० कमलनयन जी के घर पर जाने लगी, जब वे देखलें तब मेरे पास भेज दें, कहां तो मैं प्रातःकाल उठा कि नित्य नियम कर देशहितैषी के काम में प्रवृत हो जाता कि इतने में डांक आती उसको देख जो कुछ होता ठीक ठाक कर देता था फिर इतने में दफ्तर

का समय आजाता और दफ्तर चला जाता था अब जब डांक मेरे पास न आने लगी और मेरे ऊपर काम बढ़ने लगा कि जो काम में आज कर लेता था दूसरे दिन होने लगा तब मुझ को बहुत भारी काम होने लगा उधर निर उत्साह ने घेरा अब काम कैसे होय फिर भी लष्टम पष्टम् करता चला गया—

अब तीसरी उपाधि यह उठाई [जब देखा कि मुन्नालाल डांक में से तो कुछ नहीं ले सक्ता] कि तुम आरम्भ से देश हितैषी की आमद और खरचा का हिसाब दो मैंने वह भी स्वीकार कीया [परंतु समाज को आरंभ से हिसाब लेने की कुछ अवश्यक्ता नहीं थी जब से दे० हि० लीया था तभी से हिसाब मांगना उचित था] और आरंभ से सब स्पष्ट २ हिसाब दे दीया ईश्वर का कृपा से एक कोड़ी की भी भूल न रही और न निकली परन्तु स्वामी जी महाराज ! इस स्थान पर मुझ को बड़ी हंसी आई, कारण यह सब उपाधि श्यामसुंदर ने उठाई थी जब मैंने ठीक २ हिसाब दे दीया [तब श्यामसुन्दर ने जो पं० कमलनयन जी वा मुं० पदमचंद जी आदि को मेरी ओर से बहकाया था] पं० कमलनयन जी ने श्यामसुन्दर से कहा कि तुम तो कहते थे कि मुन्नालाल ने कुछ दे० हि० की आमद में से जरूर खाया है जिस्से इतनी महनत करता है सो उसका हिसाब भी ठीक है अब तुम उसके हिसाब में क्यों नहीं भूल निकालते तब श्याम-

सुन्दर ने कहा कि हम भूल क्या निकालें उसने हिसाव ही एसा दीया है कि हम उसको नही पकड़ सक्ते पं० क०नै० जी ने कहा कि वही वात वताओ तव श्या०सु० कहने लगे कि जो **टिकट चिट्ठीयों** में उठ हैं उनका ठीक ठीक हिसाव नही है कि क्या जाने उसने चिट्ठी नही भेजी हॉय और टिकट लिखदीये हॉय इस्में उसने खाया होय तो कोन जाने—

जव में पं० कमलनयन जी से दूसरे दिन मिला तव ईश्वर की कृपा से वातों ही वातों में उनके मुख से यह वात निकल आई तव पं० क०न० जी से मैंने कहा कि पाडे श्याम सुन्दर का यह कहना भी जो आपने सत्य माना और मेने टिकटों ही द्वारा दाम खाकर अपना ईमान विगाड़ा है तो रिजष्टर में चिट्ठी गिन कर हिसाव लगा लो द्वतिय यह भी न हो सके तो अव जो हमने तीन माष में टिकट उठाये है उनके हिसाव से वर्ष भर का हिसाव लगा लो अंत को इसका कुछ भी उत्तर न देसके और चुपके होगये—

अव वर्तमान वृतांत सुनिये कहां तो यह प्रवंध था कि सुन्ना-लाल सम्पादक है उस्के पास डांक न जाय अन्यऽस्थान में खुला करे, सो जव से पं० कमलनयन जी मंत्री और सम्पादक नियत हुये है तव से सीधी डांक पं० क०न० जी के पास आती है और वे वरावर डांक खोल लेते है अव कोई भी कुछ नही कहता एक दिन मैंने यह कहा कि तुमने विना किसी को आये डांक क्यों

खोली तो कहने लगे कि अख़वार खोले है और यह कार्ड धरे हैं–तव मैंने कहा कि क्या अखवार डांक में गिनती नही होते ! तव झुंझलाके चुपके होगये और मेरे पर नाराज़ हूये–शारांस यह है कि जो मेरे लीये प्रवंध कीये थे वे पं० क०न० जी के लीये नहीं वर्ते जाते—

विशेष क्या निवेदन करूं जैसा इन लोगों ने मेरे साथ वर्ताव कीया और मुझ को खेद पहुंचाया ईश्वर इस्का साक्षी और देखने वाला है यदि मुझ को देशहितैषी में से अपना निज के लाभ उठाने का लोभ होता तो में दे०हि० को समाज को क्यों देता–और उसी समय ४०)रुपये जो मेरे पास दे०हि० के जमा थे क्यों एकवार के कहने से दे दैता, स्वामीजी महाराज बड़े खेद की वात है कि आज आपके सन्मुख मुझ को अपने आप यह वात कहनी पड़ी "कि में कुछ एसे ग़रीव पुरुष का पुत्र वा एसे कुल का नहीं हूं कि रुपये के लोभ में फसूं ईश्वर की कृपा से मेरे घर में सव कुछ है मेरे माता पिता सव प्रकार से भरे पूरे हैं, यदि मेरी बालावस्था और आज तक की ईमानदारी और मेरे चालचलन के विषय में कोई जानना चाहै तो [मुन्शी जमना दास पत्थर वाले जो कि **गोकुलपुरा** आगरे में रहते और विलायत तक जिनका नाम विख्यात है] उनसे पूछ देखें—

स्वामीजी महाराज ! फिर जिस्पर आपकी सिक्षा का होना यह कोई सामान्य वात नहीं है–ईश्वर से में वारंवार यही प्रार्थना

करता हूं कि जिस प्रकार से मेरी दृढ़ भक्ति आपके चरण कमलों में है इसी प्रकार से सदैव वृद्धि को प्राप्त होती रहे और जो आपकी सिक्षा ज्ञान मेरे हृदय में स्थिति है वे मरण पर्य्यंत मेरे हृदय से नही निकल सक्के, बस और आपके सन्मुख क्या निवेदन करूं।

पूर्वोक्त विषय को पढ़ कर आप ही न्याय करलीजिये कि मैं किस प्रकार से इस समाज के मंत्रीत्व के गृहण करने के योग्य हो सक्ता हूं। इसलिये मैं आपसे क्षमा मांगता हूं कि एसे मंत्री से मैं केवल साधारण सभासद ही अच्छा रहूंगा–

परंतु मुझ को खेद यही है कि पं० कमलनयनजी १० नियमों में से एक का भी पूरा वर्ताव नही करते, हमारे प्रधान मुन्शी पदम-चंद जी का यह हाल है कि जैसा जिसने जिस किसी के विषय में जा सुनाया झठ मानलीया उसपर प्रधान की तरह कुछ भी विचार नही करते श्याम सुन्दर पांड़े के विषय में आप पं० कमल-नयन जी से ही पूछलें कि यह पुरुष स्वप्रयोजन सिद्ध करने और आपस में विरोध डालने में कैसा चतुर है–जब तक इन बातों का प्रबंध न कीया जाय समाज की वृद्धि होना दुर्लभ है।

आपका सेवक
मुन्नालाल पूर्व मंत्री
आर्य्यसमाज अजमेर

न जाने भारतमित्र की क्या प्रकृति होगयी है कि जो विषय आर्य्य लोग भेजते हैं क्यों नही छापता—मैंने एओ ह्यूम साहब का उतर लिखा था वह भी नही छापा दूसरा वालादत्त शर्म्मा जो गढ़वाल में रहते हे उन्हो कुछ तर्क उठाया था और अपनी विद्वता भा०मि० में प्रकाश की थी उस्का उत्तर भी मैंने भा०मि० के सम्पादक को भेजा था सो भी न छापा और मुझ को लिख दीया की तुम सीधे वालादत्त जी से पत्र व्यवहार करो भा० मि० में एसे विषय नही प्रकाश होंयगे न जाने भा०मि० को क्या हो गया हमारे विरुद्ध विषय तो प्रकाश करे और उनके उत्तर नही छापता कही कोई भा०मि० सभा में पोपजी तो नही आ घुसे—

[२] यहां पर पानी ७ दिन से खूव पड़ता है दुर्भिक्ष का भय जाता रहा विशूचिका रोगादि भी शांत होगये—

[३] मैं जन्माष्टमी पर आगरे गया था सो वा० भगवानदास जो कि "भारतीविलास आगरे" के सम्पादक है उनके १२) रुपये कल्दार भर पथरी निकली में जव उनसे मिला तव वे पलंग पर लेटे हुये थे और उन्होंने मुझ को उक्त पथरी दिखलाई मानों उनका पुनर्जन्म हूआ—

स्वामीजी महाराज यह वृतांत मैंने अपने समाज से मंत्रीत्व के पद के छोड़ने का सुक्षम रीति से लिखा है अन्यथा सर्व व्योरे-

वार व्यवस्था कि जैसा २ मुझ को इन लोगों ने खेद पहुंचाया है लिखता तो पाच सात प्रष्ट और भर जाते इस कारण सूक्ष्म रीति से ही लिखा गया—

मुन्नालाल

---

(१०)

आर्य्यसमाज अजमेर

नं० ९६६ ता: २९-९-८३

श्री स्वामी जी महाराज.

नमस्ते—

आपकी रजिष्टरी चिट्ठी पहुंची थी और उसका प्रबन्ध भी अर्थात् उस मनुष्य का हुलिया पुलिस में लिखवा दिया था और कोतवाल ने भी सब सिपाहियों को सुना दिया था कि जो कोई उसको पकड़के लावेगा ९०) पारतोषिक पावेगा, पं० भागराम जी से जो पूछा गया तो उन्होंने कहा कि स्वामीजी की रजिष्टरी चिट्ठी हमारे पास नहीं आई. केवल आध आने की आई थी. उसमें चोरी का हाल लिखा था हमने उसी दिन उसका विज्ञापन ठौर २ लगवा दिया परन्तु अभी तक कुछ पता नहीं लगा—

स्वामीजी महाराज मारवाड़ राज बड़ा विकट है बहुधा चोर उठाईगीरे बसते हैं वह स्थान आप जैसे महात्माओं के निवास करने का नहीं है यदि राजा साहब चाहते तो क्या चोर न पकड़ा जाता, इस कारण यदि वहां कुछ लाभ नहीं दीखता तो उसको छोड़ शीघ्र पधारिये. मैं जानता हूं कि यदि आप इतने दिन इन्दौर, कलकत्ता, मदरास, स्थानों में भ्रमण करते तो बहुत कुछ उन्नति होती.

भारतमित्र में जो काशी के पंडितों का विचार छपा है वह आप पर विदित हुआ होगा. उसका उत्तर देना भी योग्य है, कलकत्ते की धर्मसभा से एक पत्र "धर्मदिवाकर" निकलता है उस में भी आपके विषयों पर तर्कणा छपा करती है, आगरे में ज्वाला-प्रसाद भार्गव ने भी वेदभाष्य करना आरम्भ किया है देखिये ये मन्डलियां क्या करती हैं, पं० मुन्नालाल इस समाज का पूरा विरोधी होगया है और इसका सहायक कृपण नाथूराम हुआ है. "राम मिलाई जोड़ी एक अन्धा एक कोढ़ी" यह कहावत इन पर खूब फबती है गत सप्ताह के मित्रविलास में पं० मुन्नालाल ने अपने एक मित्र "कल्यानसिंह" की आड़ लेकर मुझ पर और आर्य्यसमाज पर और पत्र देशहितैषी पर अक्षेप किया है. इस कारण इस समाज का मन उसकी ओर से विगड़ गया है. पत्र मित्र विलास को आपके अवलोकनार्थ भेजता हूं अवलोकन करने के पश्चात् वह पत्र इस समाज को लौटा दें, क्योंकि इस पत्र का

समाज में रहना भी अवश्य है. अब आप लिखिये कि अजमेर में कब तक पधारेंगे और आपकी कृपा से सब प्रकार का आनन्द है—

पं० भागराम जी, और सरदार भगतसिंह जी और सब सभासदों की ओर से नमस्ते.

आपका दास

कमलनयन शर्म्मा

मंत्री आ०स० अजमेर

---

(११)

आर्य्यसमाज अजमेर.

नं० ६३९ ता: १६–९–८३

श्रीयुत स्वामी जी महाराज.

नमस्ते—

आप की पीछली चिट्ठी के उत्तर में पं० गौरीशंकर का वृत्तान्त लिखना भूल गया था उन का यह हाल है कि जैपुर में १९ रु० मासिक पर नौकर हैं इतने में कुनबे का निर्वाह कठिनता से करते थे. सो इन का यह उद्यम भी धर्मार्थ गया. अर्थात् २०अगस्त को इस समाज के उत्सव में जिस दिन सीताबाई ने

ईसाई मत त्याग वेदमत स्वीकार किया था उक्त पं० जी को जैपुर से व्याख्यानार्थ बुलाया गया था. पं० जी भी उत्शाह वस एतवार की छुट्टी जान अजमेर चले आये. पश्चात् जैपुर में उन के हाकिम ने याद किया. पं० जी के न मिलने पर उन को नौकरी से दूर कर दिया. इस बात का सब को शोक है. पं० जी सच्चे मन से आर्य्य है और इन का हृदय आर्य्यों के प्रेम से सदैव परिपूर्ण रहता है. प्रथम ये मेरठ समाज के पंडित रह चुके हैं. और ज़िले शहारनपुर में इन्होंने ओवरसियर का काम बहुत दिनों तक किया. इस कारण राव मसूदा अपने राज्य में तालाव इत्यादि के प्रवन्ध के वास्ते रखना चाहते हैं परन्तु जैपुर समाज और अजमेर समाज की यह इच्छा है कि यदि उक्त पं० जी को धर्म उपदेशक नियत किये जावें तो हम लोगों और समाजों को भी उन्नति दायक होंगे. और पं० जी का भी अच्छी प्रकार निर्वाह हो जायगा.

सीताबाई नागरी अच्छी प्रकार से पढ़ सक्ती है संस्कृत शब्दों का बोध कम है परन्तु हस्तक्रिया अर्थात् टोपी, रूमाल, चादर, दुपट्टे, ऊन के आसन और कई एक काम अच्छे कर सक्ती है यदि इस का कोई सहायकारी भी न हो तो यह अपने हुनर से अपना पेट भर सक्ती है परन्तु हम को ऐसा उचित नहीं है. समाज ने चन्दा करके इस को १०) मासिक देना किया है.

आर्य्यपुरुषों की स्त्रियों को पढ़ाना और काम सिखाना यह कार्य्य इस को सौंपा है यदि इस प्रबन्ध में उन्नति रही तो कन्याओं की पाठशाला भी हो जावेगी. परन्तु इस का मुख्य कारण द्रव्य है जिस की इस समाज से कम निश्चय है—

लाहौर समाज के मन्त्री भाई जवाहरसिंह शाहपुरे से १४ तारीख़ सितम्बर को यहां उपस्थित हुये यहां दो दिन निवास कर जैपुर. मेरठ होते हुये लाहौर को गये. इन का विचार पीछे आने का नहीं दीखता. आप के लिखे अनुसार लाहौर में कन्याओं की पाठशाला में सीता के रखने को इन से पूछा गया था उत्तर दिया कि वहां पर दो स्त्री प्रथम से ही हैं वहां आवश्यक्ता नहीं है. फीरोजपुर से उत्तर आया कि इस्के हस्तक्रिया अर्थात् क़सीदे के काम के नमूने भेजो. स्वीकार होने पर बुलाई जावेगी. सो नमूने तैयार हो रहे हैं इस के प्रबन्ध की हम को भी रातदिन चिन्ता वनी रहती है क्योंकि यह प्रथम ही कार्य्य है यदि इस का अच्छा प्रबन्ध हुआ तो अन्य ईसाई पुरुष भी वेद मत स्वीकार करने को उद्यत हो जावेंगे. अभी यहां पर चार पांच और अन्य ईसाई भी वेदमत स्वीकार करने को उद्यत हो गये हैं जो थोड़े ही दिनों में ज्ञात हो जांयगे.

पं० मुन्नालाल का वृत्तात यह है कि पत्र दे०हि० को समाज का करने से उन के हृदय में क्रोध उत्पन्न हो गया है

जब यह पत्र प्रचलित किया था उस समय समाज की इच्छा नहीं थी समाज की इच्छा न होने पर भी पं० मुन्नालाल ने यह पत्र समाज के नाम से प्रचलित कर दिया. जब समाज ने विचारा कि यह पत्र विना सम्मति समाज के नाम प्रचलित है. इस का प्रबन्ध कुछ अवश्य करना चाहिये तीन महीने पश्चात् अंतरंग सभा हुई. उस में मुन्नालाल को बहुत ऊंच नीच दिखाई गई और यह भी कहा गया कि अभी यह समाज इस योग्यता को प्राप्त नहीं हुआ. जो पत्र चला सके इस पर मुन्नालाल ने कहा कि मैं इस पत्र को प्रचलित कर चुका. और सब प्रकार इस का काम मैं करूंगा कुछ सभासदों ने उस समय यह भी कहा कि यह पत्र मुन्नालाल का कर दो और समाज का नाम हटा दो. इस पर मुन्नालाल ने कहा कि समाज. का नाम हटाने में आप को क्या लाभ होगा. किन्तु ग्राहकों के कमती होने से मेरी हानि होगी. समाज ने भी यह विचारा कि इस पत्र से आर्य्यसमाज अजमेर का नाम उठा देने से लोग नाना प्रकार की कल्पना करेंगे अन्त को इस पर यह विचार ठहरा कि हानि लाभ का मालिक मुन्नालाल रहे परन्तु इस पर नाम समाज का होने से जो इस में विषय होंगे उन की ज़िम्मेदार समाज होगा. इस कारण इस में छपने को जो मसौदा बनाया जावे वह समाज में सुना दिया जावे और उस पर मंत्री के हस्ताक्षर हो जाया करें. एक दो बार तो

ऐसा किया गया फिर यह नियम भी मुन्नालाल ने तोड़ डाला और ऐसे ही चलता रहा.

इस के पश्चात् पांड़े श्यामसुन्दरलाल मेरठ समाज के गत वार्षिकोत्सव में मेरठ को गये वहां पर यह वार्ता हुई कि लाहौर से आर्य्यापत्र जो अंग्रेजी भाषा में प्रकाश होता है वह भी समाज की सहायता से देशहितैषी की तरह प्रचलित हुआ. अब जो उस को समाज ने अपना करना चाहा तो उस के सम्पादक रतनचन्द वैरी ने बहुत कुछ विरोध प्रगट किया. फिर पांड़े श्यामसुन्दरलाल से कहा कि तुम्हारे समाज के पत्र दे०हि० पर लिखा है कि यह पत्र समाज की ओर से है और आय व्यय का मालिक मुन्नालाल हो यह तो एक धोखे की बात है जो आर्य्यों को उचित नहीं है

इस बात का चर्चा इस समाज के मुख्य २ समासदों से हुआ जिन का यह विचार हुआ कि दे०हि० पत्र समाज का होना चाहिये. परन्तु मुन्नालाल को इस बात से इस ढंग पर विदित करना चाहिये कि उन को बुरा न लगे इस कारण कुछ दिन तो यह बात गुप्त रही फिर एक दिन समाज करके सम्मति ली गई कि दे०हि० पत्र समाज का होना चाहिये वा नहीं इस पर मुन्नालाल से आदि लेकर सब समासदों की यही सम्मति हुई कि पत्र समाज का हो जाना चाहिये.

जब यह बात पक्की होगई तब मुन्नालाल जी से हिसाब लिया गया इस के बीच में एक और यह लीला उत्पन्न हो गई कि मुन्नालाल ने तीन चिठ्ठी समाज की फाड़ डालीं जिन के कुछ टुकड़े कमलनयन को मिले. जिन से कुछ दे०हि० का हिसाब निकलता है और यह वृत्तांत भी उन्हीं मुख्य २ सभासदों से कहा गया जिस पर यह विचार हुआ कि समाज की डांक किसी नियत स्थान पर दो सभासदों के सामने खोली जावे और मुन्नालाल से भी कह दिया गया. जिस पर उन्होंने कहा कि मैं चिठ्ठीरसा से कह दूंगा वह नियत स्थान पर डाक लाया करेगा और फटी चिट्ठी के भी टुकड़ों का वृत्तान्त समाज में विघ्न पड़ने के कारण मुन्नालाल से नहीं कहा गया. बस यही कारण मुन्नालाल के विरोधी होने का हुआ. अधिकता के भय से और नहीं लिखते.

इस पर आप दोषी और निर्दोषी का विचार कर सक्ते हैं-

पत्र मित्र विलास से ज्ञात हुआ कि महाराणा उदयपुराधीस और महाराजा इन्दौर ने कर्नल आल्कट को निमन्त्रण पत्र दिया है जिस्से कुछ सन्देह उत्पन्न होता है—

आप के यहां चोरी होने से सब सभासदों को क्लेश हुआ और पुलिस में आप के लिखे अनुसार उसी समय सब प्रबन्ध किया गया. अभी तक कुछ पता नहीं लगा.

सब सभासदों की ओर से बहुत २ नमस्ते पहुंचे. और सरदार भगतसिंह और पं० भागराम की तरफ़ से बहुत २ नमस्ते पहुचे—

आप का दास
कमलनयन शर्म्मा
मंत्री आर्य्यसमाज अजमेर

---

(१२)

ओं

श्रीयुत स्वामी जी महाराज नमस्ते

आगे निवेदन यह है कि १ सेर दूध में २ तोले शहद डार कर और दूध को केवल अग्नि ही पर गरम करकें रुचि अनुसार पान करें—पूर्व जो लोहै से गरम करने को लिखा था सो न करना सो अब केवल अग्नि पर ही गरम करना और अधिक शहद डालने से दस्त अधिक हो जाने का भय है—सो अधिक शहद न गेरना पीर जी कहते है कि आप यहां आ जांय तो शीघ्र ही आराम हो जायगा इस्में कुछ संदेह नही, आगे पं० छगनलाल जी वा सब सभासद और पीरजी साहब आदि की यही सम्मति है कि आप अवश्यमेव यहां पधारें और आबू न जांय क्योंकि आज कल

आवू गिर की वायू और जल विशेष ठंडे हैं जिस से अढ़ंग और सूजन होने का भय है-विशेष क्या लिखू उत्तर शीघ्र दीजिये-

मिती कार्तिक वदी ६ सम्वत् १९४०

मुन्नालाल

पूर्व मंत्री

---

(१३)

श्रीयुत पण्डित शुक्देव प्रसादजी अजमेर के पत्र

ओ३म्

Ajmere College; 17th, april 1883.

अजमेर कालिज १७ एप्रिल १८८३ ई०

श्रीमत् परम दयाकर आर्य्यकुल धर्म्म प्रचारक अविद्यान्धकार निवारक सत्यज्ञान प्रकाशक श्री स्वामी जी महाराज के पद पंकजों में अनुचर शुकदेवप्रसादकृत नमस्ते, प्रणाम, अभ्युत्थानादि शिष्टाचार के पश्चात् विदित हो—आपके आज्ञानुसार पंडित दामोदर से " जो मूलचन्द सोनी के मंदिर में पढ़ाता है " पूछा गया और आपके कृपापत्र का आशय सुनाया गया तो उसने उत्तर दिया कि स्वामी जी के साथ परि भ्रमण में रहने योग्य तो

मेरी शक्ति नहीं है परन्तु प्रयाग में रह कर वैदिक यंत्रालय का कार्य्य तो मैं यथेष्ठ कर सक्ता हूं वेतन के लिये उन्होंने यह प्रकाश किया कि बारह रुपये मासिक तो सेठ मूलचंद जी के यहां से और आठ रुपये मासिक अन्य दो तीन विद्यार्थी देते हैं यों मुझे बीस रु० मासिक पड़ जाता है सो यदि यही मासिक वहां पर एकत्र मिल जावै तो मैं प्रसन्नता पूर्वक जासक्ता हूं सो इस विषय में जैसी आज्ञा फिर होगी उसके अनुसार किया जायगा— अथवा आपकी इच्छा किसी अन्य कार्य्य योग्य पुरुष के नियत करने की हो और यह भी प्रकाश होजावै कि इतने तक मासिक दिया जा सक्ता है तो हम लोग यहां पर ऐसे पुरुष की तलाश में रहें जैसी इच्छा हो उससे सूचना दीजावै—यहां पर प्रति रविवार को संध्या के पांच बजे से ७ बजे तक आर्य्यजन एकत्र होकर समाज में वेदभाष्य तथा अन्य स्वामिकृत सत्य ग्रंथों का पठन-पाठन और कितने एक सर्वोपकारी व्याख्यान भी दिये जाते हैं मैं भी जाकर किसी न किसी विषय पर वक्तृता करता हूं पिछले रविवार को मैंने ब्रह्मचर्य्य के लाभ शारीरकबल पराक्रम बढ़ाने और साथही विद्या बुद्धि की वृद्धि करने के गुण अनेक सुयोग्य उदाहरणों के सहित वर्णन किये थे तथा पीछे से बाबू मथुराप्रसाद ने बाल बिवाह के निषेध पर कुछ कहा आठ बजे समाज विसर्जन हुई थी—आज चैत्र सुदी ११ मंगलवार को आठ बजे प्रातःकाल

के स्वामी ईश्वरानन्द जी आपके वहां से आये यद्यपि उन्होंने टिकट रूपाहेली से १।=) देकर सीधा जयपुर का लिया था परन्तु लोकल ट्रेन होने के कारण उनको यहां १ बजे तक ठहरना पड़ा—सम्पूर्ण कालेज का स्थान और यहां के पठनपाठन की विधि तथा पुस्तकालय भी दिखलाया और पंडित सालिग्राम जी से उनकी भेट वार्त्तालाप संस्कृत में हुई फिर इस अनुचर के ही स्थान पर कुछ भोजन करके स्टेशन को गये थे मैं आप जाकर उनको गाड़ी में बैठा कर आया था वे दो एक दिन जयपुर ठहरेंगे उनकी भी नमस्ते स्वीकृत हो—यह बात आपको शाहपुरे में भले प्रकार सिद्ध होजायगी कि मैंने वहां पर पौने पांच वर्ष पर्य्यन्त कैसे परिश्रम से मन लगा कर पाठशाला में तथा राजाधिराज की शिक्षा में काम किया था यदि वैसी कारगुजारी अंगरेजी सर्कार में सिद्ध होती तो निश्चय मेरी बृद्धि होती परन्तु गुणग्राहकता न हुई और एक कश्मीरी दीवान से विरोध होगया उसने मुझे वहां से उठा देने के लिये एजंट से रिपोर्ट द्वारा परामर्श किया उसने तो केवल यही कहा था कि अब राजा साहब को इख्तियार सरकार से मिल गया है वे जैसा उचित समझें करें जिस्को चाहैं रक्खें जिस्को चाहैं दूर करदें जिस प्रकार से राज्य शासन सुधरे अपना उचित प्रबंध करें हमको इसमें कुछ दखल नहीं—सो मैं जानता हूं कि एजंट साहब मेरे वहां पर रह कर विद्या वा शिक्षा संबंधी काम

करने से कदापि नाराज़ न होंगे हां यह बात द्वितीय है कि (यथा किराती करिकुंभजातां मुक्तां परित्यज्यविभर्तिगुंजाम्) किसी गृह वा देश के स्वामी को अधिकार है कि वृद्धवय वाले दीर्घ सोची विद्वानों के बदले छोटी वय के अपरीक्षक अविद्वान् शारीरिक विलासों के ही ध्यान स्मरण रखने वाले लड़कों को अपने राजप्रबंध में रख सक्ता है परन्तु परिणाम की भी अवधि होती है-हर एक प्रकार के काम के परिणाम से पीछे आपही लाभ वा अलाभ प्राप्त हो रहता है मैं ने वहां पर शिक्षा विभाग में जैसा काम दिया था श्रीयुत् शाहेपुराधीश नाहर नरेन्द्र को भली भांति विदित है किमधिकम्—शुभम् चैत्र सुदी ११ सं० १९४०

ह० पं० शुकदेव प्र०

राव साहब मसूदा किसी कार्य्य हेतु १९ दिवस से यहां ठहरे हैं—सब लोगों की ओर से प्रणाम वा नमस्ते स्वीकृत……… और दो एक प्रति उस स्वीकृत की जो उदयपुर से आया है यहां भी दीजिये इति

---

(१४)

ओ३म्

वैशाख शुक्ला १

श्रीमत् स्वामीजी महाराज नमस्ते ? दामोदर शास्त्री २०)

रु० मासिक पर आपके पास आने को प्रसन्न हैं आप आज्ञापत्र भेज दीजिये हाजिर हो जायंगे—

सालिग्राम जी शा० ने कहा कि काशी में तैलंगी विश्वनाथ ढुंडिभट्ट आपकी इच्छानुकूल हैं आज्ञा हो तो बुला लिये जावें-मैथिलों में भी दो चार होंगे—कहार मातवर, दृढ़ नसीराबाद से भेजा है यदि अब तक वहां न पहुंचा हो तो लिखें कि मैं जाकर फिर रवाने करूं—गौपकार विषय में अब तक क्या हुआ—तथा आर्य्य विश्वविद्यालय के प्रचार में—शेष पीछे

आपका अनुचर

शुकदेव

---

(१९)

[ओ३म्]

Ajmere 15th June 1883.

ज्येष्ठ शुक्ला १० शुक्र ता० १५ जून १८८३ई०

वेदादि सत्य शास्त्र प्रकाशक आर्य्य धर्म्म दिवाकर श्रीमद्

पण्डित स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के पद पंकजों में सविनय नमस्ते अनेक शिष्टाचार सहित स्वीकृत हों—मैंने एक पोस्टकार्ड पहले दिया था उन्हीं दिनों कालेज की छुट्टी हो जाने के कारण एक आवश्यक काम के लिये मेरे घर चला गया था इसी कारण आप के अजमेर शुभागमन के समय दर्शन लाभ प्राप्त न कर सका—आज पं० कमलनयन के पत्र में आपने मुझे तथा अन्य दो एक सज्जनों को स्मरण फ़रमाया इसलिये निवेदन है कि मैं अब अजमेर में आ गया हूं और पंडित सालिग्राम जी अपने घर फ़र्रुखाबाद में हैं २४ तारीख़ इसी मास को आवेंगे उन्होंने पहले विश्वनाथ दण्डिभट्ट तैलंगी पंडित को काशी में आप की इच्छा के योग्य बताया था जिस्का हाल मैंने पूर्व पत्र में लिखा था—दामोदर पं० मूलचंद सोनी के है वह २०) रु० सूखे पर आना चाहता था पर अभी आप का आज्ञा पत्र नहीं आया मैं उस समय होता तो अजमेर में आप के पास हाज़िर कर देता था अब जैसी आज्ञा यहां का जल पवन मेरी आरोग्यता में हानि करता है पहले भी आप को प्रार्थना की थी अन्यत्र का उपाय हो तो ठीक है किमधिकम्

शुकदेव प्र०

---

(१६)

[ओ३म्]

अजमेर आषाढ़ कृष्णा ४ रविवार
ता० २४ जून १८८३ ई०

श्रीमत् सत्यधर्म्म प्रचारक अविद्यान्धकार निवारक श्रीमत् पण्डित स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के पद कमलों में आज्ञाकारी अनुचर शुकदेवप्रसाद कृत अष्टांग प्रणाम वा नमस्ते स्वीकृत हों—आप की आज्ञानुसार पण्डित दामोदर जी शास्त्री आप के पास आते हैं निश्चयं है कि ये निज सुयोग्यता से आप को काम से तथा आचरण से सब प्रकार प्रसन्न रक्खेंगे और आप को बहुत कुछ सहायता देवेंगे—इन की वही इच्छा है जो प्रथम आप को निवेदन की गई थी कि ये गृहस्थी हैं इस से सर्वत्र भ्रमण नहीं कर सक्ते सो दो चार मास रख कर इन को एक ही स्थान पर रख देवें कि ये अपने घर के लोगों को अपने साथ रख सकें और सवारी खर्च रेल तथा गाड़ी का जो उचित हो कृपा पूर्वक इन को बख्शा जावे आप की भी आज्ञा है—सर्व सभासदों की ओर से प्रणाम वा नमस्ते अंगीकृत हों किमधिकम्—

२०) रु० सूखे मासिक पर ये प्रसन्न हैं

पं० शालिग्राम जी भी आ गये हैं जैसी आज्ञा हो सूचित करें—

आप का आज्ञाकारी अनुचर

पं० शुकदेवप्रसाद

नार्मल स्कूल अजमेर कालेज

---

(१७)

[ओ३म्]

Ajmere 3rd July 1883..

अजमेर ता० ३ जुलाई १८८३ मंगल

श्रीमद्विद्वद्वर्य्य परमहंस परिव्राजकाचार्य्य सत्यता प्रकाशक, जगदोपकारक श्रीस्वामी जी महाराज नमस्ते ? अभ्युत्थान और अनेक शिष्टाचार पश्चात् निवेदन स्वीकृत हो निश्चय है कि पं० दामोदर जी आप की सेवा में पहुंचे होंगे और आशा है कि कार्य्य आप की रुचि के अनुकूल करें—यहां पर कालेज २९ जून से जारी हो गया—पंडित शालिग्राम जी सह कुटुंब आगये हैं जो आज्ञा हो सो कहा जावै—वर्षा यहां केवल एक दिन रविवार १ जून को हुई ह ठंढी पवन चलने लगी है—सुना है कि शाहपुरे में हवन होता है यहां का जल पवन मेरे अनुकूल नहीं आया किसी

अवसर की प्रतीक्षा लग रही है—इच्छा है कि यहां पर आप के दर्शन करूं समय पाकर करूंगा और आप की आज्ञा भी चाहिये आप के कुशल मंगल तथा अन्य आवश्यक वृत्तान्त सुनना चाहता हूं किमधिकम्

आप का
शुकदेवप्रसाद

---

(१८)

[ओ३म्]

Ajmere college.

अजमेर २४ जुलाई १८८३

सत्यधर्म्म प्रचारक श्रीमत् स्वामी जी महाराज के पद पंकजों में अनुचर शुकदेवप्रसाद कृत नमस्ते सविनय स्वीकृत हों—पं० शालिग्राम जी इच्छित पंडित के लिये काशी को लिखा है उसका उत्तर आने पर आप को सूचना दी जायगी—कुशल संयुत उत्तर के समाचार चाहता हूं—मेरे अन्तःकरण की वांछा आप को विदित है उस्के पूर्ण होने के लिये कुछ उपाय हो तो ठीक है—उसके कारण शाहपुरा के मुक़ाम अर्ज़ कर चुका हूं किमधिकम्—

आप का पं० शुकदेव प्र:

---

(१९)

परम कृपालु श्री स्वामीजी महाराज नमस्ते वा अष्टांग प्रणाम के पश्चात् यह निवेदन है कि यह पत्र जो काशी से पं० शिव-कुमार ने पं० शालिग्राम जी के पत्र के उत्तर में भेजा है ज्यों का त्यों आप के आलोकनार्थ भेजा है इस्का आशय देख कर जैसी इच्छा हो प्रकाशित की जावै—पं० शालिग्राम जी की नमस्ते स्वीकृत हो अन्य सर्व सभासदों की ओर से नमस्ते वा प्रणाम पहुंचै और सब कुशल है किमधिकम्—

(मेरे लिये भी कुछ उपाय कहीं पर कीजिये)

आप का अनुचर

शुकदेवप्रसाद

नार्मल स्कूल अजमेर कालेज

अजमेर श्रावण शुक्ला ९ ता ११ अगस्त १८८३ ई०

श्रीरामचन्द्रो विजयताम्

स्वस्ति श्री मदशेषशास्त्रावगाहन निपुण प्रज्ञाविलासालोकान-न्दितान्तःकरणेषु श्री शालग्रामशर्म्म पण्डितवरेषु शिवकुमारशर्म्मणो-

नतिकुशलादिवृत्तन्तु सुगवेषणयापिभवत्पत्रस्थप्राथमकलिपिकः प्रस्तुताधिकारस्वीकारवान् पण्डितोनालम्भि प्रायोनवीनाः कथञ्चित् सम्भावितनावद्योग्यताकाः पठनादिनिरतास्तत्रगन्तुमेवनकामयन्ते परन्तु पण्डित द्वयेच्छायां किञ्चित्तदुच्यते श्री राजारामशास्त्रिणां प्रथमशिष्यस्तत्कालाध्येतृस्वसतीर्त्थ्येभ्यः सर्वेभ्योप्युत्तमः प्रतिष्ठिततमः सम्प्रतिचत्वारिंशतः पञ्चाशतश्चान्तरालेवयसि वर्त्तमानो वसन्तमिश्रः कश्चिन्मैथिलोऽकारणसर्वसुहृत् पूर्णवैयाकरणोव्युत्पत्तिमतामग्रेसरः साम्प्रतं प्रवासकरणेच्छया काशीमायातः कुटुम्बभारेणेमां जीविकां स्वीकर्त्तुं मिच्छति अयंसमग्रपण्डितगुण सम्पन्नतया श्री दयानन्दस्वामिनां नूनं हृदयङ्गमो भविष्यति, एवमेकोनैयायिको गादाधरी जागदीशीप्रभृतिवादग्रन्थानां प्रौढवेत्ता नवद्वीपेचिरमधीतवान् अनुमान खण्डवादेऽत्यन्तकुशलोयदुनाथशर्म्मा मैथिलोपि काङ्क्षति प्रस्तुतपदम् अयञ्च दर्शनान्तरं सम्प्रतिसम्यगजानन्नपि. बुद्धिमत्तयाल्पकालेनतत्पाटव सम्पादन योग्यतां बिभर्ति परमुभाभ्यामपि मैथिलत्वात् संस्कृतस्य भाषायामनुवादः प्रथमं नकारयितव्यः किन्तु द्वित्रिदिनानि वृत्तान्त पत्र दर्शनादिना किञ्चित्त दीयैकवचनादिनियमबोधनेन च भाषाज्ञानसम्पत्त्युत्तरम्, भाषायाः संस्कृतेऽनुवादस्तु वैयाकरणेन सम्यक्करिष्यते द्वितीयेनापि तत्साहाय्येन कथञ्चित् करिष्यत एव सत्यामेतयोरुपादित्सायां धूमशकट भाटकेन सह पत्रं प्रेष्यं तदेमौप्रेषयिष्येते इति शिवम् श्रीः

(अनुवाद)

स्वस्ति

अशेष (अनेक) शास्त्रों के अवगाहन में निपुण बुद्धि के विलास (अकुण्ठितप्रसार) से उत्पन्न आलोक (ज्ञान प्रकाश) से आनन्दितान्तःकरण श्रीमत्.................शिवकुमार शर्मा का नमस्कार और कुशलप्रश्नादि

{ यथा योग्य बांचना } (इति शेषः)

'वृत्तन्तु' आगे हाल यह है कि आप के लिखे पहिले ढंग का विद्वान् जो उपस्थित अधिकार को स्वीकार करे बहुत ढूंढने पर भी कोई नहीं मिल सका.

प्रायः नवीन लोग जैसे तैसे उतनी योग्यता सम्पादन करने के अनन्तर आगे पढ़ने में दत्त चित्त होने के कारण वहां जानाही नहीं चाहते परन्तु दो पण्डितों की इच्छा के विषय में कुछ लिखता हूं इन में से पाहिले पं० राजाराम शास्त्री जी के आदिम शिष्य, उस समय के अपने साथियों में सब से उत्तम और प्रतिष्ठित (जिनकी अवस्था अब ४०—९० के अंतर होगी) मैथिल वसन्त मिश्र जी काशी में प्रवासार्थ आये है—कुटुम्ब पालन के निमित्त यह इस वृत्ति को स्वीकार करना चाहते हैं, यह बड़े मिलनसार और बहुत ही विचारशील वैयाकरण हैं आशा है

कि पण्डिताई के सम्पूर्ण गुणों से युक्त होने के कारण इन पर स्वामी दयानन्द जी अवश्य ही सन्तुष्ट रहेंगे—

इसी तरह दूसरे यदुनाथ शर्म्मा मैथिल—जो कि गादाधरी जागदीशी आदि वाद ग्रन्थों के उत्कृष्ट ज्ञाता और अनुमान खण्ड के वाद में अत्यन्त कुशल है जिन्हों ने बहुत दिनों तक नदिया में पढ़ा है वे भी इस पद को चाहते हैं यद्यपि इन्हों ने अब तक प्राचीन दर्शन नहीं देखे हैं तथापि थोड़े ही समय में उन्हें अपने आप देखने की योग्यता रखते हैं—

ये दोनों मैथिल है इस लिये प्रारम्भ में ही इनसे भाषानुवाद न कराना-दो तीन दिन कोई समाचार पत्र देखने से भाषा के एक वचन द्विवचन आदि का ज्ञान होने पर ये उसे भी कर सकेंगे भाषा से संस्कृत तो वैयाकरण अच्छी बना सकेंगे यदि आप को इनके रखने की इच्छा हो तो रेल का किराया और उत्तर पत्र साथ ही भेजिये तब ये यहां से भेजे जायंगे ।

---

(२०)

ओ३म्

अजमेर कालेज ता० १९ सितंबर १८८३,

सत्य धर्म्मप्रकाशक श्रीमत् पण्डित स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के पद पंकजों में अनुचर शुकदेव प्रसाद कृत नमस्ते विदित हो भेजा हुवा पत्र पण्डित शिवकुमार के पास भेज

दिया परन्तु अभी तक उत्तर नहीं आया—वहां से आने पर आपके पास भेजा जायगा-मैंने छापेखाने का काम किया तो नहीं पर कभी २ देखा है और दस पांच दिन में देखने से सब काम विदित हो सक्ता है—किसी राज्यस्थान में जहां की आव हवा उत्तम हो वहां कुछ हो जाय तो ठीक है आगे ईश्वरेच्छा और आपकी सम्मति के अनुकूल रहना सबसे श्रेष्ट होगा—मुंशी जवाहरसिंहजी शाहपुरे से ता० १४ सितंबर शुक्रवार को यहां आये-शनिवारको पुष्कर देखकर-रविवारको आर्य्यसमाज में एक बहुत उत्तम सुललित व्याख्यान देशहितैषिता पर देकर उसी रात्रि को जयपुर चले गये वहां दो दिन ठहरके सीधे लहौर जायंगे शेष फिर-आश्विन कृष्णा ३ सं० १९४०

(आपका अनु० **शुकदेवप्र०** अजमेर)

महाशय छुट्टनलाल जी बांदनवाड़ा का पत्र ।

(१)

श्रीयुत स्वामीजी महाराज के चरण कमलों में इस दीन छुट्टनलाल का शतशः प्रणाम अंगिकृत हो प्रार्थना यह है कि बलदेव को जो मेरा आज्ञाकारी शिष्य था आप की आज्ञा में

भेजा था परन्तु ऐसा सुनने में आया है कि एक तो आप उस का विश्वास नहीं करते—दूसरे—उस को किसी अच्छे काम की शा-बाशी (इस से आदमी का चित्त प्रसन्न होता अरु काम की उमंग होती है) नहीं देते तीसरे झिकड़ते हो हे ज्ञान दाता वह अभी लड़का है अभी घर से बाहर निकला कभी ऐसी सख़ती सही नहीं आप सब के निबाहने वाले हो ऐसे पारस के पास वह शीघ्र ही सुधर सक्ता है सो इस दीन की यह प्रार्थना है कि आप उसको धीरज देते रहैं और किसी के साथ शत्रुता न करने दें उसके खाने पीने की भी शुधि लिया करें यदि यह आप को अंगीकृत न हो तो उसे प्रसन्नता से सीखदें ताकि मेरे ही पास आ जावे।

जो कुछ चूक रही हो क्षमा करें मैं तो निपट मूर्ख हूं आप बड़े हैं

दास **छुट्टनलाल** पोस्टमास्टर बादनवाड़ा

महाशय बल्देव जी अजमेर, तथा बांदन वाड़े से

(१)

ओ ३ म्

श्री मत्परमहंस परि ब्राजिका चार्यवर्य जगद्विख्यात सत्यमत

प्रचारक जगद्गुरु श्री स्वामी जी महाराज के चरण कमलों में दास की नमस्ते

महाशय

विनयह है कि आप की ख़िदमत में एक पत्र शाहपुरे में दास ने पेश किया था हाल मालूम हुआ होगा परंतु आप ने उस पत्र को अच्छी तरह से विचारा नहीं सिर्फ़ नाम तो आप ने लिखा

....

की उम्मेद नहीं है भला नौकरी बढ़ना और इनाम पाना तो दूर किनार है परन्तु भलाई लेना ही अति कठिन है—मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि तनख़ाह बढ़ाने के लिये पत्र लिखा है ऐसा आप न समझें—नवमा—इज्जत्त की नोकरी चाहे १) रुपये महीने की हो बहुत अच्छी है और बिना इज्जत की नोकरी १०००) रुपये रोज की भी व्यर्थ है—ग्र के कागज में जो समाचार आया है उस को देखने से तो यह पत्र आपको पेश नहीं कर सकता परन्तु अत्यन्त काहिल होकर पत्र देना अर्थात् पेश करना ही पड़ता है—किसी की खुशामद करना.................. मेरे से नहीं बन पड़ता क्योंकि मैं किसी का देनदार नहीं और न किसी दबेलू हू—मुझ को तो शाहपुरे के हाल ही से मालूम हो गया था कि तेरा जोधपुर जाना अच्छा नहीं और रुजगार भी तेरा किसी ने किसी दिन जाता रहे

....

का राजी खुशी से सीख देवे कि देख परमेश्वर पीछे क्या हाल गुजरता है देखा चाहिये–(जियादह हद्द हद्दब) इत्यलम्–इन सब बातों का हाल कुछ ब्रह्मचारी जी भी जानते हैं

विनयपत्र आप का दास **बलदेव** मुकाम जोधपुर राज मारवाड़

---

(२)

ओ३म्

संस्कार विद् पुराण पुरुषी

अजमेर ताः २३ जौलाई

नमस्ते महाशय

श्री मत्परमहंस परिब्राजकाचार्य्य परमगुरु विरुद्ध मत खंडन सत्यमत मंडन जगत विख्यात् स्वामी दयानन्दसरस्वती जी महाराज चरण कमलेषु–हाल यह है कि आप का दास जोधपुर से रवानह होकर बांदन वाड़े में आन पहुंचा और अब अजमेर में हूं दासकी विनय है हैं कि जो मैंने कुछ विरुद्ध वाक्य कहा हो तो क्षमा फर्मावें और दास पर मिहर्बानी रखावें और सब से मेरा नमस्ते कह देना फ़र्मावें–ताः २३ जोलाई १९६०

बलदेब अज़ मुकाम अजमेर शरीफ़

---

(३)

ओ३म्

श्रीमत् परमहंस परिव्राजका चार्यवर्य्य जगद्गुरुस्वामी जी महाराज श्री दयानंद सरस्वती जी के चरन कमलों में दास बल्देव की बहुधा नमस्ते पहुंचे (अत्रकुशलंतत्रास्तु) दास ने उड़ती ख़बर सुनी है कि आप लंदन को पधारेंगे अगर यह बात सही है तो दास की यह अर्ज है कि मुझ को आप लिखें तो मैं वहां हाजिर हूं क्योंकि मुझ को उस मुल्क के देखने की इच्छा है—और मैं तनखाह कुछ नहीं लूंगा सिर्फ रोटी ही खाऊंगा और जो मेरा काम मामूली था किया करूंगा—बाद इस के आप की प्रतिपाल दास पर होवेगी तो चरन कमलों की सेवा किया करूंगा—सब को मेरी नमस्ते फर्मा देवें—चरन दर्शनाभिलाशी **बल्देव** बांनवाड़ा

ता: १०—९—८३

ओ३म्

श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्यवर्य्य श्री स्वामीजी महाराज दयानंद सरस्वती जी की चरन कमलों में अनुचर बल्देव की बहुधा शाष्टांग पहुंचे

बाद नमस्ते के अर्ज़ यह है कि अनुचर ने एक कार्ड आप की खिदमत पेश किया था पहुंचा होगा मगर अनुचर को उस कार्ड का जवाब नहीं मिला वह यह था कि आप लंदन की तरफ़ यात्रा करना फरमावेंगे यह खबर अनुचर ने चलती हुई सुनी थी इस लिये अनुचर की यह अर्ज है कि अनुचर को भी लंदन देखने की इच्छा है सो जो मेरा काम था वह आप के पास विना तनखा के किया करूंगा मगर रोटी शामिल खाऊंगा आगे आप की कृपा होगी तो इन चरनों की सेवा करूंगा—इस का जवाब कृपा के जल्दी दिलावें—पता यह लिखें बलदेव दरोगा के पास चांदनवाड़ा में—फक्त

ताः १९–९–८३ ई०　　　　　　　　दास बलदेव

---

(१)

ता: १–८–८३

महाराय बालकराम वाजपेयी अजमेर के पत्र।

आर्य्य कुल भूषण श्रीयुत स्वामी जी महाराज.

नमस्ते।　　　　　　　　　　　　जोधपुर

प्राथना किङ्कर की यह है कि मैं "देवनागरी" अक्षर स्पष्ट

व शुद्ध उत्तम प्रकार से लिखता हूं. नमूना के वास्ते यह विनय पत्र सेवा में भेज कर आशा रखता हूं कि यदि इस दीन के योग्य कोई कार्य आप के निकट हो तो कृपा कर शीघ्र आज्ञा कीजिये. बड़ा अनुग्रह होगा. विज्ञेषु किमधिकम्-कृपा कर शीघ्र उत्तर दीजिये।

आपका दास

बालकराम बाजपेई

आर्य्य समाज अजमेर

---

(२)

२० अगस्त सन् ८३

श्रीयुत स्वामी जी महाराज जोधपुर नमस्ते

प्रार्थना यह है कि कई दिवस हुये मजमून की तौर पर देवनागरी अक्षरों में एक पोष्टकार्ड आप की सेवा में भेजा था और पश्चात् अक्षर पसन्द होने के आप के निकट रहने की भी विनय की थी पर शोक है कि अद्य पर्य्यन्त उसका कुछ उत्तर न मिला आशा है कि अब आप इस पत्र के अवलोकन करते

ही कृपा दृष्टि कर अति शीघ्र इस दीन को उचित उत्तर से कृ-
तार्थ करेंगे । किमधिकम् ॥

आपका आज्ञाकारी

बालकराम बाजपेई

आर्य्य समाज अजमेर

---

(३)

३१ अगस्त सन् १८८३ ई०

श्रीयुत स्वामी जी महाराज. जोधपुर. नमस्ते ॥

आप का पोष्टकार्ड भाद्रपद कृष्ण ९ का लिखा मिला. कृत
कृत्य हुआ. मैंने प्रथम **सारस्वत** पढ़ी थी. पश्चात् लखनऊ में
दिन को तो **सत्य प्रकाश पाठशाला** में पढ़ाता था. और
रात को "अष्टाध्याई" एक आर्य्य पुरुष स्वामी गंगेशजी जो
निकट ही रहते थे. पढ़ा करता था. परन्तु अब सत्संग छूटने के
कारण उक्त पुस्तकें विस्मरण हो गई. पर लिखने में मुझे इतना
अभ्यास है कि "शब्द" चाहे संस्कृत के हों या भाषा के. किसी
पुस्तक में देख के लिखूं. चाहे कोई कंठाग्र लिखवावे. जैसा उच्चा-
रण करे ठीक वैसा ही शुद्ध और स्पष्ट लिख सक्ता हूं. "और
देवनागरी" में और जो काम हो सो भी उत्तम प्रकार से कर सक्ता हूं,
क्योंकि मैं आगरे व इलाहाबाद में लेथोग्राफ की कापियां छापेखाने

में लिखता रहा हूं. और "नार्मलस्कूल जबलपुर में भी शिक्षा पा चुका हूं. इति ॥ आशा है कि उचित आज्ञा शीघ्र मिलेगी ॥

आपका आज्ञाकारी **बालकराम बाजपेई**, आ० म० अजमेर॥

महाशय मंगीलाल बिल्हौर का पत्र

(१)

॥१ श्री गणेशायनमः

श्री महाराज दयानंद सरस्वती

योग्य लिखी चरण सेवक शारदा मंगीलाल आर्ज समाज मुकाम बिल्हौर ठिकाना पोस्ट आफिस प्रश्न प्रथम आप से करता हूं कि आप ब्रह्म का रूप साक्षात् किसी दूसरे को देखा सकते हौ या नहीं और इस चक्र का अर्थ जवाब पत्र का समझ कर देना
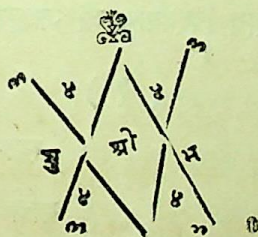
श्रीयुत छगनलाल जी शर्म्मा का पत्र

(१)

॥ ओ३म् ॥

सकल गुणालंकृत विद्वज्जन वरिष्ठ परिव्राज का चार्य्य श्री मत्स्वामि दयानन्द सरस्वती चरण पीठेषु परम सेवक ब्राह्मण छगन लाल शर्म्मण आनतित तयो विलसंतुतरास्त्किंच अग्नि होतृ गृहे पारस्कर गृह सूत्रस्य मूल पुस्तकमेकं समग्र मन्यच्च सभाष्यमर्द्ध वर्त्तते ते मया गृहीत्वा प्रेषिते यद्येभिः पुस्तकैःकार्य सिद्धिर्नभवेत् तदोत्तरं प्रेषणीयं अहमन्यत्र समग्रभाष्यार्थं यतिष्यामि अलमति विस्तरेण संवत् १९४० मिति श्रावण शुक्र पूर्णिमा १९

हस्ताक्षर ब्राह्मण छगनलाल

महाशय विश्वनाथ जी जयपुर का पत्र

(१)

स्थान जैपुवतीख

६ मार्च सन १८८३ ई

श्री गुरू स्वामी दयानंद सरस्वतीजी को नमस्कार

दर्वाव आपनी चिट्ठी व तारीख ४ माह हाल की प्रार्थना क-

रता हूं और काशीनाथ राउ का कथन ईश्वर है तू आपके को विदित करता हूं जान कर कि आप महाज्ञानी तप्पस्वी हो जल्द परीक्षा कर लेवोगे और इस सेवक को पत्र उत्तर शीघ्र भेजोगे इस शुभ विचार से आप को यह क्लेश्य दिया समझ कर कि उपकार वस्त शरीर है आप की कृपा अनुग्रह करुणा द्रष्टी होगी सत्य विद्या पर कथ काशीनाथ

अंगरेजी View the Almighty being in light Physical,

उर्दू वही हुस्न, तनो, वदनसे सूरतो, शिकल.

संस्कृत परमजोति, अत्मरूप, धार्ण विकल्प,

दक्षणी मणुणत्याला, अपितो प्रासातो सकळ

अंगरेजी Moral intellectical Scientifical

संकृत देहज्ञान, भास्य झूंठ दिखावे नकल

अंगरेजी Pure and Spritual Her is our Light

सेवक विश्वनाथ

पता आर्य्य धर्म्म सभा

पंडित सदानंद वैद्य

जैपुर

श्रीयुत पण्डित धन्नालाल शर्म्मा भांवता (अजमेर) का पत्र

(१)

॥ ओ३म्तत्सत् ॥

॥ श्रीमद्विख्यात जगद्गुरुषु सकलगुणगणालंकृत वेद शास्त्र पारङ्गतेषु श्री पंडितवर पंडित श्री १०८ श्री दयानन्द सरस्वती स्वामिषु अत्रत्य कृता आज्ञानुवर्ती शिष्य धन्नालालस्य कोटिशः साष्टाङ्ग प्रणामाः समुल्ल संतुतराम् । "अत्रशंतत्रास्तु" अपरञ्च तीन पत्र पहिले आप के चरण कमलों में भेजे पर एक का भी प्रत्युत्तर नहीं आया मालुम नहीं क्या जाने ? मैं पहिले कृष्ण गढ महाराज स्कूल में हैड पंडिताई पर मुकर्रर था पर दो कारणों से अर्थात् एक तो मत विरोधता, से दूसरे आगे के लिये उन्नति न देखकर लाचार यह नौकरी छोड़नी पड़ी—ईश्वर ने अच्छा किया कि अब आप के दर्शन व मिलना होगा, आप की अनुग्रह से व आप की आज्ञा से सब कुछ हो सकेगा और मसूदे व अजमेर के सब आर्य प्रसन्नता पूर्वक हैं यहां पहिले राम-लाल पंडित और चतुर्भुज शास्त्री ने कुछ पोपलीला फैलाई पर सिवाय कुछ बंगाली व अनार्य्यों के किसके हृदय में जम सकी है ९ दिन के बाद यहां आप के चरण कमलों में हाजिर होऊंगा तब कृष्णगढ़ व यहां का सब हाल वर्णन करूंगा अब अधिक क्या अर्ज करूं

शुभमिति असाढ कृश्ना ३०" भौम सम्वत् १९४० का मेरे आधार भूत आप ही हैं ?

आपका आज्ञानुवर्त्ती शिष्यानुशिष्य
घन्नालाल भांवतावासी
जिलअ अजमेर

श्रीयुत पण्डित भवानीदत्त जी नागोद का पः

ॐ

सद्धे श्री बराजमान स्कल गुनन्धान अनेक उपमा योग स्वामि दयानंद स्रेस्तीजी इते लखेते नागोद से पण्डित म्वानादत का नमसते बंचना ज्व आप अजमेर में थे सो आप के वास्ते कमलनेन के पास चठी भेजी थी सो आपने कहा था के नागोद के राजा जब बुलावेंग हम आवेंग प्रनतु राजा उचहर कइ साल से रहते है और मेरे उपदेस से यहां के आदमी आपके द्रसन चाहते है और राजा के खज़ानची तुसीदास बाजपइ बहोत इज़तदार अपका द्रसन चाहते है सो जब बमबइ से वापस आवगे तो आप हमको ज़रूर ही द्रसन देना और आपके आने से यहां स्माज भी हो

जावेगा और राजा सुनक उचहरा से जरूर द्रसन करेंगे इस्वास्ते प्रयाग के रास्ते में सत्तना इसटेसन है जस्वकत आप लखें जतन आद्यं के वास्ते स्वारी द्रकार हो भेज दे और राजा भी वेदांती है आप का बडा सतकार होगा क्यों के आप प्रयाग जावें होंगे रस्ते में सतना रेल का इसटेसन है दो चा रोज को आवन जवाब जल्दी भेजयो और ज़रूर आयो जवाब पण्डित भ्वानीदत्तजी से न्वीस—नागोद रयास्त

महाशय विहारीलालजी अमझरा का पत्र

ॐ०श्री

नमस्ते अती दुखीत हुं के मेरे से जो सेवा की आज्ञा हुई सो होना कठीन हे मेरी बदली अमझरे के असपताल में आज नौ महीने से हो गई आज आप का पत्र सांमलराम जी कवी के वारे में आया से मेने पंडीत भेरोंलाल जो इन्दोर के असपताल मे हे उन के पास भेज दीया हे ओर आशा हे की भेरोंलाल बरोबर कवी जी की खाबर रखेंगे

दासनुदास विहारीलाल

श्रीयुत महाशय गोपीनाथ जी जयपुर का पत्र

ॐ

प्रतिष्ठाऽचार्य्ये श्री १०८ श्रीपर्मगुरु श्री सुवामि दयानन्द सरस्वति जी महाराज नमो नमस्तेः स्वाई जैपुर से शिष्य विप्र गोपीनाथ कि नमस्ते बंचणा यहा सर्व प्रकार अनंद है आपके आनंद सर्वशक्तिमान् परमेश्वर से नेक चाहते अब अर्ज यह है कि भूमिका तो मगा लि है ओर संधिविषय ब्याकर्ण छपा या नहीं सो कृपा दृष्टि कर्के लिखना सो मगा लेवेंगे ओर पंण्डित कालुराम जी महाराज के पास से पत्र आया लिखा था के गौरक्षा का बंदोबस्त राव राजा शिकर के ईलाके ९९९ ग्राम में चंदा सालयाना हो गया है रामगढ़ लिछम्णगढ़ फतेपुर इनमें रुपया कुच्छ हो गया है सो आप को ज्ञात्वा होवे ओर ये भि लिखा था के गौरक्षा निमितक् जैपुर भि आवेगें यहां के सर्व सभासद् वा समाजस्थुं कि नमस्ते बंचना कृपा कर्के पत्र दिजयेगा ।

द० गोपीनाथ

श्रीयुत जत करणजी शाहपुरा का प:

१॥ श्री रांमजी

श्रीश्रीश्री १००८ श्री श्री सुवामीजी माहाराज धराज दीआनंदजी सुरसुतीजी माहाराज जोग

सींधै श्री जोदपुर सुभसुथाने माहाराज जोग श्री साहेपुरा जतकरण कोटाहाला की ढढोत मालम होसी अठ आपकी कप्रा स सत बात का आनंद ह आपका हमेसा कुसी का समीचार लष वसी ओरं आप कुसी स जोदपुर दाषल हुवा होसी जसका बेरा लषावसी

ओर समीचार१ मालम करावसी जुवाबी पीछा तुरत लषसी ओर हमारा चीत बोह्त नराज ह तीसु आप श्री हजुर साहेबा श्री माहाराज प्रतावसींघजी सु मालम करन हमकु बुलणे जोदपु की बीचार करसी आग समत १९३७ का साल म हम जोदपु गेझा थे ओर श्री हजुर की नजर डुपटो १ कोट १ जरी की का त रु ७०० त: ८००, त्ती कल्दारा की को नजर करो था प्र श्री हजुर होकम प्रतावसींघजी बु करो हे।कम दीओ थो क नका बावा मणकचंदजी क वागगव जगिरी थो ऊो गव ईन कु जा म षाठ दो जस प्र दीवाणजी जसोघजी महतान प्रतावसीघजी कु

का दीआ हर मामल कु देर म टाल दीआ ओर हमारा बावाजी माणकचंदजी न माहाराज श्रीमानसीघजी वाः माहाराज श्री तषतसींघजी की बषत स अची अची षर षुवाई करी थी जस म गव ला था ओर हमारी दुकान बी जोदपुर म थी ओर श्री हजुर साहाब की बी बडी महरवानगे हमार ऊप्रर थी प्रत माहाराज सताबसीघजी दीवाण बीजसीघजी का बहकावा सु दुप्रटो १ कीट १ पीछो देदीनु अव हम श्री जदपुर माहाराज क नीजर जो चीज कर दीनी श्री हजुर क धारण हो गई तो ऊाःहुक्मदुसरकत ही दे नही सकते हे ऊहुकम हमार प्रास मोजुत हसो अप ऊन क पीची नजर करा दीनी छाहे जो अस काम का आप जरुर बदोबसत करा छाइजो कुक हमार चतवी आपका दरसण म लग रहे हसो हमारा आण हो जाईग जस स जरुर बदोबसत कर क जलदी जुवाव भेजसी

ओर श्री आबुराज क प्रा० हमारा ज्णे का बावत गेव हमार जागिर ह जसका बदोबसत क वासत दनः १० तः १९ म जावांगे सो आप चीठी ल्षा देणे क बसता होकम दीआ था सो ऊ च्ठी बी जरुर ल्षा भेजसी—

ओर हमार बी बीलाअेत स प्रवाना गुलका महाराणी का गवा क वाबत आगई ह सो आपकी क्रपा स जरुर काम बण ज्वगा

ओर आलाईक काम काज होव सो लषसी शं० १९४० मता जाग वुद १९ वया प्ररः

रामानंदरजी शाह
मरजाशुक्ला शानोवानीशी

श्रीयुत सबलसिंहजी शाहपुरा का पत्र

॥ श्री रांमजी ॥

सिद्ध श्री जोदपुर सुभस्थान सरबवोपमा लायक सदा विराजमान सकलगुण निधान श्री श्री सवामीजी म्हाराज श्री १०८ श्री दियानंद सरस्वती जी हजूर साहापुरा सु सबलसिंह की नमस्ते ड़ंडवत मालुम होसी अठा का समाचार आपकी करपा कर भला है आपका सदा भला श्री परमेसवर रषे तो मान परमआन्द होवे सदीव करपा सुभदरस्टी रषा वा तीस से वसेष रषावसी अपरचा में आपका दरसन करके यहा आया तब से आपकी कीरपा सु आनिंद में हु आपका सरीर की कुसलता को पतर ईनायत फरमासी ओर यहा श्री म्हाराजधीराज वो म्हाराज कवार दोनों आपकी कीरपा

से परसंन है ओर इनदिनो में म्हाराजाधीराज के कान में बीमारी होगई थी जीस से आपको अरजी यहा का हाल की नहीं लीपी अब आराम है इतिलान अरज है और म्हाराज परतावसिंह जी वा रावराजा तेजसिंह जी पुना की तरफ से वापिस आये होंगे तो उमरदानजी ने उस हाल से आप वाकफ करदेसी ओर एक रावराजा तेजसिंहजी के पास म उदेपुर म्हाराणा साबको म्हाराज साहाब के नाम को पत हो सो में दे आया था सो मगार भीजवा देसी ओर इस बारे में जो कोहारिजी तहरीर चावे तो लीपा देसी सो भेज देवा आपको उनकी तरफ से इस काम के बारे में इतमी-नान हो तो जो इस बारे म तहरीर लीपावट बारिकी वो चावें तो लीपा देसी ओर यह हाल उमरदानजी कु फरमा देसी के यहा हम इस काम के बारे में उमरदानजी के भरोसे नचींते हैं यह आप उन को जरुर देसी सो कोसीस हमने के ओर वहा का हाल करपा कर लीपावसी जैसा हाल आप लीपोगे वेसा हाल श्री म्हाराजाधिराज को मालूम किया जावेगा ओर करपासु दरस्टी रषावसी १९४० असोज बुद ७ ता० २३ सिपटाम्बर

दा: सबलसिंह

श्रीयुत कोठारी चांदमलजी मसूदा का पत्र

॥ ओं ॥

॥ ४ ॥ स्वस्ति श्री उदयनगर शकल शुभओपमां विराजमान लाइक शकल गुणनिधान जगतोपकारक वेदाध्यक्ष श्रीयुत स्वामीजी महाराज श्री श्री १०८ श्री श्री दयानंद सरस्वतीजी एतन मसूदा सू परमसेवग कोठारी चांदमल की पावांधोक नमस्ते मालम होवे यहां आपकी दया से परम आनंद है परमात्मा आपको सदा आनंद में रखे अपरंच इतने दिन पत्र नहीं देने का मेरा यह कारण है कि जब आप बंबई नग्र मध्ये विराजमान थे तब तो मैं ठीक स्थान का पता नहीं जान्ता था और अब जब से आप को उदयनगर मध्ये प्रवेश हुए सुना है तब से यह दास बीमार है सो आपकी अनुग्रह से अब चंगा होकर पत्र आपके चरणार्विंदों में भेज निवेदिन करता हूं कि आप कसूर क्षमा किजिये और आप ने जो उदयनगर के देशाधिपति से गौरक्षा का प्रारंभ कराना शुरु किया हे इस वात को सुन कर इस दास को बड़ा ही आनंद हुआ. यह दास हजार हा प्रार्थना उस परमात्मा व उन माता पिता को करता है कि जिनहानों इस नाशवान संसार में आप जैसें महात्मा पुरषों को प्रकट किया. नहीं तो क्या जाने इस आर्य्यावर्त के लोगों की क्या दशा होती और अब भी जो लोग आप के उपदेश से बिमुख है

ने फिर अछी गति को जन्मोजन्म कभी प्राप्त न कर सकेंगे. श्री परमात्मा आपको सदा आरोग्य रखें. और अभी में शाहपुरे गया था वहां आपके पधारने की चर्चा हो रही है और एक मंथजी जो रामद्वारे के रामसनेही जो अभी बूंदी चत्रमासा करने को चले गए हैं वह भी बुलवाये गए हैं और एक पंडित जो वहां पंडरीकजी के नाम से प्रसिद्ध है उस को राजाधिराज ने फरमाया है कि स्वामी जी यहां पधारेंगे और तुम को उन से शास्त्रार्थ करना होगा सो वह पंडित भी मूर्ति पुजन मंडन विसय में स्वाल जवाब तैयार कर रहा है और मंथजी हाल आए नहीं. मुझ को यह वड़ा आश्चर्य्य है कि काशी नगर के पंडित भी शास्त्रार्थ न कर सके तो भला इस वेचारे का क्या मक़दूर है. भला सांच के आगे झूठ कब तक ठहरेगा. में आपकी दया से प्रसन्न हूं जव आपका पधारना शाहेपुरे होवेगा तब दास भी चरणारविंदों में हाजिर होवेगा. आपने मेरे वास्ते यहां उपकार तो वहुत ही किया. लेकिन मेरी प्रालब्ध नें मदद नहीं दी इसलिय नहीं हुआ. अब भी मेरे पर उपकार आप उधर किया चाहेंगे तो जरुर हो सकेगा. और यह दास सदा प्रातःकाल स्नान संध्या व गाइत्र्यादि मंत्र व आप जैसे महात्मा पुरुषों का स्मरण करता रहता है. इस दास पर दया वणी रहै—

समत १९३९ की मती पोष बुद १ ता० २४ दिसंबर

सन १८८२ ई

महाशय मङ्गलदान जी चारण ग्राम नेठव का पत्र।

१॥ श्रीराम जी

सीध श्री सरबओपमा योग जगतवीपात श्री सांमी दयानद सुरसती जी जोग लीषा वतु: गांव नेठव सु मंगलदांन चारण केन: नमसते बंचाणी: अठ का समाचार: आपकी क्रीपा करकी भलाछ: आपका सदा भला चाहीज जी: उपरंच समंचार १ बंचण: आप समरथदांन न प्रीयाग जी छापषान आप कपर भेज दीनु: जकी तनषा: मास १ रुपीया २९) करा सो ठीक छ: आपन मास ६ तथ ७ की नोकरी करायणी हुव जद तो: आप राजी हुव की तनषा देवो सो ही ठीक छ: तथा नहीं देव तो ही आपकी नोकरी कर देंवा: पण आप आगन अघक नोकरी करावो तो: तनषा बधाया सरलो: कारण: आप समरथदांन न प्रीयाग जी भेजो छो जद कहो छो: तमारी तनषा मास छ: पछ बधाई जायगी: सो हाल ताइ तो: आप तनषा बधाई नहीं: सो आपन बीचारो चाहीज: कारण: ईस तनषा सु तो: हमारो गुजर चाल नहीं: आप रुपीया २९) देय छो: ज्यां समा सु रुपीया १९) मास १ म लाग जाव छ: रोटी कपड़ो तथा: हाथ परच का लाग जाव छ: बाकी रुपीय १०) मास १ रा बंचछ: जकां बेड़ी समरथदांन लीषछ: सु थांन घाल देसु: ईसी

मान लीष छः अस्तु, आपन लीषण म आव छः सो आपन बीचारी चाहीजः समरथदांन को रोटी षरच कपड़ा तथा हाथ षरच का लाग जका: उपरांतः रुपीय ३०) मां रपुगांसुः नीरभाव ह यः सो आपन बीचारी चाहीजः हमार तो कुमाउ येक समरथदांन ही छः सो आपन मालुम रहः ओर आपनः मीनष को गुण ओगण देषो चाही जः ओर आज दीन बीकानेर क देस काः सीरदारा सरव बे राजी हुय कीनी सदा छः राजा सुज का आभुर्जा- क बड़ा साहव कन जांय छः जका सीरदारः हमार गाव आया छः दान ३ रहाः जकां सीरदारां मन बुलाय की कही कः समरथदांनन बुलाव दोः सेमरथदांनन बकीलात करणनः साग ले जासां तनषा रुपीया १००) मास १ रा करदे सां: आभुजी भेजसां: आभुजी गयां सु मारी सला हुव गई जद तो ठीक छः नही मांरी सला हसी तो: सामल जावण पड़सी: साग १ अगरेजन बकील करकी राषसां: जक साग जावण पड़सी ईसी समांचार सीरदारां सगलामनः कही जद मै सीरदारां न कहोः मार तो नोकरी लाग रही छः सांमी जी राजी हुव की सीष देसी जद आवो जासी: सांमी जी की रजा बीना नोकर छो मा नहीः हमार तो माता पीता सांमी जीः माहाराज ही हः मे तो सांमी जी की रजा बीनी कोई काम करां नहीं: नदव सीरदार तोः आभुजी नः चड़ गया आज दिन २ हुवा छ

ओर समरथदांन तो आप नोकरी करा सो जतर दुसद का कर
ाहीं जस आपन लीषा छ सो आपन बीचारा चाईज

मिती चत बदी ७ समत् १९३९

ाहकमे कोतवाली जोधपुर की ओर से पत्र।

" श्री परमेश्वर जी सहाय छै "

केफियत अज तरफ पंडित दयानंद सरसुती व म्हेकमें कोट-वाली सेर जोधपुर भादवा सुद १२ तथा १३ सं० १९४० रा तथा जो आदमी मारा कनु चोरी करने निट गयो जीणरे वासते इसतीयार इनामी पचास रुपया राजारी होना चाहिये जो वो भरत-पुर रे रेवण वालो होई लावा रेंगां ववींरांनारो हो सो उणरा मकान पर मारफत अजंटी वंदोवस्त होणा चाहिये जिणसुं महकमें मासु कीमत कर लिख दीनी जावे इसातियार जारी कर दिया जावे है जो उण में आ विगत लिखदी वी जावे के जो कोई माल समेत पकड़ाय देवे तो रुपया पचास जो विना माल पकडाय तो रुपया पचीस दिया जावेसी ने अजंटी में लिखावट होना चाहिये फकत

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री १०८
स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की सेवा :

श्रीयुत भया राजेन्द्र बहादुरसिंह
स्थान भिनगा ज़िला बहराइच (अवध) का प

ओ३म्

...........................१९३

श्री ९ मन्महन्मानिनीय दयानन्द स्वामिनाञ्चरणसरोजेषु भृङ्गाय मानस्यममानेकनतिततयः सन्तु ।

महाशय

विनय यह है कि सामवेदीय ताण्ड्य महाब्राह्मण सभाष्य ....ब्राह्मण षड्विंश ब्राह्मण और आरण्यसंहिता सभाष्य आ.... कृत हो या अन्य शास्त्रि कृत हो और पञ्च महायज्ञ विधि तथा सत्यार्थप्रकाश मे जो मिश्री, दूध, गुड़, मांस, और सोमलतादि वस्तु होम के लिये लिखी हैं इन सब वस्तुओं को किस २ प्रकार हवन करना चाहिये अर्थात् जब पुष्टिकारक होम करना हो त दूध घी तथा मांस से किस प्रकार यानी खाली एक २ से या

सब को एक में मिला कर करना चाहिये और सोमलता के रस से या उसके खण्ड २ करके होम करना होता है उसमें घृत मिलावे या नहीं सत्यार्थप्रकाश में लिखा है कि इन पदार्थों का यथावत् शोधन, परस्पर संयोग, और संस्कार करके होम करना चाहिये जैसी विधि हो कृपा पूर्वक स्पष्ट वैसे शीघ्र लिखियेगा मैं आपका अत्यन्त कृतज्ञ हूंगा किमधिकं विज्ञेषु

आपका आग्याकारी—

भाया राजेन्द्र बहादुरसिंह

स्थान भिनगा ज़िला बहरायच सूबे अवध

श्रीयुत पं० हीरालाल अथर्वणी तथा पं० माणिकलाल उदयपुर का पत्र।

श्री

ॐश्रीब्रह्मवेदाय नमः

स्वस्ती श्री योधपुर माहासुभस्थाने सर्वोपमा वीराजमान अनेक उपमा योग्य श्रीमतपरमहंस परीव्राजकाचार्य तीर्थ स्वरुपी श्री परम गुरु स्वामी जी श्री १००८ श्री दयानंद सरस्वती जी माहाराज योग्य श्री उदयपुर थी ली. आपना दरशल वी से अभीलाषी आज्ञा

कीत अहोरात्र चीतवन करनार सेवक अथरवणी हीरालाल तथा कनीष्ट भ्रातु मांणकलाल ना साष्टांग डंडवत नमस्ते पवील सेवावी से अंगीकार करसो वीशेश वीनंती अेछे आपनी आज्ञानुसार श्री दरबार मे प्रतीदीन दो वषत अग्नीहोत्र होता हे ते वीशे आप जेरी-तथी बंदोबस्त करोछे तेन परमांणे थयां जाय छे कांइ पण कसर पडती न थी वली श्री जी अत्यंत प्रसन्न मे हे ओरहुं सेवकनी अंतस्करण थी आला फकत आपना चरण कमलनी पवीत्र शेवा वीशे अहोरात्र शुद्धांतस्करण थी चीतवणार पुछे लेवो मे कांइ अश्चर्य नही समजतु वीशेश वीनंती अेछे जे आपनी आज्ञानुसार श्री दरबार ये अनुष्टानथ शुरु तुते वीशे पूर्णाहुतीनी वषत आप समक्ष श्री हजुरे हुकम फरमावो हतो के वेदाभ्यास करवा साइ अथरवणीना भाई ने मास १ ना रुपीया ३) हरबार थी मलां जासे ओर यजुर-वेदीना लडका ने मास १ नो रुपीयो १) रोजगार नो मलसे परंतु यजुरवेदी ने तो कांइ गरज जेतुजणातु न थी ओर मारी तो अभीलाशा फगत आपनी आज्ञानुसार छने छोकराने नर्मदा कीनारे गाम कन्यांली अभ्यास साइ मुकवानी मरजी छे ते वीशे आपना सेवके पुरोहीतजु उदेलाल जी ने कयु के स्वांमी जी माहाराज अत्रेथी जे दीवस कुंच मुकाम पधारतील जे आपने हुकम फरमावो हतो के अथरवणीना भाई साइ दरबार थी अरज करी रोजगार साबत कराव जो ते वीशे आप अरज करो हवे मारेपण गुज-

रात तरफ जवानु छे मारो कुटंब सरवेलुण वाडे छे मारेलेबा साइ
जवुपर से माटे मारा भाई ने कन्यांली मुकी ने लुणा वाडेज-
इस त्यारे उदेलालनु ये कवु के स्वांमी जी उपर पत्र लाओछे ते थी
हुकम आवा थी अरज करी सुवली कोइ वाखत अेमपणके छे के
अनुकुल देषी ने अरज करांगा परंतु कांइ अेक पणवतनुडे कांणु न
थी अरज पण करता नथी तेम षुलाशा जबापयण देता न
थी ने अेवात्तनी मसरामसरी करे छे माटे माटे ताबेदारनी
अरज अेछे जेहु दीनदयाल आप पत्र दवारे उदेलाल
जी तरफ वा पंडा मोहनलाल जी तरफ हुंकम फरमाव
सो त्यारे अरजथ से तेवी ना कांई था यते बुन थां जणा तुमा
मरजी मुजब मुनासब हुकम फरमाव सो तेवी आशा छे मा
तो फगत आनो भइ सो छे वली आ संसार वीशे उत्तम पदारथ
आपने जांणु छु माटे गरीव ऊपर उपकार जांणी ताकीद थी दया
करी ने पत्र वांचतां प्रती उतर लावसों अेवी आशा छे
साथी ने मारा कुटंब थी वीयोग थया ने वरस १॥ नो
आसरा थे योछे माटे अत्रेहुं गणो दुषी छु माटे आपना पासेर जामा
गुछु आपनो गुण कोई दीवस पणमुलवानो न थी मारे हे दीन-
दयाल परवरस करी हुकम फरमाव सो अेज वीनंती ताबेदार लायक
कांम फरमाव सो आपना सरीरनो यत्न रषावसी १९४० आसो वदी
१२ गुरे ।

अहो रात्र श्री वेद पुरुष आगल प्रार्थना करुछु के हे इश्वर स्वांमजी माहाराजना संपुरण मनोर्थ परी पुरण कसोली. सेवक हीरा-लाल ना नमस्ते सेवा वांसे अंगीकृत करसो ।

श्रीयुत् मरमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की सेवा में

श्रीयुत लक्ष्मण गोपाल जी देशमुख. आसिस्टंट कलक्टर खानदेश के पत्र

(१)

श्री

पुणे तारीख १४जून१८८३

श्रीमत् स्वामि दयानन्द सरस्वती जी

से लक्ष्मण गोपाल देशमूख के अति नम्रता पूर्वक नमस्कार विदित हो—जोधपूर मे निश्चय हुआ था कि पालीमें पहुंचे बाद कुशल समाचार लिख भेजना सो तो हम कर सके नहीं कस्मात् कि जो सवार और गाडीवान् हमारे सह आये थे वे पाली कि कचेरी मे गये और हम उसी रात कु उंट पर सवार होके खार ची कु गये—इस लिये मुलाकात न होने से समाचार लिखा गया नहीं. तारीख ७ के रोज हम अमदाबाद कु पहुंचे ओर उसी दिन वहां से निकल के बडोदे कु आये फिर तारीख ४ कु

निकले नासरी में आये और तारीख १२ कु वहां से चले सो मुम्बई कु आये और तारीख १३ सायंकाल पुना में पहुंचे मुम्बई मे हमने पुरोहित उदयलाल जी के घडी के वास्ते हमारे बंधु से विनंति की और ३० रुपये दिये २८ रुपये तक घडी, आप की सोनावाली घडी है वैसी भेजने का कहा है सो घडी तारीख १३ कु पुरोहित जी के पास रवाना हुई होगी—आप उन महाशय से खबर मंगवाके हम कु लिखेंगे तो बडी मेहेरवानी होगी. रा० सेवकलाल से रुपये २८ लेने का हमारे भाई कु विदित किया है.

हमारे पिता जी से सब हकीकत और आपके आशीर्वचन कहे. बहुत आनन्द पाये आपके परिश्रम कु बहुत धन्यवाद देते हैं. उस मुलुक मे सेहेल करने के वास्ते आने के विषय में आप बोले थे सो विदित किया--वह भी चाहते हैं कि जोधपूर के तरफ का देश देख लेना. इत्यलम्।

सब मित्रवर्ग से हमारे विनय पूर्वक नमस्कार हैं.

लक्ष्मण गोपाल देशमुख.

असिस्टंट कलेक्टर

खानदेश

(२)

जिल्ला खानदेश तारीख १३ जुलाई १८८३
मिती आषाढ शुद्ध १८०९ *

आप से पहेले एक पत्र भेजा था उसका उत्तर नहीं आया इस लिये चिन्ता युक्त हैं. सो आप कृपा पत्र भेज के दूर कीजिये पुरोहित उदयलाल जी तो अब तक घडी प्राप्त हो चूके होंगे सो भी आप तपास करवाना और आप के तर्फ का विशेष समाचार हमकुं लिख के सदा आनन्दित करना ये विनंती है.

लक्ष्मण गोपाल देशमुख
असिस्टंट कलक्टर

(३)

श्रावण वद्य १३–१८०९ *

पत्रं प्राप्तम् । समाचारा ज्ञाताः । आनन्दोऽभूत् । अत्र वर्षाऽतीव वर्त्तते । इत उत्तरं संस्कृत पत्र प्रेषणकृपयाऽनुगृह्णातु स्वामिन्निति भवद्भ्यो विज्ञापनमस्तीत्यलम्

भवदीयो **लक्ष्मण गोपाल** देशमुखाख्यः
अ. क. खानदेश

* नोट—यह १८०५ शकाब्द है ।

(४)

श्री

तारीख ७ आगष्ट १८८३
श्रावण ४ शुद्ध १८०९ *

श्री स्वामि दयानन्द सरस्वती जी से बहुत विनय पूर्वक लिखा जाता है कि आप के २ पत्र आये समाचार पाये घडी पोंहोची सो ठीक हुआ—आज हमारे बंधु कु लिख चुके है वह भी पूछते थे कि घडी का वर्तमान क्या है. आप सेवकलाल ने घडी भेजे का वर्त्तमान लिखे सो क्या उनो की भी घडी गई और पोहोंची.

फिर आप घडी की किमत के वास्ते लिखते हैं सो क्या आप हम कु कृतघ्न ठैराने चाहते हैं--कभी हम भी आप से लिखे कि हम आप के सान्निध जितने रोज ठैरे उतने रोज का भोजन आदि का और सवारी के खरच का भी दाम लेके सरकार मे जमा करवाइये तो ये क्या अच्छी बात होगी घडी की किमत कुछ बडी नहीं है मित्रता के व्यवहार में छोटी बात का अलग हिसाब रखे वह हमारी नजर से ठीक नहीं. और घडी भी तो आप पाये नही पुरोहित जी पाये आप केवल आप के वचन के लिये हमकु आज्ञा किये और आप रुपया भरें तो वह तो दंड जैसा आपकु हो गया सो हम नहीं करने कु चाहते-हां कभी सेव-

* नोट—यह १८०९ शकाब्द है।

कलाल ने घडी भेजी नही होगी और उनके पास रुपये पड़े होंगे तो उन से आप आज्ञा कीजिये ।

हमारे तीर्थ रूप का आना तो हमारे लिखे से न होगा आप कभी लिखे जब तो वह आवे तो आवे ।

हम इच्छा करते हैं कि आप के पत्र हम कु सब संस्कृत में आवे सो इच्छा आप पूर्ण कीजिये इस से हम कु भी संस्कृत पत्रव्यवहार का मार्ग समजा जायेगा—इति विनतिः ।

आप का श्रावण वद्य १० का पत्र है सो आषाढ़ वद्य १० होना चाहिये ।

लक्ष्मणगोपाल देशमुख

अिसिस्टंट कलेक्टर, खानदेश

श्री मत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज की सेवा में

श्रीयुत महाशय सेवकलाल कृष्णदासजी मंत्री आर्यसमाज बम्बई के पत्र

(१)

आर्यसमाज ।

मुंबई आश्विन शुक्लपक्ष भौमवार संवत् १९३६.

अंक ता० १२ अक्टोबर १८९०

प्रिय आप्त

नमस्ते । आपका कृपापत्र मेरठ से लिखा पहुंचा पढ़के बड़ा

आनंद हुआ और कितनेक सभासदों को भी पढ़ाया इन्हों को भी बड़ा आनन्द हुआ और आप के वचनामृत सुनने की बड़ी अभिलाषा हुई। बहोत दिनों से हम आपके संसर्गकी इच्छा रक्खते हैं परंतु हमको मुनशी समर्थदानजी के द्वारा विदित हुआ कि स्वामीजी अभी मुंबई आनेको नहीं चाहते जिससे हम लोगों ने निश्चिय किया कि स्वामीजी वाह भी देशोन्नति के कार्य में विशेष प्रवृत्त हो रहे होंगे जिससे विशेष आग्रह कर के बुलाने से और भी हानी होंगी जई से अमदाबाद से बुलाने से हुई जिससे हमने कुच्छ दिन आपकी इच्छा की राह देख रहे थे क्योंकि हमारी अभिलाषा तो आप ने मुनशी जी के द्वारा पढ़ी होगी और आल्कट साहेब को भी हमने कहाथा। मुंबई के हाल आप अच्छि तहरा जानते हो कि—आपका आनेका निश्चिय ही हो तो आप के उतरने के लिये योग्य स्थान और व्याख्यानादि होने के लिये घटीत द्रव्य भी आगे से संचकर रक्खना चाहिये और आप का पधारना सुन के सभासदों में उत्साह भी बढ़े जिससे चाहिये इतना द्रव्य भी संच हो सके और समाज की उन्नति भी होवे जिससे फिर आप दो चार वर्ष न पधार सको आवश्यकता नहीं। यह निश्चय है जब तक आप फिर न पधारोंगे तब तक समाज विशेषोन्नति को प्राप्त नहीं हो सकता क्योंकि कार्य्य करने वाले बहोत कम है अपना तन मन धन लगाके करें, वाक्यविलास करने वाले

बहोत हैं परंतु इस से उन्नति नहीं मात्र पोपों के वहकाने से विरोध वढ़ता है तो भी आनन्द की बात है कि आर्यसिद्धांत से कोई छूटता नहीं क्योंकि आप के सत्य व्याख्यान और पुस्तक सुने पढ़ के जो निश्चय हुआ है पोपों की क्या सामर्थ कि स्वार्थि उपदेश कर के भ्रष्ठ कर सके परन्तु टके की बात में हट जाते हैं जिस से विशेष उत्साह की अपेक्षा है आप कृपा कर के कब पधारोंगे लिख भेजना जिस से समय में हम प्रबन्ध कर ले क्योंकि अभी हमारी चित्तवृती आप के चरणों में लग रही है सो हम को कब आप के दरशन हो । केशवलाल के हिसाब के कागज़ मीले परन्तु मुनशी सा० बक्तावरसिंहजी की संमती लेने के लिये बनारस को इन्हका हिसाब भेजा है सो पुनः अभी तक नहीं मीला आने से सब दिखाला हो जायगा । हॉनरएबल राव बाहदुर गोपालराव हरीदेशमुख पुने को पधारे जब ही आप के दोनों पत्र ले गये हैं जिन ने राव बाहदुर महादेव गोविंद रानेडे को भेजे होंगे हमने आप को शीघ्र प्रत्युत्तर भेजने के लिये लिखा है ।

कार्य्यालय बांधने के लिये रु० १५०० के आसरा सभासदों ने पटी भरी है परन्तु अब तक लिये नहीं राव बाहदुर के पधारने पीछे व्यवस्था होगी और आज हम ने रु० २४१) फरखाबाद को शिघ्र वेदभाष्य के साहाय्य में भेजे हैं और वेद भाष्य के ग्रहाकों से चन्दा वसूल करने को हम बहोत मेहनत करते है रु० १०० मुनशी बक्तावर

सिंहजी को भेज दिये और थोड़े दिनों में और भी भेजने को शक्तिवान हो सकुगा इस की कुच्छ चिंता नहीं। सब समाजस्थों के बहोत बहोत नमस्ते पहुंचेऔर कृपा कर के प्रत्युत्तर शिघ्र लिखना।

मैं हु आप का
आज्ञांकित् सेवक
सेवकलाल कृष्णदास
मन्त्री आर्य्यसमाज, मुंबई

वेद शास्त्र संपन्न
श्रीमद् पंडित् दयानन्द सरस्वती स्वामीजी की सेवा में
पहुंचे
मुज़फ्फर नगर

---

(२)

मुंबई ता० ३ डिसेंबर १८८०
गीरगाव माधव बाग के
सामने डाक तरमोरेश्वर
के घर मे

श्रीमद् स्वामी दयानंद सरस्वति

नमस्ते

छात्रान्तर्गत गोपालरावहरी देशमुख के अनेक नमस्कारपूर्वक

विनंति. आपणो कागल भाई शेवकलाल उपर आव्योतेवाचो. थिओ साफिकल सोसायटि वाला आर्य्य समाज के विरुद्ध नहि है. ये लोक शोधक है सिद्ध नहीं और सोसायटि मे शाखा सब धर्म्मों की है. वैदिक शाखा में आर्य्य समाज सब आपहं है. बौद्ध शाखा में सिलोनके लोग है. जेन्द आवस्था के पारसी लोग भी है. धर्म के बाबतमें कुच भी हरकत नही. हम वेद माने तो ये लोक वेद न मानो ऐसा कहते नही. कोइ क्रिस्तियन होय तो तेने क्रिस्त ने नमानोएम कहते नहि. सारांश कोइ नेधर्मनी हरकत नही. योगशास्त्र का विच्यार करने का मुख्य मतलब है. ऐसा ये महिने का थिआसोफिष्ट में साफ लिखा है. इसवास्ते नाम काटने की जरुर मालुम पडाति नथी. थिआसोफिष्ट मेहम है तो वेद छोड़ता नथी और एलोक भी बेदधर्म छोड़ो ऐसा कहते नही.

आपके नाम पर दो कागद पुने से भेजे छे वासियत नामा के बाबतमे.

सत्यार्थप्रकाश ह्या मिलता नहीं और बहुत लोक मागते है इस वास्ते आपके पास होगा तो दुरस्तकरना चाहिये इस में और कुच विषय लिखने के होयतो लिखकर काशिमें वा मुंबई में छापना चाहिये.

आर्यसमाज सब कितनेहे उस की यादि भेजंगे तो आर्यपत्रिका में छापेंगे.

आर्य समाज का काम ह्या ठीकठीक चलता है.

आप का इसतरफ आनेका विचार होगा तो अच्छा होगा. पहिले एक महिना खबर करना चाहिये.

पंडित शाम जी को आप पत्र लिखा था उस का तरजुमा लंदनमे मोनेरवियम के सहीसे छापा हे वो कागद हमपर भेजा था वो पढ़कर हमने आप के नाम पर डाक में भेजाहे आपके जानने के वास्ते.

नमस्ते

गोपालरावहरीदेशमुख *

* नमस्ते । आप के दो कृपा पत्र मीले पढ़के बडे प्रसन्न हुअे सदैव कृपा करके लिखना बेद भाष्य का चंदा लेने को तकलिफ बहोत होती है हिसाब बराबर नही है तो भी बहोत करके हिसाब हम लगाया है रु० १००) हम ने बक्खातावरसिंह को भेजे थे और आठ दिन में रु० ९०) भीमसेन को भेजुगा.

आपके आने बिना समाजका मंदिर होना कठीन है और सब समाजों का अंगरेजी वा हिंदिमें (देवनागरी लिपी में) लिखा के कृपा कर भेज देना । हम सब आनंद में है आपकी तनदुरस्ती

* म० गोपालराव देशमुखजी की यह चिट्ठी तथा इसके पश्चात् मुद्रित म० सेवकचरन कृष्णदासजी की चिट्ठी दोनें ही एक ही पत्र पर लिखी हुई हैं ।

अच्छी होगी । मुलजी टाकरसी देव लोग पधारे इन्हों की अंतेष्ठि की क्रिया संस्कार विधि के अनुसार की गई थी और सब सभासद बहोत कर के हाज़र थे ।

प्रत्युत्तर कृपा कर के शिघ्र ही लिखना.

मै हुं आप का
आज्ञांकित् सेवक
सेवकलाल कृष्णदास

---

(३)

मुंबई ता० ८ मार्च १८८१

श्रीमद पंडित जी नमस्ते

आपका रिजिस्टर पत्र कल संध्याको मीला पढ़के मीझे जितना आनंद हुआ इसका प्रत्युत्तर शनीवारको सविस्तर लिखेंगे क्योंकि सब हिसाबकी बही हमारा कारभारीके पास है और वे गुरुवारको **बसईसे** निश्चय आजायगा परसु ही गया है । मेरेको कुच्छ हरीश्चंद्र जी की नाई धर्मार्थ द्रव्यकी अपेक्षा नही ईश्वर कृपा आर हमारापुरुषार्थसे व्ययसे अधिक द्रव्य प्राप्त होता ही जाता है ।

मै जो वेद्भाष्य मुंबईस्थ ग्रहाकोंको भेजता हु जिसका सिपाई को दरमाया देता हु सो आपसे लेनेके लिये नहीं परंतु मैं एसा समझता हु कि प्रत्येक आर्यसभासदने अपनी यथाशक्ति यह स्व-

देश उन्नति क कार्य्य साह्य करनी चाहिये जिस से मैं प्रति सप्ताह में दो बेर दाम वसूल करने के लिये ग्राहकों के घर को जाता हूं रु० १०० भेजे और पूर्णिमानंतर और रु० १०० भेज दुगा। प्रत्येक ग्रहाक पर क्या बाकी है निश्चिय करना कठीन होता है और कितनेक को अंक कम पहुचे है जिस को दिये पीछे दाम मीलेगे । इति ।

मैं हूं आप का आज्ञांकित् सेवक

सेवक लाल कृष्णदास मंत्री० आ०स०

---

(४)

मुम्बई

ता० १६ सपटेम्बर १८८१

श्रीमद् परमहंसपरिव्राजका चार्य्या नेक गुणसम्पन्न विराजमान वेद विहिताचार धर्म्म निरूपक पण्डित दयानन्द सरस्वती स्वामी जीप्रति नमस्ते । आप की ओर से लाला रुपसिंह जी कोहाट से देश यात्रा करते २ आप के दर्शन से कृतार्थ होके ता० १३ की सन्ध्या को पधारे है, जिन्हो का मुम्बई आर्य्यसमाज ता० १८ को "स्वदेशोन्नति" विषय में व्याख्यान होगा, जो कल दुपेर को दो बजे डाकटर मोरेश्वर गोपाल देशमुखजी के साथ पुनेको शेहर देखने

ओर हाँनरेब्ल गोपालराव हरीदेश मुखजी और महादेव गोविंद रानेडे आदि सभ्य पुरुषो की मुलाकात को गये है जो कल प्रातः काल १० बजे फिर लोट आवेंगे।

इन्हों से आप की अत्र पधारने की कृपा सुनते ही समाजस्थो में बडा आनन्द हो रहा है और आप के लिये निवास स्थान व्याख्यानादि व्यवस्था करने को तत्पर हो रहे है, मात्र खोटी आप कितने दिन पीछे पधारोंगे वे जान लेने की है जिससे सब व्यवस्था यथा साङ्ग बन सके, इस लिये कृपा करके शिघ्र विदित करना कि आप का पधारना कितने दिनों में होगा और और आप को वाट खर्च के लिये कितने रुपये और काह भेजा जावे, जिससे हम सब व्यवस्था शिघ्र कर लेवे।

राव बाहदुर भोलानाथ साराभाई ने हम को कहा है कि स्वामी जी जब कृपा कर के पधारने वाले हो..................दित करदेना, हम अमदाबाद और और पाहल...............जी के लिये सब व्यवस्था करेंगे और गोपाल राव आदि सभ्य पुरुषों ने जब आप पधारने वाले हो इन्हों को विदित करने का हम को कह रक्खा है जो आप से प्रत्युत्तर मीलते ही विदित किया जायगा।

जैनो के और पुस्तक प्राप्त करने का प्रयत्न चल रहा है

मीलते ही आप को विदित किया जायगा और २३० पुस्तक आप के वीन देखे मेरे पास है आप कहो तो भेज दुंगा।

आपने जो पुस्तक फिर लोट दिये हम को मीले है परन्तु आप का मुकाम मालुम न होने से रसीट न भेजी गई सो क्षमा करना।

कृपा करके इस पत्र का प्रत्युत्तर शीघ्र ही लिखना इति।

मैं हूं आप का आज्ञांकित सेवक

सेवकलाल कृष्णदास

मुंबई जग जीवनकिका स्ट्रीट घर नं० ६१

---

(९)

मुम्बई

ता० १७ डिसम्बर १८८१

श्रीमद् परमहंसपरिव्राजकाचार्य्य अनेक गुसम्पन्न वेद विहिताचार धर्म्म निरूपक पंडित दयानन्द स्वरसती स्वामीजी प्रति नमस्ते। आपका कृपा पत्र ता० १२ का चितोड़ से लिखा मीला और पढ़ के बड़ा आनन्द हुआ जो समाजस्थों को पढ़ाने को तुर्त छपाके भेज दिया जायगा, और ता० १४ जान्युआरी शनीवार की सन्ध्या को आर्य्यसमाज की अेक विशेष सभा नवीन व्यवस्था करने

के लिये एकत्र करने का निश्चय किया है जिस के पूर्व आपका पुनः आगमन होने से सब व्यवस्था ठीक २ होगी और आपकी पुनः २ आगमन की अपेक्षा ईश्वर कृपा से मीट जायगी। आपकी आज्ञानुसार वालकेश्वर में जिस स्थान पर आपका प्रथम मुकाम हुआ था इसी स्थान का प्रवन्ध कर रक्खा है और आप कृपा करके "**कामखाला**" स्टेशन की टीकट लेना वांह सब समाजस्थ आपको लेने को पधारेंगे और एक वा दो समाजस्थ 'थाणे' तक आपको लेने को आयगे। पुना, अहमदाबाद और बडोदा को पत्र आपके पधारने के विषय में आज लिख भेजता हुं और पोस्ट आफिस में भी जिससे सब व्यवस्था ठीक २ हो। आप कृपा करके अेक दिन पूर्व तार भेजो तो सब वर्तमान पत्रों में प्रसिद्ध करने की बड़ी सुगमता हो वा खंडवे से भेजो तो भी ठीक है इति

मैं हुं आपका आज्ञांकित् सेवक

सेवकलाल कृष्णदास

---

(६)

मुंबई ता० १९ जानेवारी १८८१

ओ३म्

स्वस्ति श्री परिव्राजकाचार्य्य वेदादि सत्यशास्त्रांतर्गत्त

तत्व विच्छिरोमणि प्रवृत्यागमार्थ निष्ठ दलित पाखंडार्थ वेदांत शास्त्रानुगतार्थ प्रवृत्ति पूर्वक नित्य नैमित्तक क्रिया प्रतिपादतार्थो दूबोधक अज्ञानांधकार तिमीर नाशक ज्ञानप्रद श्रीद्दयानंद सरस्वती स्वामी प्रति नमस्ते । आगे आप के पत्र का प्रत्युत्तर हमने और हानरएबल रावबाहदुर गोपालराव हरीदेशमुखजीने दिया था जिसकी पहुंच अभी तक हमको मिली नही है सो कृपा कर लिख भेजना क्योंकि मुंबईस्थ लोगों में एसी चर्चा हो रही है कि स्वामी जी थोड़े दिन में पधारने वाले है इतना ही नहीं बडके यहां तक पुछते है कि स्वामी जी पधारे है सो कहा मुकाम किया है जिसका पत्ता बता दिजीअे औ हमको तो इस विषय में कुच्छ खबर भी नही मात्र कल आगरे से भगवती प्रसाद जी का पत्र आया उसमें इतना ही लिखा था कि " स्वामी जी के २९ व्याख्यान हुअे है और यहा से अजमेर वा काशी को आप पधारोगे और वांह से सायत मुंबई को पधारोगे " इसमें आपका क्या अभिप्राय है सो कृपा करके हमको लिख भेजना जिससे हम आप के लिये मुकामादि व्यवस्था कर रक्खे ।

जैनमत के पुस्तक की सोध करने के लिये आपने प्रथम लिखा था सो बड़ा परिश्रम से हमने इन्हों के कितनेक पुस्तक प्राप्त कर लिये थे जो आपको कुंवर स्यामलालसिंह जीने आपको विदित किया होगा परन्तु इन्हों के ग्रन्थाग्रन्थका विचार किया

अब है सब पुस्तक शास्त्राथ के विषय में पुराणों के नाई पोकळ प्रसिद्ध हुअे जिससे हमने और प्रयत्न करके वहोतेक इन्हों के सिद्धान्त के पुस्तक सुमार ३००००० लक्षा धिक श्लोकका पुर प्राप्त किये जिसमें बहोतेक पुस्तक ३०० से ४०० वर्ष के पूर्व लिखे हुये है और कितनेक पुस्तकों के प्रारंभ के और कितनेकों के अन्त के पत्र नष्ट हो गये है तो भी रक्ख लिये है क्योंकि ये पुस्तक इन्होंके मुल सिद्धांत के है। इन्हों के धर्म सिद्धांत के विषय में ग्रंथाग्रन्थ का विचार जो हमको मालुम हुआ है सो भी मै आप को विदितार्थ लिख भेजता हुं क्योंकि जब तक अपने को इन्हों के प्रमाण अप्रमाण पुस्तकों का शास्त्रार्थ मालुम न होवे सब किया प्रयत्न व्यर्थ हो जाता है और वे लोग के पुस्तक कों प्राप्त करना बडी मुशकील की बात है इस लिये हमने प्रथम हीं करार कर लिया है कि इस सत्र पुस्तक में जो हमको प्रिय हो दो पुस्तक हम रक्ख लेगे छोटे वा बडे हो हमारी इच्छानुसार है और २ पुस्तक वे जब हमसे मंगे देदेना परंतु मै पढ़ता हु पूर्ण हो पीछे भेज सकता हु जिससे अपने कार्य्य में विघ्न न होवे।

इन्हों के सिद्धांत में मोक्ष एव परम पुरुषार्थ है—साधारणा साधारण धर्म विषय संबंध प्रयोजन के अधिकारी भेद के अनुबंध छ (६) विदित होते है जिन्हों को जैन सिद्धांत कहते है और

इन्हों के मुल ग्रंथ भी बहोत है वेसे कहेते है तो भी शौस्त्रार्थ विषय में (४) चार मूल सूत्र है (११) एकादश अंग है (१२) द्वादश उपांग है (६) छ छेद है(१०) दश पयान है (५) पंच कल्प सूत्र है और—बंदि सूत्र और अने अनुयोगोद्धार सूत्र है। इस पुस्तककों के प्रत्येक की टीका, निर्युक्ति, चर्णी और भाष्य यह चार अव्यव है जिसको पंचाग कहते है

इसके नाम—आवश्यक सूत्र, विशेष आवश्यक सूत्र दशवैकालीक सूत्र, पाक्षिक सूत्र मील के चार मूल सूत्र है। आचारांग सूत्र, सुकडांग सूत्र, ठाणांगसूत्र, समुवायांसूत्र, भगवतीसूत्र, ज्ञाताधर्मकथासूत्र, उपासकदशासूत्र, अंतगडदशा सूत्र, अनुत्तरोववाइसूत्र, विपाकसूत्र, प्रश्न व्याकरण सूत्र, मील के एकादश अंग है। उपवाई सूत्र, रायपसेनी सूत्र, जीवाभिगम सूत्र, पन्नवणा सूत्र, जंबुद्दिप पन्नत्ती सूत्र, चंद पन्नत्ती सूत्र, सुरपन्नत्ती सूत्र, निरियावलि सूत्र, कप्पिया सूत्र, कपवडिसया सूत्र, पुप्पियासूत्र, पुप्पचूलीया सूत्र मील के द्वादश उपांग है। उत्तराध्ययन सूत्र, निशीथ सूत्र, कल्पसूत्र, व्यहवार सूत्र, जीत कल्पसूत्र, मील के पंच कल्प सूत्र है। महानिशीथ वृहद्वाचना, महानिशीथलघुवाचना, मध्यम वाचना, पिंडनिर्युक्ति, ओघनियुक्ति, पर्युषणाकल्प मालां के षट छेद है। चतुःशरण सूत्र, पंचखानसूत्र, तंदुलवैयालिक सूत्र, भक्तिपरिग्यान सूत्र, महाप्रत्याख्यान सूत्र, चंदाविजयसूत्र,

गणिविज्वासूत्र, मरणसमाधि सूत्र, देवेंद्रस्तवन सूत्र, संस्थार सूत्र मील के दश पयन्न है। इस सब पुस्तक की संख्या (६०००००) ट उक्षाधिका है। इन व्यतिरिक्त भी दशाश्रुतस्कंध, विरस्तवसूत्र, जितकल्पगणाचार प्रकीर्ण, ज्योती करंड, सिद्धप्राभृत, वसुदेव हिम खंड, आदि बहुत पुस्तक है और इन पुस्तको पर टबाभी है। जैन धर्म के आचार्यों का (श्री पुजों का) एसा केहना है कि जब मनुष्य मूल पुस्तक समझने को अशक्त हुअे तब उस वख्त के विद्वानों ने उस पर टीका की जब टीका समझने को अशक्त हुअे तब निर्युक्ति की, जब निर्युक्ति समझने को अशक्त हुअे तब चर्णी की, और जब चर्णी समझने को अशक्त हुअे तब भाष्य रचे, जब भाष्य समझने को अशक्त हुअे तब टब्बा रचे (जो भाषा गुजराती से बहुत मीलती है) और जब टब्बा भी समझने को अशक्त हुअे तब चरित्र रचे और पीछे रासादि नाना तहराके पुस्तके रचे गये और अभी किसी की बनाने की सामर्थ नही। (अर्थात् एसा प्रतित होता है कि अभी अत्यंत मुर्खता फैल गई है)। तो भी इन्हों का कहना एसा है कि सब पुस्तक मीलावे तो (५००००००) पचास लक्ष से अधिक श्लोक संख्या होवे

जैनों में जो ढुंढक मत वाले है सुत्र सूत्रों को ही मानते है मैले कपडे पेहनते है और मुर्त्तिओं को नहीं मानते परंतु बडे गलीच रहते है और २ मत बहुत है।

इन्हों के सब सिद्धांत के पुस्तक प्राकृत भाषा में है तो भी बहुत पुस्तको पर संस्कृत भाष्य है जिससे हमने बहुत करके वैसे ही पुस्तक ले रक्खे है जिससे आप को अवलोकन करने को बहुत तकलिफ न होवे और हमने इस पत्र के साथ सब पुस्तको की यादी भी लिख भेजी है जिससे आपका जो मुंबई आना अभी न होवे तो भी चाहे जितने पुस्तक डाक मार्फत मंगवा लेवे वेही हमारी विनंति है।

मै हुं आपका आज्ञां कित सेवक

सेवकलाल कृष्णदास

मंत्री आर्य्यसमाज, मुम्बई।

पुस्तको की यादी

नाम	पत्र	श्लोक	टीपण
१ आवश्यक सूत्र निर्युक्ति सहित	२१६.	१२०००	अनुमान
२ ,, दीपिका ,,	११२.	४०००	,,
३ आचारांग सूत्र टब्बा सहित	१२०.	६०००	,,
४ ,, प्रदिप	८९.	३५००	,,
५ सुकडांग सूत्र वृत्ति सहित	२२३.	१४८५०	
६ ,, बालबोध वृत्ति ,,	७९.	३०००	अनुमान

नाम	पत्र	श्लोक	टीपण
७ ठाणांग सूत्र टीका सहित		१५०००	अनुमान
८ भगवती सूत्र वृत्ति सहित	३६९.	१८०००	,,
८ प्रश्नव्याकरण वृत्ति सहित	२८२.	५६३०	
९ उवाई सूत्र टीका सहित	७५.	३३११	
१० जीवाभिगम सूत्र वृत्ति सहित	३३२.	१६०००	अनुमान
११ पन्नवणा सूत्र	२२१	७७८७	
१२ जंबुद्विपपन्नति सूत्र सटीक	३८५	१८०००	अनुमान
१३ चंद्रपन्नति सूत्र		२३००	,,
१४ सुरपन्नति सूत्र	११२	६०००	अपूर्ण
१५ जंबुद्विपपन्नति टब्बो	१४०	७०००	अनुमान
१६ कल्पसूत्र ध्ययनम् सटीक		३०००	,,
१७ पिंडनिर्युक्ति		६०००	,,
१८ औघ निर्युक्ति	१८२	५०००	अनुमान प्रथम पत्र नहीं है
१९ पर्युषणा कल्पसूत्र	९३.	१२१६	मिती सं १५१५
२० पंचखाण सूत्र समाष्य	२४.	७००	अनुमान
२१ वंदि सूत्र टीका	१८१	८०००	,,
२१ नंदी सूत्र मूल		७००	अनुमान

नाम	पत्र	श्लोक	टीपण
२३ अनुयोग सूत्र वृत्तिः	१३३	६७००	
२४ सून कृतांग दीपीका	११७	१४०००	
२५ षडदरसन सूत्र टीका	२७	१२५०	
२६ संगुहीणी सूत्र सटीक		३५००	
२७ सतरीसठाणं सूत्र सवृत्ति	५४	१६००	
२८ संग्रहणी सूत्र टब्बा सहित	४०	१७००	
२९ पट्टावली सूत्र		५००	
३० प्रतिक्रमण सूत्र वृत्तिः	३८	२०००	
३१ प्रज्ञापना सूत्र वृतिः		१०२५	अपूर्ण
३२ प्रवचन सारोद्धार वृत्तिः	३०४	१५०००	"
३३ कथाकोष	१९९	६०००	"
३४ उपदेशमाला	२४८	८०००	"
३५ तपागच्छ पट्टावली	१९	४००	
३६ सींदुर प्रकर्ण	८३	२५००	
३७ षग्गुण विवर्ण	४४	३०००	
३८ न्यायावतार विवृतिः	४६	२५००	
३९ हेम वृहद्ध वृतिः	१०२	३०००	
४० अध्यात्ममत परिक्षा	६०	१५४८	
४१ चंपकमाला चरित्रम्	१२	१०००	

नाम	पत्र	श्लोक	टीपण
४२ भरेसरी बाहुबली वृतिः	२९०	१२०००	
४३ हीर सोभाग्य काव्य सटीकम्	२१८	४१९२	
४४ देशीनाम माला	३५	१८००	
४५ आचारप्रादिप	८५	४०००	
४६ उपदेश माला	१८८	८०००	
४७ सतरभेदी पुजाकथा		३००	
४८ सतपदी लघुवृत्तिः	३५	१६००	
४९ देवबंदन	१३	२५०	
५० प्रश्नोत्तर समुचय	३६	१२००	
५१ हेतुगर्भ प्रतिक्रमविधि	२४	८००	
५२ पार्श्वनाथकाव्यपंजिका	८०	३२००	
५३ चोवीस प्रबंध	२१	१९००	
५४ गुणस्थानक विचार	३१	१६००	
५५ चतुरकर्म ग्रंथ	१६	८००	
५६ चोबीस डंडक नोटब्बो	२३	८९०	
५७ त्रय कर्मग्रन्थ	२५	६००	
५८ भववैराग्यसतक	१४	४००	
५९ पार्श्वनाथ चरित्रम्	३५	२२००	
६० सत्रुंजयओद्धार	२९१	११५५०	
६१ आरंभसीद्धि	१४६	६८००	

छपे हुए पुस्तक की यादी

६२ देवचंद जी कृत चोवीसी
६३ प्रकर्ण रत्नाकर भाग. १
६४ ,, ,, २
६५ ,, ,, ३
६६ प्रवचनसारोद्धार
६७ पांडवचरित्र
६८ समरादित्य के वली नोरास
६९ समकीत मूल
७० अजितशांतिस्तव
७१ सुमतीनागील चरित्र
७२ निर्नवमतखंडन पत्रिका
७३ ज्योतिष ग्रंथ

---

(७)

* ता० १८ जन्युआरी १८८०

यह सब पुस्तक अभी हमारी पास मौजुद है परंतु हम को

---

* नोट—इस पत्र के प्रारम्भ में १८ जनवरी १८८० लिखा है इस में जैन मत सम्बन्धी पुस्तकों की उस सूची के विषय में भी उल्लेख है जो सूची इस पत्र के पूर्व छप चुकी है। और उक्त सूची के पूर्व जो पत्र छपा है उसकी तारीख, १५ जनवरी १८८१ लिखी हुई है, उस पत्र में भी जैनों की पुस्तकों की उक्त सूची का वर्णन है। १५ जनवरी १८८१ का पत्र तदनन्तर जैनमत सम्बन्धी पुस्तकों की सूची तदनन्तर १८ जनवरी १८८० का पत्र तीनों पर पत्र लेखक महाशय सेवकलाल कृष्णदासजी का ही लिखा हुआ पृष्ठ नम्बर क्रमशः १ से ८ तक वर्तमान है। अतः सिद्ध होता है कि ये तीनों एक ही साथ श्री स्वामीजी महाराज की सेवा में भेजे गए थे। लेखक महाशय ने भूल से पत्रों पर सन इसवी ठीक न लिखा। चाहे तो उक्त दोनों पत्रों पर सन इसवी १८८० अथवा सन इसवी १८८१ होना चाहिए।

कुवर श्यामलाल जी ने विदित किया कि प्रत्येक पुस्तक में क्या विषय है सो लिख भेजना चाहिये जिस लिये मै अभी फ़ुरसत मीलते ही प्रयत्न कर रहा हुं जो तैयार होते ही मै आप को लिख भेजने वाला था परंतु अभी ऐसा सुना गया कि आप हमारे पर कृपा करके थोडे दिनोंमें पधारने वाले हो जिससे बाकी रहा काम आपके समक्षही होगा.

लाहोर आर्य्यसमाज द्वारा माडमब्लेपाटसकी को देने के लिये आपका पत्नका अंग्रेजी भाषांतर आया था सो संपुरद कर दिया और इन्हों का प्रत्युत्तर भी हमको लाहोर आर्य्यसमाज द्वारा भाषांतर होके आपको भेजने के लिये आया था सो नकल रक्खके आज भेज दिया है क्योंकि आप जब पधारोंगे तब अवलोकार्थ विलंब नहोवे और दोनों पत्र हमने हानरएबल रावबाहदुर गोपालराव ह-रीदेशमुखको पढ़ाअे थे कि जिससे–आपके साथ इन्होंका मेलाप हो पत्र संबंध में कुच्छ संदेह न रहवे ।

कच्छ दरबारके राणा जालमसिंह जी यहां पधारे है जो आप को मीलने की बड़ी अभिलाषा करते है वेसे रावबहादुर माहदेव गोविंद रानेडे भी अभी थोड़े दिनों से पधारे है सो मात्र २ मास माजीस्ट्रेटके काम में नियत हुअे है सो फिर चले जायगे और राव-बहादुर भोलाश्नाथ साराभाई भी मीले थे वे बडी प्रिती बताते है और मुजको कहाकि स्वामीजी जब पधारने वाल हो हम को लिख-

भेजना मै अमदाबाद में इन्हों की मुलाकात करना चाहता हुं और वैसे महापुरुष के दरसन और परोणागत से बडा लाभ होता है परंतु हम अच्छी तराह जानते है कि बीना खर्च भेजे आपका आना कठीन है क्योंकि आपकी पास विद्याका भंडार है कुच्छ धन का नहीं इस लिये अवस्य खर्च भेजना चाहिये जिस से हमने राणा जालमसिंह जी को कहाकि आपने आवश्य यह सुभ कार्य्य में आश्रय देना चाहिये जिससे इन्होंने बडे आनंदसे आपके यहा पधारनेका जो कुच्छ अग्नी गाडी आदिका आपके साथके मनुष्य सहित खर्च हो देने को कबुल किया परंतु आप शिघ्र पधारो इतना चाहया जिससे अपने को विशेष खर्चा होगा इसका भी विचार नकरता कवी रतन सीजी को खास आप के खरचके लिये दाम देके आज संध्याकी गाडी में रवाने हो जाने की आज्ञा करदीहये जो अमदाबादके नवीन रस्तेसे आपके पास आपहुचेंगे

हमने कल संध्याको एसा सुनाकी आपने पूर्णानंद स्वामी को आपके उतारा के लिये व्यवस्था करने को लिखाथा जिन्होंने सब तजवीज़ कर रक्खो है इसका निश्चय मै कल पूर्णानंदजी को मील क करूंगा तोभी कृपा करके आप शिघ्र प्रत्युत्तर लिख भेजना जिस से और सब व्यवस्था मैं कर सकु. । केशवलाल निर्भराम जी का सब हिसाब का निकाला करादिया है । वो कुच्छ विचित्र बुद्धिका

मनुष्य हो गया है इस विषय में आप पधारोंगे नंतर सब विदित किया जायगा अब कुच्छ अपना इन्हसे संबंध नहीं।

सब आर्य्यसमास्थोंने मनुष्य गणना होगी जब आपकी आज्ञा-नुसार (जो मुलतान आर्य्यसमाज ने विदित की) पत्रक भरदेने का अतरंगसभामें ठहराव हुआ है जो सब समाजस्थोंको विदित किया जायगा.

सब समाजस्थोंके नमस्ते
मैहु आपका
आज्ञांकित सेवक
सेवकलाल कृष्णदास
मंत्री आर्य्यसमाज

ता. क.

रा. रतनसी कवीको राव बहादुर गोपालरावजीने पत्र आपको देने के लिये दीया है।

---

(८)

मुंबई १८८३
ता० ६ जान्युआरी

यत आपका कृपा पत्र पढ़ते ही अत्यानन्द हुआ मे थोडे

दिनों से दक्षिण में आकोला शहेर जो बीराडके मुल में है गया था सो आगया हु।

घडी बेचर्ता लेली है दो दिन तपास के आपकी आज्ञानुसार भेजदीजायगी। गौ की सही समाज के वृत्तांत क सब समाचार मंगल के दिन आपकी सेवा मे भेजदुंगा। याह के सब विशेष समाचार कृपा कर लिखवा भेजना इति.

मैंहुं आपका आज्ञांकित् सेवक
सेवकलाल कृष्णदास

---

(९)

मुंबई, ता० १९ जानेवारी १८८३

श्रीमत्पंडित स्वामी दयानन्द सरस्वती जी प्रति—

नमस्ते, आपका कृपापत्र ता० १७ मी जानेवारी का पत्र भजा हुआ हमको आज मिला उसको पढ़ के आनन्दित हुआ त्रड़ी और गऊ के सही का कागज़ कल भेजदूंगा. मैं आकोला को और नाशिकादि शहरों को फिरने को गया था सो आगया हूं और समाजस्थान का भी सब हिसाब कल पत्र क साथ भेजदूंगा कि जिसस आपको सब हाल विदित होजायगा. विठ्ठल कल हम

को मिलाया उस को लेने देने के लिये आप के लिखे मुजब कर देंगे अलमितिवि० इति०

मैंहूं आपका आज्ञांकित
सेवकलाल कृष्णदास

---

(१०)

मुंबई० ता० २० जानेवारी १८८३ ई०

श्री मत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य अनेक गुण संपन्न वेदविहिताचार धर्म्मनिरूपक दयानन्द सरस्वती स्वामी जी प्रति नमस्ते

आप का कृपापत्र दूसरा कल मिलते ही आप को प्रत्युत्तर में पोस्टकार्ड कल भेजा सो पहुंचा होगा। **गोरक्षा के पत्रक जिसपर १५३२० सहि हुईहैं** सो आज रजिस्टर कर के भेज दीई जायगी जो मिलते ही कृपा करके पहोंच लिखना। घड़ी के लिये आप ने जो पचीस रुपीये का मनीआर्डर भेजा सो पहुंचा है, घड़ी लेके तपासने के लिये रखा है सो आज वा कल प्रोहित उद्धवलाल जी को भेजदीई जायगी, विलंब का कारण एही हैं कि बिना तपासे कभी भेजी जावे वा पीछे से बराबर न चले तो फिर लोटा देनी पड़े और प्रोहित का दिल नाखुष होवे। **अथर्व वेद की टीका और ऋषि छुद** के लिये आप के लिखने के

पूर्व ही कई महिनों से प्रयत्न कर रहे हैं परंतु अबतक कुच्छ प्राप्त हुए नहीं, रावबहादुर **शंकर पांडुरंग पंडित ने कुच्छ टूटा फूटा भाष्य भावनगर से प्राप्त कर लिया है**, जो किसी को देता नहीं हम ने चाणोत्कन्याली में अथर्ववेदी ब्राम्हणों के गृह में ऋषि छंद और भाष्य हैं वैसा एक सामवेदी ब्राम्हण से सुना है, और पत्र लिख के प्रयत्न भी कर रहे हैं, मिलते ही आप को भेजदिया जायगा। आर्य्य समाज के मंदिर का काम जमीन के ऊपर ४ फूट तक ऊंचा सब काले पथर का काम हुवा है, जो सैंकड़ो वर्षों तक मजबूत टिक सकेगा. जिस के ऊपर सब खर्चा अबतक रु० ३०००) होचुके हैं और आप के गये बाद सब रु० आज दीन तक ७१३९) जमा होचुके हैं जिस में आप जब मुंबई में पधारते थे तब रु० ६९६७) जमे हुए थे और आप के गये वाद रु० ९७८) जमा हुए हैं, और पट्टी में रु० ८६४९) भरे गये थे तदनंतर रु० ७२६) कल रात तक भरे गये हैं, जिस में से ९२६ रु० तो जमा होगये बहोत करके उघरानी पहिलेही की बाकी हैं, जिस में ठाकसी नारण जी नें रु० १०००) सेठ द्वार्कादास लल्लु भाई ने २०१) रु० आत्माराम बापुदलवी के रु० ३३) मंच्छा शंकर जयशंकर के रु० २९) वामन आबाजी मोडक के रु० १०) वह सब ग्रहस्थों के चंदे में से कुच्छ जमा हुवा नहीं है दामोदर रुपजी ने रु० १२९) में से रु० ९०) दीए हैं

पुर्षोत्तम भगवानदास रेशमी कापड़ वालेने १००) रु० में से रु० ५०) दिये हैं और श्यामजी विश्राम के रु० १०००) में से रु० ५००) आये वह आप जानते हों. अर्थात् सब मिल्के ९३७५) रु० पट्टी में भरे गये हैं इस में ७१४९) रु० जमा हुए और * २२४०) रुपीयों की उघरानी हैं। जिस में ५००) रुपये तो श्यामजी विश्राम के तो आने के ही नहीं और ठाकरसी भी १०००) रुपीये में से कुछ देवें वैसा लगता नहीं क्योंकि इस का हात बड़ा तंगी में है और द्वार्कादास अभी थोड़े २ करके देने को कहते हैं, अर्थात् ६०० सो ७०० रुपीये तक उघरानी बड़े परीश्रम से जमा होगी। जिस में अभी रु० ६००) तक हमारे पास से खर्चे गये हैं, क्योंकि जो काम बंद कर देवें तो फिर प्रारंभ होना बड़ा कठीन है जिस से थोडे कारगीरि रख के धीरे २ काम चलाता हूं सो आप को विदितार्थ लिखा है।

रावबहादूर गोपालराव हरी देशमुख परसों रात्री को मुंबई में पधारे हैं जिस को लेके हम, सुंदरदास और लीलाधर आदी कल रात्री को दो तीन ठीकाने चंदा भरवाने को गयेथे जिस मेंसे जीवनदास इवजी शीवजी ने रु० २००) भर दिये हैं और जहां तक रावबहादूर यहां है वहां तक एकांतरे को चंदा भरानेके लिये जाने का अनुबंध किया है। शेठ लक्ष्मी दास खाम जा के पास रावबहादूर आदि कई बखत गये उन्हों ने काम देखने के लिये

* नोट—९३७५ में से ७१४९. निकालने पर शेष २२२६ बचता है परन्तु यहां २२४० शेष लिखा है।

आने का कहा है परन्तु अबतक आये नहीं और इन्हों के थोड़े दिनों में रुपैये २००००) लेके एक बेपारी ने दिवाला निकाल दिया है जिस से हम ने भी थोड़े दिन इन्हों के पास जाने का मोकूफ रखा है, सेठ छबिलदास लल्लु भाई ने अबतक कुच्छ चंदा भरा नहीं मात्र आप के आज्ञानुसार प्रतिमास मुलजी ठाकरसी के पिता को रु० ७) खाने को देते हैं। सूर्यवंशमणी उदयपुर के महाराणा जी राजधर्म पढ़ते हैं यह पढ़ते ही अति आनंद हुआ; जहां तक हमारे राजे महाराजे धर्म्माधर्म्मको याथातथ्य न समजेंगे वहां तक हमारे देश की राज्य और धर्म्म व्यवस्था अतिउत्तम कभी न चली और चलसकेगी। षड्दर्शनों का याथातथ्य भाषांतर होगा तबही शास्त्रों के नाम से जो पोलपाल चलरही है सो निर्मूल होगी। सेठ मथुरा दास लवजी कल रात को सेठ जिवराज बालू के दूकान पर मिलेथे इसी को आप के आसिर्बचन कहे हैं और इन्हों के पास निरुक्त के दो अंक दूसरे आगये हैं सो आप को भेजने के लिये आज भेज देने वाले हैं वह मिलते ही आप को पोष्ट द्वारा भेज दिये जायंगे। विठ्ठल रसोया अभी हमारे पास आगया है उन्हों ने कहा कि लालजी महाराज पर स्वामी जी का पत्र आगया है जिसमें हम को तुम्हारा पगार देने के लिये लिखा है जिस लिये हम सोमवार के दिन बाल्केश्वर जाके पत्र पढ़ के उन को दे देंगे क्योंकि लालजी महाराज के शरीर को अच्छा

नहीं वह शहर में आ नहीं सकते। रावबहादूर गोपालरावहरी देशमूख जी का उदयपुरादि शहरों देखने आने की इच्छा है सो मास दीढ मास से यहां से निकलने को चाहते हैं और चाहे तो हम भी उन के साथ देखने चले आवें और आप के दर्शन का अमूल्य लाभ लेवें। इस पत्र के साथ आर्य्यसमाज के टीपखाते की जमा उधार की यादी आप को विज्ञापनार्थ भेजदीई है जिससे आप को जमा उधार सब विदित हो जायगा यह यादि हमने प्रथम नाशिक गये के पूर्व तय्यार कराई थी परंतु अब आज दिन तक का सब इस में दाखल करके आप को भेज दीई है। गोकरुणानिधी का जो अंग्रेजी भाषांतर हुवा है सो हमारा छपवा देने का निश्चय हैं परन्तु लाहौर में जो आर्य्य नामक जो अंग्रेजी मासीकपत्र प्रकाशित होता है उसी में छपवा के फिर इसी का पुस्तक बनवा के छपवा देना कि जिस से यह पुस्तक के ऊपर कोई विरुद्ध वा पुष्टी में लिखे वे भी उसी के साथ ही विवेचन होके छप सके इस विषय में आप का क्या अभिप्राय है सो कृपा करके लिख भेजना। गिरानंद का एक पत्र हम को किसनगढ़ का लिखा मिला है इस में उन्हों ने पतंजल महाभाष्य मंगवाया है और पुस्तक मिले बाद दाम भेजने का भी पत्र में लिखा है परन्तु इसि के पिता आदि मनुष्य कैसे है वह हम नहीं जानता इस लिये भेजा नहीं है और किसी दुकानदार के पास मिलता भी नहीं इस

से आप जो आज्ञा करो तो हम भेजदेंगे । रामानंद जी को हमारे नमस्ते कहना । अलमिति वि० इति ॥

मैं हूं आप का आज्ञांकित सेवक
सेवकलाल कृष्णदास
मंत्री आर्य्यस० मुंबई.

---

(११)

मुंबई, ता० २९ जून सन १८८३ ई०

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य अनेक गुणसम्पन्न वेदविहिताचार धर्म्म निरूपक दयानन्द सरस्वती स्वामी जी प्रति—

नमस्ते,

यत आपके आज्ञानुसार एक उत्तम घड़ी लेके प्रोहित उदयलालजी को ता० १२ जून को उदयपूर को भेजदी है, जो तेईस रुपीये में लीइ थी जिसकी बिल्टी की रसीद मिलगई. और हमने शेष रुपीये दोके लिये प्रोहितजी को पत्र लिखा है कि वे जो आज्ञा करे तो मनीआर्डर वा पोस्ट की टिकट लेके उन्हों को भेज दूं. परन्तु अबतक प्रत्युत्तर मिला नहीं मिलतेहि भेज दिया जायगा और जो इन्होको वे घड़ी पसन्त न हो तो पीछे लौट देने से रुपीये सब भेज दूंगा वेदभाष्य का सब हिसाब ता० १६ जून तकका

मुन्शी समर्थ दानजीको प्रयागको भेज दिया है. जिस्की प्रत आपकी इच्छा हो ओर आप आज्ञा करो तो आपको भी भेज दूंगा. परन्तु इस हिसाब में हमको जो वैदिक यंत्रालय से पुस्तक भेजे गए हैं उसीका हिसाब जो कि हमने कंई महींनों से ख़त लिखके मंगवाया है तो भी अबतक मिला नहीं. जिस्से हमने ओर पुस्तक मंगवाना बंद करदिया है. क्योंकि हम सब हिसाब साफ रखने चाहते हैं।

कराची आर्य्य समाज वाले स्वामी आलारामजी डेढ़ मास हुआ मुंबई में पधारे हैं. और प्रति रविवारको व्याख्यान भी देते हैं. आधुनिक वेदान्तके नाना प्रकार के वादों को बहुत अच्छी प्रकार खण्डन करते हैं. मात्र संस्कृत नहीं जानते जिनका अभ्यास करनेका प्रारम्भ किया है और इसी के ऊपर रात्र दिन बहोत प्रयत्न करते हैं. ओर प्रसङ्गोपात वैदिक धर्म्म का उपदेश भी करते हैं. जिन्होंका रेहने के लिये आर्य्यसमाज स्थान में और भोजनादिके लिये भी मैं और सुन्दरदास, लीलाधर ने बंदोबस्त किया है, वे दो तीन मास मुंबई में ठहरने चाहते हैं. पश्चात् आपका दर्शन करके चाहे कई मास आपके पास ठहरके अध्ययन करेंगे वा आप आज्ञा करेंगे वहां जायगे. वैसा इन्होंका इरादा है।

शेठ छबिलदास लल्लुभाई के पुत्र रामदास विलायतमें पढ़ने को गए हैं जिन्होंके पत्रोंपरसे यह विदित होता है कि वे कंई

दिन तक आक्सफोर्डमें पं० श्यामजी के साथ रहकर क्याम्ब्रीजके पाठशाला में पढने को गए हैं. सो आपको विज्ञापनार्थ लिखा है।

मुंबई आर्य्यसमाज का स्थान बांधने का काम सांप्रत थोड़े ही कामदार लगा के लेना पड़ता है क्योंकि चार मासमें दो सो रुपीयों से जियादा पट्टीमें भरेगए नहीं. और शेठ ठाकरशी नारणजी, द्वार्कादास लल्लुभाई और दामोदर काका आदि ग्रहस्थोंने जो प्रथम पट्टीमें आपके समक्ष रुपीये भर दिये थे इन्होंने अबतक कुच्छ दिया नहीं. पंधरह सो १५००) रुपीये प्रथमकी उघराणी के बाकी हैं. बहोत धक्के देके देते २ करते अबतक कुच्छ भी दिया नहीं. और नाभी नहीं कहते. शेठ छबिलदास लल्लुभाईनें अब तक कुच्छ भरा नहीं. शेख लखमीदास खीमजी स्थान देख के फिर भर देने को कहते हैं और स्थान देखने आने को अवकाश नहीं. अर्थात् यह भी टालाटाली करते हैं. और मास्तर प्राणजीवन-दास आठ दिन में सभा में बराबर हाजर रहते हैं, और व्याख्यान की बराबर व्यवस्था करते हैं, और ओर कार्य्य करने को इनको भी अवकाश नहीं. और सुन्दरदास, लीलाधर कभी २ पट्टी भराने की तजवीज में प्रयत्न करते हैं. परन्तु इन्हों को भी अवकाश नहीं अर्थात् सब कों अपने २ धन्दा रोजगार की पूर्ण उन्नती करने की अभिलाषा है- हमने यह थोड़े कामदारों से काम सुरु रक्खा तो भी १०००) रुपीयों से ज़ियादा हमारी गीरा से खर्च कर चुके

हैं तो भी समाजस्थों के नेत्र नहीं खुल्ते. यह ऐसाहि चलेगा तो हमको भी आगे काम बंद कर देना पडेगा- क्योंकि धन ओर तन से किसी की साह्यता नहीं. आप प्रथम यहां पधारे थे तव व्याख्यानादी में जो व्यय हुआ है सो करने के लिये आप को कव हुकम हुआ था वैसे २ क्षुद्र प्रश्न अन्तरङ्ग सभा में दामोदर का-कादि प्रभृति निकाल्ते हैं. कि जिस्से अव्यवस्था होने से दाम देना न पडे- यह तो ठीक है कि ओर समाजस्थ वैसे नादान नहीं हैं. क्योंकि वे समझते हैं कि दाम न देने के लिये यह सब प्रपंच है परन्तु यह पक्ष होने से प्रति १९ दिन में अन्तरङ्ग सभा दो मास हुए बराबर होती है. और कोई अन्तरंग सभा के आज्ञा विना एक पाई भी खर्चने नहीं सकते. और जिस्सेहि हमने विठ्ठल को रुपीये ४०) कोशाध्यक्ष के पास से दिलाने के लिए अन्तरङ्ग सभा को पत्र लिखके विठ्ठल को भी उसी दिन बुलाया था. और अन्तरङ्ग सभा ने शेठ माधवदास रुघनाथदास के यहां से मंगा के देने के लिए २९ दीन हुआ हुकम किया था. परन्तु अव तक वे रुपीये दिए नहीं जिस्से हमने लीलाधर और सुन्दरदास जी को कहा कि यह ठीक होता नहीं. विठ्ठल को तूर्त रुपीये देने चाहिए. जिस्से इन्होंने कहा कि यह अन्तरङ्ग सभा तक कभी जो कोशाध्यक्ष रुपीये नहीं देंगे तो हम देंगे विठ्ठल को अन्तरङ्ग सभा के दिन बुला लेना परन्तु कल विठ्ठल हमारे घर को आया था उनने कहा

कि स्वामी जी ने मनीआर्डर करके रु० ४०) लाल जी महाराज को भेज दिए थे. जो इन्होंने हम को दे दीए हैं. अब हम स्वामी जी के पास जाने को चाहते हैं. इस लिये आप स्वामी जी को लिख के सम्मती मंगा के हमको कह दीजिए वैसा ही मैं तूर्त रवाना होजाऊंगा इस लिए आपका विठ्ठल को भेजने के लिए क्या अभिप्राय है ? सो कृपा करके लिख भेजीए.

हम विठ्ठल को ४०) रुपीये देने के लिए कभी बिलंब न करते. परन्तु आप मुंबई में पधारे इसी के पूर्व से फाल्गुन तक हम को समाज में से समाज के लिए जो २ खर्च किया है इसी में से एक कवडी भी फिर मिली नहीं. और जब २ अन्तरङ्ग सभा में यह विषय मैं निकालता हूं तब सब एक मत होके कहते हैं कि इसका विचार आगे होगा. परन्तु कभी लेने देने के लिए विचार करते नहीं. और समाज स्थान का काम चलता है इसके कामदारों और माल मसाले वालों को साम्प्रत हमकोहि देना पडता है. लगभग सब मिलके निदान ३०००) रुपीयों तक हमारे रोक रहे हैं. जिसी का ख्याल कोई करते नहीं. जिस्से हमने आपकी भी प्रथम विनती कीई थी । कि इन्हों को कभी आप लिखेंगे तो अवश्य यह मोह-रूपी निद्रा लगी है इसमें से जागृत होंगे. गत अन्तरङ्ग सभा में हमने प्रयत्न करके ठाकरशी आदि समाजस्थों को बांध काम का

विचार करने के लिए बुलाए थे। तो इन्होंने प्रथम की न्याई बड़ी २ लम्बी चोडी बातें करके रुपीये भेज देने का भी कबूल किया जिसको आज १२ दिन हुए. जिसके लिए रोज आदमी जाता है. दो वखत मैं भी गया था परन्तु अब तक कुच्छ नहीं. यह व्यवस्था है सो आपको विज्ञापनार्थ लिखा है.

हमारे शरीरको कंई दिन अच्छा नहीं था और सुरत नाशिकादिस्थानोंमें कार्यवशात् गया था और खांडेराव काभी शरीर अच्छा न होने से वह भी मुलुखको गया था. जिस्से आपके पत्रों के प्रत्युत्तर नहीं लिखें. सो आप कृपा करके क्षमा करोंगे. और कुच्छ विशेप कार्य्य हो कृपा करके दासको लिखते रहें.

राव बहादूर गोपालराव हरी देशमूख कंई मास भये मुंबई में नहीं पुणे को हैं. जिस्से वे भी समाजकार्य में कुच्छ काम नहीं लगते. इन्हों के लड़के लक्ष्मणराव गोपाल देशमुख मुंबईमें आये जब हमको बुलाके आपका पत्ता पुछा और योगके विषय में वे कुच्छ विशेप प्रश्न करने लगे और मुझको कहाकि हम स्वामीजीकी मुलाकात करके इस विषयमें निश्चय करलेनेको चाहतेहैं. जिस्से हमने अजेमर आर्य्यसमाजके ऊपर एक पत्र दियाथा जो आपको अवश्यमिले होंगे. जिसके हाल भी अवकाश होतो कृपा करके आप लिखेंगे। रामानन्द

जी को हमारे नमस्ते कहेना । अलमिति विस्तरेण० इति० ।

मैं हूं आपका आज्ञांकित् सेवक.

सेवकलाल कृष्णदास

मंत्री आर्य्यसमाज. मुंबई,

स्थान खाते का

ता० क० कलके वर्त्तमान पत्र से यह विदित होता है कि, सेठ लक्ष्मीदास खीमजी ने अपने लडकाओ को महराज को बुला के समर्पण दीलाया जिस में गगादास की सोरदास के दरकी भी स्त्रीया सामेल थी........

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की सेवा में

महाशय लाल जी वैजनाथ व्यास बम्बई के पत्र

(१)

॥ श्री ॥

श्री मद्‌जगतगुरु परमहंसपरिवृाजकाचार्य श्री मद्‌दयानंदसरस्वाति जी के चरणारविंद मे सष्टांग नमस्ते पौचे गांव राज्यधानी शायपुरा जाह्ला मेवाड आपकु मालम होवे: के विठल: व्राह्मण: कि चाकरि

कि पगार का: रुपिया च्यालिस ४०) शेवकलाल के पास से दिरा णेका आप कि आग्यापत्र हम कु मिल्या था सो सेवकलाल कु हम ने कहा के रुपये विठल कु देहो: जद बोल्या अछा परंतु आज तक दिया नहि: ओर हम तो मादगी से वहोत बिमार रहे अब आप कि क्रिपा से अछे हे सो विठल रोज हमारे पास आत्ता हे वास्ते आप कृपा करके रुपे का मनिआडर करके हमारे नाम पर भेजो और जलदि से भेजो: सेवकलाल छापखाना प्राग के उपर रुपयै एक हजार से जास्ती बाकि चडि हुई केत्ता हे ओर रुपये दो हजार समाज के उपर बाकि केत्ता हे इस्कारण से रुपये देत्ता नइ हे ओर समाज का मंदिर अटक रहा हे उपर से बरसाद आइ हे: सो खरच बगर काम अटक्या हे सो हमारा विचार एसा हे कि महाराज राणाजी महाराज सायपुरा इन से मदत्त कुछ मिल सके तो कोइ अछे आदमी कु आप के पास भेजे इस्का खुलासा लिखना संवत १९४० ज्येष्ठ बदि ८ नौमे लालजी वैजनाथ इन की तरप से ये पत्र पौंचे

। लालजी वैजनाथ ....

---

(२)

॥ श्रीगुण.... ॥

स्वस्ति श्री जोधपुर नगरे गड महा दुरंगे श्री मद जगत् गुरु

महाराज श्री मद्दयानंद सरस्वति जी महाराज के चरर्णारविं के साष्टां नमस्ते आप कु मालम होवेः बिठल भाणाः व्राह्मणः इस्का चाकरि का रुपीयाः खर्च श्रुद्धांः आज परियंतः सेवकलालः भणशालिः देता नाहिः माश सात हुआः फिरते फिरते थक गयेः जवः आप कुः पत्र २ सायपुरेः भेजे पत्र १ रजिष्टरः जोधपुरः आप कु भेज्याः परंतुः जबाव नईः सोः पत्र आप के पासः पौंच्या नाहिः एषा दिस्ता हेः सो अव ये पत्रः पौंचते रुपियाः मनि आर्डर करके भेजो सेवक्लाल के भरोसे रेणा नइः देकते पत्र रस्ता खर्चः वयगार का पइसा मिल् करः जल्दि भेजोः और आप आनंद मे रेणाः ओर वां कि हकिगत आनंद की लिखनाः समाज का कोमः बहोत्ः अधुरा पडा हेः सोः आप कृपा करके मंदिरः समाच काः बने एशि मदत् जरूर करणाः सेवक्लाल् वाकि प्राग श्रुद्धां रुपये तीन हजारः बोल्ता हेः और समाज का निंचे काः पाया हूआ हेः बाकी सर्व काम्ः पडा हे रुपयेः मिलते नइ हे वास्ते मदत् चइयेः ये विनंती संवत् १९४० ज्येष्ठशुदि ७ भौमवासरे *

---

(३)

॥ श्री ॥

स्वस्ति श्री जोधपुर नग्रे श्रीमद् जगतगुरु महाराज श्रीपरमहंस

---

* अक्षर तो पूर्वपत्र साही है परन्तु इस पत्र पर लालजी वैज-नाथ व्यास का हस्ताक्षर नहीं है ।

परीवृाजकाचार्य श्रीस्वामि जी महाराज दयानंद सरस्वति जी के चर्णार विंद मे साष्टांग नमस्ते पौंचेः पत्रः एक १ आप कि तर्फ सेः ज्येष्ट शुद्ध ७ सप्तामिकाः आज हमकु मिल्याः रुपये ४०) अंके च्यालिकाः मनिआर्डरः भेज्याः सो मिलाः रुपयेः आप कि आग्यानुशारः विठल भाणा ब्राह्मणः कु देकरः रशीदः यो चीठि मे भेज्या हैः सो लेनाः और उस्काः पौंच का जबाब लिखनाः

औरः समाज का कामः निचुकाः पायाः तैयार हुआ नइ हैः काम बंद पडा हेः कारणः कितियेकः समाजस्तः बहोतः अडचन मे हेः वास्तेः काम नइ चल सक्ताः हेः बहोतः तंगी हेः सो बायर से उदेपुरः वगेरेः कोइ विराजा कि तरफ सेः मदत्ः होवेगीः तो अछि हेः आप कु विदित होवै ॥

लालजी वैजनाथ व्यासः

मुकाम मुंवई

---

(४)

॥ श्री ॥

स्वस्ति श्री जोधपुर नग्रेः श्री मद्दयानंद सरस्वतिजीः स्वामिजी केः चर्णारबिंद मे नमस्तेः रुपये ४०) अक्षरी च्यालिसः हमारी चाकरी केः आपने लालजी वैजनाथः व्यासः इनकी मार्फत से हम कु

मिल्या हे: सो आप कु मालम होवे: संवत् १९४० ज्येष्ट शुद्ध १३ चंद्रे:

विठलभाणा ब्राह्मण
मोडचातुरवेदि: कि सइ: मुकाम मुंबइ

---

(९)

॥ श्री ॥

श्रीमद्‌जगतगुरु महाराज परिवृाज का चार्य महाराज श्रीमद् दयानंद सरस्वती जी महाराज के चर्णारबिंद में साष्टांग नमस्ते पौंचे: आगल: आप का: पत्र: हमकु: मिल्या था: विठल: भाणा: कु: भेजणे की: आग्या: थी: परंतु: विठल: के भाइ की: औरत बेमार थी: सो विठल: बडगाम: गया था: ओर: आपकु उदर से: पत्र भेजा: आपने जबाब: उसकु भेजा नइ: सो बिठल मुंबै आया हे: आपाकि: आग्या परमाणे सर्व कबूल हे: परंतु: जोधपुर त्तक: पौंचणे का: खर्च: रुपये: १० दशलक्त्तेहे: सो: भेजणा चैहे: सो भेजणा: अगर: आपकी: आग्या होगी: तो लिखणा: आप के हूकम के अनुकूल होवेगा: और: विठल: जब तक्: आप के अनुकूल: चलेगा: समाज की स्थिति: जो आगूल लिखी थि सो: वो इहे: कुचकम जास्ती: न विलिखणे जैसिहेनहि: ओर ये पत्र का जबाब कृपा कर के: जलदि लिखना: और पत्र पर ठिकाणा: ममादेवी: भगवान्दाशः

बिहारीलाल जी के: दुकान पर पौचे: एसा लिखना: संवत् १९४० भाद्रपद: शुक्लपक्ष ७ बृष्टी बौत हे: पत्र भेज्या मुबै से लालजी वैजनाथ के साष्टांग: नमस्ते पोचै:

---

(६)

॥ श्री ॥

स्वस्ति श्री जोधपुरनग्रे श्रीमद् जगत्गुरु परिव्राजका चार्य श्रीमद्दयानंद सरस्वस्ति जी के चर्णारविंद मे लालजी वैजनाथ का नमस्ते पौचे: और आप को पत्र: रजिष्टर: दिया था जिस्मे: विठल भाणा कु: आप के पास: भेजणे का: हुकम: मगाया था: सो: आप ने अभि: तकू: उस्का: जबाब नहीं लीखा: इस वास्ते: छेला कागद: आपकु: लिखतेहे: कि: आप का मरजी: परमाणे: आणे के वास्ते उस्कु त्तइयार किया हे: और: आप ने बुलाया था: उस वक्त: वो गुजराथ मेगया था: अभि वो गुजराथ मे शे आया: जब उस्कु समजा कर: आपकु पत्र लिखा: और: वो जिवत्त तक आप कि बंदगी करेगा: सो आपकु रखना मंजूर होवे: या ना रखना होवे: त्तो: उस्का: खुलासा: हमकु: लिख कर भेज देना: उस्कु चाकरी: बौत्त: मिलति हे: परंतु: आप का लिखणा: और: आप के आग्यानूसार: चलने वाला हे: इस वास्ते आपकु: अरज करते हे: के: फेर: हात्तमे: आदमी आवणा: मुस्कल हे: सो: आप: पत्र का: उत्तर लिखना और: समाज की: स्थिति

जेसीः आग लीखे माफक हेः औरः हम आप के किरपासेः आनंद हेः पत्र का जबाब उस्सः रः ठिकानाः भगवान्दाशः विहारीलाल सेठः। इन कि दुकान ठिकाणा ममादेवी कर देनाः संवत १९४० आश्वीन् वदि ४ गुरु त्तारीक २० सप्त्तंबरः

श्रीमत्परहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री १०८ स्वामी
दयानंद सरस्वती जी महाराज की सेवा में
श्रीयुत महाशय केशवलाल निर्भयराम सूरत के पत्रः—

(१)

सूरत ता० १६ मार्च १८८०

महाराजा धीराज पंडित दयानंद सरस्वति स्वामी जी
काशी

आप कि कृपा दृष्टि का पत्र हाल बहुत मास से मीला नहीं सो कृपा कर के भेजना संस्कार विधि का काम आपने वहुत बडा दिया दीख पडता क्युं की अब ४ वर्ष हुआ मेरा नाणा मेरे घर आया नही प्रथम तो देखा की ९०० नकल का दाम आया उस मे से मेरेकु देना आपकु अवश्य होता सो न कीया फेर मेरे से वे मालुम पुस्तक मुंबई से मंगवालीया तब मेने रु० की खातर लीखा तो आप ने उत्तर दीया हीसाब सब भेजो हीसाब आये से रु० तुरत भेज देगा परंतु तुमने मात्र लीखा की या तो कुच्छ नही

ओर मेने हीसाव भेजा तव तो आपने पत्र व्यवहार ही ही बंध कर दीया तो मेरे कु पंडित सुंदरलाल जी कु लीखना पडा फीर आपने लीखा हीसाव निःसंदेह नही उनकु भि ८ मास होगया परंतु मालुम हुआ नही की अव तक हिसाव निःसंदेह हुआ कि आप का संदेह नहीं जाता सो कुछ मालुम नहीं होता हम थोडे ज्ञान वाले लोक लंबा संदेह की बात नही करते और कोई करे तो उनकी शोभा बनी न रहती और आपकु जो पत्र लीखता उन का जवाब भी नही आता अच्छा आपकु एसाइ करना चाहीये ओर हमारा देश एसीइ दुर्दशा में रहना चाहीये क्योंकि व्यवहार अच्छा नहीं सो देश की बढती नही होती एसा आप का मत हमने बहुत दीनो से स्वीकार कर लिया है कृपा रखना।

ला० आप का सेवक केशवलाल निर्भयराम

---

(२)

सूरत ता० ९ एप्रील १८८०

महाराज पंडित स्वामी दयानंद सरस्वति जी काशी

आप का कृपा पत्र ता० ३१ मार्च का आज आया उस्से बहुत आनंद हुआ की १० मास पीछे आप का पत्र द्वारा दर्शन हुआ आपने सब हीसाब और पत्र देख के सार निकाला और मेरा ता० ३१ दिसंबर १८७८ का पत्र मे ४०९॥। चार सौ

पौने दस रुपैये बाकी मैंने नीकाली और ता० ३० आगष्ट १८७९ के मेरा पत्र मे जो बाकी नीकाली है सो दोनो बाकी आप ने कबुल रखी सो ठीक हैं परन्तु ता० ३० आगष्ट का उक्त पत्र में बाकी ४२९।।।≡ चार सौ पौनी छब्बीस रुपैया और तीन आना है के ५२९।।।≡ पांच सौ पौनी छबीस रुपैया तीन आना है सो तपास करके लीखीये संस्कार विधि की मुल्ल रकम ५०९।≡ की थी उस पर २ बरस का सुद लगा तो ५४९=) हुआ उसमे से विक्रय सब जात का पुस्तकों का मोल वाद कीया गया अर्थात जमा करा गया तो संवत १९३४ का अंत पर्यत ४०९।।। रुपैया हुआ आप जो मोल बाद करते हो सो फेर दुसरी वखत बाद हो जाता है सो भूल होती है सो सहज आप की ध्यान में आजायगी और पत्र जल्दी देना और उनमें लीखना कि सब हिसाब का निश्चय कीया ता० ३१ मी डीसंबर १८७८ का पत्र मुजब ४०९।।। बराबर है और रुपैया आप से जीत्ता बने उत्ता हाल भेजना सो मुंबइ में प्राण जीवनदास का हानदास कु पाओ मेरा भाइ शंकरलाल निर्भयराम मुंबइ में है उनकु पीछानता है उनकु पावती नाम रसीद ले के देना और जो बाकी रहेगा सो पीछाडी से देना उस की फीकर नहीं जो अपनी प्रीती बनी रहै तो इस से ज्यादा क्या है प्रत्युतर शीघ्र देना—

ला० सेवक केशवलाल निर्भयराम
का प्रणाम वाचना

श्रीमत् परहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की सेवा में ।

बम्बई प्रान्त के अन्यान्य भिन्न २ महाशयों के पत्र ।

मु: **चीखली** जिल्ले सुरत, वाया बिल्लिमोरा.

ता० ५६-१२-८१

ॐ

नमः सर्वात्मने श्रीजगदीश्वराय ।

॥ विज्ञापन पत्र ॥

स्वाति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य अनेक गुण सम्पन्न विराजमान श्रीमद्वेद विहिताचार्य धर्म निरूपक श्रीमच्छ्रेष्टोपमा युक्त सकलोत्तम गुण भूषित जगद्विख्यात पंडित श्रीयुत स्वामी दयानन्द सरस्वति जी प्रति चीखली जिल्हे सूरतसेली० आज्ञानुयायी सेवक कविमनः सुखरामत्र्यम्बकराम के साष्टांगदंडवत् प्रणाम आप, आप की परमपवित्र सेवा में मान्य कीजिये. विशेष नम्रतापूर्वक विनंति यह हैं कि, परम दयालु परमात्मा की कृपा से और आप जैसे परम प्रतिष्ठित सद्गुरू की सहाय से मैं कुशल और आनंदित् हूं आप की कुशलता का वर्त्तमान समाचार से ज्ञात

होने को सेवक शुद्ध अंतःकरण से प्रतिदिन अत्यंत उत्सुकता पूर्वक मार्ग प्रतिक्षा कर रहा हैं अर्थात् आप आप का महा असूल्य समय में से मात्र एक पांच मिनिट का अवकाश मिला कर मैं एक आपका अज्ञान—बालक की हठ पूर्ण करने के लिये पत्र दर्शनका अतिदुर्लभ लाभ देनेकी श्रम लेके कृपाकर दीजिये. सेवक की उक्त दरखास्त को आप की और से यद्किंचित भी टेका मिलने से सेवक का अंतःकरण में कृतार्थ होगये समान आनन्द पैदा होवैगा ! आशा करता हूं कि इस पत्र में अधोलिखित और निम्नलिखित हकीकतादिक के संबन्ध मे आप का हस्ताक्षर साहित पत्रिका अवश्य आप की और से शीघ्र प्राप्त होजावैगी इतना आरंभ ही से विस्तार करने का सत्य क्या प्रयोजन हैं सो आपने यथावत् समज लिया होगा तो भी निवेदन करता हूं कि, सेवक ने आप के ऊपर पूर्व एक पत्र भेजा था जिन को आज अनुमान न्यून से न्यून पांच—छे मास हुए होगे तौ भी उन का अब तक मुझ को कुछ भी उत्तर मिला नहीं है. अस्तु. इस बात का मेरे मन में कुछ अंदेशा नहीं हैं. क्योंकि, आप को ऋग्वेदादि मन्त्र भाष्य बनाने में भोजन करने की भी फुरसत मिलनी मुश्कील हैं तौ पत्र आदिकों के यथावत् उत्तर लिख भेजने का अवकाश मिलना यह तौ केवल असंभवित ही हैं सो मैं बरोबर जानता हूं.

स्वामिजी महाराज !,

जैसे चंदन वृक्ष के मूल मे भुजंग रहते हैं, शाखा के विषै बंदर, शिखर के विषे विहंगम, और कुसुमादि के विषैं भ्रमरादि प्राणी निवास कर के उन को पीडा करते हैं तथापि चंदन वृक्ष अपना शीतलता आदि गुण कदापि छोडता नहीं हैं !!! वैसे ही मेरे जैसे अज्ञान जन निरर्थक आप को, आप ने आरंभित उत्त-मोत्तम धर्म कार्य मे वारम्बार ध्वंश कर के अमौल्य काल को व्यर्थ व्यातित करने की युक्ति रच के नाहक सताते रहते हैं तो भी आप अपना धैर्य से कभी मुक्त होते नहीं हों किंतु शांत वृत्ति रख के बडी गंभीरता से सभी के चित्त का समाधान करते हो यह बात मुझे कुछ कमती आश्चर्य पैदा करने वाली नहीं हैं !!!. हम आर्यावर्तीय—भारत वासियो का और भारत भूमि का धनभाग्य है कि, जिस समय इस देश भर मे चारो और पाखंड धर्मरूप अमावास्या का घोर अंधकार फैल रहा है ऐसा अंधकार का लाभ ले के केवल स्वार्थी ठग धर्माचार्य रूपी शृगाल आदिक हिंसक प्रानी अपना अपना स्वार्थ—शिकार—शत्र के ऊपर बडे आनंद मे जहां वहां सर्वत्र झूक रहे थे— हैं उस समय वहां आप जैसे भारत भूषण पुरूषोत्तम नरवीर पंचानन को किंव्मा अज्ञान तिमिर छेदक दिवाकर को परमदयालु परमाने उत्पन्न किये. जिन की भयंकर गर्जना और प्रचडंशब्द—तेज सून वा देख के उक्त प्रानी

केवल भय भीत हो गये हैं और दूर ही से देख वा सुन के भागते फिरते हैं और छीप जाते हैं किन्तु किसी की क्षण भर भी सन्मुख होने की शक्ति दिख पडती नहीं हैं अर्थात् सब विमुख ही हो गये हैं.

अब आप को विदित् करने की मेरी मूल मतलब क्या हैं सो विदित् करता हूं:—

स्वामी जी महाराज, आरंभ से लेके आज दिन पर्यंत आपने जिन २ विषयों के ऊपर जहां २ व्याख्यान दिये हैं वह सभों का संग्रह (सत्यार्थप्रकाश के बिना अन्य) पुस्तक के आकार मे मुद्रित होके प्रकाशित हुआ हैं ? और यदि कोई लिया चाहैं तौ कहीं भी मिल सकेगा ? "अहमदाबाद गुजरात वर्नाक्युलर सोसैटी" ने अवल "दयानन्द सरस्वति नु भाषण" नाम ग्रंथ की मात्र एक प्रत उक्त पुस्तकालय मे रखने के लिये खरीद करके ली हैं जिनकी कीमत रु० ०॥ु हैं वह पुस्तक कौनसा हैं ? मंत्र भाष्य मे जो लिस्ट दिया जाता हैं सो मुझे यथावत् मालूम हैं अर्थात् उससें भिन्न अब यहां से इस पत्र बंद करने की आज्ञा लेता हूं. इस पत्र बडी त्वरा से लिखा गया है इस लिये अनेक दोष आपके दिखने मे आवैगा वह सभो को कृपा करके क्षमा कीजिये और श्रम लेके प्रति उत्तर का लाभ सत्वर

दीजिये. ईति विज्ञप्ति. किमधिकम् ता० २६–१२–८१

मु:–चीखली जिल्हे सूरत. वाया बिली मोरा. } हस्ताक्षर कविमनः सुखराम त्र्यम्बकराम

---

(१)

तपोनीधी स्वामी महाराज

मुकाम मंबई

सेवक खंडेराव पाडुरंग का नम्र नमोनारायण. आपने कृपा करके खत भेजा सो पोहचा हाल मालुम हुवा. आपके ठेरने के वास्ते जगा भान दादा के बाग में तजवीज की हे. वाहा पर पानी भी आछा हे. दुसरी जगा बस्ती मे घानी सोय कर नहीं हे. आप जीस रोज आवगे उस संघ्याना देवेंगे. ताबेदार सेवा करने में हाजर हे. हम पर द्रष्टी रहे. हेवीदन्यापना तरीख २७ माहे मई सन् १८८२ ई मुकाम खंडवा.

खंडेराय पाडुरंग
का. क्लार्कआफ़स कोर्ट.

(२)

॥ श्री

तपोनीधी स्वामी माहाराज

मुकाम बंबई

सेवक खंडेराव पाडुरंग का नमोनरायण. आपको चारि दीन हुये कार्ड चीठी के जवाब मे भेजा पोहच गया होगा. आब आप बंबई से कव चलेंगे लीखेंगे. जगा आप के वास्ते बस्ती मे श्रीमंत राव साहाब मुसकुठी बरानपुर वाले ईन की हावेली तजवीज कर रखी है. और वग मे भी जगा पहले देख रखी हे. वो भी मील जावेगी. क्योके माहाराज सीधींप सरकार की सवारी कब आवेगी पका हाल नहीं मालुम होता. आब ईन दो जगे मे से जो जगा आप पसंत करेंगे वाहा पर सामान रखवाने का बंदोवस्त कीया जायगा. बस्ती मे जरा आड़चण होगी. वाग मे हावा पानी का सुख हे. लेकीन बस्ती मे आपकी आने के सीधे जरा फासला होगा. आगर बरसाद न पडेगी तो बाग मे सब तजवीज करेंगे आपको मालुम होनेकु वीनंती की हे चलने के आवल क्रपा करके खबर भेजेंगे तो आछा होगा जास मे बंदोबस्त कीया जायगा. हे वींद न्याय पन्थां १७ माहे जुन १८८२ मुगे खंडवा

खंडराव पाडुरंग

का. क्लार्क आफ कार्ट

———

उं=श्रो

बंबै से संमत् १९४० वैषाख सुद ९ मंगलवार आश्रम सायेपुरा-माहा शुभस्थांन्य

श्री सद गुरु-सत्यवेद धरम प्रकास कर्णार=जक्त प्रसीध श्रीमहान् स्वामी जी दयानन्द-सरस्वती जी की पवीत्र सेवा

गौ आदि प्राणी-रक्षण के प्रयोग बीषे में मैं आप के पास-उदेपुर-आता था-इतें में-कानपुर अदालत में मुकदमा लडने कुं जाना हुवा जव आपकुं मै सुचीपत्र लीखाथा उसी की पौच आप कानपुर आर्यसमाज में भेजी सो मंत्रीने मेरेकुं बंचाई ओर आप के हस्ताक्षरकुं बोहोत प्रेमसें मैं डंडव्रत कीया ओर उदेपुर सीघ्र आने का वीचार था परतु कचेरी में चार मैने लग गहे पीछे फेसला हुवा जब कानपुर सें नीकल के चैत्र सुदी १२ के दीने मैं अजमीर पेंाच कें मंत्री मुंनालाल के घरकुं दो बषत सायेपुरे की रस्ते की सला: पुछीवेकुं गया. तोभी मंत्री मीला नही और बहोत गरमी पडने से. सरीर प्रक्रती फीर गेही. जब अजमीर सें अेकदम. चैत्र सुदी १९ के दीन मैं बंबै आय पेंाचा. अब सरीर में आरांम है= ओर गोरक्षण बाबत सीघ्र कांम करनेंकुं मेरे प्राण. तलप रहे है. मगर थोडा बर्षा पडनें पीछे. श्रावण महीनें मे. आपकु मीलवे की मैं इछा रखता हौं=

अब अपना अस्थांन. सायेपुरे में है. सो बर्षारतु में भी. ही हां

ही होयगा. की. ओर ठीकांने. नीवास होयगा. सो सबका. ठीकाना. पता. आपकी तरफ सें. लीख आना चहीयें=

बंबेकी. आर्यसमाज की. बीबस्था. बाहोत कमजोर. देख कें. बोहोत. पश्चातप हो रया हे. सो समाजकुं. अछी स्थीती में लानी चाहीयें. अेसे काम बास्ते आपकुं अवस्य मीलने चाता हौं=ओर आपकुं. फुरसद नही होयेगी तोभी. ईस पत्र की पौच. आप सीधी. डांक में मेरे नामकी लीख भेजना. ठीकाना. बंदरपर. मुडी बजार में. ठकर. ईबजी. उमरसी. की. दुकांन में पौंचे. ईसमुजब. ठीकाना लीखने से पत्र सीघ्र पौच सकेगा. ओर कभी मंत्री सेवकलाल के पत्र में. मेरे पत्र का हाल. ओर पौंच लीखोगे तो. मेरेकुं बोहोत. तकलीप होयगी. सो केंसकी सेवकलाल के. घरकुं. दीनप्रती जावे. अेसे पांच. आठ दीन तक. चाकरी का कांम छोड कें जावे. जब कोई बषत मीले तोभी. दो चार मीलटसें ईनकुं. अधीक फुरसद मीले. सो मेरे देखीवे में नही आती अैसी अपुरणता सें. कोई कार्य सीध नही हो सकता. ईसी बसते आप कृपा करकें. मेरे नाम. पर पौच डाकमें भेजोगे तो जलदी सें. सब बात मेरे जानवे में आवेगी. तो उन की पौंच भी. सीघ्र लीखवेमें आवेगी ओर आपके प्रताप सें. सब कार्य सीघ्र. सीध हो सकेगा=येही मेरी प्रार्थना का आप स्वीकार करोगे= ओर पत्र की. पौंच लीखोगे=

लिखितम्=जोसीलाल जी कल्याण जी के डंडब्रत बांचने

अनुपम. मुकुटमणी पूज्नीक

श्रीमद्दयानंद सरस्वती स्वामी प्रति

आपको कृपापत्र चैत्र विद १० मी को लीखो सहापुरा सें आयो सो पंहुच्यो माथे चढाय लीओ समाचार बांचकें अवर्णनीय आनंद भयो. सेवकलाल का पत्र आपकुं ठीक २ नहि मिल्ते सो सेवकलाल कुं जंजाल बहुत रहता और बीच में दो तीन वख्त बाहार फिरनें कुं काम प्रसंग से जाना पडा था. मेरे सें पत्रव्यवहार रखने की आपनें इंछा जनाई सो मे सेवकलाल सें दश पट आलसुओं का सिरदार हूं. आपनें समाचार मंगवाय सो लिखता हुं।

१ घडी के लीये सेवकलाल सें पुछने पर विदित हुआ की आपनें जीस मेकर की घडी मंगवाई सो इहां तैयार न थी आजकल विलायत सें आने वाली थी आगई होगी तो भेजदी जायगी ऐसा उतर मिला.

२ समरथ दान नें रु १.५० भेज कर टईप मंगवाय सो पूछने से जाना गया की उस्का काम चलता हें तैयार होने से भेज दीया जायगा दस बारा दिन में तैयार हो जायगा

३ आर्यस्थान का काम थोडा थोडा चलता हैं तीन चार हजार का काम बाकी है सो सत्र कामदार आलसु होने सें पुरा नहि होता हमारे मित्रों सें हम महिने में एक दो रकम लेते हें परंतु

उस्से कुछ पुरा न होवे. राओ साहेब आदी सब एक चित्त में लग जावे तो दीख पडता हें की रु ५००० तक हो जावे.

महाराजा ने जो दीये सो आपनें लीखा सो जान कर बहुत आनंद हुआ:—

इहां को चैत्र का उत्सव बडा आनंद से हुआ और जो आए सो सब प्रशन्न हुऐ. बाकी का हम ठीक ठीक चला जाता हें सो जानोगे

मुंबई संवत् १९३९ के चैत्र सुक्ल १५ शनीश्चर

ला० आपके सेवक **लीलाधर हरिदास** का साष्टांग डंडवत् प्रणाम *

खुबचंद श्रीनासीक
केवलचंद
नं० १७९

॥ श्री ॥

॥ श्रीयुत दयानंद स्वामी जी
मुंबई

॥ नमस्ते

केवलचंद खुबचंद सेठ के नाम नाम से आज तक वेद भाष्य

---

* अन्त में अन्य भाषा के अक्षरों में आठ पंक्तियां लिखी हुई है जो कि पढ़ी न गईं।

के हिसाब बाकी समेत आ वल से, वसुल समेत उतार कर भेजने की आज्ञा होणे के वास्ते बीनंती है—

द. केवल का

ता० १५ फेब्रु० ८२ बुद्ध०

स्वामी जी.

विनय पूर्वक विज्ञापना यह हे कि गत वक्त बुद्धि वर्धक सभा में आप का व्याख्यान हो न सका इस में वहोत गम खा के यह ठहराने का बिचार रखता हों की काल शिवरात्रि कों सायंकाल आप व्याख्यान करें । आप कों कोई भी हरकत हो तो सेवक कों लिखें। कलाक कलाक टपाल निकलता हे सो आप ऐसे हि कार्ड पर लिख पाओगे तीन बजे तक आप का खत की राह देख रहा हूं । फिर इश्वर चाहे आदमी भेजना पडेगा ।

सेवक. बु. स. मंत्री

खत इस पते पर भेजीये ।

माणिलाल नभुभाई द्विवेदी

गीरगाम. मोरारजी गोकलदास वाला

मुबाई.

पण्डितेश्वर दयानंद सरस्वति

में आपकुं विनय पूर्व्वक ए लिखने कुं इच्छता हुं. जो भारत बर्ष निवासी विषेशतः ए मुंबाई शहेर के रहने वारे, विधवा विवाह करना वा न करना ईस विषय परस्पर में बहु तर्क वितर्क करे हैं कोई केहते हैं जो ए करना उचीत हैं और कोई कहैते है जो ओ अनूचीत हें एसी खट पट चलि रहि हैं और में एसा सुना है जो आप आगामी शनिवार अर्थात् कल्य सायंकाल के समय महाजन वाडी में आख्यान करोगे सो एसी आशा रखता हुं जो आप ये उपर लिखा हुआ विषय पर कूच्छ मात्र आख्यान करि के आर्यों का संदेह दूरि कृत करोगे.

श्रीमत परमहंस परिव्राजकचार्य श्री १०८ स्वामी दयानंद सरस्वती जी महाराज की ओर से रेवरेंडजासेफ़ कुक साहव को पत्र

REPLY TO MR. JOSEPH COOK.

(*From PANDIT DAYANANDA SARASWATI to Mr. JOSEPH COOK.*)

WALKESHWAR, BOMBAY

January 18, 1882.

Sir,—In your public lectures you have affirmed—

---

* इस पत्र के अन्त में पत्र प्रेषक का नाम नहीं है।

(1) That Christianity is of Divine origin.

(2) That it is destined to overspread the earth.

(3) That no other religion is of divine origine.

In reply, I maintain that neither of these propositions is true. If you are prepared to make them good, and to ask the people of Aryavarta to accept your statements without proof. I will be happy to meet you for discussion. I name next Sunday evening at 5-30, at which time I am to lecture at Framji Cowasji Institute. Or, if that should not be convenient to you, then you may name your own time and place in Bombay. As neither of us speakes the other's language, I stipulate that our respective arguments shall be translated to the other, and that a short-hand report of the same shall be signed by us both. The discussion must also be held in the presence of respectable witnesses brought by each party, of whom at least three or four shall sign the report with us; and the whole to be placed in a pamphlet form, so that the public may judge for themselves which religion is most divine.

दयानन्द सरस्वती,
i. e **DAYANAND Saraswati**

अनुवाद

पण्डित दयानन्द सरस्वती स्वामी की ओर से
मिस्टर जासेफ़कुक साहब के पास
वालकेश्वर बम्बई
जनवरी १८ । १८८२

महाशय !

आपने अपने सर्वसाधारण व्याख्यानों में निश्चय पूर्वक कथन किया है कि

(१) कृश्चिन धर्म्म ईश्वर मूलक है ।

(२) यह पृथिवी भर में अवश्य ही विस्तृत हो जायगा।

(३) अन्य कोई भी धर्म्म ईश्वर मूलक नहीं है ।

उत्तर में मेरा कथन है कि उक्त प्रतिज्ञाओं में से एक भी ठीक नहीं है । यदि आप उक्त प्रतिज्ञाओं को यथार्थ सिद्ध करना चाहते हैं और आर्यवर्तनिवासियों को अपने कथनों को बिना प्रमाण प्रस्तुत किए स्वीकृत कराना नहीं चाहते तो मैं प्रसन्नता पूर्वक आप से शास्त्रार्थ करने के लिये उद्यत रहूंगा । आगामि-रविवार सन्ध्या समय ५ १/२ साढ़े पांच बजे जब कि मैं फ़्रामजी का-वसजी इंस्टिटिउट में व्याख्यान दूंगा। शास्त्रार्थ के लिए नियत करता

हूं। यदि उक्त समय आप की सुविधा का न हो तो आप अपनी इच्छानुसार कोई समय तथा बम्बई का कोई स्थान शास्त्रार्थ के लिए नियत करें। क्योंकि हम दोनों में से कोई भी एक दूसरे की भाषा नहीं बोल सक्ता अतः मैं निर्धारित करता हूं कि मेरे तर्क आप को और आप के तर्क मुझको अनुवादित कर सुना दिए जांए और हम दोनों के कथन संक्षिप्त लेखबद्ध होकर उन पर हम दोनों के हस्ताक्षर हो जांय। आप की ओर तथा मेरी ओर से प्रतिष्ठित साक्षियों का भी शास्त्रार्थ में विद्यमान रहना आवश्यक है जिन में से तीन वा चार को उक्त संक्षिप्त लेख पर हम लोगों के साथ हस्ताक्षर भी करना पड़ेगा। उक्त शास्त्रार्थ पुस्तकाकार छप कर सर्वसाधारण के सन्मुख प्रस्तुत किया जायगा जिसे देख कर लोग अपने लिए निश्चय कर लेंगे कि कौन सा धर्म्म श्रेष्ठ ईश्वरोक्त है।
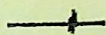
श्रीयुत महाशय शिवलाल मुकंद मुम्बई का पत्र। *

ओं

श्री ६ स्वामी जी महाराज शेति जग लिखित वम्बई शे वालमकन्द की प्रनाम भोत कर्के आगे रुपिया २९०) केश्वलाल

---

* इस पत्र के पृष्ठ पर लिखा है "पत्र पहुंचे आगरे, स्वामी जी श्री दयानन्द जी के पास" और आगरा डाकघर का मोहर २ मार्च का है।

निर्भयराम कू प्राण जीवनदास मसटर के मारफत दे दिया है रसीद चूकते कि फरुखावाद कू भेज दि है रुपिया ३१॥) पुस्तक चतुर्थ वर्ष के वेदभष्य तक के आपका जमा किया वाकि २१८॥) फरुकावाद से सूजरे लिये मै आप कि कृपा शे भात खुसि हुँ आपको धर्मातमा देव खुसि राखै पत्र उल्टा दीजियो सव हाल लिखियो

फल्गुण वदि चतुर्दसि

ओ३म्

पत्र व्यवहार।

भाग (ख)

सिद्ध श्री ९ स्वामी दयानंद सरस्वती जी महाराज को मुथरदास का प्रणाम पहोचे आप का पोस्टकार्ड आया हाल मालूम हुआ मैंने आजकी तारीख में मनी आर्डर १००) का आप के समीप भेज दिया है–बाकी १००) पीछे से भेज दूंगा–मैंने आप की आज्ञा के बिना एक मुर्खता की है वह यह है कि वेदभाष्य भूमिका का अति संक्षेप से खुलासा कर के उर्दूक्षरों में छपवाया हैं और उस में यह विज्ञापन भी दे दिया है कि जो कोई मेरी लिखी हुई बात बेदभूमिका से विरुद्ध हो वह मेरी भूल है ग्रंथ की भूल न्हीं है फिर मुझ को यह सोच हुआ कि बिना स्वामी जी महाराज की आज्ञा के क्यों मैंने उस को छपवाया–अब २०० पुस्तकें उर्दू की मेरे पास है मैंनें आज तक उन को प्रचलित न्हीं करी और ना कहीं भेजी–जो आप आज्ञा करो तो सारी पुस्तकें आप के समीप भेजदूं में उस का खर्च भी लेना न्ही चाहिता जो आप उन को पसंद करें तो बैदिक यंत्रालय में रखा कर बिका देवें और उस का मुल्य यंत्रालय में खर्च हो जावे।

मुथरादास–मियामीर

श्रीयुत महाशय काशीराम जी मुल्तान का पत्र

(ख) २

ओम्

श्रीयुत परमहंस परिब्राजकाचार्य सर्वोपकारी दिग्विजयीय श्री ३ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के चरण कमल में प्रणति तति शुभदायका पहुंचे दश दिन हुवे कि स्वामी सहजानन्द सरस्वती जी फरीदकोटराज ओ फीरोजपुर आर्यसमाज से इस स्थान में पहुंचे ओर आर्यसमाज मुलतान में अनेक विषयों में व्याख्यान प्रदान किये जिस से हम सब आर्यस्थ तथा अन्य लोग भी आनन्दित हुवे ओर स्वामी जी अभी तक इसी जगह स्थित हैं ओर व्याख्यान दे रहे हैं हम उन को धन्यवाद देते हैं कि ऐसे सुललित व्याख्यान सत्यशास्त्रादि प्रमाण युक्त से हम लोगों को सुशिक्षित कर रहे हैं और अन्य स्थानों में भी करें आशा है कि यदि इसी प्रकार दो चार ओर उपदेशक महात्मा आप की कृपा से हों तो अति शीघ्र देशोन्नति हो जावे ओर सत्यधर्म प्रकाशित होवे ।

ओर धन्यवादपत्र जो वैदिक यंत्रालय से आया था उस पर प्रधानादियों के हस्ताक्षर करा के महाराणा उदयपुराधीश की सेवा में भेजा गया है ॥

आशा है कि आप पुनरागमन से हम लोगों को सुशिक्षित करेंगे अवकाशानुसार ॥ विज्ञतमेषु किमधिकम् ।

अप का चरणसेवक

काशीराम

उपप्रधान आर्य समाज

मुलतान

१९ जूलाई १८८३

श्रीयुत महाशय गोपाल सहाय जी करनाल का पत्र

(ख) ३

ओ३म्

आर्य्यसमाज

करनाल

श्रीयुत मान्यवर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज नमस्ते ॥

विदित हो कि यहां श्रीस्वामी आत्मानन्द सरस्वती जी के उपदेश से आर्य्यसमाज स्थापित हुई है और इस समाज में मुन्शी शिवप्रसाद साहब मजिस्ट्रेट व बाबू गोपालदास साहब इञ्जीनियर करनाल प्रधान उपप्रधान हैं इस लिये आप से निवेदन करते हैं कि

आप कभी कृपा कर के यहां सुशोभित हों कि यह महा पोपों का नगर है और ७ अक्तूबर को स्वा० आ० स० जी यहां से जावेंगे आप सदैवकाल इस समाज पर कृपा दृष्टि रक्खें ९ । १० ।८३

गोपालसहाय

मन्त्री आर्य्यसमाज, करनाल ।

महाशय श्यामदास जी अमृतसर का पत्र

(ख) ४

ओम् ३

स्वस्तिश्री सर्वशक्तिमते नमः श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती जी को श्यामदास का प्रणाम हो समाचार यह है मैंने आप के पुस्तक सब देखे है परन्तु अनेक संशय है जो आप उत्तर देना स्वीकार करो तो मैं प्रश्न लिख के भेजूं क्योंकि जो आप का आशय है उस्के जानने वाले आप ही हो और आपके शिष्यादिकों का उत्तर आप के उत्तर सम नै होगा॥ आगे षट्दर्शनों के कै एक भाष्य नै मिलते सो आपको मालूम होगा कि कहीं वे सब भाष्य छपे हुए मिल सक्ते है या नै और जो २ गृह्यसूत्र श्रौत्रसूत्र आपने लिखे है वे सब प्रायः नहि मिलते इस्वास्ते यह आशा है कि आप के पास तो वे सब पुस्तक है आप किसी नियम द्वारा देखने वास्ते दे सकोगे वा नै और उप-

बेदों के भी पुस्तक नहि मिलते आयुर्वेद का धन्वन्तरि कृत निघण्टु नहि मिलता सो आप को मालूम होगा कि कहीं छपा है या नहि और नै छपा तो आप के पास तो होगा आप लिखने वास्ते दे सकोगे और उस्में औषधनाम और गुण मात्र ही लिखा है वा आकार पत्र दुग्ध इत्यादि भी लिखा है इस्का कृपा कर्के उत्तर लिखना जरूर मुझे इस पते पर पत्र भेजना ।

शहिर अमृतसर कटरा खजाने का बाग चौधरी की गली में

शामदास,

महाशय शिवनाथ लक्ष्मीनारायण विद्यार्थी गवर्नमेंट कालेज लाहौर का पत्र.

(ख) ८

गवर्मिंट कालेज, लाहौर ।

ता० २३–४–८२

श्री ९ पण्डित दयानन्द सरस्वती जी महाराज नमस्ते । हम शिवनाथ और लक्ष्मीनारायण गवर्मिंट कालेज के विद्यार्थी आप के रचित वेदभाष्य को पढना चाहते है और इस कारण हमने प्रियाग मे वैदिक यन्त्रालय मे चिट्ठी भेजी थी और दश १०) रुपये का मनिऔरडर भी भेजा था उस चिट्ठी का उत्तर हम इस मे भेजते हैं

चूंकि हम विद्यार्थी है और बहुत रुपया इकट्ठा नहीं बचा सकते इस कारण हमने उन्हें लिखा था कि हम कम से कम दश रुपये साल भेजते रहेंगे आप हम को प्रथम से आज तक के नम-बर भेज दे और आगे को भेजते रहें और यह भी प्रतिज्ञा की थी कि जब हमारे पास जियदा दाम होंगे तो और भी भेजते रहेंगे बल्कि होसका तो इसी साल के अन्दर पिछली सारी कीमत भेज देंग

अब हमें आशा है कि आप उन्को आज्ञा दे देंगे कि वह हमारी दरखास्त को मंजूर करै और वेदभाष्य पिछले भज दें और आगे को भेजते रहैं

आप के दासानुदास
शिवनाथ औ लक्ष्मीनारायण
स्टूडेंट गवर्मिंट
कालेज लाहौर

SHEO NATHA & LACKSHMI NARAYAN
Students Govt College
LAHORE.

———

श्रीयुत महाशय लेखरामजी मंत्री आ० स० पेशावर का पत्र

(ख) ६

ओं

सिरी स्वामीजी महाराज प्रमात्मा जयते ॥ नमस्ते रिसाले आरया दरपन से जो २१ मई ८२ को जारी हुआ है बुहत शोग हुआ=मुनशी जगन्नाथ दास ने जो आरया प्रश्नोत्री नाम ईक पुस्तक बनाई है ओर आमे उस पर शंका लिख भीजी मुनशी ईंद्रमुनजी प्रधान आरया समाज मुरादाबाद को भी सुनागिआ के आप्ने सखत सुस्त लिखा अब मुनशी जगन्नाथ दास ने आरया दरपन में असे शुबे लेखे हैं ॥ जो आप की तरफ से सब सिमांजो कों शक में लानेवाली हैं अगरचे बसबब बदचलनी बखतावर सिंग कें वोह रिसाला कुल समाजों में नहीं जाता लेकन फिर भी बुहत जाता है महाराज जी असे असे काम सब किता हे के पुखता खेती प्र ओले पणते हैं अब प्राथना ये हे के आप क्रपा कर के चुप हो रहें ओर आगे को असे लाईकों का दिल न तोणो । अगर येह बेनती मेरी आप मानलें तो अबी कुछ नहीं गेआ मानना वाजब हैं वरना निफ़ाक के सबब अेक अेक हो कर सब त्रफ़ फिर वेसा ही अंधेर मच जावेगा मुनशी ईंदरमुनीजी को भी मेने लिखा हे वुह भी उमेद हे के मान जाईंगे आप भी खिमां कीजई

७—६—८२

लेखराम मंत्री
आरया सिमाज पेशावर

सब आरया भायों की ओर से दसबसता नमस्ते भाई करम सिंगजी को भी नमसते ॥

लेखराम—

साधु आलाराम कराची सिन्ध का पत्र ।

(ख) ७

श्री १०८ मन्नमान पण्ड दयानन्द सरस्वती जी नमस्ते ॥

आप को विदित हो कि सिंधु किराची इक निर्मला वेद विरुध पुराण मतवादी और दूसरा रुद्रदत ब्राह्मण वेद विरुद्ध पुराणवादी अजकल प्रतिमा पूजन सिद्ध कर रहे है किसी ग्रहस्थ द्वारा मुझ से संका मंगा कर वेद प्रमाण से प्रतिमा पूजन की आशा करी और पत्र द्वारा लिख भेजा अर्थात त्वश्रया ये श्लोक लिखा और कहा कि ये ऋिगवेद का श्लोक है फिर मैने इक मयाराम ब्राह्मण और इक बनीए को उस निर्मले पास इस लीइ भेजा कि अपने हाथ की सही डालो जो फलाने अष्टक के फलाने अनुवाक्य का फलाना मंत्र है उस ने सही डाली कि ये यजुर्वेद के आरण्य का वाक्य है फिर रात्र को उस की सफा मे इक बनीइ ने जाकर कहा कि तुम लोगो ने वेद प्रमाण सें प्रतिमा पूजन की आशा करी थी अब वेद-विरुद्ध प्रमाण देकर अपनी प्रतज्ञा की हानी किस लिइ करी अब

ऐसी सही डालो वेद प्रमाण ना देकर जो झूठा हूआ उस का काला मुख कर गद्धा पर चढाना चाहिये इतने मे वह धुर्त बनाइ को बोले कि आवो ना तो हम जूतिया लगाइगे और यह बी हम किसी से सुना है कि दयानन्द जी दस बीस रोज तक सिंद्धु मे आने वाले हैं सो ठीक है वा नही जब आप को वेद मत प्रगट कर्ने की द्रिड आशा है तो सिन्द्धु मै पंज छे महीने इन दिनो मै अवश्य आना चाहिये जब सारी सिंद्ध मै विदित हो जाय कि प्रतिमा पूजन से पाप है तो फिर सब का सुद्धारा होगा मैने तो आप के बनाइ शास्त्र म्रजादा से बहुत वेरी प्रतमा खंडन कीआ है। इस पत्र का समाधान शीघ्र भेजना ॥

हस्ताक्षर **आलाराम्** ॥

और आप के बने पुस्तकों कूं क्रिस्तान के बवोनिर्मला विद्या-हीनोपास बोलता है और यह भी मूर्खोपास कहता है कि कांसी मै दयानन्द को पण्डतो पराजया कीया

———

म० क्षेमकरणदासजी मंत्री आ० स० मुरादाबाद का पत्र
(ख) ८

ओस्

नं० ११ आर्यसमाज, मुरादाबाद।
ता० १७ सितंबर १८८३

सिद्धिश्रीपरमहंस परिब्राजकाचार्य श्री १०८ श्रीमत् स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज समीपेषु जोधपुर
महाशय,

नमस्ते, श्री जगदीश्वर की कृपा और आप के आशीर्वाद से समाज उन्नति पर है। आगे निवेदन हैं कि यह बात देखे जाने पर कि मुक्ति विषय में कहीं २ पर परस्पर विरोध है इस लिये ८ सितंबर १८८३ को ख़ास अंतरंग सभा में मुक्ति विषय देखा गया तो जान पड़ा कि वेदभाष्य भूमिका पृष्ठ १८४, १८७ (मुक्ति विषय) आर्याभिविनय पृष्ठ १६, २३, ४२, ४३, ४४, ४५, ४८, ५५, पंचमहायज्ञविधि पृष्ठ ५६ और आर्योद्देश्य रत्नमाला अंक २९ से साबित होता है कि मुक्त जीव जन्म मरण रहित हो जाता है और संस्कृत वाक्य प्रबोध पृष्ठ ५० में लिखा है कि "जो जीव मुक्त होते हैं वे सर्वदा वहां नहीं रहते किंतु जितना ब्राह्मकल्प का परिमाण है उतने समय तक ब्रह्म में वास कर के आनन्द भोग के फिर जन्म और मरण को अवश्य प्राप्त होते हैं।"

जो कि संस्कृत वाक्य प्रबोध और ऊपर लिखित लेखों में हम तुच्छ बुद्धियों को परस्पर विरोध देख पड़ता है इस लिये अंतरंग सभा की ओर से सविनय निवेदन है कि कृपा कर के इस का उत्तर सप्रमाण शीघ्र लिखिये कि उसी के अनुसार निश्चय माना जावे और विरोध पक्षवालों को भी तदनुसार उचित समय पर उत्तर दिया जावे ॥ अति अवश्य जान कर आप के बहुमूल्य समय में हानि डाली गयी और आशा है कि इस के उत्तर से शीघ्र कृतकृत्य करेंगे ॥ आगे शुभ ॥

आप का आज्ञाकारी

छमकर्णदास

मंत्री आर्यसमाज, मुरादाबाद

श्यामसुन्दर का हाथ जोड़ कर नमस्ते । आप के दर्शनों की मुझ को और सब सभासदों को बड़ी अभिलाषा है ।.

श्रीयुत बाबू लक्ष्मण स्वरूप जी वकील
महला खंदक मेरठ का पत्र ।

(ख) ९

ओं

विद्वद्भूषण चतुर्वेद विचक्षण श्रीमत्स्वामी दयानंद सरस्वती जी

महाराज को लक्ष्मण स्वरूप वकील का प्रणाम—मु० बख़तावरसिंह के मुक़द्दमे के लिये में इलाहाबाद गया था और हाईकोर्ट के वकीलों को मातहत जज शाहजहांपुर की राय दिखलाई ॥ उस वक़्त तो निश्चित् सम्मति नहीं दी परन्तु अब द्वारिका प्रसाद बेनरजी जो बडे बुद्धिमान्, प्रसिद्ध और वकील सर्कार भी हैं इस पत्र द्वारा नजरसानी की सम्मति देते हैं और २००) महनताना मांगते हैं यदि आप उचित जानें तो एक कोरे काग़ज पर अपने हस्ताक्षर क भेज दीजिये—असल चिट्ठी उक्त बाबू जी की आप के देखने को भेजता हूं—

आप का किङ्कर ज्योतिस्स्वरूप सविनय प्रणाम करता है और एक संदेह की निवृत्ति चाहता है—और वह यह है—कि आप के वेदाङ्ग प्रकाश में सिद्धान्त कौमुदी से सूत्र कम मालूम होते हैं— ताद्धितः सिद्धान्त के तद्धित से बहुत कम है—कृपा कर के इसका कारण लिखिये—या तो आप अगले अङ्कों में शेष सूत्र देंगे—या वह पाणिनीयाष्टाध्यायी में नहीं—या छोड़ दिये हैं—मुझ से कई आदमी जो ख़रीदना चाहते हैं पूछ चुके हैं—उत्तर शीघ्र दीजिये-

आप का दास

लक्ष्मण स्वरूप

महल्ला खंदक, मेरठ-

Allahabad:
16th. April 1882.

LALA LUCHMUN SUROOP,

DEAR SIR,

In the case of Dyanund Saruswati. I cannot advise an appeal but the order of the Snb-Judge may be revised by the High Court under Sec. 622 of the Code. If you then you feel disposed to take action in the matter as I have indicated please send me the necessary Vakalatnama from Dyanund Saruswati and a fee of Rupees two Hundred for myself and another Council, who will have to be employed-besides Rupees 16 to cover all other incidental charges expenses.

Yours faithfully,
DWARKA NATH BANERJI.

श्रीयुत महाशय रामशरणदास जी मेरठ के पत्र

(ख) १०

ओ३म्

श्रीस्वामीजी महाराज नमस्ते

आप का २४ फर्वरी का लिखा पत्र बाबू शिवनारायनजी के पास

पहुंचा यहां तक का तो हाल आप को मालूम होगया होगा कि लाला बखतावरसिंह ने पंचायत में अपना मामला फसल कराने से इन्कार किया उस्के पीछे शाहजहांपुर के मातहत जज के यहां १०) रुपये के कागज़ पर नालिश की गई कि जज मातहत इन ही पंचों से मुकद्दमें का फैसला करावे इस्के लिये ९ फरवरी मुक़र्रर हुई यहां से मुन्शी लक्ष्मण स्वरूप और मुन्शी कामता प्रसाद परवी मुकद्दमें के लिये भेजे गये लाला वख्तावरसिंह ने अपनी तर्फ़ से वारिस्ट नियत किये ३ दिन तक वहस रही निदान हाकिम ने हमारा दावा खारिज किया और खर्चा अपना अपना अपने ज़िम्मे । हाकिम ने यह भी कहा कि जो तुम को दावा है तो नम्बरी नालिश अदालत में करो हम पंचायत में मुकद्दमा नहीं भेजेंगे अभी नकल मुकद्दमें की नहीं आई है जब नकल आ जायगी फौरन इस हुक्म का अपील हाईकोर्टमें किया जायगा—

आपने सुना होगा कि कर्नल अल्काट साहिब २९ फरवरी को मेरठ में तशरीफ लाये और यहां थियोसाफीकल सुसाइटी की शाख नियत हुई अव संभव है कि कोई मिम्बर आर्य्यसमाज थियोसाफीकल सुसाटी में होना चाहे या थियोसाफीकल का मिम्बर आर्य्यसमाज में भरती होना चाहे तो इस अवस्था में क्या किया जावे आया थियोसाफीकल सुसाटी के मिम्बर को

आर्यसमाज में भरती करें या नहीं और किसी आर्य को सुसाटी में भरती होने की आज्ञा दे या नहीं और अगर नहीं तो क्यों परन्तु आप को इस्के उत्तर लिखने में इस बात का भी ध्यान रहे कि पहले से भी यह चला आता है कि एक ही मनुष्य दोनो जगह का मिम्बर है और न दोनो सुसाटियों के नियमों में यह बात है कि एक का मिम्बर दूसरी जगह शामिल नहो—

इस्का उत्तर शीघ्र दीजिये।

९ । ३ । ८२ । मैं हूं आपका सेवक
और समाजका मंत्री
राम शरणदास, मेरठ

समाज की तर्फसे नमस्ते पहुंचे

(ख) ११

OM ! TAT SAT ! !

ARYA SAMAJ-MEERUT.

(*Established in 1878, A. D., by the Ven'ble Pandit Daya Nand Saraswati,*

Swami, Vedic Reformer of India, in the Parlour of Lala Ram Saran Das, Land-holder and Resident of Meerut.)

KANUNGOYAN LANE CITY,

No. ४४०

२१ जनवरी सन ८३

To

Dear Sir,

श्रीयुत महामान्यवर स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज नमस्ते ।

आप का पत्र मुन्शी इन्द्रमणि के विज्ञापन समेत जो इन्द्रवज्र के समान था आया मुन्शीजी ने तो अपना विज्ञापन यहाँ नहीं भेजा परन्तु अजमेर और आगरे के समाजों से आप के भेजने से पहिले आगया था—जहाँ २ से मेरठ आर्य्यसमाज में मुन्शीजी के मुकद्दमे के लिये रुपया आया था वहाँ २ को आय और व्यय का लेखा भेज कर शेष के लिये पूछा है कि क्या किया जावे एक प्रति उसकी

की आप के समीप भी भेजी जाती है-अभी केवल फ़र्रुख़ाबाद से उत्तर यह आया है कि रुपये को व्याजू देदो फिर किसी और ऐसे ही काम में लगा दिया जायगा जब सब स्थानो से उत्तर आ जायँगे तब मुन्शीजी के विज्ञापन और मित्रविलास आदि समाचारों के कि जिन्होंने उक्त विषय में धूम मचाई है यथोचित उत्तर नागरी, उर्दू और अंगरेज़ी में दिये जायँ गे-गोरक्षा संबंधी पत्र जो आप के समीप पहुँचे हैं वह मेरठ के समाज ने भेजे हैं उस के पश्चात् और कहीं से नहीं आये जो और भेजे जाते पण्डित विहारीलाल ने जो इस समाज के सभासद थे और थियो सफिकल सुसाइटी में भी होगये थे **अब थियोसफिकल सुसाइटी से इस्तेफ़ा देदिया यहाँ के समाज का पंडित निहस्संदेह पोप है दूसरे पंडित की तलाश है जिस समय मिल जायगा रख लिया जायगा**-सब सभासदों का नमस्ते पहुँचे-अब आप उदय पुर से किधर को पधारेंगें-लाला रामशरणदास का विचार उदयपुर आने का नहीं है। अलमिति

आप का दास,

समाज का उपमंत्री

रामशरणदास,

(ख) १२

ओ३म्

२९ सितंबर १८८३

श्रीमत्स्वामी दयानन्द सरस्वती समीपेषु—

महाशय नमस्ते ।

भाई जवाहिरसिंह प्राइवेट सिक्टरी महाराज शाहपुर के लिखने से विदित हुआ कि आप मसौदे होते हुए कलकत्ते की तुमायसमें जायँ गे—। इस समाज का उत्सव ७ अक्टूबर सन् १८८३ ई० का है जिस के लिये पहिले आप की सेवा में निवेदनपत्र भी भेजा है जहाँ तक संभव हो मेरठ होते हुए जायँ—। क्यों कि आप को इधर आये हुए दो वर्ष से अधिक हुआ सभ्यगण आप के दर्शनाभिलाषी हैं । आप कलकत्ते अवश्य जायँ वहाँ जाने से समाज स्थित होगा और लोगों का बड़ा उपकार होगा चिरकालसे वहाँ* ·········आप के कलकत्ते में पधारने के लिये उत्कंठित होरहे हैं। यहाँ के बहुत से सभासद और मुन्शी लक्ष्मण स्वरूप वकील प्रधान समाज और मैं और कई लोग भी आना चाहते हैं परन्तु जब तक कोई स्थान निश्चित पहिले से न हो जाना कठिन जान पड़ता है यदि आप ने कोई प्रबंध स्थानादि का किया हो तो उससे सूचित

---

* जहां लीडर अर्थात् बिंदियां हैं वह भाग असल पत्र का फट गया है ।

कीजिये जो हम लोग और अन्य सभासद आने का प्रबंध करें। और फ़र्रुखाबाद में जो लाला जगन्नाथदास और बाबू दुर्गा प्रसाद में कुछ परस्पर विरोध होगया है उस की निवृत्ति के लिये एक पत्र अवश्य भेजिये नहीं तो समाज की हानि होगी। और आप मसौदे कब तक जाँयँ गे इस से भी सूचित कीजिये॥

आप का चरण सेवक

रामशरदास

श्रीयुत महाशय कालीचरणजी आर्य्यसमाज (फ़र्रुखाबाद) के पत्र।

(ख) १३

आर्यसमाज फ़र्रुखाबाद

१९-४-८३

मान्यवर

श्री सत्सच्चिदानंदस्वरूपाय परमगुरवे नमः

इस पत्र के साथ भगवगतपुर के पं० महादेव का पत्र पहुंचता है। इस्के आर्यधर्म की ओर सुरुचि की प्रशंसा पं० तुलसीराम मंत्री समाज इटरी ने (जो यहां वार्षिकोत्सव में आए थे) की थी— एतदर्थ यह उत्साही जान पड़ता है

आप की कृपा से १९ अप्रैल को समाजोत्सव खूब आनंद पूर्वक हुआ, मेरठ—कानपुर अकबरपुर—शिवली आदि से आर्य लोग आए थे बडा ही आनंद रहा. शाहपुरा के सुसमाचारों से विदित कीजिए और मान्यपत्र की नकल भेज दीजिए देखने की बहुत इच्छा है

सेवक
कालीचरण

(ख) १४

आर्यसमाज फर्रुखाबाद
ता० १४—६—८३ ई०
नं०

श्रीमत्सच्चिदानंद स्वरूपाय परमगुरवेनमः

मान्यवर

एक प्रति धन्यवादपत्र की वास्ते भेजने महाराणा उदयपुर के मुन्शी समर्थदान जी ने भेजी है उस के अंत में सभापति उपस० मंत्री आदि के हस्ताक्षर होजाने लिखे हैं । अब प्रश्न यह है इस भेजने के विषय में आप की भी सम्मति है वा मुन्शी जी ने ही

स्वतंत्रता पूर्वक लिखा है और सभापति ला० निर्भयराम जी यहां नहीं हैं उन के फिर कैसे हस्ताक्षर होवें, और शेष सब मंत्री, पुस्तकाध्यक्ष आदि सब के ही ततुमुद्रितानुसार हस्ताक्षर होने चाहिए वा दो एक ही प्रधान आदि कै, उत्तर से शीघ्र ही बाधित कीजिए वैसा किया जाय तथा जोधपुर और शाहपुरा के सुसमाचार लिखिए

कालीचरण

अनुचर गणेश प्रसाद लेखा. की बहुत २ नमस्ते

(ख) १८

ॐ

आर्य समाज फर्रुखाबाद
२–९–८३ ई०

श्रीमत्सच्चिदानंद स्वरूपाय परमगुरवे नमः

मान्यवर

कृपा पत्र आया इति वृत ज्ञात किया, मान्यपत्र की प्रति पहुंची, हिसाब देख लिया ३००) रु० की हुन्डी इस पत्र के साथ रखदी है। पाठशाला की यथावत् व्यवस्था दूसरे पत्र में इस के साथ नत्थी है।

वैदिक-प्रेस में पं० रामनाथ को भेजा था इस अंतर में दूसरा मनुष्य वहां नियुक्त हो जाने से रामनाथ लौट आए-यंत्रालय का हिसाब किताब वही खाता दुरुस्त नहीं है। हमारी समझ में जब तक कोई सराफी पढ़ा अच्छा प्रामाणिक मुनीब नहीं रहेगा ताव-त्काल हिसाब ठीक २ नहीं चल सकेगा, यह रुपये का विषय है इस में ठीक २ प्रबंध होना चाहिए आगे जैसी आप की सम्मति हो, उचित जान निवेदन किया, शेष सर्व प्रकार आनंद है। शाह-पुरा के सुसमाचारों से बोधित कीजिए, **कालीचरण**

पूज्यतम. नमस्ते, (इतः सेवाराम की ओर से)

हुन्डी ३००) रु० की बंबई की अपनी कोठी से बालमकुंद परसराम पर भेजते हैं सो लेना, अभी मैं यहीं हूं. चिट्ठी देश की आया करती हैं। ला० निर्भय रामजी के आने में अभी देर है जब तक वे नहीं आवेंगे, मैं यहीं रहूंगा **द: सेवाराम**

श्रीयुत बाबू दुर्गाप्रसाद जी फर्रुख़ाबाद के पत्र

(ख) १६

ॐ

श्रीमन्महाशय मान्यवर श्री ६ स्वामि पादपद्मनिकटे बाबू दुर्गाप्रसादस्य नमस्ततयो भवन्तु श्रीमन् कृपापत्र आपका आया समाचार ज्ञात हुये आपने २ मनुष्यों को वैदिक यन्त्रालय के कार्यार्थ लिखा एक पुस्तक शोधनार्थ और दूसरा पुस्तक और खज़ाने

के सम्हाल के लिये सो पुस्तक शोधनार्थ पण्डित प्रयागदत्त को पूछा तो उसने उत्तर दिया कि २। ४ दिन मे निश्चय कर के कहूंगा सो २। ४ दिन में उसका निश्चय पत्र भेज कर अप को करा दिया जावेगा या तो प्रयाग वैदिक यंत्रालय को जावेंगे या ना करेंगे और कोशादि कार्य के लिये योग्य मुरादाबाद निवासी रामजीमल हैं जो प्रथम कायमगंज ज़िला फर्रुखाबाद में नौकर थे परन्तु वर्त्त-मान काल में वे किसी रईस के यहां नौकर हो चुके हैं उन को लिखा जावेगा यदि वे उक्त कार्य को स्वीकार करें तो शीघ्र ही तो नौकरी वैदिक यंत्रालय से अलग तो न किये जावेंगे यह लिखियेगा और जो अति शीघ्रता हो यदि आप भी पसन्द करें तो तब तक रामनाथ को भेजदूं वह आपके पास रह चुका है

कोशादि का काम शायद कर लेसकेगा शोधक के विषय में निश्चय पूर्वक अनुमान २। ४ दिवस के भीतर आप के पास पत्र भेजा जावेगा और द्वितीय मनुष्य के लिये अन्यसमाजों को भी लिखये मैं भी य तलाश में रहूंगा और आज..................

मंत्री आर्य समाज लाहौर का मेरे पास पत्र आया है उसमें उन्होंने लिखा था कि चिरकाल से श्री स्वामीजी महाराज का कोई पत्र लाहौर समाज को नहीं आया और सब लोगों को उदयपुर सम्बन्धी

* जहां लीडर अर्थात् विन्दियां हैं वह भाग असल पत्र का फटगया है।

समाचारों के जानने की अत्यन्त अभिलाषा हो रही है इसलिये निवेदन आप से किया जाता है कि आप कृपा कर के एक पत्र समाज लाहौर को अवश्य लिखवा भेजियेगा और उदयपुर में भगवत्पादपद्मों की स्थिति अब कब तक रहेगी इस बात से और कोई नवीन बात हो तो सूचित कीजिये नितरांकृपास्तु भृत्यानामुपरि किमधिकं महत्सु मिती माघ शुदि १४ सौमे ता० २० फ० स० ८३ ई० मंत्री आदि सभासदों की नमस्ते लीजिये

ह० आपका कृपाभिलाषी

बाबू दुर्गाप्रसाद

आपके पादपद्म परागसेविनो लक्ष्मीदत्तस्यापि प्रणतितातिः स्वीकार्या

(ख) १७

ओ३म्

श्रीयुत पूज्यतम पादारविन्देषु

कृपापात्रस्य दुर्गाप्रसादस्य नमश्श्रेणयो विलसन्तु भगवन् पत्र आया वृत्त विदित हुआ बड़ा आनन्द हुआ कि आप योधपुराधीश की राजधानी में सुशोभित हुये और वहां के भद्रपुरुषों ने आपके चरणकमलों की दर्शनाभिलाष की आन कर मिले आमों के लिये हमने बनारस को लिख दिया है वहां से आम आप के पास पहुंचेंगे और यहां जब मिलेंगे तब यहां से भी भेजेंगे और

पठन पाठन का प्रबंध आप के लिखे अनुसार किया जावेगा और जोधपुर के जो आगामि काल में वर्त्तमान हो कृपा कर के शीघ्र २ सूचित करण द्वारा अनुगृही करते रहना ।

ह० **बाबू दुर्गाप्रसाद**

ता० ७ जू ८३ मि० ज्ये शु० २ गुरौ

(ख) १८

ॐ

श्रीयुत परमहंस परिव्राजकाचार्य पूज्यपाद श्रीस्वामी जी महाराज कोटिशः प्रणामानन्तर ज्ञात हो कि श्रीमान का कृपापत्र आया समाचार विदित हुआ आदमी के विषय जो लिखा सो यहां तो कोई नहीं मिलता है एक आदमी नारनौल में मिला था आप को लिखा भी था परन्तु आप का उत्तर फिर कुछ नहीं मिला इस लिये अबतक ढील रही अब फिर नारनौल में ढूंढ की जायगी मिलने पर आप को सूचित करूंगा और द्रव्यादि के विषयक जो लेख आया उस्का उत्तर मेरी समझ में यह आता है कि यदि अल्प व्याज अपेक्षित हो तो नोट लेना उचित हैं क्यों कि उस्में बखेड़े नहीं है और जो आप की अनुमत्यनुसार प्रबंध किया जाय जैसा किं आप का लेख है मुझे तो किसी प्रकार कोई बात अस्वीकृत

नही है परन्तु इसमें परामर्श अपेक्षित है पत्र लेख से यथा रीति इस्का प्रवन्ध न हो सकैगा अतः यदि शीतकाल में श्रीमान् ईश्वर कृपा करें वा ऐसे समीपस्थ हों जहां हम लोग सुगम से आपके पास उपस्थित हो सकें तो अच्छा होगा ।

और यह भी इस व्यवहार में प्रथम जानने योग्य वात है कि आपके पास द्रव्य कितना है लिखयेगा जिस से तदनुसार सम्मति दी जाय यह पत्र मैंने केवल अपने विचार से लिखा है ८ । १० दिन में अन्तरङ्ग सभा होने वाली है उस्मे आप का पत्र सभामध्य किया जायगा सभा की जो सम्मति होगी फिर लिख जावेगा और भरतपुर में कोई अपना सम्वन्धी वा मित्र नहीं है जो कि चोर का पता लगा सके और खटाई आप के लिये अवतक रखी है आपने लिखा नहीं सो अपेक्षित हो तो लिखयेगा ।

किम्वहु महाप्राज्ञेषु ता० २४ सि० ८३ ई०

ह० श्रीमदीय **दुर्गाप्रसाद**

म० तारादत्त शर्म्मा फर्रुखावाद के पत्र

(ख) १९

॥ ओ३म् ॥

॥ फर्रुखावाद ॥
॥ तारीष ॥ २१
॥ अगस्त ॥ सं० ८३।83

स्वस्तिश्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्रीमत शकल गुण

गरीष्ठ ब्रह्मकर्मसमर्थ स्वस्त्थ षिल गुण गुणागार कृत विविध वेद वेदाङ्गादि सच्छास्त्राध्ययन विनोद विचार करुणा वार विहित दीन जन निस्तार परम कारुणिक श्री १०८ ॥ जगद्गुरु स्वामी जी महाराज जी जोग्य सेवक तारादत्त शर्माः का सहस्त्रधा प्रणति-तयः शमुल्लशन्तु शमत्र तत्र भवदीयं च नित्यमेधमानमाशासे श्री जगद्गुरु जी महाराज आप की कृपा सुदृष्टी से आर्यसमाज तथा आर्यविद्यालय के समस्त सेवक जन कुशल पूर्वक अप्ना अभीष्ट सिद्ध किया करते हैं और आपके कथानानुशार स्वधर्म्म मै प्रवृत्त हैं और १ आनन्द की वार्ता यह है की १ समाज भोलेपूर मै स्थापन होगया शनिवार के दिन से वहां पर १ क्षत्रि आप का सेवक उद्यत हुवा है और कई एक भद्रजन उस्के उपस्ती हैं और नवीन समाचार कोई नहीं हैं। शुभम्

(ख) २०

ओ३म्

स्वस्तिश्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्रीमत शकल गुणगरीष्ठ ब्रह्मकर्म्म समर्थ श्री १०८ ॥ स्वामीजी महाराज जी योग्य सेवक तारादत्त शर्माः का सहस्त्रधा नमस्ते के अनन्तर

विदित हो कि महाराज जोकी बैषाख मास मै रामानन्द ब्रह्मचारी जी का यहां आना हुवा था उस शमय अहो भाग्य हम लोगों के जो की आप के स्नेहानुकूलात्त्यंत सहायता से शदुपदेशों से प्रफुल्लित कर महान्धाकार शे निकाल कर बाहर किया आशा है की पत्र द्वारा आप भी सेवक प्रती कुछ उपदेश करैंगे और मंत्री आर्य्य-समाज लाला रामचरण जी कहते थे की योधपुर का हल हम को अभी अच्छी तरह से मालूम नही हुआ मै पण्डित लक्ष्मीदत्त जी शे सन्धि विषय पढा करता हूं ॥ इत्यलम्

॥ हस्ताक्षर ॥ तारादत्त शर्म्मा: ॥

सम्बत् ॥ १९४० ॥ फर्रुषाबाद ॥
आषाढ कृष्णैकादश्या ११ शनौ ॥ मुहल्ला नुनिहाई फक्त ॥ *

---

* इस पत्र के पृष्ठ पर श्रीरामानन्दजी ब्रह्मचारी के नाम यह लिखा है-

ओ३म्

"स्वस्तिश्री मित्रवर श्रेष्ठोपमायोग्येषु श्री २ रामानन्द ब्रह्मचारी जी इतः तारादत्त उप्रेतिनो नेकधा प्रणतितय: अत्र कुशलं तत्रास्तु मुष्यात्मा दतञ्च है परमआङ्ग पत्र तुमारे आये समस्त व्यवहार जानै इस वीच वर्षा खूब हो रही है मुझ को आप के पत्र आनै पर परम आनन्द हुवा आप एसे ही स्नेहपत्र और आप का लिषना यथार्थ है आप के स्वभाव का परिचय सदां आप के सुवचनो शे तथा पत्र द्वारा हुवा करता

श्री साधु अमृतराम नवीन वेदान्ती का पत्र

(ख) २१

॥ ओ३म् खंब्रह्म ॥

* ॥ श्रीमद्दयाऽऽनन्द स्वामी की सेवा में प्राऽर्थना श्रीमद्भारतीय प्रजा के अतीव हितकारी हैं अतएव श्रीमान्कों परमेश्वर

है इस मै सन्देह नही कि आप का जो परम कोमल हृदय हमारे कल्याणार्थ अत्यंम स्नेह स्नेआहूनुत और आर्द्र है आगे मेरा सन्धी-विषय कुछ रहा है और त्रिलोचन भी पढ़ते है तथा चम्पा भी पढ़ती है धर्म्मदत सपत्नीक आय गये है रघुवंश पढ़ा करते हैं वृद्ध माता तथा आप की माता और बुआ जी उक्त यत्न करती है और आप का अहर निश चिन्तवन किया करती हैं और कहती हैं की १ वेर और दर्शन हो जाय और मेरी १ वेर इच्छा है की श्री स्वामी जी का दर्शन स्नेह पूर्वक करूं और रामचरण जी ने कहा है की हम को समस्त हाल तहां लिषो और भाई त्रिलोचन का विवाह शरद तथ शिशिर रितु मै अवश्य होगा इस मै कुछ सन्देह नही और अब मै भी समाज मे जाया करता हूं और माता तथा वृद्ध माता बुआ का वहुधा अशीस त्रिलोचन तथा धर्म्मदत निन्यानंद का वहुधा नमस्ते अलमिती विस्तरेण किम् सं० १९४० आषाढ़ कृष्णैकदश्या शनौ

* इसपत्र के सम्बन्ध में श्रीयुत पण्डित गोपालरावहरि जी फ़र्रुख़ाबाद का निम्नाङ्कित पत्र है—

ओ३म्

॥ श्रीयुत साधु मण्डली भूषण बाबा अमृत राम नवीन वेदान्ती जी के चरणों में सविनय निवेदनम् ।

बाबा जी महाराज श्रीमान् जगद्गुरू स्वामी जी महाराज ने अपने

चिरायु करैं श्रीमान् १९९९ मतनकों खंडित करते हैं सो परस्पर पक्षपातीय होनें तैं खंडनीय हैं उक्त मताऽनुसार श्री मत्स्थापित मत का भी खंडन होनें तैं श्रीमान्ने यह निर्णय किया है कि मिथ्याऽभिमान स्वाऽर्थ साधन मैं तत्पर अन्याय का करणां पाप मैं प्रवृत्ति चोरी जारी अनृत भाषण पक्षपात किसी का नुकसान इत्यादि निषिद्ध कर्मों को छोड़नां और इन से विपरीत सद्धर्माऽनुष्ठान करणां इस प्रकार श्रीमत्के मुखाऽरविन्द सें समऽक्ष श्रवण किया है परन्तु शोक की वार्ता यह है कि दयाऽऽनन्द दिग्विजयाऽर्क द्वितीय

एक पत्र के साथ आप का चैत्र वद्य १२ लिखित पत्र मेरे पास भेज कर आज्ञा लिखी कि यद्यपि तुम शुद्ध भाव भावित हो तथापि जब तुम को मेरा यथावत् इतिहास विदित नहीं तो ऐसा इतिहास आगे कदापि मत लिखो क्योंकि थोड़ा भी असत्य सम्पूर्ण सत्य को वाधित करता है और लेख साधू जी का ठीक २ है इत्यादि—इस का उत्तर उन को तथास्तु के व्यातरिक्त और कुछ भी देय वा दातव्य नहीं परन्तु आप से वहुत कुछ प्रार्थना करनी परमावश्य है, महाराज जी आप ने जो कुछ मेरी अशुद्धि दिग्विजयार्क द्वितीय खण्ड में देख लिख सूचित की इस का मैं जितना गुण मानूं वह थोड़ा ही होगा मैंने अपना ग्रन्थ उदयपूर के कितने ही सत्पुरुष और वहां के तथा नाथद्वार के यंत्रालय और मसूदा नगर के मंत्री आदि के पास भेज कर प्रार्थना की थी कि जो कुछ मेरा दोष देखा जाय उस से अवश्य मुझे सूचित करें परन्तु किसी ने उपकृत न किया, धन्य है आप सद्गुरुओं का जन्म, जिस से हम लोग घर वैठे विना परिश्रम पवित्र होते हैं वास्तव्य में आप श्रीयुत ने वहुत ही कुछ मुझे

खंड सामाजिक प्रकरण प्रमाणाऽष्टक के साथवें अष्टक में पृष्ठि १६८ पंक्ति २ वा ६ विषें जलसा चीतोड़ (महाराणां श्री उदयपुराऽर्धांश श्रीमान्दयाऽऽनन्द स्वामी की सेवा मैं दिन में २ वार उपस्थित होते थे यद्यऽपि लाठसाहब के आनें सें महाराणां साहब कों अवकाश कम मिलता था) इतनां ही लिखनें सें महाराणां साहब का २ वक्त पधारणां सिद्ध हो जाता परन्तु आप नृग राजा के गोदान विषय में श्लोक फ़र्माते हैं कि यावत्यः सिकता भूमेर्यावत्यो दिवितारकाः ॥ यावत्यो वर्ष धाराश्च तावतीरऽददं-

---

उपकृत किया दयालु ऐसें ही को कहना चाहिये—यदि आप एतद्विषयक लेख में हमारे श्रीमान् पर दोषारोपण न कर के जो कुछ लिखना था वह केवल मुझ दोषी को ही लिख सन्तोष मानते तो निःसशय विशेष धन्यवादार्ह होते इस का हेतु कदाचित् नवीनत्व ही हो क्योंकि प्राचीन अर्थात् शमादि सम्पत्ति सम्पन्नों से तो कभी अन्यथा व्यवहार हो ही नहीं सकता, तथैव कभी कोई तादृग् बुद्धि पुरुष श्रीमान् सर्वत्र समदृग् जगद्गुरू के उपदेशों में भी द्विविधा नहीं कर सकता न उनके सिद्धान्तों को कोई विचारशील नवीन मत ठहरा सकता है कदाचित् यह कहा जाय कि जो जैसा होता है उस को क्या वै अर्थात् स्वामी जी वैसे ही भासित न होना चाहिये अन्यथा "मल्लाना मशनिर्नृणान् नरवरो" इत्यादि वचन असंगत हो जावेंगे एवमेव जो सब आर्यसमाजी झूठे छली लोभी और दांभिक कहे जाय तो "विनष्ट दृष्टेर्भृमतीव दृश्यते" इत्यादि वचनों का चरितार्थ भी न कर सकोगे ॥ तो इस के उत्तर में **सत्य वचन महाराज** ऐसा ही अवश्य हाथ जोड़ कर हम लोगों को कह देना

स्मगा: १ इति तात्पर्य है झूठ बोलनें वाले को तृप्ति नहिं होती यह आप का फ़र्मानां यथाऽर्थ है (तथाऽपि उक्त नियम विषैं कसर नहिं पड़ने दी, महाराणां साहब नें इति शेष: यह क्या आर्य पुरुषों का समाज है नहि झूठ दम्भाऽऽदिक दोषन तें रहित का नाम आर्य है या कों तो लोभी झूठे दांभिकों का समाज कहनां चाहिये इस प्रकार १ जगह झूठ के लिखनें सें स्थाली पुलाक न्यायतें सर्वत्र झूठ की संभावना हो वै है, अब विचारणां चाहिये कि श्रीमान्के प्रतिष्ठित आर्य गोपाल शर्म्म शास्त्री नैं अनृत क्यों लिखा है क्या

पड़ेगा—इसी भांति जिन्हों ने कभी दर्शनों का दर्शन ही नहीं किया उन के **स्थाली पुलाक न्याय** की भी संभावना जहां वे कर बैठेंगे माननीय होगी और कदाचित् कोई दर्शनी ऐसा ही न्याय करे तो हम लोग **दर्वी रस न्याय** से उस का भी आदर ही करेंगे परन्तु नवीन वेदान्ती जी महाराज आर्यों का वास्तविक सिद्धान्त कुछ और ही होगा अर्थात् वे लोग सत्य को सत्य और असत्य को ही असत्य कहेंगे उन से यह बात कदापि नहीं हो सकती कि सच्चे हज़ार रक्खे हुए रुपयें में किसी प्रकार से कोई खोटा रुपया पड़ गया तो वे **स्थाली पुलाक न्याय** से उन सब रुपयों को खोटा ही बता दें और न यह हो सकता है कि खोटे को सच्चा ही कहें वा तुरन्त उस को निकाल फेंकने का यत्न न करें, अस्तु अत्र तुष्यत्विति न्याये नैव समाधानम् अर्थात् आप श्रीयुत चाहो जिस रीति सन्तुष्ट हों और भले ही श्री स्वामी जी महाराज का आत्मवत् नवीन वा पृथक् मत बतावें आर्यों को भी भर पेट बुरा कहैं, हम लोगों की कुछ तादृश हानि नहीं उपसंहार में मेरी प्रार्थना

श्रीमान् उनकों अधर्म छुड़वाणें का सदुपदेश नहि देते वा स्वयमेव आपके आर्यलोक ग्रंथकर्त्ता तो अधर्माऽऽचरण करें और अन्यों के ताई धर्म रौचिक वाक्य कहि करि निजमत में लेनां और श्रीमान् न्यायशील धर्माऽधर्म के निर्णय में कथन भी करते हैं पक्षपात रहित न्यायाऽऽचरणं धर्म्मः और पक्षपात सहित अन्यायाऽऽचरणमऽधर्मः अतएव हम कों आशा है कि द० दि० द्वि० खं० सा० प्र० प्र० ष्ट० के सातवें अष्टक पृष्ठि १६९ पंक्ति २ वा ६ विषें पक्षपात रहित सत्याऽसत्य विचार करैंगे इति चैत्र वदि १३ गुरुः सं० १९३९

आपका कृपाऽभिलाषी

साधु अमृतराम नवीन वेदाऽन्ती

इदानींतननिवासी शहरबुंदी ठिकानां शुकेश्वर महादेव

कृपा पत्र वगसे चैत्र शुक्ला १२ तक

यही है कि चमा कीजिये और सदैव इसी प्रकार कृपा दृष्टि रख मेरे श्रुत विषयें को निर्दोष करने में प्रति समय सावधान रहें जिस से यह सत्य सेवक कृतकृत्य हो—सत्य जानिये मुझे किञ्चिन्मात्र मिथ्या का पत्त नहीं है और न ऐसे आग्रही को कभी अच्छा समझता हूं आपने जिन पंक्तियें पर आक्षेप किया निःसन्देह वे क्षेपक ही हैं छपने से प्राक् उस तमाम प्रमाण को निकाल देने का यत्न था परन्तु शोक कि मुद्रक नहीं समझा अतएव आप देखिये प्रमाणाष्टक में ८ की जगह ९ प्रमाण

श्रीयुत पण्डित रामाधार जी बाजपेयी लखनऊ के पत्र
(ख) २२
ओम्

लखनौ ता० १ मार्च सन्न १८८२

स्वामि जी नमस्ते

आप का कृपा पत्र आया तारीक २० का लिखा हुआ शनीश्चर के दिन ता० २६ को मिला और जो आप ने लिखा हाल मालूम हुआ और मैंने वैदिक यन्त्रालय को लिखा है कि मेरा

होगये हैं यहां अब यह शंका हो सकती है कि न जाने उससमय ग्रन्थकार अपने किस प्रमाण को निकाल देना चाहता था, इस का समाधान प्रत्येक प्रमाण पर थोड़ी २ दृष्टि करने से यथावत् हो सकता है अर्थात् अच्छे प्रकार निश्चय हो सकता है कि सिवाय ७ सातवें प्रमाण के और कोई ऐसा लचर और पोच ग्रन्थ प्रमाण नहीं जिस पर किसी एक दृढ़ पुरुष की साक्षी न हो अतः जिस को कहता हूं वही एक लेख क्षेपक अर्थात् सुना हुआ एक वृत्तान्त है न नृगराज कथावत् गढ़ा हुआ, सो यह दोष अब तो तभी दूर होगा जब ग्रन्थ फिर कर मुद्रित होगा और वह समय सत्वर ही ईश्वर ने चाहा तो आवेगा तावत् जो आप मेरे दोनों खण्डों को पुनर्वार अपनी निर्मल दृष्टि से अवलोकन कर प्राप्त दोषों से मुझ को अपना जान अवश्य सूचित करेंगे तो बहुमानी हूंगा इस व्यतिरिक्त और भी जब जो सेवा मदुचित जानी पड़े उस की भी आज्ञा सदैव होती रहे विज्ञेषु किं बहुनेतिशम्—

आपका कृपाकांक्षी
गोपालः

२७—४—८३ ई०

हिसाव शीघ्र जांच लेवें और आप की कृपा से मेरे पास आप का हिसाव आद्यंत तक बहुत ठीक है जिस की मैंने एक नकल आप की शरण में भेज दी है और उसी की नकल वैदिक यन्त्रालय में पहुंच गई है और आप के कार्य्य के लीये तन मन और धन अर्पण है जिस कार्य्य में आप सर्वदा प्रवर्ति हैं अैर कोई गडवड यहां के आर्य्यसमाज में नही है और बहुत उत्तम नेम आर्य्य में चलते हैं ॥ हम लोगों को अत्यंत आनन्द की अवस्था है कि जो आप व्याख्यान गोरक्षण के विषय में होता है आशा है कि ऐसे आप के दृढ़ पुरुषार्थ से ईश्वर की कृपानुसार आर्य्यावर्ति देश की बहुत शीघ्र उन्न्यती होगी ॥ विदित हो कि हम लोगों की अभिलाषा आप के दर्शन की बहुत है सो जो आप को अवकाश हो और परिश्रम्य न हो तो ज्येष्ट मास में अवश पावन कीजीये और अगर आप को परिश्रम्य न हो तो १४ अष्ट पहलू मूगों के दाने भेज दीजीये जो कि वज में १४ तोले के होंय और कृपा कर के उन कीमत स्वहस्ताक्षर कर के पत्र में परेरत कर दीजीये ॥

आप का....................

रामाधार बाजपेई

वा यदि कोइ भद्र पुरुष वहां का लखनउ की कोई वस्तु मागे तो हम भेज देंगे और अगर हम किसी की इच्छा करै तो वह भजदे यसा कुछ प्रबन्ध कर दिजिए ॥

(ख) २३

ओ३म्

पण्डित रामाधार वाजपेई

श्री ५ स्वामिने नमस्ते ।

विदित हो कि आप का कृपा पत्र आया और अवलोकन कर अत्यानन्द प्राप्त हुआ । और जो आप ने थीआसाफिष्टों के विषय में लिखा है सो आर्य्यसमाजक कोई पुरुष ने उन का मतावलंबन नहि कीया है और न करेंगे ॥

और आप ने जो यह लिखा है कि तुम समाज में नहीं आते हो इस का क्या कारण है इस का निम्नलिखित अक्षरों में आप को नीचे की पङ्क्तिं में विदित होगा ॥

इस का कारण यह है कि आप की आज्ञा है कि समाज मे व्याख्यान के वखत वेद शास्त्र के सवाय और कोई व्याख्या न हो और इन सभ्य गण पुरुषों ने अनेक नाटकादि पुस्त्यकों के व्याख्यान देने के प्रवन्ध रच रखे हैं ॥

और जो कोई भद्र पुरुष वेद की व्याख्या देता भी है तो उन को वन्द कर के नाटक ही की व्याख्या होती है हासी ठट्ठा समाज में नाटक सुन कर करते हैं । और यह आप को विदित

हो कि समाज मे दो पुरुष बड़े रसक हैं । वोह लोग नाटकादि पुस्त्यकों को ही देखते हैं और उन्हीं की व्याख्या समाज मे देते हैं । उन लोगों का नाम एक वलभद्र मिश्र दूसरे केशोराम पंडिया। और एक रोज का वर्त्तांत है कि मेरे मकान में रविवार को सभा हो रही थी तिस मे एक देहली समाज का पुरुष आया तिस में मैं तो सायंकाल को सन्ध्या करने चला गया और पीछे इन उक्त लिखत पुरुषों ने व्याख्यान का आरम्भ कर दीआ इतने में मै जव आया तौ केशोराम पंडिया अंधेर नगरी का हाल कहते थे तिस में यह व्याख्या थी कि लैलेवो टके सेर मछली और टके सेर बाले जोवन इत्यादि सुन कर व्याख्यान समाप्ति पर देहली समाज के पुरुष वोले कि आप के समाज मे वहुत हछा व्याख्यान होता है॥ सो मैं सुन कर निश्चय कीआ कि इस पुरुष ने समाज की अप्रशंसा की है और सभा में व्याख्यान की जगा पर वैठ कर कहा कि यह हमारे समाज के नियमानुसार व्याख्या नहीं हुई जो केशोराम जी ने दीया है ॥ हमा समाज में केवल वेद व्याख्या होता है यह पण्डित जी कहीं से कृपा कर के नाटकादि सुना देते हैं सो अव आशा है कि यह व्याख्या समाज में इंदे को न हो ॥ सो यह सुन कर सभ चुप रहे औ दूसरे रोज कहने लगे कि समाज के वास्ते अन्य मकान लीया जाता है तुम चलोगे या नही तव मैंने कहा कि मुझ को उस स्थान मे जा कर कर क्या लाभ होगा

सवाय नाटकादिको के तब केशोराम पंडिया बोले कि आप ही के मकान में समाज होगा परन्तु अंगीकार करें कि हम चाहे जैसी व्याख्या दें औ तुम टोको न तब मैंने कहा कि मैं कुछ मकान के अभिमान से नही कहता हूं हां जहां समाजक नेमों से विरुद्ध व्याख्या होगी मैं वहां ही टोकूंगा तब कुछ काल पीछे इन लोगों ने अमीनाबाद मे जा कर मकान लीया उस मे यथेछा नाटकादि का व्याख्यान हुंआ करता है ॥ और मेरे मकान में वेद व्याख्या हर रविवार को होती है । रामसेवक परमहंस उपनाम्ना पण्डित वेद और गोकल पण्डित व्याख्यान देते है औ व्याख्यानानन्तर सन्ध्या और अग्निहोत्र हो कर प्रशाद बांटा जा है इस की सभ लोक प्रशंसा करते हैं ॥ और आये गये का सतकार भी होता है जैसे भगवत्यादि जब समाज मे आई थी तो किसी पुरुष ने समाज में उन का सतकार नही कीआ तब मैने सोचा कि स्वामि जी के पास से यो यह आई है इस का सतकार न करना वडे अपमान की बात है।

दूसरे रोज मैं अपने मकान पर ले जा कर उन का सतकार खाने पीने का कीआ और तीन रो टिका कर व्याख्यान भी स्त्रीयों में दवाया और वा. तीन रोज के मेरट को गई ।

और हाल यह है कि दयाराम नाम शर्मा यंत्रालयाधिकारी की भी मुझ को वडा गड वड देख पडता है क्योंकि मैने आप के पुराने हिसाब

में उन को चालीस रुपये भेजे और कहा कि तुम यह रुपये किसी अंक पर छाप देवो और मेरे नाम एक आने के कागज़ पर रसीद भेज देवो उस ने न रसीद भेजा और न मेरे नाम से किसी अंक पर छापा और जोकि वेदभाष्य के ग्राहक आठ रुपये सालियाना देते हैं उन लोगों का नाम भी कहा कि सभ के नाम से प्रथक् २ छापा करो उस को भी नहीं छापा है सो यह बडा गोल माल देख पडता है। मै अब जब आप कृपा कर के आवेंगे तो आप के निवेदन बाकी के ९२) रुपये करूंगा और पीछे का अंक जो ऋग्वेद का आया है उस पर बाबू हरनाम प्रशाद का नाम छापा है सो यह ठीक नही है क्योंकि वोह चार रुपये सालिआना देते हैं और के नाम प्रथक् छापना चाहीये ।

और यंत्रालय का हाल मैं समर्थदान को भी लिखा है ।

और यह प्रार्थना है कि जे कर आप को अवकाश हो तो और कुछ परिश्रम्य न हो तो आप न्वम्बर महीने की ता. २९ में लाट साहिब आवेंगे दूसरी दिसवर तक रहेंगे उस मे रजावाडा लोक वहुत आवेंगे आप कृपा करें तो वहुत उत्तम होगा और प्रार्थना है कि इस चिठी का जुवाव शीघ्र दीजीयेगा क्योंकि जे कर आने का आप का नियत हो तो मकान का प्रवन्ध कीया जावे और जो २

समान आप के भार प्रवन्ध का हो उस का निरणय आप सभ लिखीयेगा ।

आप का सेवक

रामाधार वाजपेई

(ख) २४

श्रीयुत पण्डित इन्द्रनारायण जी लखनऊ के पत्र
इस समाज की कार्य्यवाही सहित ।

(ओ३म्)

आर्य्यसमाज

(अङ्क ३०) लखनौ–

ता० २८ अक्टूबर १८८२

श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती महाशय,
समीपेषु

स्वामिन्नमस्ते;

आज आप की सेवा में पत्र समर्पित करने से एक प्रकार का हर्ष और विषाद उत्पन्न होता है हर्ष का कारण यह है कि प्रथम ही यह मेरा पत्र आप की दृष्टिगोचर होगा–और विषाद

का कारण यह है कि आप इस को पढ़ और सत्यासत्य को जान एक कल्पित माननीय पुरुष की ओर से आप को घृणा होगी—

आपका पत्र समाज में आया जिस में कि लड़कों की समाज और नाटिकादि प्रहशन करना जो कि आर्य्यों का धर्म नहीं करना लिखा है हां यह कहां तक सत्य है. यह आप पत्र पढ़ विचार लेंगें. परन्तु शोक मुझ को इतना ही है कि आप को किस बुद्धिमान पुरुष ने ऐसा मिथ्यत्व लिख भेजा है–

इस समाज मे पण्डित् रामाधार जी वाजपेई और रामशेवक जी के अतिरिक्त और वही सभासद बने हैं जो प्रथम में थे, तो क्या प्रथम में ये सब बूढ़े थे और अब लड़के हो गये हैं ? तौ क्या एक ही पुरुष के प्रथक होने से यह लड़कों की समाज होगई–लेखक को ऐसा अनुचित लिखना कदापि उचित नहीं था–

लेखक के लिखने से ज्ञात होता है कि नाटक विषय में आप ऐसा समझे हैं कि समाजिक पुरुष नाटकाकार लीला करते हैं अथवा स्वरूप भर भर के खेल खेलते हैं यह भी उस की लिखावट निर्मूल ही है–यहां उपनियमानुकूल जब वेद कथन हो चुकता है तब धर्म और देशोन्नति विषयो में सभासद लोग व्याख्यान तथा किसी धर्म अथवा देशोन्नति सम्बधी पुस्तकों से

चुन चुन कर उत्तमोत्तम विषय पढ़ कर सुनाये जाते हैं-केवल एक दिन जब वेदादि विषय हो चुके थे तब पण्डित् केशवराम जी ने सभा की अनुमति लेकर एक देशोन्नति विषयक नवीन नाटिका पढ़ी, और जब उक्त महाशय पढ़ चुके थे तब पण्डित् रामाधार जी ने नाटिका पढ़ने से निषेध किया उस समय को छोड़ कर अद्य पर्य्यंत नाटकाकार पुस्तक से कोई विषय नहीं पढा गया. परंतु यह कहना कि नाटकाकार विषय न पढे जावे यह तब हो सकता है कि जब भारत सुदशा प्रवर्तकादि पत्रो में नाटकाकार विषय मुद्रित न हो अधिकतर शोक मुझ को और मेरे सब सभासदों को इस वात का है कि पण्डित् रामाधार जी वाजपेई उप प्रधान और रामसेवक जो इस समाज के माननीय पुरुष थे उन्हों ने एक वारगी अपना चोला ऐसा पलट दिया है कि जिस का सब वृत्तान्त मंत्री समाज के पत्र से (जो इस के साथ भेजा जात है) विदित होंगे जिस से कि लड़कों का खेल तथा नाटिकादि का होना सम्पूर्ण रूप से आप को ज्ञात हो जायगा. यह पत्र मास १।। का समय व्यतीत हुआ आप की सेवा में भेजने के लिये लिखा गया था परन्तु यह समझ कर कि ऐसे माननीय पुरुष के समाचार ऐसे शीघ्र आप तक पहुँचाना उचित न जान कर अब तक रोक लिया था—अर्थात् प्रथम उक्त महाशय के लघु भ्राता पण्डित् रामदुलारे जी वाजपेयि जो प्रथम

इस समाज के मंत्री रह चुके हैं और आज कल आगरे मे हैं इस विषय में लिखा, परन्तु वह उस समय में कुछ प्रयत्न न कर शके तव सव सभासदों की सम्मति से यह पत्र आप को लिखा गया परन्तु यह पत्र आप की सेवा में भेजा नहीं गया था कि इस समय में पण्डित् रामदुलारे जी छुट्टी लेकर यहां आन पहुँचे, तौ इस पत्र को फिरि आप की सेवा में भेजना उचित न समझा क्यों कि उक्त महाशय से इस कार्य्य के सुफल होने की सम्भावना थी जव उन से भी इस विषय में वार्तालाप हुई तौ उन्हों ने कहा कि ऐसे पुरुष को इस कार्य्य से प्रथक कर देना उचित है. परन्तु हमारे किसी सभासद का यह अन्तरीय अभिप्राय न था कि रामाधार जी अपनी पदवी से प्रथक कर दिये जांय, इस कारण रामदुलारे जी ने कहा कि जो सव की सम्मति ऐसी ही है तो इस विषय को कुछ काल तक यथावत रहने दो, जो तो थोड़े दिनों में सुधर जाँय तौ अति उत्तम है नहीं तौ फिरि विचार कर जैसा उचित समझा जावे वैसा करनों, इसी से यह पत्र आप की सेवा में नहीं भेजा गया था, परन्तु क्या करूं जव आप के पास अण्ड वण्ड लेख जाने लगे तव यह उचित समझा कि सम्पूर्ण समाचार आप को प्रकाश करूं और जैसी आप की आज्ञा हो वैसा उस का प्रतिपाल करूं, वर्तमान में पण्डित् रामाधार जी की पदवी पर सभा ने पण्डित् अयोध्याप्रसाद जी मिश्र

को स्थापित किया है, ताकि किसी सामाजिक कार्य्य में विघ्न न पड़े---

यदि पण्डित् रामधार जी अब भी अर्थात् आप के लिखने पर भी अपनी पदवी पर स्थापित हों तो अत्युत्तम है, नहीं तौ सभा कार्य्य जैसा चलता है वैसा ही चलता रहैगा--

आप इस पत्र का उत्तर मंत्री हरनाम प्रसाद जी के पते से समाज में भेजैं क्यों कि मेरा रहना यहां पर बहुत न्यून होता है-आप जैसी आज्ञा देंगे वैसा किया जायगा--

आप अपने व्याख्यानादिकों का भी समाचार देवे और सब भ्रात्रि गणों का नमस्ते आप के चरणों में पहुँचै--

आपका आज्ञाकारी सेवक

इन्द्रनारायण पंडित

प्रधान

आर्य्य समाज, लखनौ।

(ख) २८

(अङ्क २२) आर्य्य समाज

लखनौ

श्रीमत् परिव्राजकाचार्य्य श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती समीपेषु स्वामिन् नमस्ते—

वहुत दिनों से आप का कोई पत्र नही आया सो कृपा पूर्वक अपनी प्रसन्नता से विदित किया कीजिये—

(२) समाज का संक्षेप से वृतान्त आप की दृष्टिगोचर होने और यथार्थ प्रवन्ध के निमित्त आप की सेवा में समर्पित करता हूं. जिस से कि यह समाज आनन्द पूर्वक चला जावे वह निम्न लेखानुसार जानना चाहिये—

(३) यह समाज वैशाष कृष्ण १९ वार रविवार सम्वत् १९३७ विक्रमी में पण्डित रामाधार जी वाजपेयि और बाबू सरयूदयाल के उद्योग और स्वामी गङ्गेश जी के कहने से आप ने स्थापित की, जिस में कि आपने पण्डित इन्द्रनारायण जी मसलदां को प्रधान और पण्डित् रामाधार जी वाजपेइ को उपप्रधान की पदवी पर स्थापित किया और इसी प्रकार उस समय पर पण्डित्

रामदुलारे जी वाजपेयि जी मंत्री, बावू सरयूदयाल जी को उप मंत्री, पण्डित अयोध्याप्रसाद जी मिश्र को कोशाध्यक्ष, और बाबू चन्दन गोपाल जी को पुस्तकाध्यक्ष की पदवियों पर नियुक्त किया था और अन्तरङ्ग सभा के अर्थ व्यवस्थापकों को उक्त महाशयों ने चुन लिया था—

(४) जब यह समाज स्थापित हुआ तौ पण्डित् रामाधार जी वाजपेयि ने आप की पुस्तकों का भार समाज के समर्पित किया अर्थात् वह पुस्तकें जो समाज स्थापित होने से प्रथम आपने उक्त महाशय के समीप भेजी थीं और उन में से जो शेष रह गई थीं—समाज में देदीं—जिन को प्रथम वर्ष के पुस्तकों के हिसाव में दिखा चुके हैं—

यह समाज नियम और उप नियमानुसार सत्यप्रकाश नामक पाठशाला में पाक्षिक रविवार को होता रहा, इस समायान्तर में पण्डित् रामदुलारे जी वाजपेयि को नौकरी के कारण पीलीभीत जाने की आवस्यकता हुई तौ उस समय सभा ने वाबू चन्दनगोपाल जी पुस्तकाध्यक्ष को उनकी पदवी पर और पण्डित् केशवराम जी पण्ड्या को वाबू चन्दनगोपाल जी की पदवी पर नियुक्त

किया और प्रथम वर्ष पर्यन्त आनन्द पूर्वक समाज उसी स्थान में होता रहा जिसका सम्पूर्ण वृत्तान्त प्रथम वार्षिकोत्सव के समाचार से आप को विदित हुआ होगा. पुनः १ प्रति उस की आप की सेवा में अव भी भेजी जाती है—

(९) द्वितीय वर्षारम्भ के २ मास पश्चात् सत्यप्रकाश पाठशालाऽध्यक्ष ने वे निवेदन किया कि पाठशाला में आर्य्य और पौराणिक दोनो प्रकार के सभासद युक्त हैं इस कारण पौराणिक मतावलम्वी यहां समाज होने से अप्रशन्न हैं और इस कारण से पाठशाला के पारितोषिक के न्यून होने की सम्भावना है, इस लिये आर्यों को उचित है कि समाज अन्य स्थान में किया करें जिस से पाठशाला को किसी प्रकार की वाधा न हो, इस में हम लोगों ने भी पाठशाला की हानि समझ कर कुछ समय के लिये कि जव तक स्थान का प्रवन्ध हो गणेशगंज थाने के समीप मैदान में जिस में कि प्रथम वार्षिकोत्सव भी कर चुके थे समाज करना आरम्भ किया—परन्तु यह वर्षा ऋतु का समय था सो एक दिवश ऐसा हुआ कि समाज के समय पानी आया और इसी कारण सभा शीघ्र विसर्जन की गई—

जब ऐसा हुआ तो पण्डित् रामाधार जी बाजपेइ उपप्रधान साहब ने निवेदन किया कि जब तक अन्य स्थान का प्रवन्ध न हो तब तक मेरे स्थान पर समाज हुआ करे। इस को सब ने स्वीकार किया और समाज उक्त महाशय के स्थान पर होने लगी—

(६) तत्पश्चात् पण्डित् रामाधार जी बाजपेयि ने वेदभाष्य का कार्य्य भी सभा के समर्पण किया अर्थात् जो अङ्क वेदभाष्य के उन के मध्यस्थ आते थे वह समाज के के मध्यस्थ आने लगे जिस विषय में आप की भी आज्ञा लेली गई थी—यह समाचार द्वितीय वार्षिकोत्सव में लिखे गये हैं वह आप को विदित हुये होंगे।

(७) इस समाज में व्याख्यानादि होने का समय प्रथम ४ बजे से ६ बजे तक रहा, यह समय थोड़े ही काल तक रहा परन्तु तत्पश्चात् बहुत विचार पूर्वक इस का समय ६ बजे से ८ बजे तक रक्खा गया और उस नियमानुकूल इसी समय में समाज होती रही—

(८) जब यह समाज पं० रामाधार जी के स्थान मे होने लगा तो उक्त महाशय ने कुछ कालानन्तर के पश्चात

एक बाल्यसमाज आरम्भ किया जिस का समय ४ बजे से ६ बजे तक रक्खा—इस में लड़के किसी किसी पुस्तक से लिख कर पढ़ते थे—अब एक दिवश ऐसा अवसर हुआ कि अन्तरङ्ग सभा के अर्थ जो विज्ञापन दिया गया उस का समय भी ४ बजे से ६ बजे तक रक्खा गया—और सभासद समय पर उपस्थित हुये. और सभा कार्य्य आरम्भ होने ही को था कि एक बालक आसन पर बैठ कर कुछ पढ़ने लगा उस का आशय यही था कि आप श्रेष्ठ पुरुषों को ऐसा उचित नहीं—कि हमारी समाज के समय आप समाज करें और हम को निराश करें इस लिये हम निवेदन करते हैं कि आप इस समय अपनी सभा न करैं जब हम कह चुके तब आप अपना कार्य्य करैं इस बालक की अवस्था अनुमान १२ वर्ष के होगी और यह लेख भी इस का लिखा न था बरन लिखाया हुआ था—इस में पण्डित् रामाधारजी बाजेपई उपप्रधान जी ने लड़कों से कहा तुम पढ़ो तुम्हारे लिये समय है इस के उत्तर में बाबू चन्दनगोपाल जी पूर्व मन्त्री ने कहा कि जब विज्ञापन दिया गया और आपने उस पर हस्ताक्षर भी किये तो आपको उचित था कि उस में समय बदल देते, जब उस में समय नहीं

वदला गया तौ अव भी नहीं बदला जा शक्ता—इस के उत्तर में रामाधार जी ने कहा कि वाल्यसमाज अवश्य होगी. तव एक सभासद वोले कि यह आप का स्थान है इसी से आप ऐसा ऐसा कहते हैं नहीं तो न कहते और जव समय पर सभा न होगी तौ हम वैठ कर क्या करेंगी इस के उत्तर में पं० रामाधार जी ने कहा कि जिस की इच्छा हो वैठे जिस की इच्छा न होय वह जाय—यह उन का वाक्य उस समय अनुचित तो लगा परन्तु समाज में विघ्न न पड़े इस कारण किसी ने कुछ न कहा—नमृता पूर्व्वक कह सुन कर समाज कार्य्य करना आरम्भ किया गया—

(९) इस के अनन्तर किसी अन्य सभा में उक्त महाशय ने वावू चन्दनगोपाल जी मंत्री और पण्डित् केशवराम जी के विषय में ऐसा कहा कि यह दोनों अपनी सम्मति अनुकूल सब कार्य्य करते हैं—यह उन का कहना यथार्थ न था—वरन जो कार्य्य उत्तम होता था और उस में उन की भी सम्मति उत्तम होती थी तो अन्तरङ्ग सभा के सभासद उस को स्वीकृत करते थे अन्यथा नहीं—यह नहीं कह सके कि ऐसा उन को कैसे भ्यासित हुआ—

(१०) जब द्वितीय वार्षिकोत्सव का समय निकट आया और अन्तरङ्ग सभा की आज्ञानुसार निमंत्रण पत्र भेजे गये तत्पश्चात् इस के प्रबन्धार्थ जो अन्तरङ्ग सभा पण्डित रामाधार जी बाजपेयि के स्थान पर की गई तौ उस का समय ६ बजे से ८ बजे तक का रक्खा–अब देखिये जब सभा कार्य्य आरम्भ हुआ तौ उक्त महाशय सन्ध्या के निमित्त उठ कर चले और पं० रामसेवक जी व्यवस्थापक को सायङ्काल का होम कराने के निमित्त बुलाया–इस पर मंत्री जी ने कहा कि उत्सव के ८ दिन रह गये हैं और आप पूजा को जाते हैं प्रथम यह महत कार्य्य कर लेते, इस पर दोनों महाशयों ने कुछ भी ध्यान न दिया और अनुमान आध घण्टे से अधिक इस में उन का लगा–जब उक्त महाशय सभा में पधारे तो मंत्री जी ने सभासदों से उन के उठ कर चले जाने का कारण जिज्ञासा किया कि सभा से उठ जाना उन को उचित था अथवा नहीं । इस के उत्तर में सभासदों ने उपप्रधान जी से पूंछा तो उन्हों ने उत्तर दिया कि सन्ध्या वन्दन से अधिक समाज कार्य्य नहीं है और न इस समय सभा होनी चाहिये–इस के उत्तर में मंत्री जी ने कहा कि सभा का समय दो वर्ष से यही चला

आता है और जो समय बदलने का विचार है तो नियम भी तब हो शक्ता है जब सभा दूसरा समय निश्चित करले इस समय ऐसा क्यों हुआ—और सन्ध्या वन्दन के विषय में तो समाज विषय भी अनेक प्रकार के धर्म सम्बन्धी देशोन्नतिकारक और परोपकारक होने के कारण न्यून नहीं वरन अधिक हैं और इस का प्रत्यक्ष प्रमाण स्वामी जी ही महाराज को देखिये और तिसपर भी एक दिवश सन्ध्योपाशन थोड़ी देर पस्चात् ही करते तो क्या हानि थी—द्वितीय आप को प्राय: रात के ८ वा ९ बजे सन्ध्योपासन करने का अवकाश हुआ है—इस विषय में अंत को यह निश्चित हुआ कि आगे से जब सभा का कार्य्य प्रारम्भ हुआ करे तौ उस समय कोई सभासद सभा की आज्ञा विना न जावे—इसी सभा में पण्डित् रामाधार जी की अनुमति से तृतीय वर्ष के निमित्त साप्ताहिक समाज का होना निश्चित हुआ—

(११) यह द्वितीय वर्ष भी जिस आनन्द पूर्वक व्यतीत हुआ उस के समाचार तथा तृतीय वर्ष के लिये जो जो अधिकारी और व्यवस्थापक स्थापित हुये हैं उन का वृतान्त द्वितीय वार्षिकोत्सव समाचार से विदित हुये होंगे पुनः

अब भी १ प्रति इसकी आप की सेवा में समर्पण करता हूं--

(१२) अब तृतीय वर्ष का आरम्भ हुआ जिस के एक मास पश्चात् साधारण सभा में पं० केशवराम जी ने कई-एक सभासदों के कहने से अन्धेर नगरी नाम्नी नाटिका को पढ़ा इस की समाप्ति होने पर पण्डित् रामाधारा जी आसन पर बैठ कर कहा कि मेरा स्थान ऐसी २ पुस्तकों के पढ़ने के लिये नहीं है जिस को ऐसी पुस्तकें पढ़ना हो वह इस स्थान पर न पढ़े यह बात भी उन की सर्व-साधारणों के मध्य में कहना अच्छी न लगी परन्तु किसी ने कुछ कहा नहीं वरन सब के हृदय में यह हुआ कि अब समाज के निमित्त अन्य स्थान का प्रबन्ध अवश्य करना चाहिये--

इसके पश्चात् जो अन्तरङ्ग सभा हुई उस में दो सभासदों ने पण्डित् रामसेवक जी से पारितोषिक न्यून एकत्र होने का कारण जिज्ञासा किया--क्योंकि उक्त महाशय इसी निमित्त समाज से एक रु० मासिक और नित्यप्रति भोजन पाते थे--उस समय में तो उक्त महाशय ने कुछ नहीं कहा परन्तु पीछे से एक पत्र मेरे नाम भेजा

जिस में उन्हों ने लिखा था कि उन दोनों सभासदों ने मेरा अपमान किया–इस कारण उन को कुछ दण्ड देना चाहिये–इस पर अन्तरङ्ग सभा में विचार हुआ तो वह दोनो निरपराध ठहरे–इस समय इन के पक्षपर पण्डित् रामाधार के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं था–

(१४) अव द्वितीय अन्तरङ्ग सभा में प्रथम समाज के निमित्त स्थान का निश्चय होजाने ही का विचार हुआ–तो उस में यह निश्चय हुआ कि भाड़े पर स्थान अवस्य ले लेना चाहिये–जव इस विषय में पण्डित् रामाधार जी की सम्मति ली गई तो उक्त महाशय ने कहा कि जो स्थान समाजधन से क्रय किया गया होगा तौ तो मैं समाज में जाऊगा नहीं तो नहीं–इस में वावू गङ्गाप्रसाद जी व्यवस्थापक और प्रतिनिधि ने कहा कि जव समाज में इतना धन नहीं है तो स्थान कैसे क्रय हो शक्ता है ? इस के उत्तर में पण्डित रामाधार जी वाजपेई ने कहा कि प्रथम एक सभा में एक एक मास की आय देना स्वीकृत हो चुका है वही एकत्र कर के स्थान क्रय करना चाहिये–इस के उत्तर में वावू गङ्गाप्रसाद जी ने कहा कि ऐसा निश्चय आज तक नहीं हुआ और न मुझको इस की कुछ खवर है और न मैं एक मास की

आय दे शक्ता हूं और इस के लिये आप इतना आग्रह क्यों करते हैं कि क्रय किये ही स्थान में जाऊंगा अन्य में नहीं ? इस के उत्तर में पण्डित रामाधार जी वाजपेई ने कहा कि मैं तौ तभी जाऊंगा क्योंकि मैं इस समाज का स्थापक हूं मेरी इच्छा भाड़े के स्थान पर जाने की नहीं किन्तु ऐसा होगा तौ मैं अपने ही स्थान पर वेदव्याख्यान सुना करूंगा इस वचन के सुनते ही सब सभासदों के हृदय में एक प्रकार की शङ्का पड़ गई और बाबू गङ्गा-प्रसाद जी ने कहा कि जो आप को यह अभिमान है कि इस समाज का स्थापक मैं ही हूं जब ऐसा है कि यह समाज एक पुरुष की सम्मति से है और दूसरे की सम्मति को आप तुच्छ समझते हैं तौ मैं ऐसी समाज में रहना उचित नहीं जानता और न मैं अब से जो आप के स्थान में समाज होगी उस में आऊंगा— इस के उत्तर में भी उपप्रधान जी ने वही शब्द उच्चारण किये जो प्रथम दो सभाओं में कह चुके थे कि जिस की इच्छा हो आवे और जिसकी इच्छा न हो वह न आवे तब तो पण्डित केशवराम जी ने कहा कि आप सभा-पति होकर ऐसा कहते हैं ऐसा कहना आपको उचित नहीं सभा में जो कार्य्य होता है वह बहुपक्षानुसार

होता है—इस समय अन्य स्थान लेन की सब की सम्मति है—और जो आप की इच्छा यही है कि समाज हमारे ही स्थान पर उस समय तक होता रहै जब तक कि समाज स्थान मोल लिया जावे तो अति उत्तम परन्तु जिस समय सभा होगी आप का स्थान पञ्चायती समझा जावेगा और अब से आपको ऐसा कभी न कहना होगा कि जिस की इच्छा हो वह इस समाज मे आवे जिस की इच्छा न हो वह न आवे—इस के उत्तर में पण्डित् रामाधार जी ने कहा कि मेरा यह अभिप्राय थोड़ा ही है कि मैं आने का ही नहीं परन्तु सन्ध्या वन्दन के कारण मैं न पहुंच सका इस कारण प्रथम से मैंने निवेदन कर दिया—और जो सब की सम्मति अन्य स्थान लेने के लिये है तो अत्युत्तम—तत्पस्चात् उक्त महाशय के स्थान पर दो वा ३ सभायें हुईं और जब अन्य स्थान का प्रबन्ध होगया तौ तारिख २९ जून सन् १८८२ ई० से समाज उसमें होने लगा और पं० रामाधारजी के स्थान पर भी पण्डित् रामसेवक जी नें व्याख्यान दिया—इस प्रथम दिवश ही जब पण्डित् इन्द्रनारायण जी मसल्दां प्रधान इनके स्थान पर पधारे तब उस समय समाज विसर्जन हो चुकी थी और अन्य स्थान में समाज होने का

वृतान्त उन्हें विदित न था परन्तु पण्डित रामाधार जी ने संक्षेप से समाज दूसरे स्थान में होनें के समाचार कहे- और अपना हृदयगत भाव भी जनाया परन्तु प्रधान जी ने उस समय कुछ उत्तर न देकर अपने स्थान को चले गए—और समाज में न पहुंच सके—

(१६) द्वितीय समाज में जब प्रधान साहब पधारे तो इस ओर का भी सम्पूर्ण वृतान्त सुन पण्डित् रामाधार जी को बुलाने के निमित्त एक मनुष्य भेजा कि दोनो ओर की वार्ता सुन यथोचित प्रबन्ध किया जावे, परन्तु उस के उत्तर में उन्हों ने कहला भेजा कि मेरे स्थान पर भी वेद व्याख्यान होता है उन की इच्छा हो तो वह यहां ही चले आवें—

आवं यह सुन प्रधान साहब चुप हो गये -

विदित हो कि इस दिवश अन्तरङ्ग सभा भी थी—जो कि उपनियमानुसार प्रत्येक मास के प्रथम सप्ताह के रविवार को हुआ करती है—और पं० रामसेवक जी ने भी अपना कार्य करने को अनङ्गीकृत न किया और कहा कि मैं विद्योपार्जन करूंगा इस लिये अपना कार्य्य छोड़ता हूं इस को सब ने स्वीकार किया—

(१७) इस से अगले सप्ताह में अन्तरङ्ग सभा की आवश्यकता हुई साधारण सभा के पीछे तौ व्यवस्थापकसदों से और अधिकारियों से सविनय निवेदन किया गया कि आप लोग ठहरिये और सभा का कार्य्य करिये, इस सभा में भी प्रधान साहब उपस्थित थे--

(१८) अब साधारण सभा के दिन में, पण्डित् अयोध्याप्रसादजी मिश्र कोषाध्यक्ष, बाबू बृजलाल जी पुस्तकाध्यक्ष, और पण्डित् केशवराम जी व्यवस्थापक इन सब लोगों ने जाकर पण्डित् रामाधार जी बाजपेयि उपप्रधान से निवेदन किया कि आप कृपा कर सभा में पधारिये- इस के उत्तर मे उन्हों ने कहा कि साधारण में तौ नहीं परन्तु अन्तरङ्ग सभा में अवश्य आया करूंगा- अब जो अन्तरङ्ग सभा का समय आया तौ १ विज्ञापन पत्र भी उक्त महाशय की सेवा में भेजा और उस पर उन्हो ने हस्ताक्षर भी कर दिये थे परन्तु तब भी न पधारे, और न प्रधान साहब इस सभा में उपस्थित थे इस कारण सभा का कार्य्य बन्द रहा--अब एक प्रार्थना पत्र पण्डित् रामाधार जी की सेवा में समर्पित किया गया और उस का जो कुछ उत्तर उक्त महाशय ने दिया

उन दोनों की प्रति आप की सेवा में समर्पित करता हूं—इन की पत्रिका से विदित होता है कि इन की प्रथक समाज है जिस में कि अधिकारी और व्यवस्थापक सब है, परन्तु ये समाज ही, सिवाय पण्डित् रामाधार जी वाजपेयि उपप्रधान और पण्डित् रामसेवक जी मंत्री जिस को पं० रामाधार वाजपेई जी ने अपने आप ही मंत्री वना लिया है के अतिरिक्त और कोई भी आर्य्य सभासद नहीं हां इतना तौ अवस्य है कि पौराणिक मतावलम्वी तो आते हैं, वह भी इस शर्त पर कि जव हम समाज में आप से पुँछे कि मूर्ति पूजनादि ठीक है तौ आप कहें हाँ ठीक हैं और जब हमारे स्थान पर कथा हो तो आप भी उस में पधारें सो उक्त महाशय एकादशी महात्म्य और सत्यनारायण की कथा सुनने उन के स्थान पर जाते हैं। और यही पौराणिक पुरुष प्रायः व्याख्यान भी उन के स्थान पर वोपदेव कृत भागवतादि पुराणों से देते हैं, और पौराणिक भी वह जो सर्वदा से समाज के विरोधी रहे हैं।

(१९) अव ऊपर लिखा हुआ सम्पूर्ण वृतान्त आप को विदित होवे, और इस विशय में जैसी आप की आज्ञा होवे,

वैसा किया जाय, एक मुहल्ले में एक नाम की दो समाजें होना क्या अच्छा है ? और फिर जिस समाज में पोपों कृत् व्याख्यान होवें वह आर्य्यसमाज ही कहलावे-

(२०) अब सब सेवक आप के आप के चरणों को प्रणाम करते हैं और आशा रखते हैं कि आप इस का उत्तर शीघ्र भेजियेगा—

आप का चरण रज सेवक

हरनामप्रसाद

तारीख १० सितम्बर सन् १८८२ ई० — मंत्री आर्य्य समाज लखनौ

श्री पण्डित् इन्द्रनारायण जी मसवदाँ
प्रधान आर्य्यसमाज, लखनौ

महाशय नमस्ते;

कृपा करके पूर्वोक्त पत्र को अवलोकन करिये, और जो आप उचित समझें तो इस को श्रीस्वामी जी के चरणों में समर्पित कीजिये—

आप का आज्ञाकारी

हरनामप्रसाद

मंत्री आ० स० लखनौ

(अङ्क २०)

आर्य्य समाज
लखनौ

पण्डित् रामाधार जी बाजपेइ उपप्रधान
आर्य्य समाज लखनौ

महाशय नमस्ते—

अन्तरङ्ग सभा की अज्ञानुसार आप से निवेदन है कि छठी अगस्त को जो अन्तरङ्ग सभा हुई थी उस में आप नहीं पधारे यद्यपि आप की सेवा में सूचना पत्र भी भेजा गया था और आप ने उस पर हस्ताक्षर भी कर दिये थे—

जब प्रधान तथा उपप्रधान इन दोनों अधिष्ठाताओं में से एक भी उपस्थित न होगा तो विचारिये सभा का कार्य्य किस प्रकार चल शक्ता है. इस कारण आप को उचित है कि सभा में अवस्य पधारा करो—कदापि किसी कारण से आप उपस्थित न हो शकें तो कृपा करके आप अपनी सम्मति दीजिये कि इस के अर्थ क्या प्रवन्ध किया जावे—आशा है कि इस का उत्तर आप शीघ्र दीजियेगा—

आप का आज्ञाकारी
द० हरनामप्रसाद
मंत्री आर्य्य समाज, लखनौ ।

ओ३म्

आर्य्यसमाल, लखनौ।

अन्तरङ्ग सभा की आज्ञा से

--०--

मंत्री

आर्य्यसमाज लखनौ

नमस्ते;

विदित हो कि आप के पत्रावलोकनानन्तर अत्यानन्द प्राप्त हुआ—जो कि आप ने सूचना के विषय में निमंत्रणा की थी उस पर मैंने हस्ताक्षर योग्यता से किये क्योंकि कोई पुरुष उत्तम कार्य्य में सम्मति ले या हस्ताक्षर की आपेक्षा करे तो देना उचित है—और जो प्रधान के बिना कार्य्य समाज का नहीं चलता है सो आप स्वतन्त्र करता हैं कौन कार्य्य प्रधान या उपप्रधान की सम्मति से करते हैं. और आप ने लिखा कि समाज में नहीं उपस्थित हुये सो विचार की अवस्था है किस काल में जब से आप की सभा प्रथक होती है उपस्थित रहा और इस अन्तरङ्ग सभा में जो कि ६ अगस्त में हुई थी नहीं उपस्थित रहा हूं और जो सम्माति के विषय में आप ने लिखा है सो आप सब महाशयां को विदित है कि ऐक्य ऐक्य मत गत सभों में अन्तरङ्ग या साधारण सभा के कार्य्यों में जो मैं सम्माति देता था सो आप सर्व सभ्यगणों के विरुद्ध होती थी और आप सर्व महाशयों की ही निश्चित

होती थी मुझ को केवली समझ कर ग्रहण नहीं करते थे सो अब मेरी सम्मति की अपेक्षा आप महाशयों को होनी न चाहिये— और जो कार्य्य मेरे अनुकूल आप निवेदन करें तौ मैं अवस्य ही ग्रहण करूंगा—

आप का शुभचिन्तक
द० **पण्डित् रामसेवक** मंत्री
आर्य्यसमाज, लखनौ।

(ख) २६

बरेली आर्य्यसमाज के मन्त्री महाशय भोलानाथ जी तथा प्रधान महाशय तुलसीराम जी के पत्र

श्री०

श्रीमत्परमहंस परिब्राजकाचार्य्य श्रीमान् स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के चरणों में बरेली के आर्य्यसमाज के सभासदों का प्रणाम पहुंचे ॥ आगे आप के चरणों की कृपा से यहां एक आर्य्यसमाज ९ वीं जुलाई सन् ८२ को स्थापित होकर अब तक प्रत्येक रबिवार को आनन्द पूर्वक होता चला आता है आगे भी आशा है कि सदैव उत्तरोत्तर उन्नति को प्राप्त होता रहेगा परन्तु

अभी नगर निवासी जन अल्प संख्यक हैं परमेश्वर उन के हृदयों में भी उपदेश देवें इसमें आप से यह प्रार्थना है कि आप कोई उपाय ऐसा बतलायिये कि सब समाज आर्य्यावर्त के एक सम्मत हो कर समाजों के नियमानुसार बिवाहादि सर्व कर्मों को करें और समाजों के स्थापन करने का जो अभिप्राय है सो यथावत् सिद्ध हो अब ऐसा न होना चाहिये कि समाज के लोग वेदरीति को तो मन से ठीक जाने परन्तु वास्तव में पोपलीला पर सब कार्य्य करैं मेरी बुद्धि में यह आता है कि आप सब समाजों को इस विषय मे एक २ पत्र भेजैं यही सब बात उस में सूचित कर दें जहां जहां समाज है उन के प्रत्येक वर्ण के सभासदों की वर्ण संख्या प्रत्येक समाज को ज्ञात हो तो हम सब लोग आपस ही में सम्बन्धादि व्यवहार व्यवहार करैं और अनार्यों से कुछ प्रयोजन न रहे उन से जब प्रयोजन आन पड़ता है तो वेदरीति पर कुछ करना नही हो सकता केवल पुराण और पोपरीति पर करना होता है जो कि आर्य्य धर्म के सर्वथा विरुद्ध है इस बात के न होने से निम्नलिखित दोष आन पड़ते हैं—

(१) समाजों के स्थापित करने से आर्य्यवर्त्त को उस समय तक कोई लाभ नहीं होगा कि जब तक उस के नियमानुसार सब कर्म न होंगे ।

(२) अनार्यों को जो पुराण भट्टों के कहने पर चलते हैं समाजों पर इस बात पर व्यंगोक्ति करने का अवसर मिलता है कि तुम लोग केवल कहते ही हो पर कुछ कर नहीं सकते हो तुम से वे ही भद्रतर हैं जो अपने कथनानुसार कर्म करते हैं ॥

(३) देश हानि जो विवाहादिक रीतियों में होती हैं अबतक आर्य्यों में भी हुई चली जाती हैं अबतक उन हानियों से बचने के लिये किसी आर्य्यसमाज ने यथार्थ में कुछ नहीं किया जिस से इस देश की व्यवस्था सुधरती बाल-विवाह आदि कर्मों में विद्या धन बलादि का नाश होना इसी कारण सुधर्म्म सम्बन्धी कार्य्यों में पूरी पूरी श्रद्धा का न होना इत्यादि बड़े बड़े दोष हैं इन बातों को हम अल्प बुद्धियों की अपेक्षा आप बहुत अधिक जानते हैं इसी कारण आप से विज्ञप्ति की जाती है कि—जैसे आप ने अति श्रम कर के सत्य धर्म प्रचार और देश हित के अर्थ बहुत से अनर्थों को दूर करने का उद्योग किया है और अपना तन मन धन आदि इस के निमित्त समर्पित किया है उसी प्रकार इस·········को वास्तव में प्रचलित करने का भी आप ही उपाय कर सकते हैं आप केवल उपदेश कीजिये और उस के अनुसार चलने को

आशा है कि सब समाज उद्यत होंगे कोई आप की आज्ञा के प्रतिकूल न करेगा इससे यह बात भी होगी कि जो लोग अपने भ्रातवर्ग और पौराणिकों के भय से समाज में नहीं हो सकते हैं परन्तु वास्तव में चित्त से आर्य हैं वे लोग आर्य्यों को नियमानुसार चलते देख कर और अपने धनादि को पोपों के झूठे जाल से बचता देख कर शीघ्र ही आन मिलेंगे और फिर समाज की बड़ी उन्नति होगी और अभिप्राय पूर्ण रूप से सिद्ध होगा आप के यथावत परिश्रम का पूर्ण फल प्राप्त होगा और आर्य्यवर्त्त के अन्धकार का नाश हो कर प्रकाश ही प्रकाश दीख पड़ेगा फिर पौराणिकों को भी आप की शिक्षा मानते ही बनेगी आज कलि के पौराणिकों को अपने व्यवहारों में हानि बहुत सहनी पड़ती है जब उन लोगों को यह ज्ञान होगा कि आर्य्य लोगों को वेदरीति पर चलने से कई बातों का लाभ है और हमारा सा क्लेश कोई नहीं सहना पड़ता तो अवश्य वे लोग सब झूठे झगड़े और बखेड़ों को छोड़–कर यथार्थ धर्म्म ग्रहण करेंगे ।

आर्य्य सम्बन्धी जितनी पुस्तकें आप ने रची हैं उन के नाम मूल्य सहित लिखि भेजिये यह भी लिखिये कि वेदभास्य जहां तक

प्रणीत हो चुका है उस सब का क्या मूल्य है और कहां मिल सकता है और आगे के लिये क्या नियम है एक २ ग्रन्थ यहां की सभा के अर्थ हम लोग मगवाना चाहते हैं सत्यार्थ प्रकाश फिर छप चुका है वा नहीं वा पहिला ही अब तक प्रचलित है ॥

आप के लिये लिखने की आवश्यकता पड़े तो किस पते से आप को पत्र शीघ्र मिला करेगा आप ही के नाम पत्र भेजा जावे वा किसी और सज्जन के द्वारा आप के पास भेजा जावे ॥

आप का अनुचर
बरेली आर्य्यसमाज का मन्त्री
भोलानाथ
बक़लम तुलसीराम प्रधान.

(ख) २७

ओ३म्

सिद्धि श्री सर्व्व सद्गुण सम्पन्न श्री १०८ स्वामी श्रीमद्दया-नन्द सरस्वती जी के पत्सरोज में भोलानाथ की नमस्ते—

आप की कृपा से इस समाज का प्रथम वर्ष समाप्त हुआ और उस का वार्षिक उत्सव श्रावण कृष्ण १० रवि वार को

नियत हुआ है, विनय पूर्वक आप के। चरणार्विन्द में प्रार्थना है कि उक्त समय पर पधार कर इस समाज को सुशोभित कीजिये- और यदि आप का आना न हो तो किसी अपने शिष्य को भेज दीजिये—सब समाजो में भी निमंत्रणपत्र भेजे गये हैं—

संवत १९४० वि०
मिति असाढ सुदी १२

आप का सेवक
भोलानाथ
मंत्री आर्य्यसमाज, बरेली।

श्रीयुत म० कृष्णलाल जी अल्मोड़ा के पत्र

(ख) २८

अल्मोडा ता २९ मार्च ८२

शिद्धीश्री वमवई शुभस्थाने सर्व उपमायोग्य श्री ६ महात्मा दयानन्द सरस्वती जी के चरणन तल किश्नलालसाह अल्मोड़ा वाले का अनेक भांति दंडवत प्रणाम पहूंचे यहां के समाचार भले हैं आप की कुशल मंगल हमेशह श्रीभगवानजी से चाहताहूं आप का कृपापत्र चैत्र वदी ११ बुधवार संवत् १९३८ का वंवई से मेरे पास पहुंचा जिस वात के लिए आपने मेरे ऊपर आज्ञा करी है मैं जहां तक मुझ से हो सकेगा उद्योग करूंगा पर मैं गरीब आदमी हूं सायद यही कि ब्राहमण लोग जिन्का यहां वडा जोर है और जो आप से और आप के सेवकों से हमेशह विपरीत रहते हैं इ

म में विघ्न करता न बने इस कारण से कि यह काम एक
नीए के हाथ से होता है समझ के सो मैं आप से एक अर्ज
रता हूं कि जैसा आप ने दो पत्र मेरे पास भेजे हैं उसी तरह के
त्र तफसील जैल मनुष्यों के पास भेज देवें तो अवश्य वे लोग
कोशीस कर के इस काम को कर देंगे

राजा भीमसिंघ अल्मोडा

पंडित बद्रीदत्त जोशी सदर अमीन अल्मोडा
ऐ भवानी दत्त जोशी ए ऐ कमिश्नर ऐ
ऐ बुद्धीवल्लभ पंथ इन्सपेक्टर स्कूल ऐ
ऐ गोपीवल्लभ जोशी तहशील्दार गल्ली ऐ

नैनीताल

लाला अमरनाथ साहूकार नैनीताल
पंडित बद्रीदत्त जोशी वकील ऐ

राणीखेत

पंडित जीवानन्द जोशी क्लारक चंम्फावन लोहाघाट
लाला तुलाराम वेणीराम साह कोठीवाल अस्कोट
डाकखाना अल्मोडा
रजवार पुश्करपाल तालूकेदार अस्कोट

गढ़वाल

महराजा टिहरी गढ़वाल
रावल मंदिर बद्रीनाथ ऐ
ऐ ऐ केदारनाथ ऐ
पंडित तारादत्त पांडे हेडक्लारक ऐ
ऐ गंगादत्त उप्रेती ए ए कमिश्नर
ऐ गईदत्त जोशी सदर अमीन

हलद्वाणी

पंडित देवीदत्त जोशी पेश्कार हलद्वाणी

रामनगर

छत्री गोपीवल्लभ चेलवाल पेश्कार रामनगर

अलमोडा

उधोदास आचारी
पंडित तारादत्त तेवाडी डुबकिया
ऐ शंभूदेव ऐ ऐ
ऐ ईश्वरीदत्त ऐ ऐ
साख्री नीलकंठ असकोट मारफत रजवार साहब असकोट
डाकखाना अलमोडा

मैं वहुत चाहता हूं कि आप से भेंट होवे और अल्मोडा के लोग भी जाने की आप कैसे हैं और आप का मत क्या है पर लाचारी अमर है मेरे पास खर्च नहीं है जो आप को इस शहर में आने के लिये कष्ट दूं ईश्वर इच्छा होगी तो कभी दरशन मिल ही जांगे एक वार आप के दरशन आनन्द वाग में वनारस में हुए थे चार बजे सांझ के समय ता ४ या ९ जनवरी सन ८० में हम चार पांच आदमी आप के दरशन को आए थे वल्के आप ने हम से पूछा था कि आप कहां के रहने वाले है हम ने पहाड के कहा था आप ने कहा कि कुछ प्रश्न किजिए क्यों कि पहाड के आदमी अकसर प्रश्न किया करते हैं पर हम लोगों ने कुछ न कहा बाद को दंडवत कर के विदा हो गए । पत्र की पहूंच लिख भेजिए । अनेक दंडवत प्रणाम करते हुवे

मैं आप का सेवक
किशनलाल साह

(ख) २९

श्री ६ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के चरणन में किशन-लाल साह अल्मोडा शहर जिला कुमाऊं वाले की अनेक प्रकार दंडवत प्रणाम पहुंचे ईश्वर आप को आरोग्य रखे जिस से जो

शुभ काम जगत के उपकार के लिए आप कर रहे हैं शीघ्र सम्पूर्ण हो ; एक बडे आवश्यक विषय में आप की अनुमति सलाह अथवा राय लिया चाहता हूं और मुझ को निश्चय है कि आप की कृपा होगी तो आप जैसा इस विषय में उचित समझेंगे मुझ को उत्तर भेज देंगे और यदि आप की सामर्थ में हो तो मेरी शहायता भी करेंगे सो हाल यह है कि मैं बालविवाह के दुष्ट फलों और जो जो दुख और पाप इस बालविवाह मे होते हैं उन सब को मैं भली भांति जानता हूं और इस कारण मैं नहीं चाहता हूं कि जान बूझ कर मैं अपनी कन्याओं को जनम भर के दुख में डाल दूं यदि मैं नहीं जानता तो जैसा चलन ब्राह्मणों ने यहां कर रखा है उसी मुताविक मैं भी बरताव करता पर जानने से मुझ को दुख होता है और इस दुख का निवारण करना बिना उस मत के ग्रहण किए जिस में बाल्यविवाह नहीं है और जिस में एक विवाह की स्त्री के होते ही दुसरा विवाह करना भी मना है किस तरह हो सकता है, ऐसा मत आजकल हम लोगों के बीच है ही नहीं अलबत्ता वेदों में तो यह मत है पर वह अभी प्रचलित हुवा कि नहीं इस का मुझ को ठीक हाल मालूम नहीं हिन्दुस्तान में कई आर्य्यसमाझ तो हैं पर उन के बीच अभी विवाह की रीत भांत बदली की नहीं । मेरा विचार बालविवाह और स्त्रीयों के पढाने लिखाने के विषय में बहुत बरसों से यहां के लोगों से

अलग था यांने उन्की राय जो ब्राह्मणो के स्वार्थ लाभ के लिए स्त्रीयों को मूर्ख रखने की है वैसी राय मेरी नहीं थी इस हेतु मैंने अपनी कन्याओं को पाद्री लोगों के इस्कूल में भेजाथा वहां उन्हो ने कुछ थोडासा पढाथा इस बीच मेरे कारोवार में फर्क आ जाने से कुछ चित्त में खेद हुवा मैंने उन्को भी इस्कूल जाने से रोका और घर में भी कुछ अच्छा बन्दोबस्त उन्के पढने का नहीं है और अब मुझ को दारिद्र ने दबालिया है पर जो हो मेरी इक्षा बालविवाह की अब भी नहीं है उन्में से बडी कन्या अब १३ बरस की होने चाहती है उस्के विवाह विवाह करने में यदि यहां की रीत जन्म पत्रादि के द्वारा जो प्रचलित है किई जावे तो लडकी कहां जा पड़े और सदा दुखी रहे मेरी यह इक्षा है कि किसी सज्जन मनुष्य से जो लिखा पढ़ा हो इस कन्या का विवाह होता तो बहुत ही भला होता और उस्का पति किसी मुल्क का आर्य्य धर्म वाला होके वेदोक्त रीति पर उस से विवाह कर लेता ; मैं अति दुखित हुं कि दारिद्र के कारण इस विषय का बन्दोवस्त मैं आप ही करने को असमर्थ हूं इस कारण आप की सहायता चाहताहूं जो आप कुछ सहायता इस्में मेरी कर सकें तो मुझ को उत्तर लिख भेजें जो न कर सकें तो वैसा लिख भेजें ॥ पहले समय में जब किसी को किसी प्रकार का दुःख आ पडता था तो ऋषि मुनियों की सहायता ढूंढते थे अब इस काल में आप के

सिवाय दुःख के समय सुशिक्षा देने वाला कोही भी देख नहीं पड़ता इस कारण आप के चरणों में अपना दुःख प्रकाश करता हूं और आप से प्रार्थना पूर्वक प्रणाम कर के आप के बहुमोल्य समय के बीच यह पत्र भेज के उस की हानि जो कुछ हुई हो उस के लिये क्षमा चाहता हुवा आप का दासानुदास किशनलाल साह इस पत्र को बंद करता हूं ता १४ सितम्बर सन् १८८३

पत्र किसी दूसरे के हाथ चले जाने के भय से इस पत्र रजिष्ट्री करा के भेजा है क्षमा किजिएगा

कृष्णलाल भट्ट
(अलमोड़ा)

नं० १४

(ख) ३०

श्रीयुत पण्डित् रमादत्त जी त्रिपाठी नयनीताल के पत्र

*ॐ भू र्भु स्वः विश्वा रूपाणि प्रति मुञ्चते कविः प्राशा विद्भदे द्वी पदे शं चतुष्पदे ॥ पिनाक मष्य ॐ सवितावरे ण्यनु प्राणणे विराजती. इसमें शुद्धा शुद्ध विचार आप कर लीजीये

---

* **इसी पत्र में यह अशुद्ध लिखा हुआ मंत्र निम्न लिखित प्रकार शोधा हुवा भी वर्त्तमान है**

ॐ भू र्भू स्वः विश्वा रूपाणि प्रति मुञ्चते कविःप्रासावीद्भद्रं द्विपदे चतुष्पदे ॥ विनाकं मख्यत्सविता वरेण्योऽनुप्रयाणमुषसो विराजति । यजुर्वेदे । अध्याये तृतीये तृतीयो मन्त्रः ।

ॐ परमात्मने नमः

श्रीमद्विद्यासागर स्वामी जी चरणेषु नमस्ते उक्त मंत्र किस वेद का कौन से अध्याय की कौन ऋचा है इस का शब्दार्थ भावार्थ क्या है अपनी करुणा से उत्तर प्रसाद कीजिये पत्र कुत्र अशुद्ध हो शुद्ध कर दीजिये उत्तर के लिये टिकट भेजा है पता मेरा यह है–

श्रावण २४ गते भौमे १९४० वि० 7-8-83

पण्डित **रमादत्त** तृपाटी
मिशन स्कूल, नयनीताल।

———

(ख) ३१

ॐ खम्ब्रह्म

श्रीस्वामी दयानन्द चरणारविन्देषु
नमस्ते

महाराज जी किसी ईसाई ने प्रश्न नहीं किया (विश्वा रूपाणि यजुर्वेद १२ अ० ३ मन्त्र अव आप के लिखने से ज्ञात हुआ यह इस देश के वनियों की गायत्री है वहुत लोगों ने मुझ से कहा हम तथा हमारे पुरोहित अर्थ नहीं जानते तुम स्वामी

जी को लिख कर अर्थ मगादो तब आप को कस्ट दिया था मैं मिशन स्कूल में शिक्षक तो आजीविकार्थ हूं परन्तु धर्म्मसभा का लघुतर सम्पादक भी हूं मुझे अपना अनुगामी समझिये इतनी भूल मेरी अवस्य है आद्यन्त ऋग्वेद तथा यजुर्वेद जहां तक मुद्रित हुआ है देख लिया होता । अब यहां के निवासियों को पुरोहितों की ओर से सन्देह हो गया यदि आप आज्ञा दें तो गुरु मन्त्र अर्थ सहित बतला दूं । मैं ईश्वर का खोजी हूं वेदभास्य भूमिका आर्य्याभिविनय आदि कई पुस्तक मेरे पास हैं मुझ को पुस्तकों के सञ्चयावलोकन का व्यसन है परन्तु पातञ्जल योगसूत्र के पूरी भाषा टीका का अभिलाषी हूं आपने सम्पूर्ण सूत्रों की टीका बना कर छपवादी हो तो पता दीजिये मगा लूंगा अथवा आप के पास हों तो ? पुस्तक अभ्यासार्थ प्रसाद कीजिये मूल्य शीघ्रमेव भेजदूंगा अथवा और कोई पुस्तक इस बीच वेद वेदाङ्ग की छोटी सी उल्था कर के मुद्रित कराई हो तो उत्तर दीजिये जिस से सेवक को-आत्म ज्ञान शीघ्र प्राप्त हो मैं जन्म जन्मान्तर का पापी असत्ती अधर्मी दुराचारी हूं मुझ जन्मान्ध को ज्ञान चक्षु दीजिये । सर्वज्ञेसु किमधिकम् वि०

२० । ८ । ८३

रमादत्त तृपाटी

पण्डित मिशनस्कूल, नयनीताल ।

(ख) ३२

श्री ५ स्वामी जी नमस्ते

(हिरण्यवर्णां हरिणीं) यह श्रीसूक्त वेदानुकूल है वा प्रतिकूल, इस के कितने वार पढ़ने कितनी आहुति देने से लक्ष्मी प्राप्त होती है कृपा कर के इस का उत्तर प्रसाद कीजिये साथै शुद्ध पाठ की १५ ऋचा कहां प्राप्त होंगी ।

३ । ९ । ८२ पण्डित रमादत्त तृपाठी
मिशन स्कूल, नैनीताल ।

(ख) ३३

आर्य्यसमाज आगरा का अभिनन्दन पत्र (ऐड्रेस)

ओं

प्रशंसापत्र आगरा आर्य्यसमाज की ओर से ॥

धन्य है सत्यस्वरूप, सर्व व्यापक, सर्व गुण सम्पन्न, ईश्वर को कि जिस के कृपा कटाक्ष से संसार के कल्याणार्थ और माया तमावृत, वा मोह विमोहित जीवों के निस्तारार्थ सत्य विद्या और उस विद्या के प्रचारकों की सृष्टि हुई है ।

उसी कृपालु ईश्वर ने हमारे अज्ञान अन्धकार संयुक्त मनों को सत्य स्वच्छ अमोघ आनन्दमय पदार्थ से प्रकाश करने के

लिये श्री महानुभाव, महात्मा गुणागार दयासागर श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी को इस स्थान पर भेजा, कि जिन के सूर्य्यवत् प्रकाश से सत्यावलम्बी जनों के कोमल कमलसम सकुचित् हृदये तत्क्षणात प्रफुल्लित होगये और मोहविमोहित जनों की उन के प्रभाकर वत् प्रभा से ज्ञानचक्षु प्रकाशित होगये, उक्त महानुभाव के शुभागत से असत्य का ह्रास और सत्य का प्रकाश हुआ ।

धन्य है ऐसे वीर्य्यशाली सत्पुरुषको कि जिन्होंने अपने तन मन और धन को केवल परोपकार में ही लगाया, सुफल है उनकी विद्या कि जिसने संसार की अविद्या विनाशार्थ उस्का प्रकाश किया, सुफल है उनका पुरुषार्थ जिन्होंने असत्य सागर से जीवरूपी पोत को निमग्न होने से बचाया, और सत्य काण्डारी की सहायता से संसार सागर में हमारा खेवा पार लगाया, और वेदों के उद्धार से और उस के सत्य अर्थों के प्रकाश से जीवों को भ्रमजाल से छुडाया और इन्ही महात्मा ने यथार्थ आर्य धर्म्म का (कि जो सहस्त्रों वर्ष से अंध कूप में पडा था) पुनः प्रकाश करके उद्धार किया ।

हम उस समय की साभाग्यै को तोल नहीं सक्ते कि जब हम ऐसे सत् विद्या प्रकाशक के समीपस्थ थे और उनके सत

उपदेशों से अज्ञान का विनाश होता था, क्या हम अब उसके विपरीत न समझें कि जब हम अपने सत् प्रकाशक के आगमन का आकार रहित करते हुये देखते हैं परन्तु कुछ दुःख का विषय नहीं है क्योंकि हम स्वार्थी नहीं हैं और स्वार्थ परित्याग भी उनका १ उपदेश है, यदि सूर्य एक ही स्थान में बाँध दिया जाय, तो सारे भूगोल में प्रकाश नहीं हो सक्ता इस कारण उनका और आर्य्या बंधूओं के उपदेशार्थ यहां से जाना भी आनंद का समय है, और जहां पर उनका गमन होगा उन को भी ऐसा ही सुख लाभ होगा।

अब हमारी श्री महाराज आप से यह प्रार्थना है, हम अल्पज्ञ जनों पर सदा सर्वदा कृपा रक्खेंगे और अपने शुभ समाचारों से ज्ञात कर के आनन्दित करते रहेंगे-अब हम सर्व शक्तिमान् ईश्वर से इस समय यह प्रार्थना करते हैं, कि आप को आरोग्य रख कर आप के परोपकार संयुक्त वाञ्छा को परिपूर्ण करे।

आप का दास, यमुनादास बिश्वास मन्त्री
आर्य्यसमाज

क्रिशननारायण, सनरमक, भाग[illegible]तप्रसाद, हरीकिशन, जवालाप्रसाद, भगवानदास, लक्ष्मणप्रसाद,

मा: मथरादास, प्रभूदयाल, प्रागयनारायण
गेंदालाल, सोहनलाल, गिरवरलाल,

(ख) ३४

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज की ओर से श्रीयुत चौबे कन्हैयालालजी को पत्र *

ओ३म्

चोबे कन्हैयालालजी आनन्दित रहो नमस्ते

विदित हो कि पत्र आप का आया समाचार विदित हुए आपने प्रश्न किये सो सब हमारे पुस्तकों में उत्तर सहित लिखे हुए हैं उन में देखने से सब बातें विदित हो सकती हैं। तुमने प्रथम ही वार ये प्रश्न किये हैं इस लिये इस दफे तो सब के उत्तर देते हैं परन्तु आगे हम से प्रश्न करोगे तौ हम उत्तर नहीं देंगे क्योंकि हम को काम वहुत है इस कारण से समय विलकुल नहीं मिलता उत्तर (१) संध्योपासन और गायत्र्यादिनित्य कर्म द्विजों अर्थात् तीनौं वर्णों

---

* इस पत्र के अक्षर श्री स्वामी जी महाराज के अपने नहीं हैं। मालूम होता है कि यह पत्र उस असल पत्र की प्रति लिपि (नक़ल, कापी) है जो श्री स्वामी जी महाराज ने श्रीयुत चौबे कन्हैयालालजी को भेजा था।

के लिये एक ही हैं तीनौं वर्ण गुण कर्मों से माने जायेंगे जन्म से नही शूद्र जो विद्यादि गुणों से हीन है इस कारण से उसे संध्योपासन नही आ सकता इस लिये वेद के किसी मंत्र को याद कर के जपा करै।

उ० (२) कायस्थ अंबष्ठ हैं शूद्र नहीं। इस विषय में संक्षेप से लिखा है विस्तार पूर्वक शास्त्रों के प्रमाण देकर लिखने को समय नहीं है।

उ० (३) मुसलमानादि अन्य मत वाले वैदिक मत में आवैं तो वे जिस वर्ण के गुण और कर्म युक्त हों उसी वर्ण में रह सकते हैं विवाह और खान पानादि व्यवहार भी अपने समान वर्ण के साथ करैं आज कल के आर्य्य लोग उन के साथ उक्त व्यवहार नहीं करैंगे इस लिये अपने लोगों में ही करैं और मत वैदिक रक्खैं इस मे किसी प्रकार की हानि नहीं हो सकती।

तुम्हारे प्रश्नो के उत्तर इस प्रकार संक्षेप से दिये है विस्तार पूर्वक हमारे वनाये ग्रंथो में देखलो।

हस्ताक्षर

ता० १६ अप्रेल
सं० १८८१ ई

दयानन्द सरस्वती
स्थान जयपुर राजपूताना

(ख) ३९

श्री महाराज कुमार भय्या जगदम्बिका प्रताप बहादुर सिंह तालुकेदार देवतहा का पत्र ।

श्रीमत्सद्गुणाधार सच्छास्त्रार्य्याचरित सत्यधर्म्म प्रवर्त्तकाखण्डपाखण्ड निहा रनिर्वारक परमहंस परिव्राजकाचार्य दयानन्द सरस्वति स्वामिपादयोः पुरतः साष्टाङ्गानतयो विलसन्तु—

जिस क्षत्रिय के यहां दो चार पुश्ति से किसी अनभिज्ञता से उपनयन हुवे विना विवाह होता है परन्तु उस्के गोत्र में और लोगों का उपनयन होता है जिस्से उस्का परस्पर पङ्क्ति भोजनादि समागम एक ही है—और उस क्षत्रिय का उपनयन काल मुख्य और गौण दोनो वीति चुके हैं अव उस क्षात्रिय को श्रद्धा है कि धर्म्म शास्त्रोक्त कोई पाप*........जाता है कि इस विषय ....कृपा कर के आज्ञा फरमाइये यद्यपि हम जानते हैं कि आप को वेदभाष्यादि रचना से अवकाश नही है तथापि इस विषय में यथोचित उत्तर दाता न देष कर मजबूरी से आप ही को तकलीफ दी जाती है, कृपा कर के इस आश्रित की

*जहां जहां लीडर अर्थात् बिन्दियां हैं वहां वहां का भाग असल पत्र में नहीं है। वह सब भाग असल पत्र के फट गए हैं।

आशा पूरी कीजिये और लिखिये कि इस महीने में कहां मुकीम रहेंगे—इति—

द० श्री महाराज कुमार भया
जगदम्बिका प्रतापबहादुरसिंह
ताल्लुकदार देवतहा—

(ख) ३६

श्रीयुत पण्डित कृपाराम स्वामी देहरादून का पत्र

ओ३म्.

देहरादून. मिति अश्विन व० ७ स० १९४०

श्री. १०८. स्वामी दयानन्द सरस्वती जी. महाराज.
राज्यस्थान जोधपुर

प्रतिष्ठित. आचार्य. साष्टांग प्रणाम.

दीर्घकाल. व्यतीत. हुवा. कि महाराज का कोई पावन पत्र प्राप्त नहीं हुवा. अतएव हृदय अतीव शोकातुर है. यद्यपि. महाराज के मंगल समाचार. मु० समर्थदान. और समाचार पत्रों द्वारा. सदैव विदित होते रहते हैं तथापि. आप के शुभ हस्ताक्षर युक्त पत्र. देखने की अभिलाषा नित्यप्रति बनी रहती है. आशा है. प्रत्युत्तर प्रदान कर. शीघ्र. हम लोगों को भाग्यवान करेंगे.

उदयपुर. और शाहपुरादि राज्यस्थानों को इस वर्ष पवित्र कर महाराज ने. जो उपकार किया. सो तो ऐसे आनन्द का विषय है कि जिसको प्रगट करना. लेखनी की सामर्थ से बाहिर है. द्वेशी और विरोधि जनों के मुख से महाराज को धन्यवाद. देते. इस ही अवसर पर सुना है। मुन्शि समर्थदान जी. को भेजा हुवा मुद्रित धन्यवाद पत्र श्रीयुत महाराणा जी की सेवा में यहां से भी भेजा गया था जिस का उत्तर भी आर्यकुल दिवाकर ने अतीव अनुग्रह और हर्ष सहित प्रदान किया है। और जिस में श्रीमान् की पूर्ण हितैशिता. और देशानुराग प्रकाशित है हम लोगों के तुच्छ ज्ञान से कोई विधि ऐसी दृष्ट नहीं पड़ती कि जिस के द्वारा महाराज के **अपार अपार** उपकार का धन्यवाद समर्पण कर सकें. श्री जद्गीश्वर को बारम्बार प्रार्थना है कि महाराज का शरीर चिरंजीव. रक्खें.

लाला रामशर्णदास जी की मृत्यु भी समाज के लिये एक सामान्य दुख नहीं है ॥ उधर बाबु रामनारायण जी बाबु छेदीलाल के भ्राता का वृत्तान्त भी कैसा शोक जनक है महाराज ने सुन लिया होगा.

ईश्वर की इच्छा से गत जेष्ट मास में मेरी भार्य्या का भी मृत्यु हो गया. एक बालक तो आपने देख ही रक्खा है दूसरा एक उस से छोटा २॥ वा तीन वर्ष की आयु का है सो दोनों कों दुख हुवा.

यहां समाज की अवस्था कुछ प्रशंसनिय नहीं है जहां तक मेरा सामर्थ चलता है कोई उद्योग शेष नहीं छोड़ता हूं. नहर के एकाउंटेन्ट बाबु लक्ष्मणसिंह जी भी अत्यन्त सहायता देते है येह महाशय आर्य्य मन्दिर बनाने के अर्थ धन एकत्र करने में बहुत उद्योग कर रहे हैं जो परमात्मा आशा पूर्ण करे

बालादत्त के लेख के ऊपर मैंने उस का सब वृत्तान्त लिख कर भारत मित्र को भेजा था परन्तु शोक है कि विस्तार अधिक होजाने से उक्त लेख नः छप सका बालादत्त तो जो आप के शिष्यों के भी अनुचर शिष्य है उन के सन्मुख भी बोलने को समर्थ नहीं है यहां उस की सब कलई खुली हुई है.

अब जोधपुर के समाचार जानने की सब किसी को उत्कंठा हो रही है अनुग्रह सहित.उत्तर द्वारा विदित कीजिये.

सब सभासदों का नमस्ते.

आप का आज्ञाकारीशिष्य

कृपाराम

(ख) ३७

ओम्

अविद्यांधकार निवारक गुरूत्तम श्रीयुत स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज नमस्ते आज ही एक पत्र मुन्शी लक्ष्मण स्वरूप

वकील ने भी आप के पास भेजा है उस से मुन्शी बख्तावरसिंह के मुकद्दमे का हाल प्रकट हुवा होगा कल शनिवार को मुन्शी जी शाहजहांपूर जावेंगे और इन्हीं पंचों से फैसला कराने की नालिश करेंगे ॥

मैंने आप को यह पत्र इस लिये लिखा है कि मुम्बई में १ शरीफस्वालह मुहम्मदी का पुस्तकालय है उस में वेद स्वर विधान नामक १ पुस्तक है मैंने कई पत्री आर्य्यसमाज मुंबई और उक्त पुस्तकालय में भेजीं हैं परन्तु कुछ उत्तर न मिला अब मुझ को पूरी आशा है कि इस पुस्तकालय का और पुस्तक का पता लग जायगा क्योंकि आप सब प्रकार खोज लगा लेंगे इस कारण आप से प्रार्थना कर्ता हूं कि आप इस पुस्तक को मंगा कर देखिये कि कैसी है अथवा खरीदनी चाह्ये वा नहीं यदि अच्छी हो तो १ प्रति यहां भी भेजिये। और १ यह आप से पूछना चाहता हूं कि द्रोपदी के ९ पति थे या क्या।

आप का दासानुदास

ललिता प्रसाद पुस्तकाध्यक्ष

आर्य्यसमाज मेरठ

ता० ६. ज० ८२

(ख) ३८

ओ३म्

संख्या १२१

१ । सिद्ध श्री मुम्बई बन्दर महा शुभस्थाने सर्व शुभ ऊपमा लायक श्रीमत्पण्डिवर दयासागर जगद्विख्यात पुज्य श्री ६ स्वामी दयानंद जी महाराज योग्य लिखी इटावे से पं० ब्रजमोहन लाल शर्म्मा का सविनय प्रणाम अङ्गीकार हो अत्र कुशलं तत्रास्तू आगे सविनय समाचार जानने ॥०

१ आप के शुभ गुणगण तथा परोपकाररत स्वभाव देख और सुन कर परम आनन्द हुआ के अवस्य आप से मेरी अभिलाशा पूर्ण होगी—और वह अभिलाषा यह है के मुझ अल्पबुद्धि को आप से वेद शाखा तथा शिक्षान्तरगत अयोग वाहः वर्ग के विषय में कुछ पूंछना, है सो मेरे पर कृपा कर परोपकार की रीति से दया कर पूंछने की आज्ञा दे कर अपना नाम सार्थक कर इस नाशवान संसार में जस लिजीयेगा तो मेरे पर बडा ही अनुग्रह करियेगा—मुझे तो आप सरखे महा पुरुषों की राति से अत्यंत दृढतर विश्वास है के आप जरुर कृपा कर प्रश्न करने की अज्ञा देंगे क्यों के परंपरा से यह रति चलि आई है के सत पुरुष परोपकारार्थ बड़ा बड़ा श्रम करते रहे हैं तो ये कितनी वात है इस में तो केवल वाग् व्यापार ही है इस से आप जरुर इस वार्ता

को अंगीकार करैंगे. बार बार ज्यादे क्या लिखूं इस पत्र का उत्तर कृपा कर श्रम न विचार प्रीति रातिः से शीघ्र ही भेजियेगा जिस चित्त शान्त हो और आप का जस गाऊं ॥ जैसा हो वैसा पर उत्तर जरुर कृपा हो—ज्यादे क्या लिखूं आप वडे हैं ज्यादे लिखना अविज्ञा है।

२ और जो कहिं पत्र में अस्त व्यस्त तथा अनुचित्त आदि दोष होंय सो कृपा कर क्षमा करियेगा क्यों के मुझे आप योग्य पत्र लिखनें की वद्धि नहिं हैगी इस से जैसे वडे वालकों पर सदा कृपा रखते है एसे ही आप भी मेरे पर रक्खोगे. किमधिकम्।

द० आप के अनुचर **पं० ब्रजमोहन ला० शा०** के

ठिकाना—विश्रान्त घाट पर भवन संख्या ९८

उत्तर के वास्ते टिकट एक भेजा है सो अङ्गीकार करियेगा.

चिट्ठी लिखी शुभमिती ज्येष्ट शुक्ला ५ चंद्रवार सम्वत् १९३९ का मुताविक तारीख २१ मई सन १८८२ ईसवी शुभम्

(ख) ३९

20-7-83

ओ३म्

नमस्ते । वेदानुयायिन्

आपु से यह मेरी प्रार्थना है कि आयु के विषय मे इस दास हू भ्रम है अर्थात् अकाल मृतु है वा नही और यत्न कर के मृतु

का निवारण होता है वा नहीं यदि जो निवारण है तो यत्न से मृतु का संभव नही हो सक्ता और जो निवारण नही है तो औषधी ब्रह्मचर्य्यादिक किस लिए है इस का संदेह निवारणार्थ विस्तार पूर्वक पत्र शीघ्र भेजिंये क्योंकि इस अनुचर कू यह निश्चय है कि अकाल मृतु नही है किमधिकम् ।

उत्तर से शीघ्र ही सूचित करना योग्य है कारण कि भ्रम का निवारण हो जावै ।

पत्र भेजा जिला बुलन्दशहर परगना खुरजा डांकघर अरनीयां ठिकाना नगालिया उदयभांन की से कुन्दनलाल गुप्त ने *

(ख) ४०

ऊम्

कासगंज ज़िलअ् एटा

९-४-८२ ई०
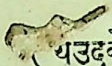
श्रीमच्छ्रेष्ठोपमा ब्रम्हविद्या प्रवर्तक सद् धर्म्मोपनिष्ठ श्रीपरिव्राजक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज को बुलाकीराम गुप्त का अभिवादन बंचने आगे श्रीमान् आप से आशा है कि चूड़ा-

* नोट—इस पत्र के पृष्ठ पर लिखा है "सेवा में श्रीयुत महा मान्यवर जगत् गुरु श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के बमुकाम जोधपुर राज मारवाड़" ।

कर्म के विषय के अभीष्ट मंत्र कि जिनके प्रतीक नीचे लिखे है और संस्कार विधि से पाये गये हैं उन को आपु पूरे २ लिखवा कर डांक द्वारा यहां भिजवाइ दीजिये तौ वड़ी ही दया होगी शीघ्र उन मंत्रों की चाहना है और प्रतीक ये है

(थउदके नेहेर्तीति) १ (अदिति केशान्) २ (औषधेत्रायस्वैनमिति) ३

ये प्रतीक आर्यसमाज फर्रुखाबाद को भी पत्रद्वारा भेजे थे वहां से यही उत्तर मिला कि प्रशंसित स्वामी जी के पास बंबई आर्यसमाज से मिलेंगे आपु शीघ्र दया करिके भेजिये तौ कार्य की पूर्त्ति होवे ॥

पं० दिनेशराम शर्म्म का अभिवादन और टीकाराम वा भगवान दास गुप्त का अभिवादन वंचने और गोरक्षा के बिषय में हस्ताक्षरों के विषय में जो इस्तहार वंवई आर्यसमाज में छपा है उस की प्रति भेजि दीजिये अग्रे किं

द० **बुलाकीराम गुप्त**

रामप्रशाद शर्म का अभि० गोपालदत्त शर्मणो नमस्ते

(ख) ४१

॥ ॐ ॥

॥ तत्सत् ॥

स्वस्तिश्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य पाखण्ड मतोन्मूलक शनमार्ग प्रवर्तक परब्रह्मैक निष्ट तदानंद पीयूख श्रीपद् कान्युत स्वामी दयानंद सरस्वती जी योग्य आर्य्य समाज फर्रुखाबाद का अभिवादन शतसः वंचने ॥

आगे यक विनय पत्र ता० १९–९–८० आप को भेजा है सो पौंचा होइगा ।

आगे कानपुर से आप जब यात्रा करना चाहे तब कुछ दिन की फुर्सत निकाल कर इहा हम लोगन को दर्शन देकर कृताथ कीजिये कोई कोई बात की समाज में हानी है सो आप के आये से सब पूर्ण हो जायगी और मदर्सा जो भया है उस का भी उत्तम प्रबंध आपके आउने से हो जाइगा सो आप को जरूर २ कृपा करनी चाहिये ॥ और इहा से आप की इक्षा होइ तौ मैनपुरी इटावा हो कर आगे जहा की निश्चै करी होइ तहा को यात्रा करने उक्त नगरों में भी आप के दर्शन की बहुत लोगन को उत्कण्ठा है ॥ और ज्वाला इहा है नहीं आउने की भी

निश्चै हम को नही है कि वह आप के पास आवे लेकिन पत्र ३ आप के जो इन दिनो आये है सो उनोने कोई देखे नही है आप इहा आमेंगे और वह भी उस वखत इहा होइगा तौ चाहे आप के साथ होजाइ केकिन हमने उन के घर वाले से दरियाफ किया तो उनोने यही कहा कि उन का जाना नही होइगा ॥

इति ॥ ता० १७-६-८० ईसवी

तोताराम भी अपने काम से निवृत्त होगया आप इहा आमेंगे जब आप के साथ हो जाइगा सो जानने *

(ख) ४२

ओं

सिद्धश्री सर्वोपमा योग्य विज्ञात विज्ञ श्री स्वामी जी महाराज स्वामी दयानन्द जी को तावेदार चुन्नीलाल का प्रणाम व दण्डवत पहुंचे अर्सा १ ½ डेढ़ वर्ष का हुआ कि मुज को आप के दर्शन मैनपुरी में हुए थे तब से प्रारब्ध न्यनि होने की वजे से अवतक मौका दर्शनों का नहीं हुआ मालूम नहीं बम्बई कितने दिनों तक आप के उत्तम विख्यानों से पवित्र होती रहेगी यहां

* इस पत्र के अन्त में पत्र प्रेषक का हस्ताक्षर नहीं है।

हज़ारों आदमी दर्शनों की अभिलाषा में हैं मेरा नाम चुन्नीलाल ज़िलेदार नहर गंग मैनपुरी में आप के दर्शन हुये थे अब आजकल मैं अपने घर गंज दारानगर जिला विजनौर में ठहरा हुआ हूं आशा है कि आप के आनन्द का पत्र मुज के गंज दारानगर में ही मिलेगा दूसरी प्रार्थना यह है कि १ विद्यार्थी अष्टाध्याई महाभाष्य पढ़ना चाहता है उसके खाने कपड़े आदि का सब प्रबन्ध होगया है कृपा करके जिस शाला में अच्छा पढ़ना होवे वहां भेज दिया जावे मुज को ठीक मालूम नहीं कि किस शाला में अच्छे पढ़ने का प्रबन्ध है कृपा कर के उस शाला के नाम से मुत्तलै कीजिये ताकि उक्त विद्यार्थी को भेजने का वंदोवस्त किया जावे दया कर के नवेदन पत्र का उत्तर शीघ्र मिल जावे बड़ी कृपा होगी ।

आप का तावेदार

चुन्नीलाल

मुक़ीम हाल गंज दारा नगर

जेष्ट कृष्णा ३ सवत् १९३९

Choonee Lall Ziladar
Dara Nugur
District BIJNOUR
N. W. P.

(ख) ४३

श्रीमत् परिब्राजकाचार्य्य श्री ५ स्वामि दयानन्द सरस्वति जी नमस्ते—

विदित हो कि मैं लखनऊ से वदल कर एक मास के लग भग व्यतीत हुआ यहां गोण्डे में आया लखनऊ समाज में मेरी जगह बाबू हरनाम प्रसाद जी मंत्री हुए ईश्वर की कृपा और आप के अनुग्रह से लखनऊ समाज का द्वितीय वार्षिकोत्सव बड़े उत्साह और आनन्द पूर्वक समाप्त हुवा—बहुत दिनों स आप का कुशल समाचार नहीं मिला एतदर्थ प्रार्थना है कि यद्यपि आप के अमूल्य समय में विघ्न होगा तदपि कृपा कर कुशल पत्र भेजये—यहां वेदादि का चरचा सर्वथा स्वप्नवत है केवल अपने उदर पोषण और विषय सेवन के सिवाय यहां के नगर निवासी वेद चरचा तो स्वप्न में भी न करते होंगे मैं अभी विदेशी होने से यहां कुछ वेद मत का चरचा नहीं कर सका समय पाने पर यथा शक्ति प्रयत्न किया जायगा आप गोरक्षा विषय का समाचार लिखें कि कहां २ से हस्ताक्षर होकर आगए हैं और कितने हस्ताक्षर हो गए हैं और कृपा कर हस्ताक्षरार्थ जो आप ने दो पत्र छपवाए थे और लखनऊ में भी उन की प्रति आप ने वाजपेई जी के पास भेजी थी उन्हीं पत्रों की एक प्रति मेरे पास भी भेज दीजिये हस्ताक्षर कराने

में यथा शक्ति प्रयत्न किया जावेगा और जितने हस्ताक्षर होंगे आप की आज्ञानुसार सेवा में भेज दिये जांयगे और अब आप के पास शीघ्र वेदभाष्य पूर्त्यार्थ के पण्डित नौकर हैं —॥ इति ॥—

आप का दास

चन्दन गोपाल

पता हस्ताक्षरी—

चन्दन गोपाल, ओवर सियर

दफ़्तर डिस्ट्रिक्ट इञ्जिन्यर साहब

नगर गोंण्डा, देश अवध

Chandan Gopal—Overseer
C/o District Engr's Office
GONDA
Oudh PROVINCE

(ख) ५२

स्वामी जी दयानन्द सरस्वती महाशय जी पश्चात् दंडवत् के निवेदन यह है कि कोई आपका पत्र नहीं आया मुझ दास पर जो कृपा होगई सो मैं आपका अति धन्य करता रहूंगा प्रसाद कर आप अपने रचे ग्रन्थ ब्याकरण के जो हैं कृपा पूर्वक भेज दिजे तो अति अनुग्रह होगा मैं चाहता हूं कि आप के ग्रंथों को एक वार

देख जाऊं तो कुछ प्राप्त हो आप का दास शिष्य मैं मुझ पर सदा दया कीजे और पुत्रवत् जानिये—

निवेदन मेरा यह है सदा दया दान दीजे ।
यश हो आपका सदा उपकार लीजे ।
मुझ को शिष्य कर योगमार्ग दान दीजे ।
दास हूं तिहारो यथायोग्य कीजे ।
मैं नाम तिहारो धर्ता गुरू आप हैं भर्ता ।
ऋषि जी प्रसाद दीजे आप ही कर्त्ता ।
शिवयोगी सम तुल्य आप योग दान दीजे ।
अल्प बुद्धि मेरी इसको महत्व दीजे ।
वेदभाष्य रच आप सदा संसार प्रकाश कीनो ।
परोकारी सदा ज्ञानी ज्ञान दास को दीजो ।
मन वचन कम से दास तिहारा, सदा लूं तेरा ।
मुनिवत् प्रसाद सदामोहि दीजो, तव शिष्यों में नाम मेरा ।
मैं दास पापी क्षुद्र बुद्धि ज्ञानी महान् तुम हो सदा,
शिष्य पुत्रवताज्ञा कारी आश्रय तुम्हार अब कीनो है-
योगमार्ग अब शीघ्र बताओ विद्या दान देव सदा ।
खुन्नीलाल अनाथ दास हों आश्रय तुम्हार अब कीनो है-

खुन्नीलाल
विद्यार्थी फोर्थ किलास

(ख) ४३

श्रीगणेशायनमः

विज्ञप्ति पत्रिकेयम्

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य दयानन्द सरस्वती स्व... आर्य्यसमाज चिकीर्षु महादेवाख्य स्यानेक प्रणामा विलसन्तुतराम् भवत् प्रणीत वेदोद्भव सत्यमत प्रवृत्यर्थोद्यतस्यमेतन्मतं श्रुत्वाधुनिक काल प्रसिद्ध पुराणादि कथां कोपि न श्रृणोति तद्वारा लाभार्थाभावाद्द्रव्याभावो भविष्यतिपे पीच्छंति वेदार्थं सोपिके नाप्यते विनार्थात् यदि भवत्प्रणीताः संस्कारादि विधायक ग्रंथा ऋतेद्रव्यात् प्राप्नूयुः तदावास्म द्वारा वेदस्य प्रवृत्तिर्भविष्यति कानपुरांतर्गत शिवराजपुर समीप स्थित भगवंतपुर गतस्यार्यसमाज प्रियस्य महादेवाख्यस्यभवन्मुख प्रणीत सभाढ्य वेदादि सर्व प्राप्त्यर्थं विज्ञाप्ति पत्रिकेयम् शुभमस्तु शुभमस्तु शुभमस्तु

प्रघटे स्वामी एक दयानन्द
खंडन प्रतिमापूजन को करैं केवल सांचे एक कहत छंद
ई कहे व्यास के नहि पुराण रचि डोरेई पंडित मंद
कँहु कँहु भारत की मानत हैं कँहु कँहु वा... मैं कहत द्वंद
महाभाष्य चरक मुनि गणित ग्रंथ सांचे मानत मुनि सूत्र वृंद

वलिवैश्वदेव अरु अग्निहोत्र संध्योपासन की करत संद
ह्यांते चलि चलि सव कासी तक पंडितन की करवाई सनंद
समुहे कोई नाहि दे प्रमाण पीछे निंदत कोइ अवुध गंद
शंकर झूठे मत तम पसारत ह दयानन्द उदये हैं चन्द्र १

(ख) ४४

श्रीः

श्रीमत्सकल सद्गुण गणान्वित ज्ञानस्वरूप विद्यार्काज्ञान तमहर श्रीस्वामी दयानन्द जी को प्रभुदयाल की प्रणाम अग्रे शुभमस्तु—छा सात वर्ष हुए लखनऊ मे आप के दर्शन हुए थे तव से फिर आप के दर्शन नहीं प्राप्ति हुए—जद्यपि आप के दर्शन को अत्यभिलाषा है परन्तु वे शुभकाल व पुण्योदय के महात्मा के दर्शन व सत्संग प्राप्ति नही होता अव यह खबर पाय कर की आप श्रीमन्महाराजाधिराज राना साहेव उदैपूर के यहाँ विराजमान है इस पत्र द्वारा अपना अभीष्ट प्रकाश करते हैं एक तो यह है की और शास्त्र के सूत्र सभाष्य मिल गए हैं वैशेषिक दर्शन सूत्र बहुत तलाश किया परंतु नही मिला आधुनिक गृंथ तर्कसंग्रह मुक्तावली जो ईप्सित नही हैं मिलते है इस्से आप से प्रार्थना है की जो आपकी अनुग्रह द्वारा कहीं से मिल सकै तौ मूल्य कृपा कर कै लिखिए आप विद्यावृद्धि कारण स्वरूप हैं इस्से निश्चय है की आप के

अनुग्रह द्वारा हमारा मनोर्थ पूर्ण होगा और एक संदेह आप से निवृत्ति करने की प्रार्थना यह है की मीमांसा दर्शन मे वलिप्रदान का जज्ञ मे विधान किया है और वह वेद वाक्यानुसार है आप के कथनानुसार सब ऋचौं मे जो ईश्वर नामोचारण पूर्वक हवन से आरोज्ञता वायु शुद्ध्यादिक प्रयोजन है तौ जीवहिंसा से [illegible] प्रयोजन है न्यून जीवौं को वलातिकार से क्लेश देना वध करना प्रमाण युक्ति विरुद्ध हैं जो प्रमाण युक्ति हेतु विरुद्ध है तौ हमारे मत से मानवे योज्ञ नही है औं जो वाक्यार्थ का भ्रम होय तौं कृपा कर के लिखिए मिः चैः सुः १३ सः १९४० पता उत्तर भेजने का–

चिठ्ठी पहुचे पास **प्रभुदयाल** के जिला–

वाँदा मुकाम तेरही प्र० पैलानी मे—

उत्तर भेजने के निमित्त)॥ का टिकट भी पत्र के भीतर रख दिया है

(ख) ४९

VEDIC PRESS, BENARES.

No. *Dated the* *1881.*

Dear Sir!

नमस्ते नेकधा **भगवन्**

पत्र आया। हाल मालूम हुआ यह तो मैं प्रथम ही स्वीकार कर चुका हूं कि आगे को अशुद्ध न रहने देऊंगा ऋग्वेद के ४७३–

४७७ तक जो अशुद्धि दोष लिखे गये ये मेरे नहीं है मैं तो १२ तारिख वाद में यहां आया हूं यह फारम प्रथम छप गया था। मैं जब यहां आया था तब काम की भड़भड़ी जादा थी और शोधना बहुत स्थिर चित्त से चाहिये।

इस से अब आगे को कुछ रोज इस काम में मेरी परीक्षा लेकर तब यह स्वीकार करना चाहिये कि शोधने में तुम्हारी कच्ची दृष्टि है यद्यपि अशुद्ध तो अभी मैं भी देखता हूं लेकिन आगे न रहने देऊंगा।

नवीन रचना के विषय में जो आपने लिखा सो जितना संस्कृत आप से मैं देहरेदून में कह आया था उतने ही को नवीन रचना कहता हूं व्याकरण के पुस्तकों मे अभी तो भाषा ही बहुत मैं काट देता हूं लेकिन आगे इतना काम व्याकरण में होना चाहिये कि अभीष्ट भाषा शोध कर जो संस्कृत बने उस संस्कृत और भाषा को मिला कर फिरि कंपोस के लिये कांपी लिख कर उस कांपी को अच्छा शोध कर तब व्याकरण छपवाया जाय। इस प्रकार की कांपी ६० वा ७० पृष्ठ जब तैयार हो जाय तब महीने का छपवाई का काम १५ ! वा १६ फारम का चले इस लिये प्रार्थना यह है कि एक लेखक मेरे लिये देना चाहिये और शोधक का जो आप ने विचार किया सो तो अभी न चाहिये था क्योंकि मुझे दो

महीने यहां आये हुए हैं यहां का सब काम अच्छी प्रकार मेरी दृष्टि में हो आया है और शोधने में भी उचित परिश्रम करूंगा। और जो नवीन को आप करेंगे तो महीने दो महीने उस से भी काम विगड़ेगा इस से जब मुझ से न हो सके तो चांहे जिस को करि लीजिये। किंवहुना

नासिक की कांपी जब मैं भेजूंगा तब मेरे भाषा के काटने मे रुचि हो तो आगे को जैसी आज्ञा होगी वैसा करूंगा वेदभाष्य की जो नवीन भाषा बन कर आती है कहीं २ दूरान्वयी बहुत है अब की दफे आप के भय से जैसी २ भाषा जहां २ सोची मैं वैसी नहीं कर सका।

(ख) ४६

वैदिक ❀ यन्त्रालय ❀ बनारस

संख्या । ता० १९ ज० सन् १८८१

नमस्ते !

भगवन्

यजुर्वेद के पृष्ठ ७ अ० आ० ९ तक आये । आप के वार २ लिखने की कुछ आवश्यकता नहीं किन्तु मैंने जब से

शुद्धि पत्र बनाया है तब से अपने काम में आप ही लज्जित हूं क्योंकि और बदनामी तो पीछू है प्रथम तो इस विषय में यही लोग कहेंगे कि शोधने वाला महा मूर्ख है इसी से अपने काम के लिये आपको दो दफे अवकाश के लिये लिखा परन्तु उस विषय में आपने दृष्टि न दी अब जो उचित हो तो इतना मानिये कि मुझे जो आपने भाषा बनाने को कहा सो बनाऊंगा और शोधूंगा इस से अधिक चिट्ठी पत्री वा हिसाब मेरे लिये रहे परन्तु और इस से अधिक काम करने को समय नहीं मिलता और जो करूंगा तो सब गड्डवड्ड होगा सफाई से नहीं होगा क्योंकि जो डेढ सौ वा दो सौ श्लोक लिखे जाते हैं उस प्रकार के ६ सौ वा ७ सौ मेरे लिखे शुद्ध हो सके सो न होंगे यह अपने सब काम के लिये दृष्टान्त देता हूं इसी प्रकार जितना काम देओ किसी विधि जहां तक करि सकूंगा तहां तक करि लेऊंगा परन्तु वह सब काम जल्दी का किया हुआ साथ सफाई के हो सो नही हो सकता है। आगे आप को अखतयार है जो चांहों सो कीजिये मुझ से जहां तक अपने काम की सफाई होगी उस में चूक नहीं करूंगा यह प्रतिज्ञा करता हूं अधिक काम व्याकरण में संस्कृतादि वनाना और उस की कांपी लिखना यह आगे के पुस्तकों मे होगा। इसे आप अपने पास ले लीजिये जैसा चाहीं वैसा संस्कृत बनवा कर वा बनाकर कांपी लिखा के भेजते जाइये। तो सब काम अवकाश से होगा।

अथवा जो आप की मरजी हो सो कीजिये। मैं कुछ और नहीं कह सकता हूं इतना तो पूर्व लिखे के अनुसार कहूंगा कि

अधिगतं विधिवन्मम लेखनं न च तथा स्मृतमात्म विमर्शतः भगवता प्रथिता ननु मत्कृता—वघरा घवराय गया इति। अघवरा. इत्यत्र अघेषु दोषेषु वरातिशयिता वक्ष्यमाणा पूर्वोक्ता वागिति [illegible]।

भीमसेन के विषय में जो आपने लिखा सो उन की पंडिताई को धन्यवाद देता हूं।

मैंने जो नित्यत्व, किया है,

निर्देश, इन के विषय में लिखा है उन में किया है यह कुछ अशुद्ध नहीं किन्तु भाषा के कुछ लालित्य भाव को देख के दिया है लिखा है। नित्यत्व और निर्देष के विषय में फिर विचार लेना उन में शंका समान बहुत हैं और वे पत्र में नहीं लिखे जा सकते किन्तु जब आप आवेंगे तब आप ही के सन्मुख जिज्ञासु हो कर कर लेऊंगा २०। ३४। ३९ इन संख्याओं की जगह १०। ३९। २९ ये संख्या मैंने बनाई ही नहीं इन का लिखना कैसे हुआ।

टाइप लिख चुका हूं।

लाजरस साहिब वा मुम्बई के शोधने वालों को शोधने से अधिक काम हो तो शोधने में सफाई उन से भी कभी नहीं हो। यद्यपि

मुम्बई का हाल शोधन का अनुमान से जानता हूं परन्तु साहिब के शोधने वाले का वृत्तांन्त प्रत्यक्ष है। किमधिकमधिकोक्तिभिः।

फारम गिन कर लिखूंगा वा सादीराम जी लिखेंगे।

(ख) ४७

वैदिकयन्त्रालय काशी

संध्या बनारस

नमस्ते

भगवत

आपने जो मास्टर सादीराम के पास मुं० व० के अपराध पकड़ने के लिये पत्र भेजा वह मुझे विदित हुवा मुं० व० का लिखाया हुवा जो प्रति मास का हिसाब उर्दू मे है उसको सादीराम जी मुझ को रात्रि मे लिखाते हैं लिख रहा हू आप के पास भी भेजूंगा और जो विशेष अपराध की जगह देखूंगा वहा सूचना क अलग आपको लिखूंगा अब तो जो अनेकी जगह व्यौरेवार लिखावट नही है इस से मालुम होता है कि उन का मन चीना लेख है और काम वालों से जो काम लिया है उस मे अपना अभिष्ट काम लेकर उन्होने आप का दाम खरच किया है जैसे (एक कामता कंपोजीटर जो कि नागरी अगरेजी और उर्दू मे अति प्रवीणता से कंपोस करने वाला है मेरे आये पर ३।४

रोज कंपोस उस का अति मंदयम का हुवा मैने उस से एक दिन कहा कि वड़े शोक की वात है जो तुम्हारा एसा कंपोस हो उसने मुझे लज्जित हो कर जवाव दिया कि पंडित जी आप का आगवन ही मेरे लिये मदंता का कारण हुवा मे जव से नौकर हवा हूं ५।६ वार वेदभाष्य आदि पुस्तको के कंपोस की [illegible] नही देताहूं और जो मैने आर्य्यदर्पण की उर्दू व अंगरेजी का ही कंपोस किया) यह ८) मासिक पाता है कई जगह वड़ई के नाम दाम हिसाव मे पकड़े है जैसे एक जगह १७) लिखे है काम एसा अंत्यन्त उस का नहीं मालुम होता है अथवा मेरी अल्प वुद्धि हो तो सादीराम जी इन वातों में आश्चर्य मानते है और मैं तो लिखते पठते ही शोक ग्रस्त होता हूं क्योकि जव से आया हूं मेरी विन घाट ही गुजर हुई और होती है ।

नालिस कागद छटि के जव पूरी गलती पाई नाय जव कहनी उचित है किन्तु इस काम में शीघ्रता नही करना चाहिये । ठाकुर मुकन्दसिह वा भूपालसिह जो आप से आप मुखत्यार किये यह उत्तम काम हुवा क्योकि धर्माधर्म के व्यवस्थापक क्षत्री जन ही है ।

काम जो कि आपने हमारे दोनो के लिये लिखे वे हम दोनो ने संयोक्त स्वीकार किये और पहिले हीं से कर रहे हैं

पुस्तकालय की तारी सादीराम जी ने अपने विचार से प्रथम ही मुझे देदी थी आगे इश्वर की साक्षी पूर्वक अपने पुरुषार्थ भर आलस नही करेंगे

हस्ताक्षर करने कराने की व्यवस्था १ तारीख अच्छी प्रकार चलेगी क्योंकि अभी सब रजिस्टर आदि लिखा पढी मैने साफ नही कर पाई है और जो वही करता तो अंक इस महिने मे नही तैयार करवा पाता ।

जामिनी के लिये जो आपने लिखा बड़े हर्ष की बात है रीत छोड़ कुरीत जो आप चल रहे थे उसे कोन अच्छा कहता था इस विषय मे प्रथम तो इनाम की सफाई चाहिये क्योंकि उसी से व्यावहार की शुद्धि होती है ।

आप ही कहना अयोग्य है परन्तु ८।९ वर्ष से आप मुझे हर एक व्यवहारो मे देख रहे हैं बुद्धिमान पुरुष मनुष्य की शीघ्र परीक्षा कर सकते है आप मेरे गुण वा अपगुणो को अच्छे प्रकार जानते भी हैं और मैं इस विषय में प्रतिज्ञा करता हूं कि जैसे जैसे अपराध मुंशी बखता० के प्रतीत होते हैं मेरे मंन वचन और कर्म से वे अपराध न होगे यह भी कह सकता हूं मेरे आप जामिन आप ही है इस परदेश मे जामिनी किस की दिलाऊं पत्रो

से तो इस व्यवहार की अच्छी सफाई नहीं होती है इस से यह उचित है कि आप एक महीने आगरे रह कर जो आगे आवोगे और फरुखाबाद मे आप का आना होतो आप की आज्ञा उनुकूल मे भी ८ रोज को आजाऊंगा वहां इस विषय की सफाई हो जायगी।

हरफ जो अभिष्ट होते है वे खारिज हरफों के टाइपफाउंडर से ढलवा लिये जाते हैं अधिक शीशा नहीं है जो शीशा की तजवीज होगी तो हरफ और हूं वनवाना अच्छा होगा जिस से अभिष्ट सव की डेउढ़ लगी रहे। सव कारीगरो से यथायोग्य वृत्तात पूछ रहा हूं कोई २ लोग मुंशी वखतावरसिह की आज्ञा मे मालुम होते हैं वे भी प्रेसमान कुछ चेष्टा मुं० वु० की आज्ञा की सी कर रहा है सादीराम चाहते है कि और अच्छा आदमी मिले तव उस को निकाल दे औरहू ज्यादा खरच मालुम होता है वह भी वे कम किया चाहते जैसा होगा वैसा आप को लिखा जावेगा। कागजों के लिये कलकत्ते से जवाव आगया है।

२४ पोंड केले कागज के १ गठ्ठे के दाम १६० लिख आये हैं सो अवश्य भेजते होंगे।

सातवे फरमे पर आज आज्ञा दे चुका हूं काम सव अच्छे परिश्रम से हो रहा है और आगे को भी साथ परिश्रम के होगा

आप किसी काम की चिन्ता न करते मास्टर सादीराम व्यवहार मे अच्छे प्रवीण हैं।

सुन्दरलाल का पत्र आया है वे भी आवेंगे। हमारे मित्र राधाकिृष्ण जी के साथ प्रीति के हमारी ओर से समझा दीजिये कि तकार की जगह द्वित्त्व सा तकार न वनाशा करें उन के थोड़े इसारा मे भी कंपोस वाले स्पष्ट द्वित्त्व कर देते हैं औरहू पकार यकार आदि का भेद रक्खे उन को यह शिक्षा उन ही के लिये लाभदायक होगी हम तो अपने काम को सम्हार ही लेते हैं

मिति मार्ग व. ८ संवत १९३७ — भवदनुग्रहकांक्षी पंडित ज्वालादत्त*

(ख) ४८

वैदिक ❀ यंत्रालय ❀ काशी

संख्या बनारस सं० १८८० ॥

दि. ता. १८ पौ. व. २

नमस्ते ! भगवन्

यजुर्वेदस्य पत्राणि प्राप्तानि ।

भवत्पत्र समीरित प्रश्नोत्तराणि मदीय पत्रेण सादीरामस्य पत्रेण वा यास्यन्त्येव। भवन्तो यथार्थतया मत्पत्रं न पश्यन्ति सादीरामस्य च प[त्रं] न शृण्वान्ति ।

---

*इस पत्र के अक्षर पं० ज्वालादत्त जी के अक्षरों के साथ नहीं मिलते।

यतो यानि भूमिकादीनि पुस्तकानि भवद्भिः प्राप्तानि तदर्थं यन्मया पृष्टं कस्य नाम्नि लेख्यानि तदुत्तरं न प्राप्तम् ।

नवम्बर मासावधि स्वमासिक धनव्यवस्था सर्वा लिखिता न जाने भवद्भिर्दृष्टा नवेति ।

मासि मासि यावन्मुद्रितुं शक्नोति तदपिमया लिखितं न जाने भवद्भिः प्राप्तं नवेति ।

किमत्र कारण मिति भूयः शङ्के । सम्प्रति । (गोलमाल कहने की बात है) इत्याद्या लापे न दूयेच

भगवन्

नैव मुंशी बखतावरसिंहाभिधो मम प्रियभ्राता नापि मित्रवरः ।

न चात्मीय प्रयासेन भवत्कर्मणो न्यूनत्वमिच्छामि सादीरामेणा-प्येकतामासाद्य कार्य्य हानिं नेच्छामि न निष्कामोहं मासिक धनं भोक्तु मुत्सहे ।

कथं भवन्तो मुंशी बखतावरसिंहस्य व्यवहार संजात रोषाग्नि ज्वलित निशित शराणि ज्वालादत्तं (गोल माल०) इत्यादि वचनैः प्रयो जयन्ति ।

नायमेतेषां कठिनतर कष्टं सोढुमर्हति । आतश्चात्रया धीवर्य्याऽऽगच्छति तस्याः पतिः कारागारे मृतस्ततस्सा द्वादश

दिवसान्नागतेति मयैव रात्रौ पाक भूमि प्रच्छालनं पाक भाण्ड धावनं च प्रतिदिनं विधायाः स्वस्य सादीरामस्य चान्नपाकः कृतः।

पहिले हिसाब विचारने को

अतस्तावत्पूर्वं विनिमय विमर्शा यावसरो न जातः। दिवसे च यन्त्रालयस्य कार्य्या न्नावकाशः प्राप्तः। यन्त्रालयस्य कार्य्य मपिनावरुद्धम् किन्तु पूर्व संजात कार्य्या दात्मीय समये स्वस्य बुद्धावधिकमेव कृतं कारितं च। तत्र पारितोषिकं गतम् प्रत्युत भवन्तो दुःसह वचनै र्वञ्चयन्ति।

अहो दुर्दिष्टम्। किं कुर्य्याम्।

सादीरामेणैकः सहकारी मुहर्रर इति नाम्ना रक्षितः सोहं च पूर्व धन प्रात्यप्राप्तिं निस्सारयामि भवभिस्सारितां चोक्षिप्ये। यद्यप्यहं स्वगुणैर्दोषभागेव तथापि निश्चये न विना दोषो न दीयताम् किं बहुना भवन्त एव पश्यन्तु प्रिय भीमसेनो वेति संस्कृते न पत्रं लिखितम्।

पं० ज्वालादत्त

(अनुवाद)

भगवन्

यजुर्वेद के पत्र मिले।

आप के पत्र में लिखे हुवे प्रश्नों के उत्तर मेरे या सादीराम

के पत्र से जायेंगे ही। आप यथार्थतासे (ठीक तरह) मेरे पत्र को नहीं पढ़ते, और सादीराम के पत्र को नहीं सुनते।

क्यों कि जो भूमिकादि पुस्तक आप को मिली, उस के लिये मैंनें पूछा (था) किस के नाम में लिखूं (मुझे) उत्तर नहीं मिला।

नवम्बर मास तक अपने मासिक धन की व्यवस्था सारी लिखदी, न जाने आप ने देखी या नहीं।

मास मास में जितना मुद्रित कर सक्ता है, वह भी लिखा (था), न जाने आप ने देखा या नहीं।

यहां क्या कारण है, यह मुझे वार वार शङ्का होती है। औ अब (गोल माल करने की बात है) इत्यादि आलापों (बातों) से दुःख होता है।

भगवन्

नाहीं मुंशी बखतावर सिंह मेरा भाई है, नाहीं मित्रवर।

और न अपने प्रयास से आप के काम की न्यूनता चाहता हूं। काम किये विना (निष्कामोऽहम्?) मासिक धन नहीं खा सक्ता, सादीराम के साथ भी मिल कर कार्य हानि नहीं करना चाहता।

आप मुंशी बख़तावर सिंह के व्यवहार से उत्पन्न हुवी हुवी रोषाग्नि से जले तीखे (गोल माल०) इत्यादि वचन बाण ज्वालादत्त पर क्यों लगाते हैं।

यह इन के कठिन तर कष्ट को नहीं सह सक्ता। और जो झीवरी यहां आती है, उस का पति कारागार में मर गया इस लिये वह १२ दिन से नहीं आई, अतः रात को प्रति दिन मैंने ही भूमि झाड़ तथा रसोई के वर्तन धो कर अपना और सादीराम का भोजन बनाया।

इस लिये पहिले हिसाब विचारने का अवसर न मिला। दिन में यन्त्रालय के काम से अवकाश न मिला। यन्त्रालय का काम भी न रोका। किन्तु पहिले किये हुये काम से अपने समय में अपनी जान अधिक ही काम किया और करवाया वहां पारितोषिक तो गया, प्रत्युत् आप दुःसह वचनों से बञ्चना करते हैं (वञ्चयन्ति)।

अहो दुर्दैव। क्या करूं।

सादीराम ने एक सहकारी मुहर्रिर रखा है। वह और मैं पहिले धन का आय व्यय निकालते हैं, और आप के निकाले हुवे को देखें गे। यद्यपि मैं अपने गुणों से दोषी ही हूं, तथापि निश्चय के विना दोष न दीजिये। बहुत क्या। आप या प्रिय भीमसेन ही देखें इस लिये पत्र संस्कृत में लिखा।

पं० ज्वालादत्त

(ख) ४९

पौ. सु. १०

नमस्तेनेकधा भगवन्

मैंने प्रथम कई बार प्रार्थना अन्य पुस्तकों के छपवाने को करी थी उसमें मुझे व्याकरण की नवीन रचना को महीने दो महीने अवकाश मिल जाता अथवा मैंने यह चाहा था कि इस महीने के अवशेष फारमों को छपवा कर तब नामिक का आरंभ कराऊं, महीने के शेष दिनों में नामिक भी छप जाता सो अब-तक अंक भर वेद की कांपी नही मिली अब मिलेगी जो-१८ पृष्ठ तक कांपी आपने भेजी थी उसमें ९ पृष्ठ नवीन पाठ के छपवाने को निकले और पाठ मैं छपवा और कंपोस करा चुका था सो सब व्यवस्था आपको विदित कर चुका हूं तो अब यह कैसे बने कि नवीन रचना कंपोस के साथ हो सके क्योंकि नित्य कंपोस को २०० श्लोक पाठ चाहिये और संस्कृत के बनने में संस्कृत इस नामिक की कांपी से अलग लिख और जो अब नामिक को शोध रहा हूं इसी तरह भाषा शोध और फिरि उस संस्कृत और भाषा को मिलाकर कांपी लिखके कंपोस को देता जाऊं तथा प्रूफ शोधना भाषा बनाना और पत्र आदि ऊपरी काम जो आपडे यथोचित वह भी सब होता जाय इतना तो मेरा सामर्थ्य नही और अपनी बुद्धि से साथ चपलता के आपसे यही कहता

हूं कि उक्त सब काम इकट्ठा नित्य २ करने को मनुष्य का सामर्थ्य न होगा । इससे प्रार्थना यह है कि इस नामिक की पहिली कापी से मैंने भाषा की बहुत सफाई कर और नोट आदि देकर इसका छपाने का आरंभ करा दिया यह वेसंस्कृत छपता है आगे को जो मुझे अवकाश दीजियेगा तो जैसा आप व्याकरण छपाये चांहते हैं वैसा ही छपेगा और संधि विषय तथा नामिक का दूसरी वार के छपने में संस्कृत बन जायगा ।

(स्वराधीनं व्यंजनम्) यह स्वयंराजन्त इति स्वराः० इस पंक्ति के आशय पर छप गया परन्तु पाठ ठीक नहीं है और मेरे पास महाभाष्य था नहीं उस समय कई वातें महाभाष्य देखने को मेरी आकांक्षा रह गई । अब मामाजी ने लिखा है कि तुम्हारा महाभाष्य हम भेज देंगे । गलती जो आपने निकाली मैं स्वीकार करता हूं यह मेरा दोष है परन्तु आपने मुझे काम भी बहुत दिआ है इतना कुछ आप भी स्मरण कीजिये काशीजी में आकर एक महीने वाद मुझे दस्त २० रोज हुए अव शरीर अच्छे हैं उक्त क्लेश में यथेष्ट परिश्रम मुझसे नहीं हुआ । पढने के लिये जो आपसे मैं कह आया था सो फारसी तो मुंशीजी से नहीं पढी और संस्कृत का अभी प्रारंभ नहीं किया अभी बिलकुल कुछ पढता नहीं हूं आगे आप आज्ञा देवें तो गोतम सूत्र आदि पढने को इच्छा है सो पढूंगा ।

पुस्तकें मुंशीजी से कह दिया है कल भेजने कहते हैं साथ में समर्थ दान आदि के चिट्ठी पत्र आदि भी भेजने कहते हैं।

. भगवदनुग्रहकांक्षिणः ज्वा०

अष्टमाध्याय १। २ दिनमें भेजता हूं।

(ख) ७०

॥ ओम् ॥

............भा. कृ.६

सिद्धि श्री १०८ मन्महानुभाव स्वामि दयानन्द
सरस्वतीभ्यः प्रणत्यानिवेदनम्

६१ मंत्र यजु० भेजे हैं आपके पास पहुंचे होंगे इनमें (अ० २३ मं० १८) का नवीन उक्ति से मेरा कहा अन्वय है तथा (२३ अ० मं० ३२) का अन्वय तीनि प्रकार से मैंने कहा है देखना चाहिये अब भाषा बनाने के लिये अभी जो मंत्र आपने भेजे तथा पिछिले १० मंत्र मेरे पास और हैं आगे कांपी भेजना चाहिये।

भाषा बनाने के लिये जो गोंदरादि शिवदयालु से मुंशी करा रहे हैं यह तनिक शोच विचार के होना चाहिये इस भाषा

बनाने में बहुत जगह कठिन पडती और आगे पीछे बहुत ख्याल रखने पड़ता इस काम में जो आपके पास दो वरस न रहा हो और जिसने आपका ठीक सिद्धान्त न जाना हो उससे इस भाषा का वनवाना इस काम का ढंग विगडवाना है क्योंकि जब तक मंत्र भाष्य बना देने का सामर्थ्य जो मनुष्य करलेवे उससे इस कामका कराना लडिकियोंका खेल खिलवाना है। पर तो भी मैं जानता हूं कि चाहे काम की सफाई हो या दुर्दशा हो दूसरे आदिमी का ज्वालादत्त के काम पर नाम कर ज्वालादत्त को स्वामीजी के काम से जवाव दिला देना मुंशी समर्थदान ने परम पुरुषार्थ समझा है क्योंकि यह मनीषी और भी कितनी ही कुचेष्टा मेरे लिये कर रहा है जो इसी प्रकार जैसी कि और चेष्टा कर रहा है करता रहा तो आपके कामसे मुझसे जवाब अवश्य दिलावेगा।

चकार की जगह और अर्थ तो लिखताही हूं पर कहीं २ बहुत चकार आ जाते हैं तो भाषा की रीति से सब चकार नहीं लग सकते हैं, क्योंकि भाषा की रीति से वहुत पदों के अंत में और शब्द आ सकता है प्रत्येक पद पर और और नहीं होसकता। अप्यर्थक जहां चकार है वहां भी शब्द ही अर्थ होना चाहिये और यह निरर्थक चकार की योग्यता में आता है। पर तो भी जहां तक भी शब्द वचा मिले वहां तक मैं वचा

देऊंगा। फारसी शब्दों के बचाने के लिये गमारू शब्द भी मिल जाय तो गमारू शब्द धर देता हूं जहां तक बच सके वहां तक बचा भी देता हूं। पिछिला जो मण्डल ९० मंत्र का भेजा है उस में १०० मंत्र के तुल्य भाषा थी उस में रात्रि को भी परिश्रम करता रहा हूं। १९ दिन आगे चिट्ठी भेजने का तो ढंग [illegible]छा लगे जो आप २०० मंत्र भेजा करें क्योंकि १०० मंत्र एक पक्ष के लिये वैसे ही चाहिये १०० मंत्र आप भेजें तो जिस समय कांपी आवे उसी समय दूसरी कांपी के लिये पत्र देऊं तो १९ दिन पेस्तर पत्र दे सकता हूं इस से इस विषय में इतना निवेदन है कि—जिस में मेरी डिउढ लगी रहे तो पन्द्रह दिन पेस्तर पत्र का नियम बंधे॥

किमधिकेन

(एकाचमेतिस्रश्चमे०) इत्यादि जगहों में सब चकारों पर और २ रखना तो ठीक नहीं। आप ने जो कोई अपूर्व युक्ति सोच रक्खी हो तो कृपा कर लिख भेजिये। मेरी शिच्छा के अनु-कूल जो हाल आप लिखें उस को मेरे पत्र में लिखिये तो उन बातों को आप की आज्ञानुकूल अपने काम में मैं सम्हालता जाऊं मुंशी समर्थदान से मेरे विषय का मुझे हाल ठीक नहीं मिलता। आप ने लिखा था कि ज्वालादत्त १९ रोज पेस्तर कापी के लिये पत्र लिखा करे यह हाल रामचंद्र ने आप की चिट्ठी का मुझ से कहा मुंशी कहते हैं कि [illegible]१९ पेस्तर हम से कह दिआ करो हम

कांपी मगा दिआ करेंगे बाबू विश्वेश्वर ने हम से कहा कि भाषा का बंडल तुम आप बांध और एक पत्र उस की सब व्यवस्था का बंडल के साथ स्वामी जी को दिआ करो । मैं अपने हांथ बंडल वांधूं तो मुंसी को वे मन देखता हूं इस से बंडल नहीं वांधता बंडल अपने हांथ वांधूं तो ८ वें रोज बंडल के साथ पत्र आप को दिआ करूं अलग जो पत्र भेजता हूं सो अपने पास से टिकट लगा कर भेजता हूं । इस प्रस्ताव में इतना निवेदन है कि मुझ से विगडे सो मेरे लिये पत्र में लिखा कीजिये और कांपी मेरे नाम भेजा कीजिये जो मेरे नाम कांपी भेजने में हानि हो तो न भेजिये । अत्र विषये वहु लेखनं विफली करणमिति भवन्तो विदां कुर्वन्त्वेतावतैवे-त्यलम् ॥

इस पत्र के लिखने से मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि असा-वधानी के अवलम्ब से इस काम को किसी तरह विगाडूं । तथापि जो मेरे लिये आप का अभिप्राय हो सो । मालूम हो ।

भीमसेन.... अपने अपनी नाराजी से जवाव दे दिया मेरी स्थिरता में मुंशी समर्थदान प्रतिबंधक होगा ।

किमधिकम्
कृपापात्र
ज्वालादत्त,

(ख) ९१

ओ३म्

भगवन् नमस्ते कैई कृपापत्र आये परन्तु मै उत्तर न दे सका कारण यह है कि मैने प्रवंध किया था कि २० तथा २२ तथा २४ फर्मे प्रात मास छपा करैं परंन्तु यह कम्पाजीटर लोग वडे दुष्ट जन होते है इन्होने लडभिड कर भैरौं वनारस वाले को निकाल दिया और फिर आप वद्माशी से काम करने लगे और १ अद्भुत वात यह हुई कि पं० देवीप्रसाद मंत्री आर्य्यसमाज ऐसे विगड गये कि समाज से भी नाम कटा लिया और आप की भी वुराई करने लगे और हमारे अल्प वुद्धि पं० भीमसैन कौ भी विगाडने लगै उन से व्याकरण पढने का आरंभ किया सो पढना पढाना तौ क्या आप की वनाई हुई पुस्तकौं मै भीमसेन से अशुधिया निकलवाया करै और उन कौ एसा कुछ समझा दिया कि आप स्वामी जी से भी अधिक वुद्धिवान पंडित हौ और पं० भीमसैन नट खट नही है पर भोला है संसार के छल छिद्र कुछ नही जान्ता है जैसे कोई वातौ पर चढादे वैसा ही चढ जाता है ॥ १० तथा १५ दिन तौ मुझ को क्रोध रहा और मै किसी से नही वोला पर पश्चात क्रोध को शांति किया और स्वकार्यं साधयेत० इस शब्द को स्मर्ण और दौनौ मनुष्यों को समझाना आरंभ किया थोडे दिन मैं भीमसेन तौ सीधा हो गया

पर देवीप्रसा की पहली से वात तौ अव नही रही पर हां कुछ २ सीधे हुएं है अव कुछ हमारे अतिसहाई तौ नही है पर विरोधी भी नही रहै और कुछ २ सहाय भी करने लगे है यह कारण काम विगडने का रहा— और दयाराम जी का यह हाल है कि विद्या और बुद्धि उन की बुहत थोडी है और विना दूसरे की सहायता से काम कुछ नही कर सकते है इन से केवल इतना ही भरोसा है कि आदमी ईमानदार हैं और हात पेर से आप भी दिन भर महनत करते है और अन्य मनुष्यों को भी खूव देखा करते है ॥ जव तक रामनारायण प्रयाग मै रहा यंत्रालय का काम बुहत अच्छी तरह से चला पर जव से बुह इटाये को वदल गया तव से अलवत्ता जरा गड़ बड़ रहता है मुझ को इतनी भी फ़ुरसत नही कि १ घंटा नित काम करदूं दूसरे तीसरे दिन जव दयाराम जवरदस्ती मेरी छाती आ छढते हैं तव दवदवा कर थोडा काम जो अत्यन्त जरूरी होता है कर देता हूं. पं वालमुकंद से इतनी सहायता होती है कि महीने के अंत मै एक वा २ दिन महनत कर कै वेदभाष्य रवाने करा देते हैं ॥ पर काम यंत्रालय का चला जाता है किसी प्रकार से रुका नही है हां अलवत्ते बुहत सी वाते जो उन्नती की मै सोचता हूं सो नही कर सकता हूं ॥ आपने सीसा सुरखी सिहाई भिजवा दीना है और कागज की भी प्रवंध हो गया—अव २ वातें और चाहिये १ तौ दूसरा

पंडित और २ दूसरा मैनेजर ॥ पंडित की जरूरत यों कि दो मनुष्य होने से यह आराम है कि जब कभी कोई बीमार हुआ अथवा और ही कोई कार्य्य से काम न कर सका वा कभी मगरापन करने लगे तो दूसरे आदमी उस की जगह कर दिया जावें नहीं तो पडित जी के बिना सब काम मिट्टी है अर्थात हम और सब यंत्रालय पडित जी के ही आधीन रहे इस कारण दूसरे पडित की अति आवश्यक्ता है ज्वालादत्त को मैने लिखा था सो आने को राजी तो पर तंखाह के वास्ते पेर फहलाता है न मालूम अपनी ही इच्छा से वा भीमसेन के इसारे से—मै ज्वालादत्त का कार्ड आप के पास भेजता हूं जैसी आज्ञा होय आप लिख भेजें जो मासिक ज्वालादत्त को देंगे वह ही भीमसेन को भी देना पडेगा- मेरी तजवीज यह है कि यह दोनो मनुष्य नोकर रहें और १ यंत्रालय मे और १ आप के पास काम करै और १ वर्ष पीछे बदली हो जाया करै अर्थात यंत्रालय वाला आप के पास और आप का पंडित यंत्रालय मे वदल जाया करै ॥ आप जैसी आज्ञा करें वैसा ज्वालादत्त को लिखूं ॥ मैने यह लिखा था कि १९) का मासिक और जब स्वामी जी पास रहोगे तो भोजन अधिक मिलेगा—

मैनेजर की सहायता को दूसरा मनुष्य आवश्य चाहिये क्योकि हिसाब किताब की सफाई रहै और पत्रव्यवहार अच्छी

तरह से होय और तकाजा रुपैय का जल्दी २ जाय आप समर्थ-दान और फरखावाद को पत्र फौरन लिखदें और यह लिखदे कि जो राजी होय सो फौरन प्रयाग को चला आवै इस की बुहत आवश्यक्ता है कारण यह है कि अभी निश्चय तौ नही परन्त एसा अनुमान होता है कि आज से १ महिना पीछे अर्थात १ जूलाई को मुझे ३ महिने के लिये ब्रह्मा के देश को जाना होगा जो कलकत्ते से ६ दिन का रास्ता जिहाज से होगा तौ दयाराम मेरे साथ जायंगे और यहा दूसरे मनुष्य की आवश्यक्ता होगी सो आप कृपा कर के समर्थदान को और फरखावाद दोनों जगह को लिख भेजें कि फौरन प्रयाग चला आवैं—

पिछले महीने मई मे २० फार्म छपैं है और आप की कृपा से २० तथा २२ से कम अव नही छपैंगे और १ वात और यह है जिस को सुन आप भी प्रसन्न होगे कि आप के इस चरण सेवक को श्रीयुत गवरनर जरनल वहादुर ने खिताव "रायवहादुर" की दिया है ॥ यह केवल आप ही के चरणे का प्रताप है ॥

प्रयाग १ जून सन् १८८२ — चरण सेवक
सुन्दरलाल

दानापुर का पत्र ।

(ख) ६२

श्री स्वस्ती श्री ९ महाराज पण्डित दयानन्द सरस्वति स्वामि जोग लिखी दानापुर से माधो लाल और सकल सभासदों का अभिवादन पहुंचे यहां कुशल आनन्द है आप का कुशल मङ्गल चाहिये आगे आप ने जो चिट्ठी शाहजहांपुर से लिखी सो उस के उपर दानापुर मुम्बई हाता लिखे जाने के कारण मुम्बई चली गई थी इस लिये यहां यहां कुछ देर से पहुंची हम लोग उस के पढ़ने से अति आनन्द हो गये और सब वस्तु जो हम लोग समझते हैं आप की सेवा के अवश्य होंगो हम सब जनें जैसे वन पड़ता है तैयार कर रहे हैं यदि आप हरिहर क्षेत्र की मेला में जाने को इच्छा करैं गे तो उस के लिये भी तैयारी करने में हम लोगों का कुछ विलम्ब न होगा । सब आवश्यक वस्तु डेरा डन्डा इत्यादि अभि से युक्ता रक्खेंगे यदि उधर के आर्य्यभाई कृपा कर के इधर आने को इच्छा करें तो आप उन को मना मत-किजिएगा वरण साथ लिये आइएगा हम लोग वड़े आनन्द पूर्वक उन से गले २ मिलेंगे ईश्वर के कृपा से उन को यहां किसी वात की तकलीफ नहीं होगी जब आप वनारस में पहुंच जावें तब कृपा कर के एक पत्र यहां लिख

दिजिएगा ताके यहां से दो एक मनुष्य ठीक समय पर आप के पास जावै और आप के साथ २ यहां आवें ॥

(ख) ९३

श्रीयुत महाशय रामनारायण जी मन्त्री आर्य्यसमाज दानापुर का पत्र ।

दानापुर १३ अप्रैल १८८२ ई

स्वामी जी नमस्ते

स्वामी जी आप के संग एक सप्ताह व्यतीत कर के हम सभी ने बड़ा आनन्द उठाया विशेस कर के उन शिक्षाओं से जो कृपा कर के आप हम लोगों को देते रहे । आप यहां से विदा हो कर हम लोग अजमेर पहुंचे और वहां के प्रधान व: हरनाम-सिंघ ने बड़ी प्रीति पूर्वक वर्ताव किया और बड़ा व्याख्यान हमारे पंडित तथा प्रधान ने दिया वहां से चल कर दिल्ली गे वहां से मथुरा।

मथुरा में नैनसुख से मल कर बड़ा आनन्द प्राप्त हूआ उन्हो ने हम लोगों का वहूत ही सत्कार किया और उन के सतसंग कुशलता देख कर बहूत प्रसन्न हुए वहां भी आर्य्यसमाज नियत हुआ है सन्ध्या के समय नैनसुख जो हम लोगों को समाज में ले गे और वहां एक छोटा सा व्याख्यान हुआ जनकधारीलाल

ने दीया तदनन्तर आगरा आये वहां एक सभासद जिन का नाम बाबु सोहनलाल हैं औ जो कासी करिय से मथुरा गये थे और हम लोगों के साथ गये थे अपने मकान पर हम लोगों को ले गे और यथोचितसत्कार किया और अपने साथ हो कर ताज को देखलाया जिस्से चित्त वहुत वहुत प्रसन्न हूया और दूसरे सभासद ने मेडिकल कालेज में ले जा कर मनुष्य के सरीर का जोड़ ता. भली भांति देखलाया सन्ध्या के समय वहां के मन्त्री बाबु जमनादास विश्वास से मीले और उन से वार्तालाप कर के वहूत आनन्दीत हुए वारता के मद्य में उन ने एक यह एक वात कही कि जगन्नाथ इत्यादिक जो आर्य्यधर्म के वीसये में छोटे २ ग्रन्थ लिखा करते हैं उन में बड़े २ आर्य्यधर्म्म से विरुद्ध्य है वाते भी लिखी है कि जिस से भविष्यत में वड़ी हानी हो सक्ती है और वे आर्य्यों में भेद डालने के कारण हो सक्ते हैं इस लीये किसी प्रवन्ध से इस को रोकना अत्यन्तावश्यक है ।

लाहौर—मेरठ—फरुक्खावाद में दो चार बुद्धचीमान नियत कर दीये जावें और इस का नोटिस समाजों में भेज दीया जावे कि जो कोई ग्रन्थ वनावे (आर्य्यधर्म्म विशयक) तो उन बुद्धचीमानों से पहले देखाकर पीछे यन्त्रालय में भेजे । और विना ऐसे किये हूये वह ग्रन्थ प्रमाणिक न समझा जावे । स्वामी जी महाराज !

हम लोगों के समझ में बाबु जमुनादास विस्वास का यह कहना बहूत ठीक मालुम पडता है इस लिये आप से वर्णन किया आशा है कि आप भी इस विषय में कुछ विचार कीजियेगा आगरा से चल कर कानपुर में पहुंचे वहां पण्डित शिवसहाय और उन के पुत्र रामनरायन ने हम लोगों का बहुत सत्कार किया वहां से लखनउ आये और रामाधर बाजपेयी के यहां उतरे नोटीस तुरन्त दिया गया और सन्ध्या को सब सभासद् एकत्र हुए और हमारे प्रधान और पण्डित जी ने व्याख्यान दिये। सब सभासदों से मील कर अयोद्धया में और काशी में होते हुए ७ अप्रेल को दानापुर आप की कृपा से आनन्द सहित पहुंचे।

स्वामी जी महाराज जहां २ आज समाज में हम लोग गे वहां के सभासद् ऐसे प्रेम से वर्ते कि मैं समझता हूं कि अपना कोई सहोदर भाई भी न करेगा धन्य आप हैं कि जिन के दया से यह फल आर्य्यावर्त्त में दीखने लगा यहां का मेवा तो फूट सारे संसार में विख्यात हो गया है। धन्य आप हैं जिन के यत्न से यह एकयता की लता सहसो वर्ष के पश्चात् पुनः इस देश में उग चली है।

स्वामी जी! अफसोस यह है कि मेरठ आर्य्यसमाज और फरुक्खाबाद आर्य्यसमाज के दर्शन नहीं हुए इस का कारण यही

है कि जब अहमदाबाद से आगे बढ़े तब कुछ गर्मी अधीक बोध होने लगी और प्रधान साहब के नाशिका से कुछ रुधिर प्रघट हुआ पस घर पहुंचने में जितनी शीघ्रता सुभीते से के साथ हो सका क्या गई।

स्वामी जी महाराज ! जीस दीन हम लोग यहां पहुंचे उसी दिन बाबु माधोलाल भी हजारी बाग से ६ मास को छुट्टी ले कर यहां पहुंचे उन के बृद्धय चचा बहुत बीमार थे तार भेजा गया था इन के आने पर जब अच्छी तरह बातें हो चुकीं उस के कैक घंटे पश्चात् उन का देहांत हूआ। बाबु माधोलाल ने वैदिक बिद्धी के साथ उन का दाह क्रीया किया। बहुत से सभासद उस समय उपास्थित थे

भाग्य से हम लोग भी पहुंच गये थे हमारे पंडौल जो महाराज संस्कार विधि के अनुकूल वैदिक ऋचाओं का पाठ करते थे और घृत की आहुति दी जाती थी।

रामानन्द जी नमस्ते।

हम लोग भलीभांति अपने घर पर पहुंचगे रास्ते में किसी प्रकार का विघ्न नहीं हूया आसा है कि आप भी आन्द से है।

गिरानन्द बाबा कर्म्मासिंह और पल्तट्टा जी से हम लोगों का नमस्ते कह दीजियेगा ।

आप का दास

रामनरायन लाल

दानापुर १३ अप्रैल । १८८२ मन्त्री आर्य्यसमाज दानापुर

(ख) ९४

ओ३म्

ता० ११ । ९ । ८३ । ईस्वी

श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामी

समीपेषु

महाशय । दण्डवत् ! आशा है कि कृपा कर के निचे लिखित पर अवश्य ध्यान देंगे । कृपा कटाक्ष से मेरे ओर देख कर शिघ्र मेरे शुधरने का यत्न करेंगे । यदि अज्ञानता अथवा अविद्या के कारण कोई दोष आरोप हुये हों तो उसे दूर कर देंगे।

सत्य वृतान्त ।

मैं श्री बास्तव कायस्थ हूं, जब १३ बर्ष का अवस्था था पिता मेरे तीन बहिन व तीन विधवा जो अब तक हैं अर्थात मेरी प्रदादी व दादी व माता को छोड़ कर प्रलोक पधारे । हम नार्मल

ईस्कूल के लाष्ट किलास में अंगरेज़ी पढ़ते थे, फ़ारसी पढ चुके थे। महल्ला निवासीयों ने नाम कट्वा देकर देवनागरी फ़ारसी व क्यथी में ज़ोर पहुंचा कर मामुली नौकरी वृत्ती करा दिया।

मुन्शी हर्नन्दनसहाय वकील जजी पुनियां रहने वाले खगौल ज़िला पटना फुफ़ा मेरे सहकारी हुये और उन्हीं के सहायता से मेरे द्वि बहिन की व मेरी विवाह संस्कार हो गई।

आज काल ७) रुप्या मासिक पर (क्यों छोड़ दिया आगे विदित होगा) राय जय कृष्ण साहिब के इहां मुत्सद्दी था। इतना केवल पहिचान के लिये लिखा है ॥ अब मेरी अवस्था २३ वर्ष की है ॥

उत्साह

धर्ममार्गी पुस्तकों के अवलोकन का उत्साह तो मेरे चित्त में पुर्व ही से है। प्रथम रामायण व पुराण आदि का अभ्यास रहा, जब प्रेमसागर में वेदों का तारीफ़ पढा तब तो वेद जान्ने का उत्साह बढा इस में कितने जगह हम फिरे पर कुछ न हुआ कितने शुद्र कह कर फेर देते थे। बाबू जिवराज सिंह कायस्थ से आप के कृत भाष्य का हाल विदित होने से मुनशी मनोहर लाल के इहां आप के कृत पुस्तकों का देखना

प्रारम्भ किया। पुस्तकों के देखते ही पुराणों से निष्ठा जाती रही और विद्या उपार्जन विषय उत्साह बढ़ा।

आर्य्य समाज

विद्योन्नति के निमित्त आर्य्य समाज नियत कर के विहार बन्धु द्वारा प्रगट कर दिया। बाबू हरिहरचरण प्रधाण सभा जब से इन्सपेक्टर हो मुतिहारी गये तब से समाज न हुआ। इस के विरुद्ध द्वि धर्मसभा भी नियत हो गया था।

पत्र का आशय

स्वामी जी। दण्डवत! मुझे विद्या उपार्जन का उत्साह है आप कृपा कर के सहायता कीजिये। आप पञ्चायत्न पूजा में माता पिता को गिनते हैं और गृह का बोझ केवल मुझ ही पर है तदर्थ निंचे लिखित उपाय मनोवाञ्छित फल सिद्ध करने का जाना है।

१ आप अपने समीप अथवा वैदिक यन्त्रालय में कोई प्रबन्ध दे कर शिक्षित करें।

२—एसा न होने पर आप का भाष्य सहित व्याकरण को लेकर इहां पढ़ें।

३—ऐसा भी न होने पर केवल ब्रह्मचर्य्य कर के विद्या उपार्जन करें।

उत्तर—मुन्शी समर्थदान के
ओर से

स्वामी जी इहां नहीं हैं, इस समय ८) रुप्यै मासिक का कांम खाली है आप अपने काम का लयाक़त ठीक २ लिखिये तो आप को यह काम मिल सकेगा।

प्रति उत्तर।

वाद लिखने ल्याक़त के हम ने यह भी लिखा कि मासिक कुछ बढा देंगे। इस पर कोई उत्तर न आया। तब हमने सप्तमोभागः समासिक प्रयन्त मंगाया पढने के लिये, पँर इहां पोपलीला के कारण न हो सका। तब तो चित्त बड़ा उदास हुआ।

ब्रह्मचर्य्य की
मुस्तैदी।

यह निश्चित किया कि वृथा जन्म खोना अछा नहीं अभी समय है, कम से कम तनि बर्ष के लिये भी ब्रह्मचर्य्य कर लें। ऐसा विचार कर इहां से प्रयाग (काशी तथा मिर्ज़ापूर का आर्य्य समाज देखते हुये) गये। जब मुन्शी समर्थदान से मिले तब विदित हुआ कि आज काल कोई जगह यन्त्रालय में नहीं है, और स्वामी जी को अवकाश पढाने की नहीं मिलती इस कारण उन के समीप जाना व्यर्थ है। हम फिर आये।

जब घर आये तो मालूम हुआ कि माता व दादी व हमारे बह-नोई प्रयाग खोजने को गई हैं, जब हम पहुंचे थे। उस के सुबह हो के वे सब भी वापस पहुंचीं। इति

मेरि छोटी बहिन व एक भांजी है और इहां कोई ऐसा पाठ-शाला नहीं कि जिस में पढ़ने के लिये भेजूं। और स्त्रियों की दुर्दशा देख निहायत चित्त को विषाद होता है तदर्थ मैं चाहता हूं कि अपना अमुल्य समय उन के सूधारने में लगाऊं। पर बोझ घर का केवल मुझ पर है और आप के उपदेशों से भी विदित है कि पञ्चायतन पूजा में माता पिता का सेवा करना अवश्य है। तदर्थ निचे लिखित उद्योग मनोवाञ्छित फल सिद्ध होने का जान कर आवेदन पत्र महाराजे दर्भंगा तथा आर्य्य-समाज लाहौर, फर्रुखाबाद, मेरठ, तथा अपने फुफा को भी दिया है। अभी तक उत्तर न आया है।

१ संस्कृत पढ़ने चाहता हूं व घर का बोझ भी है और कोई नौकरी कर के पढना हो नहीं सकता इस कारण मैं चाहता हूं कि कोई तिजारत कल का करूं और इस में १०००) से कम व २०००) से अधिक की आवश्यकता नहीं है कोई धर्मात्मा सुदी वा बे सुदी रुप्या देवे, उस को अख्त्यार है कि बनजर मज़ीद इत-मीनान ताअदाय रुप्यै के कारखाने को अपने क़बजे या तहत में रखे।

२—या १५ रुपया मासिक धमार्थ वा कुछ थोड़े काम के साथ दें।

आप से, निवेदन।

१—उपर लिखे पर ध्यान दे कर जहां तक हो सके मेरी सहायता करें।

२—तीन वर्ष के लिये अपने समीप ब्रह्मचर्य्य में ले कर रखें, और मेरे केवल खाने का प्रबन्ध कर देवें।

३—अगर हो सके तो आप को राजा महाराजा से बहुत सम्बन्ध है मेरी आजिविका का प्रबन्ध कर देवें। जिस से अपने मनोवाञ्छित फल के सिद्ध करने में समर्थ होऊं।

४—मेरे तात्पर्य्य को विचार कर उसे अपने वेदभाष्य के टाइटल पेज में स्थान देंगे वा आर्य्य समाचार पत्रों में दिलवा देंगे।

५—सत्यार्थ प्रकाश द्वारा जाना था कि जब गर्भ स्थित होती है तो उस के कुछ काल बाद छठे वा सातवें महीने (मुहृत्त ठीक याद नहीं है) जीव स्त्रि के श्वांस द्वारा बालक में पड़ता है, ता० ६ । ९ । ८३—इसवी भारतमित्र द्वारा ज्ञात हुआ कि विर्य्य में कीड़े होते हैं, वही क्रम २ से बढ़ते हैं पीछे से जिव नहीं पड़ता इस में गरुड़ पुराण तथा वेद का भी प्रमाण

दिया है। इहां लिखने में विस्तार होगा भारतमित्र निकाल कर देखियेगा। आप ने भी यह सिद्ध किया है कि जिव का धर्म घटना बढना है और जितने वस्तु घटते बढ़ते हैं उस में जीव है जैसे वृक्ष इत्यादि। पस इस से भी यह सिद्ध होता है कि अवश्य विर्य्य ही में पहिले से जिव होंगे क्योंकि अंतःकरण अर्थात् गर्भ में शरीर के अवयो के बढ़ने का कर्म होता है। और जिस् दूरबीन से जल के कीड़े देखे जाते हैं उसी से वीर्य्य के कीड़े भी देखे जा सकते हैं। इस शंका का समाधान पत्र द्वारा कर देवें। यदि भारतमित्र की बात असत्य हो तो उस का खण्डन भारतमित्र द्वारा प्रकाश कर दीजिये।

६—एक नास्तिक का दलील। जितने हर्कत (व्योहार) होते हैं उस का कारण खून (रक्त) है और खून ही से दुख सुख अनुभव होते हैं। किसी विकार तथा रोग से किसी शरीर के अंग में खून नहीं रहता है तब वह बे हर्कत हो जाता है और उस अंग से शीत उष्ण नहीं अनुभव होते। जब फोला किसी अंग में पड़ता हैं तब उस में ख़ून नहीं रहता पानी रहता है इस कारण उस फोले पर सूई गड़ाने तथा चीड़ने से वा उस चमड़े के उखाड़ने में दुख नहीं होता। मुर्दः में भी ख़ून नहीं रहता है। यदि जिव कोई भिन्न वस्तु है तो क्यों उपर लिखे हुये जगहों में दुख सुख अनुभव नहीं कर्ता, तो क्या सिद्ध हुआ कि खून ही

एक चीज़ है और खून तत्वों से उत्पन्न होता है और फिर तत्वों में मिल जाता है । इति । मुझ से कोई उत्तर न हो सका आप के समीप लिखता हूं विस्तार पूर्वक समाधान लिखियेगा ॥

७—जब आप पुरब के तरफ वा कलकत्ता प्रदर्शनी में पधारें तब कोई अकाज न हों तो पटना भी उतर कर दर्शन देकर कृतार्थ करेंगे ।

८ विशुद्धानन्द सरस्वती अपने को शिष्य श्रीमत् परिव्राजकाचार्य्यण बतला कर प्रतिमा पूजन वेद विहित कहते हैं तथा काशी में जो आवेदनपत्र गवर्नमेण्ट में भेजने का प्रस्ताव हो रहा है कि परतिमा अदालत में न आया करे इस में बड़ी हानि है उस पर आप ने हस्ताक्षर भी कीये हैं शंका इतना है कि आप भी स्वामी बिरजानन्द सरस्वती को पुर्वोक्तमहाशय का शिष्य लिखते हैं तो एक ही गुरु के द्वि शिष्यों में इतना मत भेद क्यों पड़ा । हमने भारतमित्र द्वारा विशुद्धानन्द सरस्वती का हाल जाना है।

उत्तर इस पत्र का अवश्य दीजियेगा आगे आशा है कि कृपा कटाक्ष से मेरे ओर देखते रहियेगा । इतिं शुभम् ।

आप का दास

द्वारका नाथ

मुहल्ला बड़ी पटन देवी शहर पटना

(ख) ९९

श्रीयुत शङ्कर शास्त्रि केरलीय का पत्र

ओं नमोब्रह्मणे

लुप्तान् काल वशात् कलौ शुभकरान्धर्मास्तु वेदोदितान्
व्यत्या सुप्रमितेः सदर्थ वितते श्चाबोधतो भूतले ॥
भूयोपि प्रकटय्य लोक मखिलं दुःखाम्बुधेस्तारयन् .
व्यासो नूतन आविरासन्नु दयानन्दः सरस्वत्यसौ ॥ १ ॥
सोयं गीष्पतिवद्वदावदमणिः क्षेत्रेषु काश्यादिषु
प्रापन् धर्मपथं गदन् कुधिषणान् वा दोद्यतान् कुण्ठयन् ॥
आहूतः सकलागमार्थ विदुषा धर्मात्मनासादरम्
ख्यातेऽस्मिन्नजमेर नाम नगरे श्री भाग्य रामेण वै ॥ २ ॥
अत्युद्दण्डाशिरः सहस्र विपुल क्षोणी धर क्षोभित।
क्षीराब्धि प्रसरन् प्रचण्ड लहरी सौहार्दसंपद्गृहाम् ॥
यस्मिन् सूक्ति सुधां प्रवर्षति भवाघैश्चोग्र सूर्य्यांशुभिः
संतप्ता मुदिता सभास्थ जनता तापं समस्तं जहौ ॥ ३ ॥
भद्र श्रीपङ्कलेपो वितरति न तथा मन्दमानन्द मन्ता
राका संपूर्ण जैवातृक कर निकरोनानिलो दाक्षिणात्यः ॥
उद्यानं वा नव[illegible]न च नमुचिभिदो नैव साक्षात्सुधा वा
वेदार्थं भासयन्ती भवगदमथनीयस्य वाणीयथालम् ॥ ४ ॥

आधिव्याधि जरादि दुस्तर भवाम्भोधौ प्लवो यो दृढो
निस्ताराय समस्त मानवकुलस्यालस्य लेशो ज्झितः ॥
वर्षन् सूक्तरसंविधिः स्वयमिव श्रेयो वितन्वन् हरन्
सर्वाघं कृपया हरस्य जयतादाचन्द्र मार्त्तण्डभम् ॥ ९ ॥

केरलीय शंकरशास्त्रिणा निर्मितं

पद्यपञ्चकम् परिस्कृतं यमुनाशंकर शर्म्मणा

प्रशस्तिः

(१)

कलि में, कालवश, मति के उलटा होने तथा अज्ञान के कारण, भूतल में लुप्त वेद में कहे हुवे, कल्याणकारी धर्मों को, अच्छे अर्थों को फैलाने के लिये फिर से प्रकट कर के, सारे लोक को दुःख सागर से पार उतारता हुवा क्या यह (दयानन्द सरस्वती) व्यास उत्पन्न हो गया है ?

(२)

सो काश्यादि क्षेत्रों में जाकर बृहस्पति की तरह, धर्ममार्ग को कहते हुवे, और वाद में डटे हुवे मूर्खों को पराजित करते हुवे इस वदावदमणि (वाद करने वालों में श्रेष्ठ) को, इस प्रसिद्ध अजमेर नगर में, सारे वेदार्थ जानने वाले धर्मात्मा श्री भाग्यराम ने बुलाया ।

(३)

जिस समय इन (स्वामी जी ने) बड़ी बड़ी चोटी वाले पर्वत से क्षुब्ध दुग्ध सागर के जल तरङ्गों की तरह निर्मल सूक्ति सुधा को बरसाया ; उस समय संसाररूपी तेज सूर्य से जले हुवे सभा के लोग प्रसन्न होकर सारे ताप को भूल गये ।

(४)

वेदार्थों को वर्णित करने वाली, संसार के रोगों को नष्ट करने वाली इस की (स्वामी जी की) वाणी जैसा आनन्द देती है वैसा न तो चन्दन का लेप न पूर्णमा के चांद की किरणें, न दक्षिण की वायु, न इन्द्र का सुन्दर बाग़ और नाही साक्षात् सुधा वैसा आनन्द देती है ।

(५)

आधि व्याधि जरादि रूपी दुस्तर समुद्र में नांव की तरह दृढ़, आलस्य को छोड़ कर सारी मनुष्य जाति के उद्धार के लिये स्वयं ब्रह्मा की तरह सूक्ति रस को बरसा कर कल्याण को करने वाला, और पापों को हरने वाला, यह (स्वामी दयानन्द) जब तक सूर्य्य चांद का प्रकाश है तब तक परमात्मा की कृपा से विजयी हो ।

केरलीय शंकर शास्त्रि के बनाये हुवे पांच श्लोक, यमुनाशंकर ने परिस्कृत (?) किये ।

(ख) ८६

श्री परमेश्वरो जयतुतराम् ॥ श्रीशः पायात् ।

सिद्धि श्री शुभगुणवृन्द सँय्युतानाम्पाखण्ड प्रचुरतरा-
ध्वरोधकानाम् राजश्री परिभवकृत्सु विद्यकानां विद्वत्ता चणयाति
वीरता धराणाम् ॥ १ ॥

आत्मैक्यं सकल जगत्सु पश्यताम्वै सद्विद्याभ्यसन विशुद्ध
तीक्ष्णबुध्या अर्य्याणां सदय मुदा गिराह्वयानां मन्नामा अधिचरणं
समुल्लसन्तु ॥ २ ॥

श्रीमतांयुष्मांकृपातः शमिहतत्र त्यमिष्यते तराम्परमेश्वरात्
उदन्तोयम् श्रीस्वामिनो भो स्वनिर्म्मित कुपुस्तक लिखित परकीय
सुपुस्तकाशयानाम्पाखण्डिनाम्पामराणां वेदविरुद्धानि सारस्व-
तादि कुपुस्तकानिभागवतादि कुपुस्तकानि च मदीय पाठशा....
.... वृत्त दृष्ट्वा पण्डिताअपण्डिताश्च मयि
वैमस्यं कृत्वा मत्प्राण पोषणकरीञ्जीविकां निर्म्मूलत्वेन विच्छिन्दन्ति
यतस्ततो ममनिर्जीविकस्य जीविका निष्पाद कोपायज्ञापकं स्वहस्त
लिखित पत्रं ममोपरिकृपया श्रीमद्भिर्न्न प्रेषणीयमवश्यम् किंच श्री
मद्भिर्बः स्वनिर्मि भाष्यसहिताया ॥ वैदिक्यास्संहिताया एक-
म्पुस्तकमिह प्रेष्यम् किंचाष्टाध्याय्या उपरियत्सु पुस्तकं विनिर्म्मितं

तदपि मयिकृपया प्रेषयितव्यम् किं च उदेपुरे युष्माकं समीपे पत्र-मेकं प्रेषितं तदुत्तर पत्रं मत्समीपेनायात मिति वेदितव्यम् किं च श्रीमतांयुष्माकं सकाशाद्बाबूसंज्ञकोष्टाध्यायीम्पठति तस्मैमदाशीः कथनीया किम्पुरो बहूक्त्या न भोवेदन............प्रोष्ठय दासितनम्पां

....

श्री परमेश्वरोजयतुतराम्

सिद्धि, लक्ष्मी और शुभ गुणों से युक्त, पाखण्ड के बड़े भारी रास्ते के रोकने वालों, राजाओं की कान्ति को मात करने वाली विद्या से युक्त, विद्वत्ता के कारण विख्यात, सन्यासी, वीर, सुविद्या के अनुशीलन से उत्पन्न विशुद्ध मति से सारे संसार में एक परमात्मा को देखने वालों, और आर्य्यों को दया तथा प्रसन्नता से बुलाने वालों के चरणों में मेरे प्रणाम हों।

श्रीमानों की कृपा से यहां क्षेम है, वहां भी ईश कृपया चाहता हूं। वृत्तान्त यह है, कि हे स्वामिन् ! ऐसे पाखण्डियों की जो दूसरों के अच्छे आशयों को अपने निन्द्य ग्रन्थों में रख देते हैं—वेद विरुद्ध सारस्वत भागवतादि पुस्तकें मेरी पाठशाला..........

यह हाल देख कर पण्डित और अपण्डित सभी लोग मेरे साथ विरोध कर के मेरी प्राणपोषिणी आजीविका मूल से ही नष्ट

कर रहे हैं, इस लिये मुझे मेरी आजीविका का उपाय बताने वाला पत्र आप अवश्य भेजें और अष्टाध्यायी पर आपने जो अच्छी पुस्तक बनाई है वह भी कृपया भेज दें। और आप के पास उदयपुर में जो पत्र भेजा था उस का उत्तर नहीं आया। और श्रीमानों के पास जो बाबू नामक अष्टाध्यायी पढ़ता है उसे मेरी आशीर्वाद कह दीजिये..

(तिथि तथा ग्रन्थकर्ता का नाम विच्छिन्न)

श्रीरस्तु ॥

श्रीशम् वन्दे
श्री ७ युत योधपुरेश योग्यमिदम्पद्यम्
अस्यायुर्म्महदस्तु पुत्रमुदथोरात्पञ्चनिष्कण्टकं
शत्रूणान्निवहो विनश्यतु तथा वोभातुमित्रोदयः।
सौभ्रात्रं हरिपादपद्मयुगलेभक्तिर्म्मदाशीरियं
राज्यात्कीर्तिमदेणराजनृपतौ सभ्रातरि श्रीमति १ श्रुभम्भूयात्
आयुष्मान्भवसोम्येत्याशी राजनिराजस्वराजस्वेति राजताम्
सम्वत् १९४० भा० २ । १० । ४ लिखितमद ~ पत्रम्

श्रीरस्तु ।

श्रीशं वन्दे ।
यह श्लोक श्री ७ योधपुर के राजा साहिब के योग्य है—
'इस की आयु बड़ी हो, ...नता का देने वाला पुत्र इस के हो,

इस का राज्य निष्कण्टक हो, शत्रु नष्ट हों, और मित्रों का अभ्युदय हो, इस का भ्रातृ प्रेम बढ़े, परमात्मा के चरण कमलों में इस की भक्ति हो—यही राज्य से उत्पन्न कीर्त्ति वाले पुरुषों मे चन्द्रभूत इस राजा तथा इस के भ्राता को मेरा आसीर्वाद है ।

(ख) ८७

श्रीयुत पण्डित हेतुराम जी का पत्र ।

श्री:

महतः गुण संस्मृतिः सदा गुणदा दोष निवारिणी हृदः । स्मरणं परमेश्वरस्य वा परमैश्वर्य दमापदावतां १ वाराणस्यां रुडक्यां च मेरठे चापि दर्शनं भाग्यादेव मया लब्धं सार्द्धं न गतवानहं २ पंचविंशति मुद्राभिर्मासिकेनापि तत्र मां-भवान् न्ययोजयन् भाग्य-मांद्यान्नांगीकृतं मया ३ अधुनोपसृतिर्भवत्पदेष्व भिलाषेण दृढेन चेतसः तदनेन जनेन काम्यते विधि कालेन विहन्यते न चेत् ४ पत्रं भवच्चरण संगतमस्मदीयं मानं लभेते भवदाक्षि चरश्च भूत्वा कांक्षे तदुत्तर वशाद्भवतो प्यनुज्ञा मायामि सेवन मनोरथ साधकोहं ५ भवतामनुगोपि यत्पदं व्रजति भ्रंशाभियापवार्जितः तदुयांति न केपि मानुषा इतरै रर्चित वं[illegible]ध्रयः ६ ममास्ति मैत्री न

नृपे न चाढ्ये न भूमिभृत्कार्य करैश्च कैश्चित् भवत्पदं वा जगदीश पाद मुभे भवेऽस्मिन् शरणे ममस्तः ७ **हेतुरामः**

श्रीपत्री स्वामीजी महाराज को
श्यामसुंदरकी मुरादाबाद से नमस्ते पोहुंचे

ओ३म्

परमात्मा, या (परमैश्वर्य्य दमापदावतां)—जितनी भी महान् व्यक्तियें हैं उन का स्मरण सर्वदा मनुष्य में गुणों को उत्पन्न करने वाला तथा दोषों का नाश करने वाला होता है।१। काशी रुड़की तथा मेरठ में आप के दर्शन हुवे थे ; परन्तु मैं आप के साथ नहीं गया।२। वहां आप ने मुझे पचीस रुपये मासिक पर भी कार्य्य में लगाना स्वीकार किया था ; परन्तु अपने मन्द भाग से मैंने तब वह स्वीकार न किया।३। अब चित्तकी उत्कट इच्छा से मैं आप के चरणों में आना चाहता हूं यदि इस कार्य्य में भाग्य ही बाधा न डाल दे।४। मेरा भेजा हुवा पत्र, यदि आप के दृष्टिगोचर होता हुवा स्वीकृति को प्राप्त हो ; तो कृपया अपनी अनुज्ञा से उत्तर पत्र में सूचित करें। आप के मनोरथ को मनोरथ को पूरा करने के लिये मैं उपस्थित हूंगा।५। भ्रष्ट होने के डर से छोड़ा हुवा आप का पृष्ठ चर भी जिस पदवी को प्राप्त होता है, वह पदवी अन्य मनुष्यों द्वार पैर पुजवाते हुवे पुरुष भी नहीं पा सक्के।६। मेरी न तो किसी राजा से मैत्री है

और न ही किसी धनी से है। राज कार्य्यकर्त्ताओं से भी मैं मित्रता नहीं रखता। आप के चरण और परमेश्वर ये दो ही इस संसार में मेरे आश्रय हैं

हेतुराम

(ख) ५८

श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री १०८ स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज का पत्र

श्रीयुत महाशय कर्नल आलकट साहब के नाम।

ससे वह स्वयं योगाभ्यास कर सिद्धियों को देख लेवे इस से उत्तम बात दूसरी कोई भी नहीं मैं बहुत प्रसन्नता से आप लोगों को लिखता हूं कि जो आपने ईसाई आदि आधुनिक मत छोड़ परम पवित्र सनातन ईश्वरोक्त वेदमत का स्वीकार कर इस के प्रचार में तन मन और धन भी लगाते हो और उस बात से अति प्रसन्नता मुझ को हुई कि जो आपने यह लिखा कि कभी आप भी वेदों को छोड़ दें तो भी हम लोग उन को न छोड़ेंगे क्या यह बात छोटी है। यह परमात्मा की परम कृपा का फल है कि जिसने हम और आप लोगों को अपने वेदोक्त मार्ग में निश्चय पूर्वक प्रवृत्त किये उस को कोटी कोटी धन्यवाद देना भी थोड़े हैं। जैसी उस ने हम और आप लोगों पर करुणा की है वैसी ही कृपा सब पर शीघ्र करे कि जिस से

सब लोग सत्य मत में चलें और झूठ मतों को छोड़ देवें। कि जैसा अपने आत्मा अत्यन्त आनन्दित हैं वैसे सब के आत्मा हों। और एक आनन्द की बात की सूचना करता हूं कि जिस को सुन आप लोग बहुत आनन्दित होंगे सो यह है कि एक वसीयत नामा १८ अठारह पुरुष अर्थात जिन में दो अर्थात एक आप और दूसरी ब्लेवस्तिकी और १६ शोलह पुरुष आर्य्यावर्त्तीय आर्य्यसमाज के प्रतिष्ठित पुरुष हैं इन आप सब लोगों के नाम पर पत्र और नियम लिख रजष्टरी करा के आप और सब लोगों के पास शीघ्र पत्र भेजूंगा कि जिस से पश्चात् किसी प्रकार की गड़बड़ न हो कर मेरे सर्वस्व पदार्थ परोपकार में आप लोग लगाया करें और मेरी प्रतिनिधि यह सभा समझी जावेगी।

इस लिये उस पत्र को आप लोग बहुत अच्छी प्रकार रखियेगा कि वह पत्र आगे बड़े २ कामों में आवेगा। किमधिलेखेन प्रियवर विद्वद्विचक्षणेषु। *

सं० १९३७ मि० श्रावण वदी ६ मंगलवार †

---

* यह पत्र पेंसिल से लिखा हुआ है और इस पर पृष्ठ संख्या ३ तीन है जिस से विदित होता है कि इसके पूर्व दो पृष्ठ और लिखे गए थे परन्तु उन दोनों पृष्ठों का पता नहीं है। यद्यपि पत्र के आदि, मध्य वा अन्त में कर्नल आलकट साहब का नाम लिखा हुआ नहीं है परन्तु सारे पत्र का आशय विचारने से यही बोध होता है कि यह पत्र श्री स्वामी जी महाराज की ओर से आलकट साहब को लिखा गया था।

† इस पंक्ति से बहुत नीचे बांई ओर "स्वामी जी" पेंसिल से लिखा हुवा है जो बतलाता है कि श्री स्वामी जी महाराज की ओर से जो पत्र कर्नल आलकट साहब को लिखा गया था उस की यह कापी है।

(ख) ५९

श्रीमती भगवती जी हरियाना ज़िला होशियारपुर के पत्र

ओंनमः

सिद्ध श्री सर्वोत्तम सर्व स्वामिन् सकल दुःख विनाशक सर्वानंदप्रददीनन पर परमदयाल धर्ममूर्ति पितृस्वरूप श्री श्री श्री श्री श्री श्री स्वामीजी महाराजजी नमस्ते कृपासिंध १६ अकतूबर का पत्र आपका मेरे को पहुंचा परम आनंद हुया यह जो आप मेरे बेआश्री पर कृपा करते हों इस से आपका विद्या प्रताप परमेश्वर महान् बढ़ावें महाराजजी यह जो आपने लिखा कि तू लाहौर जा सके तो हम लाहौर आर्यसमाज को तेरे वास्ते लिखें सो जी आपने परम कृपा और स्यानप करी जो पूछ लिया परन्तु मेरी ओर से यह उत्तर है कि मेरे को तो केवल इस ही प्रयोजन सिद्धी की इच्छा है कि भले पुरुषों के आश्रे से इस पाप के फल शरीर की रक्षा ओर अपनी बुद्धि अनुसार जो बात पूछूं उसका यथावत उत्तर सो हे दीनानाथजी आपकी सहायता से जिस जगा मेरा यह प्रयोजन आपको सिद्ध होता दीखे उस जगा मेरे को चाहे कहीं भेज देवो होर जो शोचनीय बात है सो आप शोच लीजिये परन्तु आपसे भी एक यह प्रार्थना है कि जिस जगा आप मेरे को भेजों उस जगा मेरे सत्कार की इच्छा से मेरे को

बड़ी वना के न भेजो छोटी वना के भेजो काहे ते कि मैंने अपने प्रयोजन के लिये जाणा है तांते आप उन्हों कों ऐसे लिखें कि एक स्त्री शरीर हमारे आगे यह प्रार्थना करती है हमारे घूमने के हेतु इसे पढ़ाना कठन है तांते जेकर तुम ऐसे करो तो तुमको योग्य है कहो तो भेज देवें जो बात वो पूछे सो कृपादृष्टि से अपनी कन्या की न्याई बता देनी जौनसी बात उसको पूछनी न आवे औ कल्याणकारक होवे सो भी दया से बता देनी और एक रहने के लिये अनुकूल स्थान दे देना एक महीना पर्यन्त अन्न दे देना महाराज इस रीति से मुझको उन्हों के पास भेजो मेरा बहुत बोझ न उन के ऊपर डालो जिससे वोह एक दूसरे की तरफ़ देखते २ कई महीने दलीलां ही में न लगा देमें महाराज मैं अपना गुज़ारा इस रीति से कर लेवूंगी कि जब मैं एक महीने में गली कूचे औ अपने सजाती शरीरों की वाकफ़ हो जाऊंगी तब दो तीन घरोंसे एक एक रोटी ले लिया करूंगी औ वस्त्र का खरच मेरी माई दे दिया करेगी माई में तो अन्न के देने की भी सामर्थ है परन्तु इस का स्वभाव ज़रा संकोची है इस से मेरा इस के साथ ऐसा व्यवहार है कि जो यह अपनी परसन्नता से दे देवे सो ले लेना और अपनी इच्छा से कुछ नहीं कहना इस जगा बैठा को तो दोनों अन्न और वस्त्र अच्छे सत्कार से दे देती है क्योंकि समुदाय में से निकलता विदत नहीं होता औ अन्य देश में जाऊं तो इस को अपनी गांठ से

देना पड़ेगा तांते वस्त्र का तो मेरे को सम्भव दीखता है अन्न का नहीं और स्थान समाजस्थों से लेना ही है और जी जो आप की आज्ञा है कि स्त्री जनों को अपनी बुद्धि अनुसार उपदेश करना सो जी यह भी होती रहेगी क्योंकि जौनसी मेरे समीप होंगी और आवेंगीयां उनको तो होता ही रहेगा और जो समाजस्थों पुरुषों की इच्छा देखूंगी सो करूंगी आगे महाराज जी आप परम बुद्धि-मान हों जो आप की आज्ञा होगी सो करूंगी दीनानाथ जी मैंने तो उसी काल ही लाहौर को चली जाना था जालंधर से लाहौर का टिकट ले लेना था परन्तु एक तो मेरे को चौथाईया ज्वर दूसरा मेरठ देखके चित्त में यह आई कि जेकर उस जगा भी असे होगा तो साथ वालियां हंसी करेंगियां तांते अपने स्थान पर चल कर महाराजों से पूछ जैसे कहेंगे वैसे करूंगी हे करुणा-कर आप जो संसार के उपकार गौयों की रक्षा के लिये यत्न कर रहे थे वोह कैसे हुया और जो कहते थे कि सत्यार्थप्रकाश और अच्छी रीति से बना हुया छपेगा सो छपा है या नहीं होर महा-राज जी वोह जो मेरी प्रार्थना है भूगोल खगोल के मगाने की सो जी उनकी भी कोई कृपा कर के युक्ति बता देनी जिस रीति से मैं मंगा लेवूं ॥ हरियांना ॥ ४ नवंबर ॥ सन् १८८२ ई० ॥

हस्ताक्षर—

भगवती,

(ख) ६०

॥ ओंनमः ॥

सिद्ध श्रीमत्सर्वोत्तम सकल गौर्व गुण निधान धर्ममूर्ति दीन-दयाल पितृस्वरूप श्री श्री श्री श्री श्री श्री महाराज स्वामीजी भगवती सहित सब समाज का प्रार्थना सहित पाद्य प्रणाम बांचना और महाराज पत्र आप का आया परम आनन्द हुया धन्य हों आप जो ऐसे दीनों पर दया करते हों परन्तु आप का १७ दसम्बर का लिखा हुआ २३ को इस डाकखाने में पहुंच कर १ जनवरी को मेरे को मिला इस में यह हेतु है कि इस डाकखाने में यह अक्षर न तो मुंशी पढ़ा हुया है न चिट्ठीरसां इस से यह मेरा पत्र इतने दिन रहा तांते लफाफे पर फारसी हरफ ज़रूर डलवाना और महाराज जी मेरठ से मेरे को १ एक ही पत्र आया था सो जी मैं आप के पास भेज दया था औ उस पत्र के साथ जो मैंने आप कों पत्र लिखा था उस में अपने मेरठ जाने का सब समाचार लिखा और यह पूछा कि महाराज मैंने दो पत्र मेरठ को लिखे थे उन का जुवाब यह आया है इस का उत्तर मैं लिखूं वा जेकर लिखूं तो क्या लिखूं सो जी आपने उस पत्र का जुवाब यह लिखा जो आप के पास भेजा जाता है इस में आप ने उत्तर देने वास्ते लिखा नही इस से मैंने उन्हों को इस पत्र का उत्तर

तो ज़रूर नहीं लिखा और जी इस से पीछे मेरे को उधर से कोई पत्र नहीं आया जेकर आता तो मैं उत्तर क्यों न लिखती काहे ते कि मेरे तो यह बात परम ही इष्ट थी यही बात तो मैं आप से प्रार्थना कर के मांगती ही हूं कि बुद्धिमानों के संग से कोई कोई बात पूछती रहुं और फिर जब आप उन स्थानों में आवों तो फिर आप से प्रार्थना कर के कोई बात पूछूं और आगे औरों को भी बताती रहुं और जी जो मैंने प्रश्न पूछा था सो जी सत्यार्थप्रकाश भूमिका में तो ज़रूर लिखा है परन्तु मैंने उन सथानों में ऐसे समझ लीया कि जब मनुष्य अधिक पाप पुण्य थोड़ा करता है तब पशु आदि का शरीर पाता है जब पाप पुण्य तुल्य करता है तब फिर मनुष्य शरीर को पाता है जब पुण्य अधिक करता है तब देव हें कृपानिधे मैं हट के आने की बात नहीं समझी थी अब आप की कृपा से अच्छी रीति से समझ ली है और हे भगवन् जो आप यह लिखते हों कि हमारा उत्तर लिखने का अवकाश नही सो जी यह बात सत्य भी है परन्तु मेरे को यह प्रतीत होता है कि आप की मेरे पर कुछ कृपा की न्यूनता है काहे ते कि जैसी कृपा करनी ईश्वर जी को उचित थी सो उन्हों ने भी करदी है क्यों-कि जिस देश में आप जैसे विद्वान् उस देश उस देश में ग्रहस्थ के जंजालों से रहत जन्म फिर आप का दर्शन और इस मार्ग के समझने और चलने की मन में रुची और बताई बात समझने की समर्थ

देदी हैं और जी जो मुझ को अपने करने का कर्तव्य अपने आधीन दीखता है सो उस को मैं भी अपने दिल से उत्साह पूर्वक अति शीघ्रता से करती हूं होर जो मेरे को करने योग्य होवे सो आप कृपा कर के बता दीजिये आप को यह अति उचित है और जी आप की कृपा की न्यूनता मेरे को इस से प्रतीत होती है कि न तो दृढ़ होके कहीं और जगा पूछने का मेरा [illegible] करते हो काहे तें कि मैं तो सब तरह से मानती हूं, और आप कभी थोड़ी सी बात जैसे कि बिना रुची से कोई किसी के कहे कहाये भोजन करता है वैसे ही कभी मेरठ की थोड़ी सी बात लिख छोड़ी कभी लाहौर की कि तू लाहौर जा सके तो हम तेरे वास्ते लाहौर को लिखें सो जी पहिले तो यह कि इस बात में मेरे को क्या पूछना यहां आप को भेजने की योगयता दीखे वहां भेज देवें और जी जेकर पूछ भी लिया तो भी मैं इस के उत्तर में दो पत्र लिखे विदित तो होता है कि आप ने लाहौर को पत्र ही नहीं लिखा होगा जेकर लिखा भी होगा तौ मेरे को उस का उत्तर कुछ भी न दीया मेरठ की बात लिख छोड़ी वहां की बात को आप भले चंगे जानते भी होंगे कि इस बात में वोह ढीले हैं यामैं प्रयोजन मेरे को अधिक है वा उन्हों को परन्तु आप ने कहीं और समाज में लिखा नहीं होगा इस से और कोई बात लिखने को मिली नहीं मेरठ से किसी आप के पिछले पत्र का उत्तर अब

आया होगा वोही लिख छोड़ी है प्रजानाथ आप तो मेरा सत्कार भी चाहते हो और जी मैं तो इस विषय में अपना सत्कार भी नहीं चाहती एक थोड़ी ध्यालता ही चाहती हूं, महाराज जी मूल बात यह कि न तो कहीं और जगा मेरे पूछने के प्रबंध का फिकर और जी न आप लिष सकों इस से आप ही कृपा की न्यूनता पाई जाती है या नहीं भला महाराज जी जेकर पूर्ण कृपा होवे तो रात्रि से उरे उरे प्रबन्ध भी कर सकों ओर एक महिने में थोड़ी सी बात लिखनी भी आप कों कुछ कठिन नहीं काहे ते जिस को थोड़ी विद्या होती है उस को तो सोच कर उत्तर देना कठन भी होता है सो जी आप पूर्ण विद्वान् हों जौनसी वात अपने मन में वनी वनाई होती है उस के लिखने में कुछ दीर्घ-काल भी नहीं लगता सो जी आप जानो आप का काम मैं तो महीने पीछे थोड़ी सी प्रार्थना लिखा ही करूंगी जितना चिर प्रबंध नहीं करते चाहे किसी और से उत्तर लिखवावों चाहे आप लिखो मैंने तो बहुत काल तक आप की ओर देखा हे ध्यालमूर्ति इन मेरी बातों से आप बुरा नहीं मानना अति क्षुधावंत भिक्षू दाता से इसी तरह से झगड़ा करता है दाता कों को य न चाहीये भिक्षा दे कर क्षुधा की निवृत्ति चाहिये हे दीनानाथ जी मनुष्य शरीर में जीवों के आने की बात तो मैं समझली परंतु अब इनके सुख दुःख होने में शङ्का है सो जी पाप पुण्यों की तुल्यता किस प्रकार से

लेनी मेरे को तो यह शङ्का है कि जैसे किसी के घर में आधा गेहूं आधे चने मिले हुये १ मन किसी के घर ५ किसी के १०० इस से आदि और भी जान लेना वैसे सब के पाप पुण्य अधिक न्यून हैं परंतु हैं आधे २ सो जी मेरा इस में यह पूछना है कि जैसे गेहूं और चने को अलग २ करीये तो जिस के घर में १०० यह था उस के ५० इतना गेहूं ५० इतने चने जिस के घर ५ उस के ढाई २ मन जिस के १ उस के बीस २ सेर वैसे ही जिन्हों को पुण्य का फल सुख अधिक होवे उन्हों को पाप का फल दुःख भी अधिक हुया चाहिये जिन को सुख कम उन को दुःख भी कम, सो जी दीखता इस से विपरीत है और जी सत्यार्थप्रकाश में जिस जगह सत, रज, तम गुण की अधिक न्यूनता से मिल कर पाप पुण्य करने से सुख दुःख अधिक न्यून होते हैं यह लिखा है उस जगा भी और और जगा भी और ग्रन्थों में भी मेरे को तो यह बात विदित हुई नहीं जेकर कहीं लिखी हुई होवे तो आप ने उत्तर नहीं लिखना वह प्रकरण लिख देना जेकर उस में न मिलेगी तो फिर पूछ लेवांगी हे धर्ममूर्ति ऐसे नहीं करना जो उत्तर ही न लिखो महाराज मेरा तो जीना ही इस प्रचीव से है नहीं तो मेरे को एक दिन ही अति दीर्घ हो जाता है।

हरियाना हस्ताक्षर—

६ जनवरी भगवती

(ख) ६१

श्रीस्वामी जी महाराज का पत्र लाला
जीवन दास जी लाहौर के नाम

लाला जीवन दास जी आनन्दित रहो ।। पत्र आप का आया समाचार विदित हुआ यहां पारसी खत पढ़ने वाले बहुत कम हैं इंग्लिश के पाठक बहुत हैं इस लिये जब कभी लिखें तब नागरी वा इंगरेजी में लिखें इस पत्र का मतलब हम ठीक २ नहीं समझते हैं जितना समझा है उतने का उत्तर लिखा जाता है । (सूद) शब्द का अर्थ जो रसोई करने वालों का है यही अर्थ अन्यत्र सूत्रादि में भी है पाककर्त्ता का कोई दृढ़ निश्चय नहीं हो सकता क्योंकि पाचक सब वर्णों में होते हैं अब तो इस में सनातन का व्यवहार ही प्रमाण हो सकता है जो आप लोगों में यज्ञोपवीत होता और धरावट अर्थात् विधवा को पुनः दूसरे के घर में बैठाना नहीं होता तो शूद्र वर्ण में गणना आप लोगों की नहीं अब यह विचारना चाहिये कि (सूद) लोग क्षत्रिय हैं अथवा वैश्य जो राजधर्म राज्य करना आप के पुरुषे शौर्यादि गुण युक्त युद्ध में कौशल वाले हुए हों तो क्षत्रिय और जो वैश्य के व्यापारादि कर्म और गुण हों तो वैश्य समझना चाहिये अब आप लोग ही इस का निश्चय कर लीजिये ।

और जो कभी (सूत) शब्द विगण के सूद हो गया हो तो आप अवश्य क्षत्रिय वर्ण हैं हम ने सुना है कि आज कल बाबू नवीनचन्द्र राय लाहौर में हैं और विधवा विवाह में प्रयत्न कर रहे हैं और आर्य्यसमाज लाहौर भी इस बात में बाबू जी से संमत हो गया है ये ब्राह्मसमाजी लोग भीतर और तथा बाहिर=और बात रखते हैं इन का यह भी मतलब होता है कि जैसे हम लोग कृश्चीनों के तुल्य अपमानित हुए हैं वैसे आर्य्यसमाज भी हो जाय परन्तु जो अक्षतयोनि अर्थात् जिस का पुरुष के साथ कभी संयोग न हुआ हो उस कन्या के पुनर्विवाह करने में कुछ दोष नहीं और जिस का पुरुष से संमेल हुआ हो उस का नियोग करने में अपराध नहीं इस से विपरीत करने से शास्त्र से विरुद्ध होने से अब अथवा पश्चात् बहुत कष्ट भोगना पड़ेगा अर्थात् वर्ण बाह्य होना होवे तो भी कुछ संशय नहीं सब से मेरा आशीर्वाद कहिये गा । *

---

* इस पत्र के अन्त में श्रीस्वामी जी महाराज के हस्ताक्षर नहीं हैं ।

(ख) ६२

वैदिक यंत्रालय ।

१९ । ८ । ८३ प्रयाग

नं० ८७३

श्री स्वामीजी महाराज की सेवा में ।

जोधपुर

श्री महाराज !

नमस्ते कल एक निवेदन पत्र आप को भेज चुका हूं ।

(१) राय बहादुर पंडित सुन्दरलाल जी तारिख ९ वर्त्तमान मास को आए थे परन्तु ठहर न सके हम लोग स्टेशन पर ही उन से मिले थे ।

(२) आप के पास से धातुपाठ की सूचि आई इस मे धातु के सामने उस का गण, आत्मनेपद, परस्मैपद ये सब लिखे हैं । मेरी समझ में इन का लिखना ठीक नहीं क्योंकि मूल धातु पाठ में तो ये सब लिखे ही हैं फिर दुबारा लिखने की क्या आवश्यकता है । मेरी समझ में सूचि में केवल धातु लिख कर उस के सामने छपे हुए ग्रंथ की पृष्ठ और पंक्ति लिख देनी चाहिये । जिस की इच्छा देखने की हो वह लिखे पृष्ठ से मूल पुस्तक में निकाल के देखले । वहां उस का सब हाल खुल जायगा । सूचि में गण आदि तब छपने चाहिये

कि जब मूल पुस्तक साथ न हो। जब मूल पुस्तक इस के साथ है तो पुस्तक बढ़ाने से कौन लाभ है? पुस्तक को निरर्थक बढ़ा कर क्यों कागज़ और कंपोजादि का व्यय बढ़ा कर बहुमूल्य करना? इस विषय में जैसी आप की आज्ञा हो लिखीये। जो गणादि साथ छपने की आज्ञा आप देंगे तो बड़ा खर्च पड़ेगा इस के कंपोज़ में बड़ी कठिनता पड़ेगी और ऐसा कुच्छ फल भी न होगा।

(३) गोवध निवारणार्थ हस्ताक्षर कराने में देर क्यों होती है? **लार्ड रिपन के जाने का समय निकट चला आता है इनके गए पीछे कुच्छ न होगा। जो कुच्छ अच्छा होना है सो इन्हीं के समय में होगा।** इस में विशेष प्रयत्न करना चाहिये। यदि आप आज्ञा दीजिये तो मैं एक फार्म कोष्ठदार छपवा लूंगा और एक पत्र सही होने का मुंबई में छपा था उस की नकल छपवा लूं पीछे समाचार पत्रों में नोटिस देदूं कि गोवध निवारण के लिये जो लोग सही करवाना चाहैं वे मुझ से फार्म मंगवालें और सही करवा २ कर मेरे पास भेजदें एकत्र होने पर मैं स्वामी जी महाराज के पास भेज दूंगा। इस प्रकार नोटिस होने पर सही शीघ्र हो जायगी। जो लोग मंगावेंगे उन को एक फार्म तो मैं भेज दूंगा। अधिक हस्ताक्षर करवावेंगे तो

कोरे कागज़ पर रूल करवा लेंगे। मेरी तुच्छ समझ में यह प्रकार श्रेष्ठ है। जैसी आप की आज्ञा हो लिखिये। इस काम में ढील होने से बड़ा नुकसान होता है। उदयपुर शाहपुरे और जोधपुर के महाराजाओं से आपने इस विषय में क्या सहायता चाही? और किसी के यहां से कुच्छ मिली वा नहीं? यदि उचित हो कृपा कर के लिखिये।

(४) आज की डाक में गत सप्ताह जो ता० ११ को समाप्त हुआ उस की भाषा ९० मंत्रों की और १० पुस्तक गण पाठ के और एक मेरठ का आया हुआ पुस्तक भेजता हूं। इस से पहिले सप्ताह की भाषा मंत्र न होने के कारण से नहीं बनी मंत्र नहीं थे इस से नहीं बनी। आपने भेजे सो मंत्रों के पत्रे पहुंचे परन्तु कोई पत्र आप का नहीं आया। पत्र देने में देर न होनी चाहिये। कृपापत्र दीजिये।

आप का आज्ञाकारी
समर्थदान
मैनेजर

पुनः निवेदन यह है मैने मुनशी इन्द्रमणी को वेदभाष्य के रुपयों के लिये लिखा था उन्हों ने लिखा कि हमारा हिसाब स्वामी जी जानते हैं प्रथम उन से पूछ लो। इस लिये आप से

निबेदन है कि उन के हिसाब के विषय में आप लिखें। कि उन की ओर कितना रुपया है। आप के पत्र आने से मैं उन को लिखूंगा। अब वेदभाष्य उन्हों ने बंध कर दिया है।

समर्थदान
मैनेजर

(ख) ६३

वैदिक यन्त्रालय
नं० ९१६ २०। ८। ८३ प्रयाग

श्री स्वामीजी महाराज की सेवा में
जोधपुर

श्री महाराज

नमस्ते कृपा पत्र आप का श्रावण सुदी १२ का लिखा आया।

(१) भाषा बनाने के लिये ऋग्वेद के पत्रे पृ० १७६८ से १८०९ तक पहुंचे मैंने पं० शिवदयाल को १० मंत्र भाषाने को दे दिये हैं जब बन चुकेगी तब आप की सेवा में भेज दूंगा।

(२) गणपाठ छप चुका सो मैं आप के पास भेज चुका हूं। आज निघंटु की भी सूचि भी छप चुकी। इस का

शुद्धि पत्रादि छपने पर यह भी तय्यार हो जायगा । पीछे और ग्रन्थों की भी सूचि छपेगी । सत्यार्थप्रकाश भी बीच २ में छपता है । कुल ३८ फार्म छपे हैं । ११ समुल्लास छप रहा है प्रयाग समाचार तो दो सप्ताह छप कर इस यंत्रालय में से बंद होगया । प्रयाग प्रेस नामक यंत्रालय में छपता है । एक नंबर देशहितैषी का भी इसी में छपा है अब पीछे कहां छपेगा सो मालूम नहीं । यह प्रेस एक कंपनी ने बनाया है ।

(३) मुंबई के टाईप की अवधि तो होगई । मैंने पत्र दिया है उत्तर आने से मालूम होगा आशा है ढलगया होगा ।

(४) कलकत्ते के टाईप के विषय में आपने लिखा सो पीछे से बिचार के निवेदन करेंगे । परन्तु रुपया और लगेगा ।

(५) ठाकुर भूपालसिंहजी रोस वाले यहां आए थे तो उन्हों ने कहा कि हमारे पास अंक नहीं पहुंचे तो मैंने उन को ६ अंक दिये जिन की कीमत २) होती है । कीमत के विषय उन्होंने कहा कि हमारे पास अगले अंक नहीं पहुंचे इस कारण दुबारा कीमत न देंगे । इस लिये इस विषय में आप से निवेदन है कि जैसा आप लिखें वैसा करें क्योंकि हम तो दूसरों से तो एक मास तक कोई खबर न दे तो हम दुबारा देने के दाम

लेलेते हैं परन्तु इन का मामला और है इस लिये आप से पूछा है।

(६) इस विषय में मैंने पहिले भी निवेदन किया था और अब भी करता हूं कि निघंटु को आप व्याकरण के ग्रंथों के साथ मिलाते हैं यह बहुत लोगों को ठीक नहीं मालूम होता प्रथम तो निघंटु का नाम वेद के अंगों में ही नहीं हैं। जैसे शिक्षा। कल्प। व्याकरण। निरुक्त। ज्योतिष। छन्द। इन में निघंटु का नाम नहीं है। यदि आप निरुक्त के साथ मानें तो चाहे मानें। यदि वेदांग में मान भी लिया जाय तो व्याकरण के साथ नंबर न पड़ना चाहिये। क्योंकि आप छःओं अंगों की तो व्याख्या करते ही नहीं हैं कि जिस से वेदाङ्ग में होने से इस का भी नंबर पड़ता। यह तो केवल व्याकरण की व्याख्या है। इस का नाम व्याकरण के नंबर में डालने से कुच्छ लाभ नहीं मालूम होता।

देखिये ! व्यवहारभानु और संस्कृत वाक्यप्रबोध भी वेदांग में छाप दिये गये यह बड़ी भूल की बात हुई। यदि निघंटु पृथक नाम से छापा जाय तो क्या हानि है ? इस को विचार कर लिखिये किं क्या किया जाय। और लोगों की तो इस में बिल्कुल सम्मति नहीं है कि निघंटु व्याकरण में मिलाया जाय।

पुस्तक छापने से प्रयोजन है व्याकरण के साथ लगाने से क्या लाभ है। जो छओं अंगों की व्याख्या होती तो जो अंग प्रथम चाहिये सो प्रथम पीछे चाहिये सो पीछे इस प्रकार सब की ठीक २ व्यवस्था होती। जब यह बात नहीं है तो एक निघंटु ही को व्याकरण के साथ क्यों लगाते हैं। इस में जैसी आप की आज्ञा हो लिखिये। परन्तु मैं तो जानता हूं पृथक् ही ठीक है पीछे आप की इच्छा है।

मैंने इस से पहिले भी पत्र दिये हैं कृपा कर के उन के उत्तर ठीक २ लिखवावें।

आप का आज्ञाकारी
समर्थदान
मेनेजर

(ख) ६४

वैदिक यंत्रालय
२४। ८। ८३ प्रयाग

नं० ९३७

श्री स्वामीजी महाराज की सेवा में
जोधपुर

श्री महाराज

नमस्ते कृपा पत्र आप का भाद्रपद बदी १ का लिखा आया इस का उत्तर लिखता हूं:—

(१) धातुपाठ की सूचि आपने भेजी वैसी ही छाप देंगे ।

(२) गोवध का उपाय शीघ्र ही होना चाहिये । अर्थात् इन के समय ही में इस का फल निकल आवे । जो इन पास अर्ज़ी भेजी गई और फल पीछे निकला तो अच्छा न होगा ।

(३) राजिस्टर मिलान हो रहा है । दूसरे काम के कारण से देर होगई । आज शुक्रवार है ईश्वर ने चाहा तो सोमवारा तक रवाना करूंगा ।

(३) ज्वालादत्तजी को भाषा ठीक बनाने के लिये कह दिया है ।

(४) उदयपुर का सब वृतान्त छाप के पुस्तकाकार प्रगट करने के लिये मैंने आप से पूछा था परन्तु आपने कुच्छ उत्तर नहीं दिया । उस में वहां का सब हाल और धन्यवादपत्र और स्वीकारपत्रा सब छाप दिये जांयगे । समस्त वृतान्त उस में होगा ।

वह पुस्तक छाप के सब समाचार पत्रों और एत्तद्देशीय राजा महाराजाओं के पास भेज देंगे । इस के छापने की आज्ञा तो आप दे ही चुके हैं परन्तु फिर भी लिख दीजिये । आजकल यंत्रालय का बड़ा टाईप संस्कृत का खाली ही पड़ा है यह पुस्तक होगा तो शीघ्र ही निकल जायगा ।

(५) संस्कृत में पत्र भेजा उस साधु को मैं भी नहीं मानता परन्तु यंत्रालय से पुस्तक सब लिया करता है।

(६) गणपाठ आप के पास भेजा था सो रसीद भिजवाईये। उस के साथ गत सप्ताह की मंत्रों की भाषा भी भेजी थी।

(७) प्रयाग समाचार जिन दो सप्ताह के लिये आप को लिखा गया था उन तक छप कर बंध होगया।

(८) यहां से प्रति मास रोकड़ का हिसाब और डाक बही की नकल और जितने फार्म जिस मास में छपते हैं उतने ही मितिवार अथात् अमुक तारीख को अमुक फार्म छपाये तीनों कागज पडितजी के पास बराबर भेज दिये जाते हैं। या तो आप के पास भेजते होंगे या अपने पास रखते होंगे। कृपा पत्र दीजिये।

(९) उणादि की सूचि छपने का लगा लग गया है।

वा० विश्वेश्वरसिंहजी की नमस्ते पहुंचे। आप का आज्ञाकारी

समर्थदान

मेनेजर

पुनः निवेदनमिदम्।

सत्यार्थ प्रकाश के शब्द बदलने की आपने आज्ञा दी सो मालूम हुआ परन्तु अब पीछे आप कापी भेजें उन में शब्द कड़े

न लाये जायँ तो अच्छी बात है। जहां कहीं मैं शब्द बदलूंगा आप के आशय ही के अनूल बदलूंगा। परन्तु कापी में गड़ बड़ बड़ी आती है। असंबध भाषा बहुत आती है। यह ध्यान रख के दोष निकालना चाहिये। हम यहां बनाते हैं तो बड़ी शंका रहती है। मैंने बहुत बार निवेदन किया परन्तु कापी का दोष आप के यहां से नहीं निकला। जो आप की कापी के अनुकूल छाप दिया जाता तो ग्रंथ बहुत अशुद्ध होता। कापी भेजाये यहां निमटने पर आगई है। संस्कार विधि वा अन्य ग्रंथ बी बनाईये। क्योंकि सूची छपे पीछे सत्यार्थप्रकाश के साथ कोई अन्य ग्रंथ भी चाहिये। कापी भेजिये। आप का आज्ञाकारी

समर्थदान
मेनेजर

(ख) ६५

वैदिक यंत्रालय

नं० ९४९ २७।८।८३ प्रयाग

श्रीस्वामी जी महाराज की सेवा में
जोधपुर

श्रीमहाराज !

कृपापत्र आप का भाद्रपद बदी ५ का लिखा आया॥
(१) ज्वालादत्तजी के विषय में आप ने लिखा सो जाना। पत्रा

आपने भेजा सो दिखला दूंगा । भाषा मुझे देख लेने के लिये आपने लिखा सो ठीक है परन्तु शोधने में मेरी भी तो दृष्टि कच्ची है क्योंकि दीर्घ काल तक काम किये बिना दृष्टि कदापि नहीं जमती है और दूसरे में करूं भी तो मुझे समय नहीं मिलता । मुझे निज का काम ही बहुत है । प्रूफ शोधना स्थिर चित्तका है मुझे एक न एक झगड़ा लगा ही रहता है । यह काम ज्वालादत्त ही का है उन्ही को सावधानी से देखना चाहिये । सत्यार्थप्रकाश का फार्म अन्तमें मैं एक बार देखता हूं सो भी कामा (') आदि चिन्होंने के लिये देखता हूं । इस में कोई भूल और भी दीख पड़ती तो निकाल देताहूं । परन्तु प्रूफ शोधना काम ज्वालादत्त ही का है। एक से कई काम ठीक नहीं हो सकते । इस विषय में पीछे से दूसरे पत्र में निवेदन करूंगा ।

(२) गणपाठ में कागज़ लगा सो व्याकरण के पिछले सब पुस्तकों में लग चुका है । यह मुम्बई की ११) रु० रीमकी खरीद है । आख्यातिक में कागज निकम्मा लगा था इस कारण से अच्छा लगाया गया । इस की बात चीत पं० सुन्दरलाल जी से यहां ही हो गई थी । हम लोगों की तुच्छ सम्मति में तो हलका कागज लगाना अच्छा नहीं है क्यों कि दाम भी तो पूरे लिये जाते हैं। और यह कागज बहुत उत्तम भी नहीं है ।

(३) जितने फार्म छपते हैं उन का व्योरा तारीख वार लिख कर पं० सुन्दरलाल जी के पास मासिक हिसाब के साथ भेज देता हूं। आप के पास पहुंचते न होंगे वे शायद इकट्ठे ही भेज देंगे।

(४) संस्कारविधि की साफ़ नकल करवा कर तय्यार हो गई है तो भेज दीजिये। सत्यार्थप्रकाश की कापी भेजीये।

(५) आप लिखते हैं कि तुम छापते २ थक जाओगे। सो महाराज! इस बात की भी परीक्षा थोड़े दिनों में हो जायगी कि देखें कौन शीघ्रता करता है। व्याकरण की सूचि काल विशेष लेती है इस के छपे पीछे देर न होगी। जोलाई मासकी १ तारीख से बाहर का कोई काम नहीं लिया जाता। जिस बात की आज्ञा ही आप की नहीं है वह क्यों की जायगी। अब सत्यार्थप्रकाश और उणादि की सूचि छपती है।

(६) एक पत्र की नकल आप ने भेजी है इस में किसीने अपने अपने अपराध क्षमा कराए हैं। आपने केवल नकल ही भेजी है इस विषय में कुच्छ लिखा नहीं। और न नकल में किसी के हस्ताक्षर हैं परन्तु मालूम होता है यह पत्र पं० भीमसेनका है। जो [illegible] अनुमान ठीक है तो यह बात अच्छी हुई। भीमसेनने अच्छी

विचारी। और आशा है आप भी उन के अपराध क्षमा करेंगे। मुझको तो इस पत्री के देखने से बड़ा आनन्द हुआ। मनुष्यकी प्रकृति बदलना दुस्साध्य है परन्तु असंभव नहीं। सदैव नहीं तो आशा है कुछ काल तक काम अच्छा करेंगे। कृपापत्र दीजिये। और समाचार दूसरे पत्र में लिखूंगा।

सत्यार्थ प्रकाश ३२० पृष्ठ तक छप चुका है।

स० दा०

आप का आज्ञाकारी
समर्थदान
मेनेजर
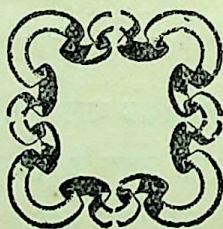
THE ARYA SAMAJ

AND

ITS DETRACTORS:

A VINDICATION.

While the soul-elevating teachings of the Arya Samáj have lifted thousands out of the depth of ignorance and superstition, the splended organization and the unrivalled success of its church have aroused the jealoousy of lakhs upon lakhs of bigotted sectarians who are trying to crush this infant institution by sheer misrepresentation and calumny. The celebrated Patiala case was only the final outcome of all these hostile efforts, and the speech of the Prosecution counsel in that case is an epitome of the arguments urged by the detractors of the Arya Samaj, from time to time, against its followers and their literature.

It is intended, in the above work to give a detailed account of the Patiala case and after giving a verbatim report of Mr. Grey's notorious speech, to expose its mis-statements and fallacious arguments, and to give a short history of the Arya Sam[illegible]ment, together with some

of the princip[illegible] of its founder. Th[illegible] teachings of the [illegible] examined in th[illegible] light of hostile [illegible]iticism and its claim [illegible]pon the attentio[illegible] of the educated community of the whole world will b[illegible] prominently brought forward.

To be completed between 800 and 1000 pages.

Will be out in December 1910.

Price has been fixed at 5 Rs per copy, but as money is required for costs of printing, those who pay in advance will be charged only 4 Rs. per copy including postage. Send money by postal money order to the following address:-

MUNSHI RAM Jijyasu

C/o The Manager, People's Bank Branch,

JALANDHAR-City.